# GANADARPANA

EDITED

BY

RAMATARANA SHIROMONY

HEAD PANDIT

OF THE

KANDEE SCHOOL.

FOURTH EDITION.

# गणदर्पणः

## पाणिनीयधातुसहितसकलधातुरूपात्मकः ।

कान्दिस्थराजकीय-विद्यालयाध्यापकेन

श्रीयुक्त-रामतारण-शिरोमणिना

प्रणीतः ।

चतुर्थसंस्करणम् ।



कलिकाताराजधान्यां

सरस्वतीयन्त्रे

मुद्रितः ।

सन १३०१ ।

প্রকাশক—শ্রীরামতারণ শিরোমণি
কান্দি-স্কুল।

প্রিণ্টর—শ্রীক্ষেত্রমোহনন্যায়রত্ন
কলিকাতা ৫৫ নং আমহার্ষ্ট ষ্ট্রীট্।

# প্রথমবারের বিজ্ঞাপন।

——০(০০)০——

এক্ষণে সংস্কৃত ভাষার উন্নতি সাধনার্থ সহৃদয় নব্য সম্প্রদায় বদ্ধপরিকর হইয়াছেন ইহা অতিশয় সৌভাগ্যের বিষয়। আহা! কিছুকাল পূর্ব্বে এই ভাষার যে কি দুরবস্থা ঘটিয়াছিল তাহা স্মরণ করিতে হইলে হৃদয় বিদীর্ণ হয়। সে যাহা হউক, বর্ত্তমান সময়ে এভাষার অসাধারণ চমৎকারিত্ব দেশীয় বিদেশীয় জনগণের হৃদয়ে দৃঢ়লগ্ন হইয়াছে, অতএব অল্পকালমধ্যেই যে ইহার পুনরুন্নতি আমাদের নয়নগোচর হইবে, তাহার সন্দেহ নাই। কিন্তু অগ্রে ইহার কণ্টকাবৃত বর্ত্ম সুপরিষ্কৃত করিতে না পারিলে কেহই ইহার মধুর মুখ নিরীক্ষণ করিতে সমর্থ হইবেন না।

ধাতুগহন এত জটিল যে, মহামহোপাধ্যায়গণকেও এ গহনে স্খলিতপদ হইতে দেখা গিয়া থাকে; অল্পমতি বালকগণের ত কথাই নাই। অতএব এই দুর্ব্বোধ ধাতুকদম্ব যাহাতে সুগম করিতে পারা যায় সে বিষয়ে সকলের যত্ন করা কর্ত্তব্য। আমি যথাসাধ্য চেষ্টা ও পরিশ্রম স্বীকার করিয়া সকল ধাতুর অর্থ ও রূপ সংগৃহীত করিয়া এই পুস্তক মুদ্রিত ও প্রচারিত করিলাম। কিন্তু কি পর্য্যন্ত কৃতকার্য্য হইয়াছি তাহা বিজ্ঞ পাঠকগণই বলিতে পারেন। অজ্ঞতাবশতঃ আপনি কিছুই স্থির করিতে পারিলাম না।

গ্রন্থ-সংক্ষেপ-করণার্থ আমরা নিম্নলিখিত নিয়মে ধাতুর রূপ প্রদর্শন করিয়াছি।

১। ভ্বাদি, দিবাদি, তুদাদি ও চুরাদিগণীয় ধাতুর লট্‌বিভক্তিতে যেরূপ কার্য্য হয় লোট্ লিঙ্ ও লঙ্ বিভক্তিতেও সেইরূপ কার্য্য হয়। এজন্য আমরা তত্তদ্গণীয়স্থলে লটের প্রথম পুরুষের একবচনের পদমাত্র দিয়াছি।

২। অদাদি, হ্বাদি প্রভৃতি গণীয় ধাতুর পকারেৎ সার্ব্বধাতুক-বিভক্তিমাত্রেরই প্রায় একরূপ কার্য্য হইয়া থাকে, এবং পিৎ ভিন্ন সার্ব্বধাতুক-বিভক্তিমাত্রেরই প্রায় একরূপ কার্য্য হয়। এই নিমিত্ত আমরা লট্ লোট্ ও লঙের তাবৎ পদ না লিখিয়া কেবল সেই সকল পদ লিখিলাম, যদ্দ্বারা অবশিষ্ট সমস্ত পদও কল্পিত হইতে পারে।

৩। লিটের প্রথম পুরুষের দ্বিবচনে যে যে কার্য্য হয় আর সমস্ত বিভক্তিতেও সেইরূপ কার্য্য হইয়া থাকে, কেবল পরস্মৈপদের একবচনে রূপান্তর হয়। এই নিমিত্ত আমরা প্রথম পুরুষের একবচন ও দ্বিবচনের পদমাত্র দিলাম। এবং লিটের ব্যঞ্জনাদি বিভক্তিতে সকল ধাতুর উত্তর ইট্ হয়। যে যে স্থলে ইটের নিষেধ অথবা বিকল্পে বিধি আছে, সে সমস্ত পদ প্রদর্শিত হইয়াছে।

৪। লুট্, লৃট্, লৃঙ্ বিভক্তিতে প্রায় একই কার্য্য, এই নিমিত্ত তাহাদের এক একটী পদ প্রদর্শিত হইয়াছে।

৫। আশীর্লিঙ্ বিভক্তিতে যে যে স্থলে কার্য্যবিশেষ আছে তত্তৎপদমাত্র দিয়াছি।

৬। লুঙ্ বিভক্তিতে প্রায় সকল ধাতুর প্রথম পুরুষের রূপ প্রদর্শিত হইয়াছে। দ্বিবচনে যে যে কার্য্য হয়, অন্যান্য বিভক্তিতেও সেইরূপ কার্য্য হয়। অতএব দ্বিবচনান্ত-পদের সদৃশ অন্যান্য পদ কল্পিত হইবে। সনন্তাদি পদের ভূরিপ্রয়োগ দেখা যায় না, এজন্য একটীমাত্র পদ প্রদত্ত হইয়াছে।

কান্দী বিদ্যালয়। খ্রীঃ ১৮৬৭। শ্রীরামতারণশর্ম্মণঃ।

---

## দ্বিতীয়বারের বিজ্ঞাপন।

প্রথম বারে গণদর্পণে ধাতু সকল অন্ত্য অকারাদি বর্ণ অনুসারে প্রবিষ্ট হইয়াছিল; কিন্তু তাহাতে ঝটিতি ধাতু বাহির করা সকলের পক্ষে অতি সহজ হইত না; এই হেতু এবার ধাতু সকল আদ্য অকারাদিক্রমে সন্নিবেশিত করা হইয়াছে। বিশেষ এস্থলে ইহা বলা বাহুল্য যে, গত বার অপেক্ষা এবার সমধিক পরিশ্রম স্বীকার করা হইয়াছে। স্থানে স্থানে সংক্ষিপ্ত বিচার ও স্থানে স্থানে আবশ্যকমত বহুবিধ প্রমাণ প্রয়োগ দিতেও ত্রুটি করা হয় নাই। (শোধনকার্য্যও পূর্ব্বাপেক্ষা প্রশংসনীয় হইয়াছে।) এই সমুদায় বিশেষ কারণে এবার গ্রন্থের আয়তন বৃদ্ধি হইয়াছে। এমন কি পূর্ব্বাপেক্ষা প্রায় চার পাঁচ ফরমা অধিক হইয়া পড়িয়াছে। সুতরাং এবার ইহার মূল্যও কিঞ্চিৎ অধিক পরিমাণে নির্দ্দেশ করিতে বাধ্য হইয়াছি। গতবার ১।০ এক টাকা চারি আনা ছিল; এবার ১৷৷০ এক টাকা আট আনা মাত্র নির্দ্ধারিত হইল।

কান্দী-বিদ্যালয়। ১২৮৩ সাল। শ্রীরামতারণশর্ম্মণঃ।

---

## তৃতীয়বারের বিজ্ঞাপন।

এই সংস্করণে কবিরহস্য ও ধাতুপ্রদীপ হইতে প্রমাণ সংগ্রহ করিয়া ইহার অন্তর্নিবিষ্ট করিয়াছি। পূর্ব্বাপেক্ষা ইহা বিশেষরূপে সংশোধিত হইয়াছে।

কান্দী-বিদ্যালয়। ১৮৮৭ সাল। শ্রীরামতারণশর্ম্মণঃ।

---

# पाणिनीया विभक्तयः ।

———:०:०:———

तिप् तस् झि। सिप् थस् थ। मिप् वस् मस्॥
त आताम् झ। थास् आथाम् ध्वम्। इट् वहि महिङ्॥

पा ३, ४, ७८।

## आदिष्टा विभक्तयः ।

### लट् लट्

#### परस्मैपदम्

| प्रथमपुरुषः | | | मध्यमपुरुषः | | | उत्तमपुरुषः | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ए० | द्वि० | ब० | ए० | द्वि० | ब० | ए० | द्वि० | ब० |
| तिप् | तस् | अन्ति। | सिप् | थस् | थ। | मिप् | वस् | मस्। |

#### आत्मनेपदम्

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ते | आते | अन्ते। | से | आथे | ध्वे। | ए | वहे | महे। |

### लोट्

#### परस्मैपदम्

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुप् | ताम् | अन्तु। | हि | तम् | त। | आनिप् | आवप् | आमप्। |

#### आत्मनेपदम्

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताम् | आताम् | अन्ताम्। | स्व | आथाम् | ध्वम्। | ऐप् | आवहैप् | आमहैप्। |

### लिङ्

#### परस्मैपदम्

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यात् | याताम् | युस्। | यास् | यातम् | यात। | याम् | याव | याम। |

#### आत्मनेपदम्

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईत | ईयाताम् | ईरन्। | ईथाम् | ईयाथाम् | ईध्वम्। | ईय | ईवहि | ईमहि। |

लङ् लुङ् लृङ्

परस्मैपदम्

| प्रथमपुरुषः | | | मध्यमपुरुषः | | | उत्तमपुरुषः | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ए० | द्वि० | ब० | ए० | द्वि | ब० | ए० | द्वि० | ब० |
| दिप् | ताम् | अन्। | सिप् | तम् | त। | पम् | व | म। |

आत्मनेपदम्

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| त | आताम् | अन्त। | थास् | आथाम् | ध्वम्। | इ | वहि | महि। |

लिट्

परस्मैपदम्

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| णल् | अतुस् | उस्। | थल् | अथुस् | अ। | णल् | व | म। |

आत्मनेपदम्

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ए | आते | इरे। | से | आथे | ध्वे। | ए | वहे | महे। |

लुट्

परस्मैपदम्

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ता | तारौ | तारस्। | तासि | तास्थस् | तास्थ। | तास्मि | तास्वस् | तास्मस्। |

आत्मनेपदम्

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ता | तारौ | तारस्। | तासे | तासाथे | ताध्वे। | ताहे | तास्वहे | तास्महे। |

आशीर्लिङ्

परस्मैपदम्

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यात् | यास्ताम् | यासुस्। | यास् | यास्तम् | यास्त। | यासम् | यास्व | यास्म। |

आत्मनेपदम्

सीष्ट सीयास्ताम् सीरन्। सीष्टास् सीयास्थाम् सीध्वम्। सीय सीवहि सीमहिङ्।

---

# गणदर्पणः।



भ्वाद्यदादौ जुहोत्यादि-दिवादौ खादिरेव च।
तुदादिश्च रुधादिश्च तनक्रयादिचुरादयः॥

## ( अ )

अक्—भ्वा. प।

कुटिलगतिः। वक्रगतिः। लट अकति। लिट् आक। आकतुः। लुट अकिता। लुङ् आकीत। आकिष्टाम्। णिच् अकयति। घटादिः।

अच्—अचू, भ्वा, प।

१ व्याप्तिः। २ संहतिः, वो। लट अक्तति, अक्नोति, पा ३, १, ७५। लङ् आक्तत्, आक्नोत्। लिट् आनक्त। आनक्ततुः। आनक्थ, आनष्ठ पा ७, २, ४४। लुट् अक्तिता, अष्टा। लृट् अक्तिष्यति, अक्ष्यति। लुङ् आक्तीत्। आक्तिष्टाम, आक्ष्टाम्। आक्तिषुः, आक्तुः। षड्भावपक्षे वृद्धिः। मा भवानाक्तीत। सन् अचिक्तिषति, अचिक्तति। णिच् अक्तयति। आचिक्तत्। अक्त्वा, अक्ष्टा। क्त अक्तः। क्तिन् अक्तिः। अक्ति अक्तम् अक्ती। सम्—प्राप्तिः।

अग्—(अक) भ्वा, प।

वक्रगतिः। अगति। आग। अगिता। णिच् अगयति। घटादिः।

अघ—चु, प। अदन्तः।

पापकरणम्। लट् अघयति।

अङ्क्—अकि, भ्वा, आ।

१ अङ्कनम्। चिह्नीकरणम्। २ गतिः, वो। लट् अङ्कते, अङ्कते पुण्यतीर्थेषु हृषयन्मानि शक्तितः। अङ्कयत्यरिसैन्यानि युधि पृष्ठेषु सायकैः॥ कवि १६०। लिट् आनङ्के। लुट् अङ्किता। लुङ् आङ्किष्ट। सन् अङ्किकिषते। अङ्क—चु, प। अदन्तः। १ गतिः। २ लक्षणम्। अङ्कयति। अङ्कापयति। अङ्कयामास वत्सान्, भारत। अकि, वो। अङ्कयति। अङ्कति। अङ्कनम्। अङ्कितः। अङ्कः, "नाङ्क्या राज्ञा ललाटे स्युः" मनुः ८,२५०।

अङ्ग्—अगि, भ्वा, प। गतिः।

लट् अङ्गति। लिट् आनङ्ग। अङ्ग (अङ्ग) चु, प। अदन्तः। १ गतिः। २ अङ्गनम्। अङ्गयति। अङ्गापयति, वो। अङ्गम्। अङ्गना।

अङ्ग्—अघि, भ्वा, आ।

१ गतिः। गमनारम्भः। २ आक्षेपः। निन्दा। ३ आरम्भः, वो। लट् अङ्घते। लिट् आनङ्घे। लुट् अङ्घिता। लुङ् आङ्घिष्ट। अङ्घ्रिः। अङ्घः।

अच्यु (अनच्यु)

अज्—भ्वा, प। १ गतिः।

२ क्षेपणम्। लट् अजति। लिट् विवाय, पा २, ४, ५६। विव्यतुः। विवयिथ, विवेथ, आजिथ, कौ ५०। विवाय, विवय। विव्यिव। लुट् वेता, अजिता। लृट् वेष्यति, अजिष्यति। आप्तिषि,

वीयात्। लुङ् अवैषीत्। अवैष्टाम्। अवैषुः। पक्षे आजीत्। आजिष्टाम्। आजिषुः। सन् विवीषति। यङ् वेवीयते। अस्य यङ्लुग् नास्ति, कौ २१८। णिच् वाययति। प्रवायकः। प्रवयणीयम्। प्रवीतः। प्रवयनः, प्राजनः, पा २,४,५७। संवीतिः। समजः। समाजः, व्याजः। वातमजः। अजिरम्।

अञ्च्—अन्चु, भ्वा, प।

१ गतिः। २ पूजनम्। अन्चु, अचु अचि, भ्वा, उ। १ गतिः। २ याचनम्। ३ अव्यक्तशब्दः, वो। लट् अञ्चति। ०ते. स्वतन्त्रा कथमञ्चसि, भ ४, २२। अञ्चु, अचति। ०ते। लिट् आनञ्च। आनञ्चे, रामानञ्चुर्यच्छिया मृगाः, भ १४, ८८। लुट् अञ्चिता। लृट् अञ्चिष्यति। ०ते। आशिषि, अञ्चात्, पा ६,४,३०। गतौ तु अचात्, पा ६, ४, २४। लुङ् आञ्चीत्। आञ्चिष्टाम्। आञ्चिषुः। आञ्चिष्ट। आञ्चिषाताम्। आञ्चिषत। कर्मणि, अञ्च्यते। अचि, अञ्चते। सन् अञ्चिचिषति। ०ते। णिच् अञ्चयति। अन्चु, चु, प। विशेषणम्। अञ्चयति। अञ्चति। मुदमञ्चय, गीतगो १०, ११। (उ) अञ्चित्वा, पा ७,२,५३। अङ्क्ता पूजायाम्। अन्यत्र अक्ता। अक्तः, अञ्चितः, अञ्चितविक्रमः, र ८,२४। उच्चैरञ्चितलाङ्गूलः शिरोऽञ्चित्वेव संवहन्, भ ८,४०। प्राङ्, सध्र्यङ्। पूजायां प्राञ्चा, प्राङ्भ्याम्। अव—अधोगतौ। अवाङ्। उद्—उद्गतिः। उदञ्चिताक्षः, भ १,३१। उदक्तमुदकं कूपात्, पा ७,२,५३। सम्, समक्तौ शकुनेः पादौ, पा ८,२,४८। नि—न्यग्भावः। न्यञ्चत्युदञ्चत्यपि, मङ्खाना, ३,८१।

अञ्ज्—अन्जू रु, प।

१ व्यक्तिः। प्रकाशः। २ मर्षणम्। ३ म्रक्षणं, वो। ४ कान्तिः। ५ गतिः। लट् अनक्ति। अङ्क्तः। अञ्जन्ति। लोट् अनक्तु। अङ्ग्धि। अनजानि। लिङ् अञ्ज्यात्। लङ् आनक्। आङ्क्ताम्। आञ्जन्। लिट् आनञ्ज। आनञ्जिथ, आनङ्क्थ। लुट् अञ्जिता, अङ्क्ता। लृट् अञ्जिष्यति, अङ्क्ष्यति। लुङ् आञ्जीत्। आञ्जिष्टाम्। आञ्जिषुः पा ७, २,९१। मन् अञ्जिजिषति, पा ७,२,७४। णिच् अञ्जयति। आञ्जिजत्। मानाञ्जौ राजसौमायाः, भ ९,४९। अञ्जयन्ती सकेतेव, मनुः ४,४४। अजि, चु, प, दीप्तिः। अञ्जयति। अञ्जित्वा, अङ्क्ता, अक्ता, पा ६,४,३२। अक्तः। अभि—अभ्यङ्क्तः। वि—व्यक्तिः, अकिञ्चनत्वं मङ्क्तुं व्यनक्ति, रघु ५,१६। व्यनक्ति यच्छरीरस्थं लक्षणं सार्वभौमताम्। व्यञ्जयन्ति च गोदानं यद्देशे याज्ञिका द्विजाः॥ कवि २२८। भुजङ्गाः व्यज्यन्ते मणिभिः फणस्थैः, र १३,१२। अभिवि—अभिव्यक्तिः, तां प्रत्यभिव्यक्तमनोरथानाम्, र ६,१२,१६,२३।

अट्—भ्वा, प। गतिः।

भ्रमणम्। लट् अटति। लिट आट। आटतुः। आश्रमानाट, भ ४,१२। लुट् अटिता। लृट् अटिष्यति। लुङ् आटीत्। आटिष्टाम्। आटिषुः। कपिराटीद् गृहाद् गृहम्, भ ८,४२। सन् अटिटिषति। यङ् अटाट्यते, पा ७,४,८३। अटाट्यमानोऽरण्यानीम्, भ ४,२। णिच् आटयति। आटिटत्। परि—पर्य्यटनम्। तीर्थानि पर्य्यटस्व, भारत। अट्, चु, प (अट्ट)।

अट्ट - अट्ट, अट्ट, अट्ट । भ्वा, आ ।

१ अतिक्रमः । २ हिंसा । लट् अट्टते । लिट् आनट्टे । लुट् अट्टिता । लुङ् आट्टिष्ट । सन् अट्टिटिषते । अटिट्टिषते । "अतिट्टिषते" । अट्ट—च्, प । अनादरः । अट्टयति । आट्टिटत् । अट—आटयतीति रमानाथः । क्विप् अट् 'अत्' ।

अठ्—भ्वा, आ । (अण्ठ)

अड्—भ्वा, प । उद्यमः ।

लट् अडति । लिट् आड । आडतुः । लुङ् अडिता । लुङ् आडीत् ।

अड्ड—अट्ड, भ्वा, प ।

१ अभियोगः । ममन्ताद् योगः । २ निर्वाहः, वो । लट् अड्डति । लिट् आनड्ड । लुट् अड्डिता । लुङ् आड्डीत् । सन् अडिड्डिषति । अड्डिडिषति, वो । णिच् अड्डयति । आड्डिडत् । क्विप् अत् ।

अण्—भ्वा, प । शब्दः ।

दि, आ । प्राणनम् । जीवनम् । लट् अणति । अण्यते, न प्राण्यते पुरं तस्य प्रतिकूलं करोति यः । कवि १७२ । लिट् आण । आणे । लुट् अणिता । लुङ् आणीत् । आनिष्ट । सन् अणिणिषति । ०ते । णिच् आणयति । अन्, अन्यते इत्येके । आणकः ।

अण्ठ—अठि, अठ, भ्वा, आ ।

गतिः । लट् अण्ठते । लिट् आनण्ठे । लुट् अण्ठिता । लुङ् आण्ठिष्ट । सन् अण्टिण्ठिषते । णिच् अण्ठयति । आण्टिण्ठत् । अठते इति काश्यिका । अठति, वो ।

अत्—भ्वा, प । भ्रमणम् ।

सततगमनम् । लट् अतति । लिट् आत । आततुः । लुट् अतिता । लृट् अतिष्यति । लुङ् आतीत् । मा भवानतीत् । आतिष्टाम् । आतिः, ख्यातिः, पदातिः, अतसी ।

अद्—अदा, प । भक्षणम् ।

लुट् अत्ति । अत्तः । अदन्ति, किमदन्ति भङ्गाः, विदग्धमु । हि अद्धि । लिङ् अद्यात् । लङ् आदत्, पा ७,३,१००। आत्ताम् । आदन् । आदः । लिट् जघास, पा २,४,४० । जक्षतुः । जघसिथ । पक्षे, आद । आदतुः । आदिथ, पा ७,२,६६ । अस्यैरादिथ शस्त्राणि, भ ९,४८ । लुट् अत्ता । लृट् अत्स्यति । नरानत्स्यन्ति, भ १६,३२ । लुङ् अघसत्, पा २,४,३७ । क्षुध्यन्तोऽप्यघसन् व्यालास्त्वामपालां कथं नवा, भ ५, ६६ । कर्मणि, अद्यते । अनेनात्स्यामहे वयम्, भ ७,८२ । सन् जिघत्सति । णिच् आदयति । ०ते । जग्ध्वा । जग्धः । अन्नमिति संक्षिप्तसारः । कङ्कः । घासः । अत्तुं माहेन्द्रियं भागम्, भ ५,११ । नि—निघसः, न्यादः ।

अन्—अदा, प । अन्, (अण्) दि, आ ।

प्राणनं जीवनम् । लट् अनिति, पा ७,२,७६ । अनितः । अनन्ति । दि, अन्यते । हि, अनिहि । लिङ् अन्यात् । लङ् आनीत्, आनत् । आनिताम् । आनन् । लिट् आन, आने । लुट् अनिता । लृट् अनिष्यति । ०ते । लुङ् आनीत् । आनिष्टाम् । आनिषुः । आनिष्ट । सन् अनिनिषति । ०ते । णिच् आनयति । आनिनत् । न अन्नम् । प्र—श्वासत्यागः, जीवनम् । प्राणिति । पराणिति, पा ८,४,१८ । अपस्मृत्यु परित्यज्य सुखं प्राणिति यत्प्रजा । कवि १७२ । प्राणिणिषति, पा ८, ४, २१ । प्राणिणत् ।

प्राणिवस्तव मानार्थम्, भ ४, ३८। प्राणीदुदमीलीच्च लोचने, भ १५, १०२। प्राणितम्। प्राणनम्। "प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ च वायवः" इत्यमरः।

अन्त्-अन्द्-ईन्त्—अति, अदि, ईति।

भ्वा, प। बन्धनम्। लट् अन्तति। अन्दति। ईन्तति। लिट् आनन्त। अति, अदि, इदि, विदि, गडि, पञ्चैते न तिङ्विषया इति काश्यपादयः। अन्ये तु तिङन्तमपीच्छन्ति। अन्तः। अन्तकः। अन्दुकः। अन्दूः।

अन्ध—चु, प। अदन्तः।

१ दृष्टिरहितीभावः। २ उपसंहारः। अन्धयति। आन्दधत्। अन्धितः।

अभ्र—भ्वा, प। गतिः।

लट् अभ्रति। लिट् आनभ्र। आनभ्रतुः। वनेष्वानभ्र निर्भयः, भ ४, ११। लुट् अभ्रिता। लुङ् आभ्रीत्। मा भवानभ्रीत्। सन् अबिभ्रिषति। णिच् अभ्रयति। आबिभ्रत्। अभ्रम्।

अम्—भ्वा, प। १ गतिः।

२ शब्दः। ३ सम्भक्तिः सेवा। लट् अमति, अमन्ति व्याधयोऽप्येनम्, कवि १९०। लिट् आम। आमतुः। लुट् अमिता। लृट् अमिष्यति। लुङ् आमीत्। आमिष्टाम्। णिच् आमयति। अम, चु, प, रोगः, आमयति, आमयन्ति यम्, कवि १९०। अमितः। आन्तः। अभ्यमितः, अभ्याक्तः, पा ७, २, २८। अभ्यमी। अमः।

अम्ब्—अबि, भ्वा, आ। शब्दः।

लट् अम्बते। लिट आनम्बे। लुट् अम्बिता। लुङ् आम्बिष्ट। अम्ब्, भ्वा, प। गतिः। अम्बति, वो।

अय्—भ्वा, आ। गतिः।

लट् अयते। लिट् अयाञ्चक्रे, पा ३, १,३७। लुट् अयिता। लृट् अयिष्यते। आशिषि, अयिषीढ्म्, अयिषीध्वम्। लुङ् आयिष्ट। आयिषाताम्। आयिषत। आयिढ्म्, आयिध्वम्, पा ८,३,७९। सन् अयियिषते। णिच् आययति, आयः। प्र—परा—पलायनम्। प्लायते। पलायते, पा ८, २, १९। दुरितञ्च पलायते, कवि २५९। पलायाञ्चक्रे, भ ५, १०६। तमादाय पलायिष्ट, भ १५, ५६। पलायितः। निर्—निलयते। दुर्—दुलयते। उदयति वितनोर्ङ्गरश्मिरज्जौ, मा ४, २०। अयगताविति स्वरितेतं केचिदिच्छन्ति, मल्ली। वस्तुतस्तु इगतावित्यस्य रूपम्।

अर्क्—चु, प। १ स्तुतिः।

२ तपनम्। अर्कयति। अर्कः।

अर्घ्—भ्वा, प। १ हिंसा।

२ क्रयः। ३ पूजनम्, वो। अर्घति। अर्घः।

अर्च्—भ्वा, प। ङ, वो।

अर्चनम्। पूजा। लट् अर्चति। ०ते, वो। लिट् आनर्च। लुट् अर्चिता। लृट् अर्चिष्यति। लुङ् आर्चीत्। आर्चिष्टाम्। आर्चिषुः। आर्चीद् द्विजातीन्, भ १, १५। सन् अर्चिचिषति। चु, प। पूजा। अर्चयति। अर्चति। युजादिषु पाठफलं कर्त्रभिप्राये क्रियाफले आत्मनेपदार्थमिति प्रदीपः। भक्त्याऽर्चयति यो विप्रान् गुरून् देवांस्तथार्चति। अर्चन्ते चरणौ यस्य, कवि ११६। आर्चिचत। दूरस्थो नार्चयेद् गुरुम्, मनुः २, २०२। अर्चयित्वा फलैरर्च्यौ, भ ६,७०।

अर्चा। अर्चना। अर्चितः। अभि—आशीर्भि रभ्यर्च्य, भ १, २४। प्र—प्रानर्चुरर्चा जगदर्चनीयम्, भ २, २०। सम्—सामन्यांश्च समर्चयन्, भ ४, ६।

अर्ज्—भ्वा, प। अर्जनम्।

उपार्जनम्। लट् अर्जति। यदघमर्जति, नै ५, ८४। सर्वोऽप्यर्जयति द्रव्यमात्मनः प्रीतिहेतवे। अर्जते श्राश्वतीं कीर्त्तिं यश्चार्जति यः स्थिरम्॥ कवि १००। लिट् आनर्ज। आनर्जतुः। आनर्जुः। आनर्जुर्नृभुजोऽस्थाणि, भ १४, ७४। लुट् अर्जिता। लुङ् आर्जीत्। आर्जिष्टाम्। आर्जिषुः। सन् अर्जिजिषति। चु, प। १ प्रतियत्नः। संस्कारः। २ उपार्जनम्। अर्जयति। आर्जिजत्। आर्जिजत् स वृत्तम्, भ १५, ४३। परस्वान्यार्जयन्, भ १७, ३८। अर्जनम्। अर्जितः। उप—उपार्जनम्। चिरकालोपार्जितः सुहृत्, हितोप।

अर्थ—चु, आ। अदन्तः।

उपयाच्ञा। याचनम्। अर्थयते, अर्थापयति श्राखाणि नार्थमर्थयतेऽन्यतः। कवि २६४। आर्त्तथत। तमर्थयाञ्चक्रे योद्धुम्, भ १४, ८८। वैश्यं गत्वाऽर्थयस्व धनम्, भारत। अर्थः। अर्थी। अर्थितः। अर्थयितव्यः। अभि—अभ्यर्थना प्रार्थना। अवकाशं किलोदन्वान् रामायाभ्यर्थितो ददौ। र ४, ५८। भ ६, ३। प्र—प्रार्थना। तं प्रार्थयाञ्चक्रे प्रियाकर्त्तुम्, भ ४, १८। गावस्तृणमिवारण्ये प्रार्थयन्ति नवं नवम्। प्रार्थयन्ति शयनोत्थितप्रियाः, इत्यादौ तु (प्रार्थनं कुर्वन्तीति प्रार्थनाशब्दात् णिच्) की १८७। सम्—समर्थनम्।

अर्द्—भ्वा, प। १ गतिः।

२ याचनम्। ३ पीड़नम्। लट् अर्दति, अर्दति द्विषतां दर्पमर्दते दुरितोदयम्। यश्चार्दयति दारिद्र्यम्, कवि ११८। श्रद्दनं नार्दति चातकोऽपि, र ५, १७। लिट् आनर्द। आनर्दतुः। लुट् अर्दिता। लृट् अर्दिष्यति। लुङ् आर्दीत्। आर्दिष्टाम्। आर्दिषुः। रक्षःसहस्राणि स आर्दीत्, भ १२, ५६। सन् अर्दिदिषति। अर्द, चु, उ। आ, वो। हिंसा। अर्दयति। ०ते। अर्दति। ०ते। आर्दिदत्, येनार्दिदद्दैत्यपुरं पिनाकी, भ २, ४२। अर्दनम्। अर्दितः। अति—प्रपीड़नम्। अत्यार्दीद् बालिनः पुत्रम्, भ १५, ११५। अभि—अभ्यर्दितः। सन्निकर्षे, अभ्यर्णः। नि—निपीड़नम्। न्यर्णः। वि—व्यर्णः। सम्—समर्णः, पा ७, २४, २५।

अर्व्—भ्वा, प। १ गतिः।

२ हिंसा। अर्वति। आनर्ब। अर्बिता। अर्व्, भ्वा, प। हिंसा। अर्वति।

अर्ह्—भ्वा, प। १ पूजा।

२ योग्यता। समर्थीभावः। लट् अर्हति। धर्मान् नो वक्तुमर्हसि, मनुः १, २। सर्वलोकाधिपत्यं वेदशास्त्रविदर्हति, मनुः १२, १००। लिट् आनर्ह। लुट् अर्हिता। लृट् अर्हिष्यति। लुङ् आर्हीत्। आर्हिष्टाम्। आर्हिषुः। सन् अर्जिहिषति। अर्ह, चु, प। पूजा। अर्हयति। आर्जिहत्। राजार्जिहत्तम्, भ ११, ७। अर्ह, चु, प। पूजा। अर्हयति। अर्हति। अर्हा। अर्हणा। अर्हणम्। अर्हन्। पूजार्हः।

अल्—भ्वा, प। १ अलङ्करणम्।

२ निवारणम्। ३ पर्य्याप्तिः। सामर्थ्यम्। लट् अलति। ०ते, वो। लिट

आल। लुट् अलिता। लृट् अलिष्यति। लुङ् आलीत्। आलिष्टाम्। आलिषुः। मा भवानलीत्। अलम्। अलकम्। अली।

अव्—भ्वा, प। १ रक्षणम्।

२ गतिः। ३ शोभा। ४ प्रीतिः। ५ तृप्तिः इच्छानाशः। ६ अवगमः। ७ प्रवेशः। ८ श्रवणम्। ९ ऐश्वर्य्यम्, स्वामित्वम्, सामर्थ्यम्, वा। १० याचनम्। ११ करणम्। अनुष्ठानम्। १२ इच्छा। १३ दीप्तिः। १४ प्राप्तिः। १५ आलिङ्गनम्। १६ हननम्। १७ आदानम्। १८ त्यागः। १९ वृद्धिः। एकोनविंशतिरर्थाः। लट् अवति, न मामवति सद्वीपा रत्नसूरपि मेदिनी, र १, ६५। लिट् आव। आवतुः। लुट् अविता। लृट् अविष्यति। लुङ् आवीत्। मा भवानवीत्। आविष्टाम्। आविषुः। ऊः उवौ, ऊतिः। अविषः।

अवधीर—चु, प। अदन्तः।

अवज्ञा। अवधीरयति। अवधीरणा। अवधीरितः। क्त्वा, अवधीर्य्य। हितवचनमवधीर्य्य। हितो। इतीव धारामवधीर्य्य। नै १, ७२। नित्यमवयोगः।

अश्—अशू, स्वा, आ।

१ व्याप्तिः। प्राप्तिः। पूरणम्। आच्छादनम्। २ संघातः। राशीकरणम्। लट् अश्नुते। अश्नुवाते। अश्नुवते, रामाद्रक्षांसि बिभ्यत्यश्नुवते दिशः, भ ५, १४। अश्नुते च परं तपः, कवि २६६। लिङ् अश्नुवीत। लङ् आश्नुत। आश्नुवाताम्। आश्नुवत। लिट् आनशे, पा ७, ४, ७२। आनशिषे। आनक्षे। आनशिध्वे, आनड्ढ्वे। खपाटैः खमानशे, भ २, ३०। क्लीयन्त्यणामानशिरे, र ७, २३। लुट् अशिता, अष्टा। लृट् अशिष्यते, अक्ष्यते। आशिषि, अशिषीष्ट, अक्षीष्ट। लुङ् आशिष्ट, आक्षाताम्। आशिषाताम्, आक्षाताम्। आशिषत, आक्षत। सन् अशिशिषते, पा ७, २, ७४। यङ् अशाश्यते कौ २०६। णिच् आशयति। आशिशत्। अशित्वा, अष्ट्वा। अष्टः। वि—व्याप्तिः। घोषो व्यानशे दिशः, भ १३, ९६। व्यश्नुवाना दिशः प्रापुर्वनम्, भ ९, ४। ते तं व्याशिषत, भ १५, ४२।

अश्—क्रया, प। भोजनम्।

लट् अश्नाति। अश्नीतः। अश्नन्ति। अश्नाति शुचिमाहारम्, कवि २२६। देवता मांसानि अश्नन्ति, भ ५, १४। ६, ४४। लिङ् अश्नीयात्। हि अशान। लङ् आश्नात्। आश्नीताम्। आश्नन्। लिट् आश। आशतुः। लुट् अशिता। लुङ् आशीत्। आशिष्टाम्। आशिषुः। सन् अशिशिषति। यङ् अशाश्यते। णिच् आशयति, पा १, ३, ८७। अतिथिं पूर्वमाशयेत्, मनुः, ३, ९१। उप—उपभोगः। प्राप्तिः। स्वर्गलोकमुपाश्नीयाम्, रामा। न फलं तदुपाश्नाति, भारत। प्र—भोजनम्। प्राशुर्हुतोच्छिष्टम्, भ १, १३। प्राशीत्, भ १५, २९। सम्—भोजनम्। अन्नं समश्नीयात्, मनुः ६, १९।

अंश—(अंस)

अस्—अष्, भ्वा, उ। १ गतिः।

२ दीप्तिः। ३ आदानम्। लट् असति। ०ते। अषति। ०ते। लिट् आस। आसे। लावण्यमुत्पाद्य इवास यत्नः (दिदीपे) कु १, ३५। लुट् असिता। अभि—अभ्यासः। वेदमेवाभ्यसेत्, मनुः ४, १४७। नि—निक्षेपः। न्यसेत् पादम्, मनुः ६, ४६। सम्, नि—संन्यासः। वेदान्तं

श्रुत्वा संन्यसेत्, मनुः ६, ८४। विनि—विन्यासः। विन्यसेत् पूर्वं भूमौ, मनुः ३, २२६।

अस—अदा, प। सत्ता।

विद्यमानता। स्थितिः। लट् अस्ति। स्तः। सन्ति, पा ६, ४, ११९। अस्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा। कु १।१ अस्ति बालीति वानरः, भ ६, ८८। असि, पा ७, ४, ५०। लिङ् स्यात्। लोट् अस्तु। हि एधि, पा ६, ४, ११८। एधि कर्मकरस्त्वं मे। भ २०, ६। लङ् आसीत्, पा ७, ३, ९६। आस्ताम्। आसन्। आसीदिदं तमोभूतम्। मनुः १, ५। लिट बभूव, पा २, ४, ५२। बभूवाम यत्नः। तिङन्तप्रतिरूपमव्ययम्। कु १। लृट् भविता। लृट् भविष्यति। लुङ् अभूत्। सन् बुभूषति। यङ् बोभूयते। व्यति—व्यतिस्ते। व्यतिसे। व्यतिष्ठे, पा ७, ४५०, ५२। अन्यो व्यतिस्ते तु ममापि धर्मः, भ २, ३५। अभि—अभिष्यात्, पा ८, ३, ८७। यदत्र समाभिष्यात् तद्दीयताम्, पा १, ४, ९१। प्रादुः—प्रादुर्भावः। प्रादुः ष्यात्। प्रादुरास ताड़का, र ११, १५।

अस्—असु, दि, प। सोपसर्गः (उ)।

क्षेपणम्। अपनोदनम्। लट् अस्यति। लिट् आस। आसतुः। अस्त्राण्यास्तु परस्परम्, भ १४, ७७। स्त्रीणामास अमम, नलोदयः ४, ३६। लुट् असिता। लृट् असिष्यति। लुङ् आस्यत्, पा ७, ४, १७। तस्मिन्नास्यदिषीकास्त्रम्, र १२, २३। सन् आसिसिषति। णिच् आसयति। आसिसत्। (उ) असित्वा, अस्त्वा। अस्तः। अस्यमानं मङ्गदाः, भ ५, ८१। पा ३, २, १२९। अप—अपसारणम्। त्यागः। अपास्यति। ०ते। किमित्यपास्याभरणानि, कु ५, ४४। सुरानपास्य तं निषेविरे, मा १, ४४। यदि समरमपास्य नास्ति मृत्योर्भयम्, हितोप। अभि—अभ्यासः। क्षेपणम्। अभ्यस्यति व्रतम्, र १३, ६७। अभ्यस्यन्ति तटाघातम्, कु २, ५०। मृगकुलं रोमन्थमभ्यस्यतु, शकु। वेदं सदाभ्यसेत्, मनुः २, १६६। अभ्यस्यतो बाणान्, भारत। नि—निक्षेपः। त्यागः। अयोग्ये न महिधो न्यस्यति भारम्, भ १, २२। भ्रातरि न्यस्य मां यातः, भ ५, ८२। जीवितं न्यस्य यमक्षयं व्रजेत्, रामा। न्यस्तशस्त्रः, भारत। विनि—विन्यासः। विभागविन्यस्तमहार्घरत्नम्, भ ३, ३। निर्—निरसनम्। अपसारणम्। बाणेन रक्तःप्रधनान्निरास्यत्, भ २, ३६, १, १२, १५, ३५। यशांसि सर्वेषुभृतां निरास्यत्, भ १, ३। परि—क्षेपणम्। पतनम्। घटं पर्य्यस्येत् पदा, मनुः ११, १८४। पर्य्यस्ताः पृथिव्यामश्रुबिन्दवः, र १०, ७५। अनेन पर्य्यासयताश्रुबिन्दून्, र ६, २८। विपरि—विपर्य्यासः। विपर्य्ययः। प्र—प्रक्षेपः। कुम्भं प्रास्येयुर्जलाशये, मनुः ११, १८५। वि—अपनयनम्। विभागः। व्यस्यन्नुदन्यां शिशिरैः पयोभिः, भ ३, ४०। चतुर्धा व्यस्य प्रसवः, र १०, ८४। व्यस्य वेदान्, भारत। सम्—सङ्क्षेपः। समासः।

अंस—अंश—चु, प। अदन्तौ।

विभागः। अंसयति। अंसापयति। अंशयति। अंशापयति। अंस, चु, प। ममाघातः। अंसयति। अंसः, अंशः। अंशुः। अंशौ। अंशितः। वि—विश्लेषः। व्यंसयामास तत्सैन्यम्, भारत।

अंह्—अंहि, ख्या, आ। गतिः।

लट् अंहते । लिट् आनंहे । आनंहिरेऽद्रिं प्रति, भ ३, ४६ । लुट् अंहिता । लृट् अंहिष्यते । लुङ् आंहिष्ट । आंहिषातां रघुव्याघ्रौ शरभङ्गाश्रमम्, भ ४, ४ । सन् अञ्जिहिषते । प्राच्यमञ्जिहिषाञ्चक्रे, भ ४, १५ । णिच् अंहयति । आञ्जिहत् । तमाञ्जिहन्मैथिलयज्ञभूमिम्, भ २, ४० । अहि (अजि) चु, प । दीप्तिः । अंहयति । अंहः ।

## ( आ )

आञ्छ्—आच्छि, स्वा, प ।

आयामः । दैर्घ्यम् । लट् आञ्छति, आञ्छति शत्रूणां धूलिपङ्क्तिः, कवि २१३ । लिट् आनाञ्छ । (आञ्छ इति न्यासकारः) । लुट् आञ्छिता । लुङ् आञ्छीत् । सन् आञ्चिच्छिषति, पा ६, १, ३ । णिच् आञ्छयति ।

आन्दोल—चु, प । अदन्तः । दोलनम् । आन्दोलयति । हिन्दोलयति । हिल्लोलयति ।

आप्—आप्लृ, स्वा, प ।

व्याप्तिः । प्राप्तिः । लट् आप्नोति । आप्नुतः । आप्नुवन्ति । आप्नोति ह्येषतां लोकात्, भारत । लिङ् आप्नुयात् । स्वर्गफलमाप्नुयात्, भारत । लङ् आप्नोत् । आप्नुताम् । आप्नुवन् । पम्, आप्नुवम् । लिट् आप । आपतुः, शबरी मापतुर्वने, भ ६,५८ । आपुरन्नां फलम्, र २,११ । लुट् आप्ता । लृट् अप्स्यति । लुङ् आपत् । आपताम् । कर्मणि, मया त्वमाप्थाः शरणं भयेषु वयं त्वयाप्याप्स्महि धर्मवृद्धैः, भ १,२१ । सन् ईप्सति, पा ७, ४, ५५ । ईप्सितं सार्गलं विद्धि, र १,८० । णिच् आपयति । आपिपत् । आप्लृ, चु, प । लम्भनम् । प्रापणम् । आपायति । आपति । आपते इति कश्चित् । यः प्रापयति सर्वत्र सम्मानं मनुराजवत् । प्रापति प्रत्यहं तेजः कीर्त्या प्राप्नोति रोदसी ॥ कवि ६६ । अभि—शुद्धिमभीप्सता, मनुः ५,१३६ । नान्यदत्तमभीप्सामि स्थानम्, भारत । अव—प्राप्तिः । लाभः । सिंहादवाप दिपदम्, र १८, ३५ । इह कीर्त्तिमवाप्नोति, मनुः २,९ । परि—पर्याप्तिः, र १५,१८ । प्र—प्राप्तिः । गतिः । प्रापदाश्रमम्, र १,४९ । जटायुः प्राप रावणम्, भ ५, ९६ । एष गजः प्राप्तः, शकु । सम्प्र—सम्प्राप्तिः । सम्प्राप्य तीरं तमसापगायाः, भ ३,२९ । संप्राप्नुवन्ति दुःखानि तासु योनिषु, मनुः १२,७४ । वि—व्याप्तिः । खं व्यापद्दपुषोऽरुणा, भ १४,२२, ७,५६ । गिरिर्व्याप्तः क्रव्याद्भिः, भ ६,३९ । सम्—प्राप्तिः । सिद्धिं समाप्नुयात्, भारत । णिच् समाप्तिः । व्रतशेषं समापयेत्, मनुः ११, १५८ । चन्दनेनाङ्गरागं समापय्य, र १७,२४ । समाप्य सान्ध्यञ्च विधिं दिलीपः, र २,२३ ।

आस्—अदा, आ । १ सत्ता । २ वासः ।

३ उपवेशनम् । ४ स्थितिः । लट् आस्ते । आसाते । आसते । तस्य पुत्र आस्ते सोमश्रवा नाम, भारत । मम पश्चादागच्छन् आस्ते, हितोप । लोट् आस्ताम् । आसने भगवानास्ताम्, रामा । सुखमास्स्व, रामा । लिङ् किमासीत व्रजेत किम्, भगवद्गीता २,५४ । लङ् आस्त । लिट् आसाञ्चक्रे, पा ३, १,३७ । आश्रमे कश्चिदृषिरासाञ्चक्रे, भारत । भयादासाञ्चक्रिरे, भ ५,९५ । लुट् आसिता । लृट् आसिष्यते । लुङ् आसिष्ट । आसिषाताम् । आसिषत ।

आसिष्महि वयं वने, भ ४,६। इहासिष्ट, भ ६१२, ३,२१। सन् आसिसिषते, पा १,३,६२। णिच् आसयति। आसिसत्। आसीनः। आसितः। आसनम्। अधि—उपवेशनम्। अधिवासः। अधिष्ठानम्। पीठमध्यास्ते, पा १, ४,४६। रथमध्यास्त, र १२,८५। पर्णशालामध्यास्य, र १, ८६। कुलपतिः शौनकोऽग्निशरणमध्यास्त, भारत। सन् अध्यासिसिषमाणो वियन्मध्यम् (आरोढुमिच्छन्), भ ८,३८। तमध्यासयन्नासनम्, भ २,४६। अनु—पश्चादुपवेशनम्। उपसेवा। उपासना। नगेन्द्रकन्या स्थाणुमन्वास्त, कु ३,१७। अन्वासितमरुन्धत्या, र १,५६। तामन्वास्य, र २, २४। उद्—उदासीनता। उपेक्षा। विधाय वैरं सामर्षं नरोऽरौ य उदासते, मा २,४२। उप—उपासना। अवस्थितिः। अनुष्ठानम्। मामुपास्ते हरिः, भ ५,२४। उपासाञ्चक्रिरे द्रष्टुम् (उपगताः), भ ५,१०७। परलोकमुपास्महे, भ ७,८६। सन्ध्यामुपासते ये तु, स्मृतिः। अग्निहोत्रमुपासते, मनुः ११,४२। पर्युप—सेवा। भुजङ्गाः पर्युपासते, कु २,३८। सम्—उपवेशनम्। पूर्वां सन्ध्यां तिष्ठन् पश्चिमान्तु समासीनः, मनुः २,१०१।

## ( इ )

इ—भ्वा, प। गतिः।

लट् अयति। लिट् इयाय। ईयतुः। ईयुः, कौ ५३। इययिथ, इयेथ। इयाय, इयय। लुट् एता। आशिषि, ईयात्। लुङ् ऐषीत्। उद्—उदयः। उदयति वितनोर्भुरश्मिरज्जौ, मा ४, २०। अयमुदयति मुद्राभञ्जनः पद्मिनीनाम्।

इ—इण्, अदा, प। गतिः।

प्राप्तिः। लट् एति। इतः। यन्ति, पा ६, ४, ८१। हि इहि। लिङ् इयात्। लङ् ऐत्। ऐताम्। आयन्। लिट् इयाय। ईयतुः। ईयुः, पा ७, ४, ६८। इययिथ, इयेथ। ईयिव। लुट् एता। लृट् एष्यति। लृङ् ऐष्यत्। आशिषि, ईयात्। निरियात्, पा ७, ४, २४। समीयादिति प्रयोगस्तु भौवादिकस्य। लुङ् अगात्, पा २,४,४५,७७। अगाताम्। अगुः। कर्मणि ईयते। ऐयत। एता। आयिता। एष्यते, आयिष्यते। एषीष्ट, आयिसीष्ट। अगायि। अगासत। अगायिषत। अभ्ययोध्यमगात्, भ २,४८। निकेतम्, भ ३,४०। समाजम्, र ५,७६। सन् जिगमिषति, पा ३,४,४७। बोधने तु, अर्थान् प्रतीषिषति। णिच् गमयति, पा २, ४,४६। बोधने तु प्रत्याययति। इत्वा। ०इत्य। इतः। अयनम्। अति—अत्ययः। अतिक्रमः। अतीत्य हि गुणान्, हितोप। अतीतः। अति—अतिक्रमः। यं यं व्यतीयाय सा, र ६, ६७, ५२। तस्य दिनानि व्यतीयुः, र २,२५। व्यतीतः। व्यत्ययः। अनु—अनुगमनम्। अन्वयः। भर्वेति श्रुतमन्वेति, दायभागः ८७। अन्वितः। समन्वितः। अप—अपगमः। क्षयः। धर्मोऽपैति पादशः, मनुः १,८२। स्वपिति यावदयं निकटे जनः। स्वपिमि तावदहं किमपैति ते। अपेतः। व्यप—व्यपगमः। निवृत्तिः। पुत्रं ददतः स्वधा व्यपैति, मनुः ९,१४२। व्यपेतभीः। अभि—प्राप्तिः। ततोऽभ्यगाद् गाधिसुतः क्षितीन्द्रम्, भ १,४७। अव—ज्ञानम्। भवानपीदमवैति, र २, ५६। कस्तन्नावैति कारणम्, भ ५,८७।

अयाञ्चकार, कौ ५४। लुट् एता।

ईड्—ईड्, दि, आ। गतिः।

लट् ईयते। लिट् अयाञ्चक्रे, कौ १३८। लुट् एता। लृट् एष्यते। लुङ् ऐष्ट। उदीयमानं दिनादौ, भा १, ४६। रात्रावुदयते चन्द्रो दिवोदयति भास्करः। उदेति यः सर्वदोर्व्यां नोदीयन्ते च विद्विषः॥ कवि २३।

ईक्ष्—श्वा, आ। दर्शनम्।

पर्य्यालोचना। लट् ईक्षते। हिताहितं प्रजानां यः प्रेक्षते, कवि २२४। तत्तदन्नं परिपूर्णमीक्षते, महाना ४, ३७। लिट् ईक्षाञ्चक्रे। लुट् ईक्षिता। लृट् ईक्षिष्यते। लुङ् ऐक्षिष्ट। ऐक्षिषाताम्। ऐक्षिषत। देवदत्ताय ईक्षते (तस्य शुभाशुभं पर्य्यालोचयति), पा १, ४, ३९। ऐक्षिष्ट गोष्ठान्, भ २, १४। ऐक्षिष्महि मुहुः सुप्ताम्, भ ६, १४। सन् ईचिक्षिषते। णिच् ईक्षयति। ऐचिक्षत्। ईक्षमाणः। ईक्षितः। ईक्षणम्। अप—अपेक्षा। त्वामपेक्षते, कु ३, १८। अव—अवेक्षणम्। परिदर्शनम्। आलोचना। तेऽस्य कार्य्याण्यवेक्षेरन्, मनुः ७, ८१। उप—उपेक्षा। निर्—निरीक्षणम्। परि—परीक्षा। मया परीक्षितोऽसि, र २, ६२। प्र—प्रेक्षणम्। उत्-प्र—उत्प्रेक्षणम्। सम्भावनम्। वि—दर्शनम्। सम्—परिदर्शनम्। आत्मनश्च परेषाञ्च यः समीक्ष्य बलाबलम्। हितोप।

ईङ्ख्—ईखि, (इख) श्वा, प।

गतिः। ईङ्खति। ईङ्खाञ्चकार।

ईज्—ईज्—ईजि, श्वा, आ।

१ गतिः। २ कुत्सा। निन्दा। ईजते। ईजाञ्चक्रे। ईजिता। ऐजिष्ट। ईज्यते, बो।

ईड्—अदा, आ। स्तुतिः।

लट् ईट्टे। ईड्राते। ईड्रते। ईड्रिषे। ईड्रिध्वे। ईड्रिध्व। ईड्रिध्वम्, पा ७, २, ३८। इष्टे त्रिपिष्टपस्थाने यद्गुणांश्चारणव्रजः। स्वयं पुलकितो हर्षाद्विड्रीजा ईड्रयत्यपि॥ कवि १५८। लिट् ईड्राञ्चक्रे। लुट् ईड्रिता। लृट् ईड्रिष्यते। लुङ् ऐड्रिष्ट। ऐड्रिषाताम्। ऐड्रिषत। ईड्रिषे काकुत्स्थम्, भ ९, ५७। सन् ईड्रिड्रिषते। चु, प। स्तुतिः। ईड्रयति। ऐड्रिड्रत्।

इन्त्—ईति, श्वा, प। बो, बन्धनम्।

ईन्तति। ईन्ताञ्चकार। (इ) इन्त्यते।

ईर्—अदा, आ। १ गतिः।

२ कम्पनम्। लट् ईर्त्ते। ईराते। ईरते। ईर्त्ते यत्कीर्त्तिरैन्द्रं पुरमनवरतं प्रेरयत्यन्तरात्मा यं धर्मे प्रेरति श्रीः, कवि १८। लङ् ऐर्त्त। ऐराताम्। ऐरत। लिट् ईराञ्चक्रे। लुट् ईरिता। लृट् ईरिष्यते। लुङ् ऐरिष्ट। ऐरिषाताम्। ऐरिषत। सन् ईरिरिषते। ईर, चु, प। प्रेरणम्। क्षेपणम्। ईरयति। ईरति। ऐरिरत् समुद्रम्, भ १५, ५२। ईर्य्यमाणो मात्रा, भ १२, ६। ईरणम्। ईरितः। उद्—उक्तिः। उच्चारणम्। उत्क्षेपणम्। प्रकाशः। जयशब्दमुदीरयामासुः, र २, ९। अचामुदीरयामास, र ६, १९। अशोककुसममुदीरयिष्यति, र ८, ६२। न्यायैस्त्वामुदीरणम्, कु २, १२। महिमानमुदीरयन्, कु २, ६। उदीरितः। अभ्युद्—उक्तिः। ऋषिणाभ्युदीरिता, मा १, १८। प्र—णिच् प्रेरणम्। यात्रायै प्रेरया-

मास तं शरत्, र ४, २४। मम्—विक्षेपणम्। कथनम्। समीरयाञ्चकाराथ रात्तसस्य कपिः शिलाम्, भ १४, १११। रघुणा समीरितं वचः, र ३, ४३। समीरणः।

ईर्ष्य—ईर्ष्य्—भ्वा, प। ईर्ष्या।

अत्तान्तिः। लट् ईर्ष्यति। ईर्ष्यति। देवदत्ताय ईर्ष्यति, पा १,४,३७। लिट् ईर्ष्याञ्चकार। लुट् ईर्षिता। लृट् ईर्षिष्यति। लङ् ऐर्षीत्। मन्। ईर्षियिषति। ईर्षिषिषति। णिच् ईर्ष्ययति। ऐर्षियत्। ऐर्षिषत्, कौ ८७। ईर्ष्या।

ईश्—अदा, आ। १ ऐश्वर्य्यम्।

प्रभुता। २ यथेष्टविनियोगः। लट् ईष्टे। ईशाते। ईशते। ईशिषे। ईशिध्वे, पा ७,२,७७। सर्पिष ईष्टे यथेष्टं विनियुङ्क्ते, पा। धनानामीशते यत्ताः, भ ८,२०। विषयाणां नेशिषे, भ १८,१५। यदीशिषे त्वं न मयि स्थितेऽपि, भ ३,५३। ईष्टे हरिणान् ग्रहीतुम् (शक्नोति), र १८,१३। न तत् सोढुमीशे, र १४,३८। लिङ् ईशीत। लङ् ऐष्ट। लिट् ईशाञ्चक्रे। लुट् ईशिता। लुङ् ऐशिष्ट। ऐशिषाताम्। ऐशिषत।

ईष्—भ्वा, प। उञ्छवृत्तिः।

ईष्, भ्वा, आ। १ गतिः। २ हिंसा। ३ दर्शनम्। ४ दानम्, बो। ईषति। °ते। यः सदोन्नतिमीषते, कवि ३६। ईषाञ्चकार। ईषाञ्चक्रे। ऐषीत्। ऐषिष्ट। ईषा, मनीषा, मनीषिणः। प्रेषः।

ईह्—भ्वा, आ। चेष्टा।

ईहा। इच्छा। लट् ईहते। लिट् ईहाञ्चक्रे। लुट् ईहिता। लृट् ईहिष्यते। लुङ् ऐहिष्ट। ऐहिषाताम्। ऐहिषत। हन्तुमीहाञ्चक्राते तौ परस्परम्, भ ५, १०६। ऐहिष्ट तं कारयितुं क्रतुम्, भ १, ११। सन् ईजिहिषते। णिच् ईहयति। ऐजिहत्, सुग्रीवमैजिहत्, भ १५, ५१। ईहा। स्वार्थे समीहते। (अनुसन्धत्ते) मा २। ६५।

## ( उ )

उ—उङ्, भ्वा, आ। शब्दः।

अवते। ऊवे। ओता। ओष्यते। औष्ट। सन् ऊषिषते। णिच् आवयति।

उच्—भ्वा, प। सेचनम्।

आर्द्रीकरणम्। वर्षणम्। लट् उच्चति। औच्चन् शोणितमम्भोदाः, भ १७, ६। लिट् उच्चाञ्चकार। उच्चाम्प्रचक्रुर्नगरस्य मार्गान्, भ ३, ५। लुट् उचिता। लृट् उचिष्यति। लुङ् औचीत्। अभि—अभ्युच्चणम्। अभ्युच्य। अभ्युचितः। प्र—प्रोच्चणम्। प्रोचितं भक्षयेन्मांसम्, मनुः ५, २७।

उख्—उङ्—उखि (इख) भ्वा, प।

गतिः। ओखति। उवोख। ओखिता। औखीत्। उङ्कति। उङ्काञ्चकार। उङ्किता। औङ्कीत्। ओचिखिषति। उपधाकार्य्यं द्वित्वात् प्रबलमिति गुणे कृते द्विर्वचनमिति प्रदीपः। उखा।

उच्—दि, प। समवायः।

सङ्गमः। मिश्रणम्, बो। उच्यति। उवोच। ऊचतुः। ओचिता। औचत्। मा भवानुचत्। पुषादिः। उचितम्।

उक्ष्—उक्षौ, भ्वा, प। १ विवासः।

समाप्तिः। २ निवासः, बो। ३ विपाश इति प्रदीपः। प्रायेणायं विपूर्वः। लट् व्युक्षति। लिट् व्युक्षाञ्चकार। सन् व्यविक्षिषति। (ई) व्युष्टम्। उक्षौ, तु,

प । समाप्तिः । बन्धनम् । त्यागः, बो । उज्झति ।

उज्झ्—उद्झ, तु, प । त्यागः ।

लट् उज्झति । लिट् उज्झाञ्चकार । सपदि विगतनिद्रस्तल्पमुज्झाञ्चकार । र ५।७५ । लुङ् औज्झीत्, प्राणानौज्झीत्, भ १५, ८४ । उज्झितः ।

उञ्छ्—उञ्छि, भ्वा, तु, प ।

उञ्छः । कणश आदानम् । कणिशाद्यर्जनम् । शिलम्, भूमौ पतितानामेकैकशोपादानम् । लट् उञ्छति । लिट् उञ्छाञ्चकार । लुट् उञ्छिता । सन् उञ्छिच्छिषति । णिच् उञ्छयति । उञ्छन्ती । तुदादेस्तु, उञ्छन्ती, उञ्छती । प्र—मार्जनम् । प्रोञ्छन्ति प्रचुरैरेषामम्बेन दीनतां प्रजाः, कवि १६२ । उञ्छिष्टभद्गणवदुञ्छिष्टप्रोञ्छने इति विवेकः ।

उठ्—ऊठ्, भ्वा, प । उपघातः ।

लट् ओठति । लिट् उवोठ । लुट् ओठिता । ऊठति । ऊठाञ्चकार । ऊठिता ।

उध्रस् (ध्रस्) क्रया, चु, प ।

उञ्छवृत्तिः । उध्रसाति । उध्रसाञ्चकार । उध्रासयति ।

उन्द्—उन्दी, रु, प । क्लेदनम् ।

आर्द्रीभावः । लट् उनत्ति । उन्तः । उन्दन्ति । लिङ् उन्द्यात् । लङ् औनत् । औन्ताम् । औन्दन् । औनदम् । लिट् उन्दाञ्चकार । लुट् उन्दिता । लृट् उन्दिष्यति । लुङ् औन्दीत् । औन्दिष्टाम् । औन्दिषुः । सन् उन्दिदिषति । णिच् उन्दयति । औन्दिदत् । (ई) उन्नम् । उत्तम्, पा ८, २, ५६ ।

उभ्—उभ्—उन्भ, तु, प ।

पूरणम् । लट् उभति । लिट् उबोभ । उभतुः । लुट् ओभिता । लुङ् औभीत् । उभ्भति । उभ्भाञ्चकार । उभ्भिता । औभ्भीत्, तमौभ्भीत्तौच्चैः शिलोमुखैः, भ १७, ८८ ।

उज्—तु, प । आर्जवम् ।

सारल्यम् । लट् उजति । लिट् उजाकार । लुट् उजिता । लृट् उजिष्यति । लुङ् औजीत् । सन् उजिजिषति । णिच् उजयति । औजिजत् । नि—कौटिल्यम् । न्युजः ।

उर्द्—भ्वा, आ । १ मानम् ।

परिमाणम् । २ क्रीड़ा । ३ आस्वादः, बो । लट् ऊर्दते, पा ८, २, ७८ । लिट् ऊर्दाञ्चक्रे । लुट् ऊर्दिता । लृट् ऊर्दिष्यते । लुङ् और्दिष्ट । और्दिषाताम् । और्दिषत । सन् ऊर्दिदिषते । णिच् ऊर्दयति । और्दिदत् ।

उर्व्—उर्वी, भ्वा, प । हननम् ।

ऊर्वति । ऊर्वाञ्चकार । (ई) ऊर्णम् । ऊः ।

उष्—उषु, बो । भ्वा, प ।

१ दाहः । २ हननम्, बो । लट् ओषति । लिट् ओषाञ्चकार । उवोष, पा ३, १, ३८ । ओषाञ्चक्रतुः । ऊषतुः । उवोषिथ । ओषाञ्चकार कामाग्निर्दग्धवक्त्रमहर्निशम्, भ ६, १ । लुट् ओषिता । लृट् ओषिष्यति । लुङ् औषीत् । औषिष्टाम् । औषिषुः । सन् ओषिषिषति । णिच् ओषयति । (उ) ओषित्वा, उष्ट्वा, बो । ओषः । ऊषा, बहुलवचनादीर्घः ।

उह्—उहिर्, भ्वा, प । बधः ।

अर्दनम्, बो । ओहति । उवोह । ओहिता । (इर्) औहत् । औहीत् ।

## ( ऊ )

ऊठ्—(ऊठ) ।

ऊन—चु, प । अदन्तः । परिहाणम् ।

ऊनयति । औननत् । ऊनितः ।

ऊय्—ऊयी, श्वा, आ ।

तन्तुसन्तानः । सीवनम् । लट् ऊयते । भक्तिचित्राणि वस्त्राणि व्यूयन्ते यस्य कौतुकात्, कवि २१३ । लिट् ऊयाञ्चक्रे । लुट् ऊयिता । लृट् ऊयिष्यति । लुङ् औयिष्ट । सन् ऊयियिषते । (ईं) ऊतम् ।

ऊर्ज्—चु, प । १बलम् । २प्राणनम् ।

ऊर्जयति । और्जिजत् । ऊर्जितम् ।

ऊर्णु—ऊर्णुञ्, अदा, उ ।

आच्छादनम् । लट् ऊर्णौति । ऊर्णोति, पा ७, ३, ९० । ऊर्णुवते । लिङ् ऊर्णुयात् । ऊर्णुवीत । लङ् और्णोत्, पा ७, ३, ९१ । और्णुतः । लिट् ऊर्णुनाव । ऊर्णुनुविथ, ऊर्णुनविथ, पा १, २, ३ । ऊर्णुनुवे । लुट् ऊर्णविता, ऊर्णुविता । लृट् ऊर्णविष्यति । ०ते । ऊर्णुविष्यति । ०ते । आशिषि, ऊर्णुयात् । ऊर्णविषीष्ट, ऊर्णुविषीष्ट । लुङ् और्णवीत् । और्णावीत्, पा ७, २, ६ । और्णुवीत् । और्णविष्टाम् । और्णाविष्टाम् । और्णुविष्टाम् । और्णविष्ट । और्णुविष्ट । सन् ऊर्णुनूषति । ०ते, पा ७, २, ४९ । ऊर्णुनविषति । ०ते । ऊर्णुनुविषति । ०ते । यङ् ऊर्णोनूयते । ऊर्णोनवीति । ऊर्णोनोति । णिच् ऊर्णावयति । और्णुनुवत् । ऊर्णुनाव श्वस्त्रीघैरनीकिनीम्, भ १४, १०२ । दृष्ट्वोर्णुवानान् । ककुभो बलीघान्, भ ३, ४७ । प्र—आच्छादनम् । देहैः प्रोर्णाविषुर्भुवम् । दिशः प्रौर्णविषुः, भ ९, १० । शत्रून् शरवर्षेण प्रौर्णावीत्, भ १५, ११९ । प्रोर्णुवन्तं द्विशो बाणैः, भ ५, ५६ । प्रोर्णौति श्लोकश्चित्तं मे, भ १८, २८ । अस्त्रौघैः प्रोर्णुनूयते विद्विषः । भ १७, ७५ ।

ऊष्—श्वा, प । रोगः ।

ऊषति । ऊषाञ्चकार । औषीत् । ऊषरम् ।

ऊह्—श्वा, आ । वितर्कः ।

अध्याहारः । सम्भावनम् । लट् ऊहते । लिट् ऊहाञ्चक्रे, ऊहाञ्चक्रे जयं न च, भ १४, ७२ । लुट् ऊहिता । लृट् ऊहिष्यते । आशिषि, ऊहिषीष्ट । लुङ् औहिष्ट । औहिषाताम् । औहिषत । औहिष्ट तान् वीतविरुद्धबुद्धीन्, भ ३, ४८ । सन् ऊजिहिषते । णिच् ऊहयति । औजिहत् । तावौजिहतां जनम्, भ २, ४१ । ऊहितः । ऊहनम् । ऊह्यम् । अप—अपनोदनम् । उपसर्गादात्मनेपदं वेति वक्तव्यम्, कौ २४७ । अपौहद्बाणवर्षं तद्भल्लैः, भ १७, ८३ । तानपौहीत्, भ १५, ११९ । एतैर्व्रतैरपोहेत पापं स्तेयकृतं द्विजः, मनुः ११, १०३, १०८ । उत्सवमपौहदुत्सवः, र १९, ५ । व्यप—विनाशः । आदित्यस्तमो व्यपोहति, भारत । ब्रह्महत्यां व्यपोहति, मनुः ११, ८१ । प्रति—विघातः । प्रत्यूहेष्वग्निषु क्रियाः, मनुः ५, ४८ । प्रतिवाचमूर्ह्यं प्रत्यूह्य, नै ६, १०१ । वि—रचना । विन्यासः । एतान् व्यूहेन व्यूह्य योधयेत्, मनुः ७, १८१ । व्यूढम् । सम्—समूह्यते । समूह्य गतः, पा ७, ४, २३ । आशिषि, ब्रह्म समूह्यात् । अग्निं समूह्यात् । समूढः । समूहः ।

## ( ऋ )

ऋ—ध्वा, प । १ गतिः । २प्रापणम् ।

लट् ऋच्छति । तमृच्छन्ति सम्पदः, भ १८, ५ । चण्डालपुक्कसानाञ्च ब्रह्महा योनिमृच्छति । मनुः १२, ५५ । लङ् आर्च्छत्, पा ७, ३, ७८ । लिट् आर । आरतुः, पा ७, ४, ११ । आरिथ, पा ७, २, ६६ । लुट् अर्त्ता । लृट् अरिष्यति, पा ७, २, ७० । आर्षिषि, अर्य्यात्, पा ७, ४, २८ । लुङ् आर्षीत् । आर्ष्टाम्, कौ ८७ । सन् अरिरिषति, पा ७, २, ७४ । यङ् अराऱ्यते, पा ७, ४, ३० । अरर्त्ति । अरियर्त्ति । अररीति । अरियरीति । अर्ऋतः । अरियृतः । वने किमरार्य्यसे, भ ४, २१ । णिच् अर्पयति, पा ७, ३, ३६ । अपथे पदमर्पयन्ति, र ६, ७५ । आर्पिपत् । तां नार्पिपः, भ १५, १६ । अर्पितः, भ ८, ११८ । ऋतः । आर्त्तः । अनु—अनुसरणम् । सम्—आ । समृच्छते, पा १, ३, २८ । मा समृत । मा समृषाताम् ।

ऋ—ङ्खा, प । गतिः ।

लट् इयर्त्ति । इयृतः । इयृति । यस्य कीर्त्तिरियर्त्ति द्याम्, कवि ४५ । आनिप् इयराणि । लिङ् इयृयात् । लङ् ऐयः । ऐयृताम् । ऐयरुः । लुङ् आरत्, पा ३, १, ५६ । सीतां जिघांसू तावारताम्, भ ६, २८ । समारन्त ममार्ऽऽष्टाः, भ ८, १६ । मा समरत । मा समरेताम् । मा समरन्त ।

ऋच्—तु, प । स्तुतिः ।

ऋचति । आनर्च । आर्चीत् । ऋक् ।

ऋच्छ्—तु, प । १ गतिः ।

२ इन्द्रियप्रलयः । ३ मूर्त्तिः । ४काठिन्यम् । ५ भावः । लट् ऋच्छति । लङ् आर्च्छत् । लिट् आनर्च्छ । आनर्च्छतुः, पा ७, ४, ११ । लुट् ऋच्छिता । लुङ् आर्च्छीत् । सन् ऋचिच्छिषति । णिच् ऋच्छयति । ऋछ्, ध्वा । अर्च्छतीति केचित् । सम्—आ । समृच्छते, पा १, ३, २८ ।

ऋज्—ध्वा, आ । १ गतिः । २ स्थितिः ।

३ अर्जनम् । ४ ऊर्जनम् । लट् अर्जते । लिट् आनृजे । लुट् अर्जिता । लृट् अर्जिष्यते । लुङ् आर्जिष्ट । आर्जिषाताम् । आर्जिषत । सन् अर्जिजिषते । णिच् अर्जयति ।

ऋञ्ज्—ऋजि, ध्वा, आ । भर्जनम् ।

पाकविशेषः । लट् ऋञ्जते । लिट् ऋञ्जाञ्चक्रे (आनृञ्जे) । लुट् ऋञ्जिता । लुङ् आर्ञ्जिष्ट । सन् ऋञ्जिजिषते । णिच् ऋञ्जयति ।

ऋण्—ऋणु, तना, उ । गतिः ।

अर्णोति । अर्णुते । ऋणोति । ऋणुते, कौ १६१ । ऋणोति धरणीं क्रतूनाम्, कवि ४५ । लिट् आनर्ण । आनृणे । लुट् अर्णिता । लृट् अर्णिष्यति । ०ते । लुङ् आर्णीत् । आर्णिष्टाम् । आर्णिष्ट । आर्त्त । आर्णिष्ठाः । आर्थाः । सन् अर्णिनिषति । ०ते । (उ) ऋत्वा, अर्णित्वा । ऋतम् । ऋणम् ।

ऋत्—भ्वा, प । सौत्रधातुः ।

१स्पर्द्धा । २ऐश्वर्य्यम् । ३दया । ४गतिः । ५निन्दा । लट् ऋतीयते, पा ३, १, २८ । लिट् ऋतीयाञ्चक्रे । ईयङ्भावपक्षे, आनर्त्त । आनृततुः । लुट् अर्त्तितासि । ऋतीयितासे । लृट् अर्त्तिष्यति । ऋतीयिष्यते । लुङ् आर्त्तीत् । आर्त्तीयिष्ट । ऋतित्वा, अर्त्तित्वा ।

ऋध्—ऋधु, दि, ध्वा, प । वृद्धिः ।

लट् ऋध्यति। ऋध्नोति, ऋध्नोति धीः सदा यस्य ऋध्यति श्रीश्च भूतले, कवि २४६। लिट् आनर्ध। आन्नृधतुः। लुट् अर्द्धिता। लृट् अर्द्धिष्यति। लुङ् आर्द्धत्। स्वा, आर्द्धीत्। आर्द्धिष्टाम्। सन् अर्दिधिषति, पा ७, २, ४९। ईर्त्सति, पा ७, ४, ५५। अर्दिधिषुर्यशः कीर्त्तिमीर्त्सुं वृत्तैरताड़यत्, भ ९,३२। णिच् अर्द्धयति। आर्दिधत्। (ड) अर्द्धित्वा, ऋद्ध्वा। ऋद्धः। ऋद्धिः। सम्--समृद्धिः। तपोवनं समृद्धशाखम्, भ २, २४।

ऋफ्—ऋम्फ्, —"रिम्फ्"—तु, प।

हिंसा। लट् ऋम्फति। लिट् आनर्फ। लुट् अर्फिता। लुङ् आर्फीत्। लट् ऋम्फति। ऋम्फाञ्चकार। ऋम्फिता। रिम्फति।

ऋष्—ऋषी, तु, प। गतिः।

ऋषति। आनर्ष। आन्नृषतुः। अर्षिता। अर्षिष्यति। आर्षीत्। अर्षित्वा। (ई) ऋष्टः। ऋषिः।

ऋ—क्रया, प। गतिः।

लट् ऋणाति, यस्य कीर्त्तिर्ऋणाति फणिनां पुरम्, कवि ४५। लिङ् ऋणीयात्। लङ् आर्णात्। लिट् अराञ्चकार। लुट् अरिता, अरीता। लृट् अरिष्यति, अरीष्यति। लुङ् आरीत्। आरिष्टाम्। क्त, ईर्णः। उदीर्णः।

## ( ए )

एज्—एजृ, भ्वा, प। कम्पनम्।

भ्वा, आ। दीप्तिः। लट् एजति। °ते। एजते राजचिह्नैर्यः एजयत्यखिलं जगत्। कवि २६९। लङ् ऐजत्। °त। लिट् एजाञ्चकार। एजाञ्चक्रे। लुट् एजिता। लुङ् ऐजीत्। ऐजिष्ट। सन् एजिजिषति। °ते। णिच् एजयति। ऐजिजत्। प्र—प्रेजते, पा ६,१,८४। जनमेजयः। अङ्गमेजयः।

एठ्—भ्वा, आ। विबाधा। श्राव्यम्।

एठति। एठाञ्चक्रे। एठिता। ऐठिष्ट। सन् एटिठिषति। णिच् एठयति। ऐटिठत्।

एध्—भ्वा, आ। वृद्धिः।

लट् एधते, एधते यः श्रियाधिकम्, कवि २६९। अधर्मेणैधते, मनुः ४, १७४। लिट् एधाञ्चक्रे। लुट् एधिता। लृट् एधिष्यते। लुङ् ऐधिष्ट। ऐधिषाताम्। ऐधिषत। सन् एदिधिषते। णिच् एधयति। ऐदिधत्। किं नैदिधः स्वपराक्रमम्, भ १५,१९। मा भवानेदिधत्, प्रदीपः। आशीर्भिरेधयामासुरम्बिकाम्, कु ६, ९०। क्षणात् समेधितस्तदीयैर्भूतैः, भ १२, २०। प्र—प्रैधते। उपैधते, पा ६, १, ८९।

एष्—एषृ, भ्वा, आ। गतिः।

एषते। एषाञ्चक्रे। एषिता। ऐषिष्ट। अन्वेषते। अध्येषते।

## ( ओ )

ओख्—ओखृ, भ्वा, प। १ शोषणम्। स्नेहरहितीभावः। २ अलमर्थः। भूषणम्। ३ सामर्थ्यम्। ४ निवारणम्। लट् ओखति। लिट् ओखाञ्चकार। लुट् ओखिता। लुङ् औखीत्। सन् ओचिखिषति। णिच् ओखयति। औचिखत्। मा भवानोचिखत्। प्र—प्रोखति।

ओज—चु, प। वो। अदन्तः।

१बलम्। २ तेजः। ओजयति।

ओण्—ओणृ, भ्वा, प। अपनयनम्।

ओणति। ओणाञ्चकार। ओणिता।

श्रीणीत् । श्रीणयति । श्रीणिणत् । मा भवानोणिणत् । क्तनिप् अवावा ।

ओलञ्ज्—ओलजि, भ्वा, प । वो ।

उत्क्षेपः । ओलञ्जति । ओलज्जतीत्यन्ये ।

ओलण्ड्—ओलडि, चु, प । उत्क्षेपः ।

ओलण्डयति । ओलण्डति । ओ लण्डयति । लण्डति इत्येके ।

( क )

कक्—भ्वा, आ । १ लौल्यम् ।

चञ्चलीभावः । २ गर्वः । इच्छा, वो । लट् कक्कते । लिट् चक्के । लुट् कक्किता । लुङ् अकक्किष्ट । काकयति । काकः ।

कक्ख्—कक्ख्, भ्वा, प । वो ।

हसनम् । कक्खति । कक्खति ।

कख्—कख्वे, भ्वा, प । हसनम् ।

कख्वति । चकाख । चकख्वतुः । कख्विता । (ए) अकख्वीत् । णिच् कख्वयति । घटादिः ।

कग्—कगे, भ्वा, प ।

गमनादयो बहवोऽर्थाः । नानार्थोऽयम् । कगति । चकाग । चकगतुः । कगिता । (ए) अकगीत् । णिच् कगयति । घटादिः ।

कङ्क्—कंकि, भ्वा, आ । गतिः ।

कङ्कते । चकङ्के । कङ्किता । अकङ्किष्ट ।

कच्—भ्वा, आ । १ बन्धनम् ।

२ दीप्तिः, वो । लट् कचते । लिट् चकचे । लुट् कचिता । लुङ् अकचिष्ट । आ—त्वङ्क्रमाच्चकचे, भ १४,९४ । कच्, भ्वा, प, वो । शब्दः । कचति । कचः । विकचः । काचः ।

कज्—भ्वा, प । मदः ।

कजति । कजमदे इति कश्चित् ।

कञ्च्—काञ्च्, कांचि, कांचि, भ्वा, आ ।

१ दीप्तिः । २ बन्धनम् । कञ्चते । चकञ्चे । कञ्चिता । काञ्चते । चकाञ्चे । काञ्ची । काञ्चनम् ।

कट्—कटी (इट) भ्वा, प । गतिः ।

कटे, भ्वा, प । १ वर्षणम् । २ आवरणम् । कटति । चकाट । चकटतुः । कटिता । अकटीत्, अकाटीत् । (ए) अकटीत्, पा ७, २, ५ । प्र—णिच्, व्यक्तिः । प्रकटयति । प्रकटितः । प्रकटनम् । (ई) (कट्टः) । कटि, कण्टति इति कश्चित् । कण्टकः । कट्, अकाटीत्, वो । कटः । कटकम् । कटी ।

कठ्—भ्वा, प । क्लच्छजीवनम् ।

कठति । चकाठ । कठिता । अकठीत्, अकाठीत् । कठितः । कठिनम् ।

कड्—भ्वा, तु, प । १ मदः ।

मत्तीभावः । २ भक्षणम्, वो । कडति । चकाड । कडिता । अकडीत् । अकाड़ीत् ।

कड्ड—कड्ड, भ्वा, प । कर्कशीभावः ।

कड्डति । चकड्ड । कड्डिता । क्विप् कत् । कज्जलः ।

कण्—(अण) भ्वा, प । शब्दः ।

आर्त्तनादः, वो । कण् भ्वा, प । गतिः । लट् कणति । लिट् चकाण । चकणतुः । लुट् कणिता । लृट् कणिष्यति । लुङ् अकणीत्, अकाणीत् । सन् चिकणिषति । णिच् काणयति । गतौ कणयति, घटादिः । कण, चु, प । निमीलनम् । काणयति । अचीकणत् । अचकाणत्, कौ १७७ । कण, (कूण) चु, आ । सङ्कोचः । काणयते । कणः । कणिका ।

कण्ट्—(कट) ।

कण्ठ्—कठि, भ्वा, आ ।

शोकः। आध्यानम्। उत्कण्ठा। लट् कण्ठते। लिट् चकण्ठे। लुट् कण्ठिता। लृट् कण्ठिष्यते। लुङ् अकण्ठिष्ट। कठि, चु, प। शोकः। कण्ठयति। कण्ठति। कण्ठः। उद्—उत्कण्ठा। नोत्कण्ठिष्यताऽत्यर्थम्, भ ५, ७२। उत्कण्ठयन्ति पथिकान् जलदाः स्वनन्तः, घटकर्परः। उत्कण्ठितः। वेतसीतरुतले चेतः समुत्कण्ठते। नोत्कण्ठते परद्रव्ये नोत्कण्ठति परस्त्रियम्। यस्योत्कण्ठयति श्लाघ्ये धर्म एव मनः सदा॥ कवि ८९।

कण्ड्—कडि (कड़) भ्वा, प।

कडि, भ्वा, आ। मदः। हर्षः। कण्डति। ०ते। चकण्ड। ०ण्डे। कण्डिता। अकण्डीत्। अकण्डिष्ट। कडि, चु, प। भेदनम्। वितुषीकरणम्। २ रक्षणम्, वो। कण्डयति। स्वर्गङ्गा मुशलेन शालय इव त्वत्कीर्त्तयः कण्डिताः, महाना ६, ६०। कण्डनी।

कत्व—कर्त्व—कर्त्त, चु, प। अदन्ताः।

शैथिल्यम्। कत्वयति। कर्त्वयति। कर्त्तयति।

कत्थ्—कत्थ्—भ्वा, आ। श्लाघा।

प्रशंसा। लट् कत्थते। यः स्वप्नेनापि नात्मीयं गुणं कुत्रापि कत्थते। कत्थयत्यादिराजानां चरितानि सहस्रशः॥ कवि २२७। लिट् चकत्थे। लुट् कत्थिता। लृट् कत्थिष्यते। क्त्वा कत्थिष्यते न कः, भ १६, ४। लुङ् अकत्थिष्ट। वि—विकत्थनम्। श्लाघा। विकत्थी। कत्थनः।

कथ—चु, प। अदन्तः।

कथनम्। वर्णनम्। कथयति। कथयाञ्चक्रिरे गुणान्। भारत। अचकथत्। शाकटायनमते कथापयति। कथयित्वा। ०कथय्य, पा ६, ४, ५६। कथितः। सूत! अकथितोऽपि ज्ञायत एवायमाभोगस्तपोवनस्य, शकु १, ५६। कथा। कथनम्। कथकः। सम् वर्णना। मिथोभाषणम्।

कन्—कनी, भ्वा, प। १ दीप्तिः।

२ कान्तिः। ३ गतिः। लट् कनति। लिट् चकान। चकनतुः। लुट् कनिता। लृट् कनिष्यति। लुङ् अकनीत्, अकानीत्। (ई) कान्तः, पा ६, ४, १५। कनकम्।

कन्य्—(कत्य)।

कन्द्—कदि, भ्वा, प। १ आह्वानम्।

२ रोदनम्। लट् कन्दति। लिट् चकन्द। लुट् कन्दिता। लुङ् अकन्दीत्। कन्दः। कन्दरः। कन्दरा। कन्दलः। कन्दली।

कन्द्—कद्—कदि, भ्वा, आ।

१ वैक्लव्यम्। विवशता। २ वैकल्यम्। कन्दते। चकन्दे। कन्दिता। कदते। चकदे। कदिता। णिच् कदयति। घटादिः।

कब्—कब्, भ्वा, आ। १ वर्णः।

शुक्लादिकरणम्। २ स्तुतिः। कबते। चकबे वो।

कम्—कमु, भ्वा, आ। १ कान्तिः।

२ अभिलाषः। इच्छा। स्पृहा। लट् कामयते, पा ३, १, ३०। अधन्यं कामयेत का, भ ८, ८१। लिट् कामयाञ्चक्रे, चकमे। निष्क्रष्टुमर्थं चकमे कुवेरात्, र ५, २६। कामयाञ्चक्रिरे कान्ताः, भ १४, ५३। लुट् कामयिता, कमिता। लृट् कामयिष्यते, कमिष्यते। लुङ् अचीकमत, अचकमत। णिङभावपक्षे न दीर्घसन्वद्भावौ। सन् चि-

कामयिषते, चिकमिषते। यङ् चङ्क्म्यते। चङ्क्मन्ति। णिच् कामयति। (उ) कमित्वा, कान्त्वा, कामयित्वा। कान्तः। कम्रः। कामुकः। कामी। कमिता। कमनः। कामः। प्रकमनीयम्।

कम्प्—कपि, भ्वा, आ। चलनम्।

कम्पनम्। लट् कम्पते। लिट् चकम्पे, चकम्पे प्राग्ज्योतिषेश्वरः, र ४, ८। लुट् कम्पिता। लृट् कम्पिष्यते। लुङ् अकम्पिष्ट। अकम्पिषाताम्। अकम्पिषत। भूरकम्पिष्ट, भ १५, ७०। सन् चिकम्पिषते। यङ् चङ्कम्प्यते। चङ्कम्प्यति। णिच्—कम्पयति। अचकम्पत्। कम्पः। कम्पितः। कम्पनम्। कम्रः। कम्पनः। अनु—अनुकम्पा। कृपा। अनुचकम्पिरे सुरा वायुना, मा १, ६१। रतिमन्वकम्पयत्। कु ४।३६। समनु—अनुग्रहः। समनुकम्पा सपत्नपरिग्रहान्, र ६, १४। उद्—प्रकम्पनम्। उत्कम्पते सा, गीतगो, ४, १६। प्र—प्राचकम्पदुदन्वन्तम्, भ १५, २३। वि—प्रकम्पनम्। रावणश्रियमपि व्यकम्पयत्, र ११, १६। उपतापाङ्गविकारयोः, विकपितः। अन्यत्र विकम्पितः।

कम्ब—भ्वा, प। १ हिंसा।

२ गतिः, वो। कम्बति। खम्ब्, खम्बति। गम्ब्, गम्बति। घम्ब्, घम्बति। चम्ब्, चम्बति।

कर्ज्—भ्वा, प। १ व्ययनम्।

२ पीड़नम्, वो। कर्जति। चकर्ज।

कर्ण—(छिद्र) अदन्तः। चु, प।

भेदनम्। कर्णयति। आ—श्रवणम्। आकर्णयामास न वेदनादान्। भ ३। २७।

कर्त्—कर्च (कत्र)। अदन्ताः।

कर्द्—भ्वा, प। कुत्सितशब्दः।

कुत्सितकुत्सितशब्दः। कर्दति। कर्दमः।

कर्व्—भ्वा, प। गतिः।

कर्वति। खर्व्, खर्वति। गर्व्, गर्वति। घर्व्, घर्वति। चर्व्, चर्वति। तर्व्, तर्वति।

कल्—भ्वा, आ। १ शब्दः।

२ संख्यानम्। गणना। लट् कलते। लिट् चकले। लुट् कलिता। लुङ् अकलिष्ट। कल, चु, प। क्षेपणम्। प्रेरणम्। कालयति। बालवत्साश्च या गावः कालयामास ता अपि, भारत। निष्कलन्ते सुखाद् यस्य नाश्लीलपरुषा गिरः। उत्कालयति यो यशः, कवि ७०।

कल—चु, प। अदन्तः।

१ गतिः। २ संख्यानम्। गणना। कलिः कामधेनुः। कलयति। अचकलत्। विहगाः कलयन्त्यनेकलयम्, मा ४, ३६। कलयेदमानमनसम्, मा ६, ५८। कलयामि मणिभूषणं बहुदूषणम्, गीतगो ७, ७। गरलमिव कलयति मलयसमीरम्, गीतगो ४, २। यदैनां छायाद्वितीयां कलयाञ्चकार, नै ३, १२। म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम्, गीतगो १, १४। कलय बलयश्रेणीं पाणौ, गीतगो १२, २६। मरकत-शकल-कलित-कलधौतलिपेः, गीतगो ८, ४। मधुपकुलकलितरावः, गीतगो ११, १६। आ—बोधः। बन्धनम्। खिन्नमसूयया हृदयं तवाकलयामि, गीतगो ३, ७। सुवर्णसूत्राकलिताधराम्बराम्, मा १, ६। जघनस्थलीपरिसरे रसना-कलापकगुणेन मकरध्वजद्विरदमाकलयत्, मा ६, ४५। परि—ज्ञानम्। स्त्रीलोकः परिकलयाञ्चकार तुल्यम्, मा ८, ६। सम्—सङ्कलनम्। व्यव—व्यवकलनम्।

कल्—भ्वा, आ । १ अव्यक्तशब्दः ।

२ अशब्दः । तूष्णीभावः । ३ कूजनम्, वो । कल्लते । चकल्ले । कल्लिता । कल्लोलः ।

कव्—(कव्)

कर्व्—भ्वा, प । गर्वः ।

कर्वति । खर्व्, खर्वति । गर्व्, गर्वति ।

कश्—भ्वा, प । शब्दः ।

कशति । चकाश । कशिता ।

कष्—भ्वा, प । हिंसा ।

कषति । चकाष । कषिता । अकषीत्, अकाषीत् । समूलकाषं चकषुः, भ ३, ४९ । (परीक्षा) कृदहेम कषन्निव कषपाषाणनिभे नभस्तले, नै २, ६९ । खष्, खषति । जष्, जषति । जेषतुः । सर्वङ्कषः । कषः । निकषः । कष्टम् । पत्काषी ।

कस्—भ्वा, प । गतिः ।

लट् कसति । लिट् चकास । चकसतुः । लुट् कसिता । लुङ् अकसीत्, अकासीत् । सन् चिकसिषति । यङ् चनीकस्यते, पा ७, ४, ८४ । चनीकस्ति । णिच् कासयति । अचीकसत् । कासः । वि—विकासः । यस्य लक्ष्मीर्विकसति प्रजाधर्मेण रक्षितुः, कवि २३२ । विकसद्धिरास्यकमलैः, मा ९, ४७ । कोपकुसुमं व्यचीकसत्, मा १५, १२ । विकसितोत्पला, भ ८,६२ । प्रविप्रकाशः । प्रविकसति सूर्ये, मा ११, ६३ । विकासी । विकस्वरः । कशतीत्येके । विकस्वरः । विकशितम् । निर्णिच् निःसारणम् । निरकासयद्भविमपेतवसुम् । मा ९, १० ।

कंस्—कस्—कश्, अदा, आ ।

१ गतिः । २ शासनम् । ३ शातनमिति कश्चित् । लट् कंस्ते । कंसाते । कंसते । लिट् चकंसे । लृट् कंसिष्यते । लुङ् अकंसिष्ट । अकंसिषाताम् । अकंसिषत । कस्ते । चकसे । कसिता । तालव्यान्तोऽपि । कष्टे । कच्चे । कड्ढे । चकश्चे । कशिष्यते । कांस्यम् ।

काङ्क्—काङ्क्षि, भ्वा, प । आकाङ्क्षा ।

लट् काङ्क्षति । मधुव्रतः काङ्क्षति वल्लीम् । सा, द । लिट् चकाङ्क्ष । लुट् काङ्क्षिता । लुङ् अकाङ्क्षीत् । सन् चिकाङ्क्षिषति । यङ् चाकाङ्क्ष्यते । चाकांष्टि । णिच् काङ्क्षयति । अचकाङ्क्षत् । आ—आकाङ्क्षा । प्रत्यग्रसन्तं रिपुमाचकाङ्क्ष, र ७, ४७ । नाकाङ्क्षति परस्त्रियम्, कवि १ ६४ ।

काञ्च्—(कञ्च्)

काश्—काशृ, भ्वा, दि, आ ।

दीप्तिः । प्रकाशः । काशते । काश्यते । भ्वादौ दन्त्यान्तोऽपि । कासते । लिट् चकाशे । कासाञ्चक्रे पा ३, १, ३५ । कासाञ्चक्रे पुरी सौधैः, भ ८,३८ । लुट् काशिता । लृट् काशिष्यते । लुङ् अकाशिष्ट । अकाशिषाताम् । अकाशिषत । चकाशिरे तत्र लता विलोलाः, भ २,२५ । तया दुहित्रा सवित्री चकाशे, कु, १, २४ । र ७,२१,२४ । सन् चिकाशिषते । यङ् चाकाश्यते । चाकाष्टि । णिच् काशयति । अचकाशत् । प्र—प्रकाशः । प्रकाशते यथा व्योम्नि चन्द्रः, प्रकाश्यते तथा भूमौ प्रजानां नयनोत्सवः, कवि १५३ । विश्वामित्राश्रम एष प्रकाशते, भारत । प्रकाशयन्ति निगूहनीयम्, भ १४,३१ । प्रकाशयति लोकं रविः, गीता १३,३३ । वि—विकाशः । विकाशन्ते च भूयांसो गुणाः, कवि २३२ । आकाशम् ।

कास्—कास्, भ्वा, आ ।

कुत्सितशब्दः । शोभार्थस्तु उक्तः । लट् कासते । लिट् कासाञ्चक्रे, पा ३,१, ३५ । लुट् कासिता । लृट् कासिष्यते । लुङ् अकासिष्ट । असौतो रावणः कासाञ्चक्रे (कुत्सितमभिहितवान्), भ ५, १०५ । सन् चिकासिषते । यङ् चाकास्यते । चाकास्ति । णिच् कासयति । (ऋ) अचकासत् । कासः ।

किट्—भ्वा, प । १ त्रासः ।

२ भीषणम्, वो । किट् (इट) भ्वा, प । गतिः । केटति । केटिता ।

कित्—भ्वा, प, आ, आभरणमते ।

१ व्याधिप्रतिकारः । रोगनिर्णयः । २ निग्रहः । ३ अपनयनम् । ४ नाशनम् । ५ संशयः, कौ १०१ । लट् चिकित्सति । ०ते । रोगिणम्, पा ३, १, ५ । चिकित्सति जगद्व्याधिम्, कवि २५७ । लिट् चिकित्साञ्चकार । लुट् चिकित्सिता । लुङ् अचिकित्सीत् । चिकित्सकः । चिकित्सितः । मया न पठिता चण्डी त्वया नापि चिकित्सितम् । वि—संशयः । विचिकित्सा तु संशय इत्यमरः ।

कित्—भ्वा, चु, प ।

१ निवासः । २ इच्छा, वो । केतति । केतयति । निकेतयति । निकेतनम् ।

किल्—तु, प । श्वेत्यम् ।

शौभावः । २ क्रीड़नम् । किलति । न्ति बालकाः कामम्, कवि २३३ । न । केलिता । किल, चु, प, वो । । प्रेरणम् । केलयति । केलिः ।

ष्क्—चु, आ । हिंसा ।

। हिष्क् हिष्कयते । हिक्क-

प । वर्णः । भ्वा, बन्धः वो ।

कील्—भ्वा, प । बन्धनम् ।

कीलति । चिकील । कीलिता । कीलः । कीलकः । कीलितम्, हृदयं मम शरकीलितम् (विद्धम्), गीतगो ७, ४, १२, १३ ।

कु—कुङ् (ऊङ्) भ्वा, आ ।

शब्दः । अव्यक्तशब्द इति प्रदीपः । कु, अदा, प । शब्दः । लट् कवते । कौति । कवौति, अपिशलिः । शोकान्न कौति कुरुते न भयाच्च कश्चिद् यन्मण्डले जनपदः कवते च सूक्तम्, कवि २० । कुतः । कुर्वन्ति । लिङ् कुर्यात् । लङ् अकौत् । लिट् चुकाव । चुकुवतुः । चुकुविथ, चुकोथ । चुकुवे । लुट् कोता । लृट् कोष्यति । ०ते । आशिषि, कूयात् । कोषीष्ट । लुङ् अकौषीत् । अकौष्टाम् । अकौषुः । अकोष्ट । सन् चुकूषति । ०ते । यङ्, भ्वा, कोकूयते, पा ७, ४, ६२ । अदा, चोकूयते । अकोकूयिष्ट सैन्यम् । पलायिष्ट चाकुलम्, भ १५, ११४ । चोकवीति । णिच् कावयति । अचूकवत् ।

कु—कू—कुङ्—कूङ्, तु, आ ।

१ शब्दः । २ आर्त्तनादः, वो । कुवते । चुकुवे । कुता । अकुत, पा ८, २, २७ । अकुषताम् । अकुषत, क्रूरा अकुषत द्विजाः, भ १५, २६ । चोकूयते । कू । कुवते । चुकुवे । कुविता । अकुविष्ट । आकूतम् ।

कुक्—भ्वा, आ । आदानम् ।

ग्रहणम् । लट् कोकते । लिट् चुकुके । चुकुकिषे । लुट् कोकिता । सन् चुकुकिषते, चुकाकिषते । कोकः ।

कुच्—भ्वा, प । १ तारः ।

उच्चशब्दः । २ चिक्कणता । लट् कोचति । कोचति ढक्केति दुर्गादासः ।

कोचति काञ्चीं वणिक् इति भट्टमल्लः।

कुच्—भ्वा, प। १ तारः।

उच्चशब्दः। २ सम्पर्कः। ३ कौटिल्यम्। ४ प्रतिष्टम्भः। ५ विलेखनम्। कोचति। चुकोच। कोचिता। अकोचीत्। कोचः, पा ३,१,१४०। यस्मिन् समुदिते राज्ञि जनः सङ्कोचति श्रितौ, कवि १४०।

कुच्—तु, प। सङ्कोचः।

कुचति। चुकोच। कुचिता। अकुचीत्। सम्—सङ्कोचः। सङ्कुचति। सङ्कुचितः। णिच् समकोचयदर्चिः। सङ्कुचत्यरिनारीणां सुखं पङ्केरुहद्युति, कवि १४०।

कुज्—कुजु, भ्वा, प। स्तेयम्।

अपहरणम्। कोजति। चुकोज। कोजिता। अकोजीत्। (ङ) कोजित्वा, कुक्वा। कुक्तः।

कुञ्च्—क्रुञ्च्—कुन्च—क्रुन्च।

भ्वा, प। १ कौटिल्यम्। कुटिलीकरणम्। कुटिलीभावः। २अल्पीभावः। अल्पीकरणम्। लट् कुञ्चति। लिट् चुकुञ्च। लुट् कुञ्चिता। लृट् कुञ्चिष्यति। आशिषि, कुच्यात्। लुङ् अकुञ्चीत्। सन् चुकुञ्चिषति। यङ् चोकुच्यते। णिच् कुञ्चयति। कुञ्चितम्। कुञ्चिका। आ—सङ्कोचः। आकुञ्चनम्। आकुञ्चितायाङ्गुलिः, र ६, १५। आकुञ्चितसव्यपादम्, कु ३, ७०। वि—सङ्कोचः। विकुञ्चितललाटभृत्, भारत। क्रुञ्च्, क्रुञ्चति। चुक्रुञ्च। क्रुञ्चिता। क्रुच्यात्। क्रुङ्। क्रुङ्भ्याम्।

कुञ्ज्—(कूज)।

कुट्—तु, प। कौटिल्यम्।

वक्रीकरणम्। लट् कुटति। लिट् चुकोट। चुकुटतुः। चुकुटिथ। लुट् कुटिता, पा १, २, १। लृट् कुटिष्यति। लुङ् अकुटीत्। अकुटिष्टाम्। अकुटिषुः। सन् चुकुटिषति। यङ् चोकुट्यते। चोकोट्टि। णिच् कोटयति। अचूकुटत्। कुटित्वा। कोटः। कोटिः। सम्—निवृत्तिः। केचित् संचुकुटुर्भीताः, भ १४, १०५। संकुटितुम्, भ ७, ८१। सङ्कुटन्ति भयाक्रान्ताः शत्रवो यस्य दर्शनात्, कवि २३४।

कुट्—(त्रुट) चु, आ। छेदः।

कोटयते। कुट (कूट)।

कुटुम्ब्—(तचि) चु, आ। धारणम्। पोषणम्। पालनम्। कुटुम्बयते।

कुट्ट्—चु, प। १ छेदनम्।

२ भर्त्सनम्। ३ पूरणम्। कुट्टयति। अचुकुट्टत्। चु, आ। प्रतापनम्। कुट्टयते।

कुड्—तु, प। १ बाल्यम्।

चापल्यम्। २ भोजनम्, वो। कुडति। चुकोड। चुकुडतुः। कुडिता। अकुडीत्।

कुण्—तु, प। १ शब्दः।

२ उपक्रान्तिः। कुणति। चुकोण। कोणः।

कुण—चु, प। अदन्तः।

१ आमन्त्रणम्। २ केतनम्। ३ सङ्कोचः। कुणयति।

कुण्ड्—कुण्ड्—कुटि, कुडि, भ्वा, प।

विकलीकरणम्। कुण्टति। कुण्डति। कुण्डम्।

कुण्ठ्—कुठि, भ्वा, प।

प्रतिघातः। गतिप्रतिघातः। कुण्ठति। चुकुण्ठ। कुण्ठिता। अकुण्ठीत्। कुण्ठितास्रोव लक्ष्यते, कु २, २०। कुठि, (गुडि) चु, प। १ वेष्टनम्। २ रक्षणम्। ३ चर्मीकरणम्। कुण्ठयति। कुण्ठः।

कुण्ड्—कुडि, भ्वा, आ । दाहः ।

कुण्डते । चु, प । रक्षणम् । कुण्डयति । भ्वा, प । वैकल्यम् (कुण्ट) । कुण्डा । कुण्डम् ।

कुत्स्—चु, आ । कुत्सा ।

अवक्षेपः । कुत्सयते । कुत्सयति, वो । यो न कुत्सयते कुत्सां न च कुत्सति निर्धनम्, कवि २४६ । हलायुधमते भ्वादिरपि ।

कुथ्—दि, प । पूतीभावः ।

दौर्गन्ध्यम् । लट् कुथ्यति । लिट् चुकोथ । चुकुथतुः । लुट् कोथिता । लृट् कोथिष्यति । लुङ् अकोथीत् । कोथित्वा । कुथितः ।

कुथ्—क्रया, प (कुन्थ) ।

'कुद' चु, प (कुन्द्र) ।

कुन्थ्—कुथि, भ्वा, प । १ हिंसा ।

२ संक्लेशनम् । कुन्थ्, कुथ्, क्रया, प । १ संश्लेषणम् । २ संक्लेशः । लट् कुन्थति । कुथ्नाति । कुथ्नीतः । कुथ्नन्ति । न कुथ्नाति बभुचार्त्तः श्रोतार्त्तश्च न कुन्थति । यस्य राष्ट्रे धनाढ्यो वा मृतः कोऽपि न कुथ्यति ॥ कवि १२४ । लिङ् कुथ्नीयात् । लङ् अकुथ्नात् । लिट् चुकुन्थ । चुकोथ । लुट् कुन्थिता । कोथिता । आशिषि, भ्वा, कुन्थ्यात् । क्रया, कुथ्यात् । कुन्थनम् ।

कुन्द्र्—कुद्रि, चु, प ।

अनृतभाषणम् । असत्यकथनम् । कुन्द्रयति । अचुकुन्द्रत् । गुद्रि, गुन्द्रयति । कुट्ट, कोदयति इति केचित् ।

कुप्—दि, प । कोपः । क्रोधः ।

लट् कुप्यति, देवदत्ताय कुप्यति, पा १, ४, ३७ । यो न कुप्यति विप्राय कुप्यते च महाप्रभुः । प्रकोपयत्यसौ राजा यस्तेन सदृशो जनः ॥ कवि १५८ । लिट् चुकोप, चुकोप तस्मै स भृशम्, र ३, ५८ । लुट् कोपिता । लृट् कोपिष्यति । लुङ् अकुपत् । अकुपताम् । सन् चुकुपिषति, चुकोपिषति । यङ् चोकुप्यते । चोकोप्ति । णिच् कोपयति । कुप, चु, प । दीप्तिः । कोपयति । कोपः । कुपितः । कोपनः । अति, प्र—अतिकोपः । अत्यकुपत्, भ १५, ५५ ।

कुमार—चु, प । अदन्तः । क्रीड़ा ।

कुमारयति । अचुकुमारत् । कुमाल इत्येके । कुमालयति । कुमारः ।

कुम्ब्—कुवि, भ्वा, चु, प ।

आच्छादनम् । कुम्बति । कुम्बयति । कुपि, कुम्पति । कुम्पयति । कुभि, कुम्भति । कुम्भयति । इति काश्यपादयः ।

कुर्—तु, प । शब्दः ।

कुरति । चुकोर । कोरिता । आशिषि, कूर्य्यात् । दीर्घनिषेधस्तु करोतेरेव, की १५२ ।

कुर्द्—खुर्द्—गुर्द्—भ्वा, आ ।

क्रीड़ा । कूर्दते, पा ८, २, ७८ । खूर्दते । गूर्दते । चुकूर्दे । कूर्दिता । कूर्दिष्यते । अकूर्दिष्ट, भ १५, ४५ । चुकूर्दिरे, भ १४, ६, ७७ । कूर्दनम् । कूर्दितः । दीर्घत्वमत्र कैश्चिन्नेष्यते । कुर्दते खुर्दते इति प्रदीपः ।

कुल्—भ्वा, प । १ संघातः ।

राशीकरणम् । २ बन्धुभावः । मैत्रीकरणम् । लट् कोलति । लिट् चुकोल । लुट् कोलिता । लुङ् अकोलीत् । कुलितः । आकुलितः । व्याकुलितः । कोलः । कुलम् ।

कुश्—दि, प (कुस) । योगः ।

कुंश—कुञ्चि, चु, प, वो । दीप्तिः ।

कुंशयति । कुंशति ।

कुष्—क्रया, प । निष्कर्षः ।

बहिष्करणम् । निःसारणम् । लट् कुष्णाति । कुष्णीतः । कुष्णन्ति । हि कुषाण । लिङ् कुष्णीयात् । लङ् अकुष्णात् । लिट् चुकोष । लुट् कोषिता । लृट् कोषिष्यति । लुङ् अकोषीत् । अकोषिष्टाम् । अकोषिषुः । अकुष्णात् प्राणान् वनौकसाम्, भ १७, ८० । शिवाः कुष्णन्ति मांसानि, भ १८, १० । कर्मकर्त्तरि, कुष्यति । कुष्यते पादः स्वयमेव, पा ३, १, ८० । सन् चुकोषिषति, चुकुषिषति, पा १, २, २६ । यङ् चोकुष्यते । चोकोष्टि । णिच् कोषयति । कुषित्वा पा । कुषितः । कुषित्वा जगतः सारम्, भ ७, ८५ । निर्—बहिर्निःसारणम् । निष्कोष्टा, निष्कोषिता, पा ७, २, ४६ । निष्कोच्यति, निष्कोषिष्यति । निरकुचत् । निरकोषीत् । निष्कोषितव्यान् निष्कोष्टुं प्राणान् दक्षमुखात्मजात्, भ ८, ३० । कीटनिष्कुषितं धनुः, भ ५, ४२ । उपान्तयोर्निष्कुषितं विहङ्गैर्भुजच्छेदम्, र ७, ५० ।

कुस्—कुश्—दि, प । योगः ।

कुस्यति । कुश्यति । चुकोस । अकुसत् ।

कुंस्—कुसि (कुप) च, प ।

दीप्तिः । कुंसयति । कुंसति । क्रंस, क्रंसयति । क्रंसति, वो ।

कुस्म्—चु, आ । कुत्सितस्मयः ।

कुत्सितहासः । कुस्मयते । अचुकुस्मत । बुद्धिकरणकदर्शनमिति दुर्गादासः । कुस्मयते जनः बुद्धया पश्यति) कुदृष्टिः । कुस्मयते युवतीं कामुकः । अथवा कुस्मेति प्रातिपदिकं ततो धात्वर्थे णिच्, को १७७ । कुशब्दपूर्वकस्मिधातुरित्यपि कश्चित् ।

कुह—चु, आ । अदन्तः ।

विस्मापनम् । कुहयते, कुहयते कुहकेनेन्द्रजालिको लोकमिति दुर्गादासः ।

कू—तु, आ । (कु) शब्दः ।

कुवते । क्रया, प इति हलायुधः । श्रुतिपुटपरिपेयं क्रौञ्चचक्रं कुनानि, कवि १७ ।

कूज्—कुज्—कुजि, चन्द्रमते ।

भ्वा, प । अव्यक्तशब्दः । कूजनम् । लट् कूजति । कुज्जति । लिट् चुकूज, चुकूजे कलहंसमण्डली, नै १, २७ । पुंस्कोकिलो यन्मधुरं चुकूज, कु ३, ३२ । लुट् कूजिता । लुङ् अकूजीत् । अकूजिष्टाम् । अकूजिषुः । सन् चुकूजिषति । यङ् चोकूज्यते । कोकूक्ति । णिच् कूजयति । कूजितम् । कूजनम् । स कीचकैर्मारुतपूर्णरन्ध्रैः कूजद्भिः, र २, १२ । कोकिलकूजित-कुञ्जकुटीरे, गीतगो १, २८ । उप—चक्रवाकोपकूजिता ह्रदिनी, भारत । वि—विहगविकूजितवन्दिमङ्गलानि, र ९, ७१ ।

कूट्—चु, आ । १ आप्रदानम् ।

२ अप्रदानम् । ३ अवसादनम् । अप्रसन्नीभावः । कूटयते । कुट् कोटयते इति मैत्रेयः । कूट चु, प । अदन्तः । परितापः । आमन्त्रणम् । यः कूटयति यवूनां गजघटाः, कविः २३४ ।

कूड्—तु, प (कूड) । सान्द्रता ।

कूण्—चु, आ । सङ्कोचः ।

कूणयते । कण, कागयते । कूण—चु, प अदन्तः । सङ्कोचः । कूणयति ।

कूल्—भ्वा, प । आवरणम् ।

वूलति । चुकूल । वूलिता । अकू-

लौत्। कूलम्। अनुकूलः। प्रतिकूलः। यश्चामुं प्रतिकूलति, कवि ८७।

क्ष—क्षञ्, भ्वा, उ, वो। करणम्।

करति। ०ते। कचार। चक्रे।

क्ष—क्षञ्, स्वा, उ। हिंसा।

क्षणोति। क्षणुते। क्षणोति किरणं यत्नोः ४४, युद्धे क्षणोति यत्नूणां वारणान् कवि १३७। चकार। निर्—भञ्जनम्। शक्तिर्निरकारि मे (भग्ना), भ १५,५४। कारणा। कारागृहम्।

क्ष—ङ्, क्षञ्, तना, उ।

करणम्। विधानम्। अनुष्ठानम्। लट् करोति। कुरुतः, पा ६,४,११०। कुर्वन्ति, पा ८,२,९८। कुर्वः, पा ६,४,१०८। कुरुते। कुर्वाते। कुर्वते। लिङ् कुर्य्यात्, पा ६,४,१०९। कुर्वीत। लोट् करोतु। कुरु। करवाणि। लङ् अकरोत्। अकुरुताम्। अकुर्वन्। अकरवम्। अकुरुत। अकुर्वत। अकुर्वि। लिट् चकार। चक्रतुः। चकर्थ। चक्रव। चक्रे। चक्राढ्वे। लुट् कर्त्ता। लृट् करिष्यति। ०ते। आशिषि, क्रियात्। क्षषीष्ट, पा १,२,१२। क्षषीढ्वम्। लुङ् अकार्षीत्। अकार्ष्टाम्। अकार्षुः। अक्षत। अक्षषाताम्। अक्षषत। अक्षथाः। अक्षढ्वम्। कर्मणि, क्रियते। कारिता। कारिष्यते। अकारि। देवदत्तः कटं करोति। न च स्वं कुरुते कर्म, मनुः १,५५। पितॄणां कुरुषे कार्य्यम्, भ ६,६३। यत्नं कुरुत, भ ७,९३। धनुः सज्यं कुरु, भ २,५१। उपाग्न्यकुरुतां सख्यम्, भ ६,१०५। ऋषयश्चक्रिरे धर्मम्, मनुः २, १५४। नाकार्षं देवि! विक्रमम्, भ ८, ११३। यदकार्षीत् स रक्षसाम्, भ १५,९। कर्म व्याधस्यापि विगर्हितं मां घ्नता भवताऽकारि, भ ६,१२९। तैर्दिषोऽकारिषताकुलाः, भ १५,७६। क्षषीढ्वं कर्त्तुरानन्दम्, भ ९, ७७। सन् चिकीर्षति। ०ते, पा १,२, ९। यङ् चेक्रीयते, पा ७,४,२७। चर्करीति। चरिकरीति। चरीकरीति। चर्कर्त्ति। चरिकर्त्ति। चरीकर्त्ति, पा ७,४,९२। णिच् कारयति। ०ते। अचीकरत्। ०त, पा ३,१,४८। ७,४, ९३। कुर्वन्। कुर्वाणः। कृत्यं, कार्य्यम्। कर्त्तव्यम्। करणीयम्। कृत्। कृतः। कारः। करणम्। कृत्वा। ०कृत्य। कर्त्तुम्। उच्चैःकारम्। प्रियङ्करः। अलङ्करिष्णुः। कुम्भकारः। शब्दकारः। सुखकरः। कारकः। कर्त्ता। कारुः। कर्म। कृत्या। क्रिया। इत्यादि। तां राजकृत्वा, भ ६,१३०। तां हस्तेकृत्य (स्वीकृत्य), भ ५,१६। पा १,४,७७। पाणौकृत्य। उरसिकृत्य। मनसिकृत्य। जीविकाकृत्य (जीविकामिव कृत्वा)। उपनिषत्कृत्य, पा १, ४, ७९। बुभुजे देवसात् कृत्वा (देवेभ्यो दत्त्वा), भ ४, ९। यमसाच्चक्रतुर्हिषौ, भ ५, ३। अलम्—भूषणम्। अलङ्कृत्य, पा ४, ६४। पन्थानं गताभ्यामलञ्चक्रतुः, र २, ८। आविस्—आविष्करणम्। प्रादुस्—आविष्कारः। पुर—पुरस्कारः। पूजा। अग्रतः करणम्। पुरस्कृता वर्त्मनि पार्थिवेन, र २, २०। पुरस्कृतः सताम्, र ३,४३। तिरस्—तिरस्कारः। भर्त्सनम्। आच्छादनम्। बहिस्—दूरीकरणम्। सत्—आदरः। नमस्—नमस्कारः। मुनित्रयं नमस्कृत्य, कौ ५१। सजूः—सहार्थः। सजूःकृत्य रतिं वसेत्, भ ५,७२। अधि—अधिकारः। नैवाध्यकारिष्महि वेदहत्ते, भ २,३४। प्रहसनम्। अधिचक्रे न यं हरिः, भ ८,२०। पा १,३,३३। अनु—अनुकरणम्। शै-

लाधिपस्यानुचकार लक्ष्मीम्, भ २, ८। न गुरोरनुकुर्वीत गतिभाषितचेष्टितम्, मनुः २,१९९। अप—अपकारः। भर्त्सनम्। अपचक्रे सीताम्, भ ८,२०। पा १, ३,३२। कस्यापकरोति किञ्चित्, रामा। आ—णिच् इङ्गितम्। आह्वानम्। आकारय मुनीन् भोजनाय, रामा। आकारितः। अत्या—अत्याकारोऽधिक्षेपः। गार्गिकया अत्याकुरुते, कौ ६५७। अपा—अपसारणम्। शिवा भुजच्छेदमपाचकार, र ७, ५०। स कथं शक्यते ऽस्माभिरपाकर्तुं बलादितः, भारत। उदा—भर्त्सनम्। श्येनो वर्त्तिकामुदाकुरुते, पा १, ३, ३२। उपा—संस्कारपूर्वकवेदग्रहणम्। संस्कारपूर्वकपशुहननम्। सौमित्रे! गोसहस्रमुपाकुरु, रामा। उपाकृत्य, मनुः ४, ९५। निरा—निराकरणम्। तेन भ्राता निराकृतः, भ ६, १००। यौर्भानुशीतांशुनिराकृता, भ ३, ९। व्या—व्याख्या। ग्रन्थानधीत्य व्याकर्त्तुम्, मा २, २६। हृद्—हिंसा। हृत्कुरुते, पा १, ३, ३२। उप—उपकारः। सेवा। उपकुर्वन्तमत्यर्थम्, भ ८, १८। हरिमुपकुरुते, पा १, ३, ३२। प्रतियत्नः। एधोदकस्योपस्कुरुते, पा ६, २, १३९। भूषणम्। उपस्कृता कन्या। विकृतम्। उपस्कृतं भुङ्क्ते। समवायः। उपस्कृता ब्राह्मणाः। वाक्याध्याहारः। उपस्कृतं ब्रूते। नि—विनि—निकारः। वचनम्। यो ज्येष्ठो विनिकुर्वीत लोभाद् भ्रातॄन्, मनुः ९, २१३। परा—परिहरणम्। ता हनूमान् पराकुर्वन्नगमत्, भ ८, ५०। परि—परिस्कारः, पा ६, १, १३७। पर्य्यस्करोत्, पा ८, ३, ७१। प्र—अनुष्ठानम्। सम्प्रहारं प्रचक्रतुः, भ २, ३९। प्रकथनम्। गाथाः प्रकुरुते, पा १, ३, ३२। उपयोगः। अतं प्रकुरुते साहसिक्यम्। परदारान् प्रकुरुते। कुलभार्य्यां प्रकुर्वाणः, भ ८, १९। विप्र—पीड़ा। रक्षोविप्रकृतौ, र १०, ७४। त्वया विप्रकृतस्तैद्यः, मा २, ३८। तेन विप्रकृता दिवौकसः, कु २, १। प्रति—प्रतिकारः। प्रतिकुर्य्याद् यथोचितम्, हितोप। वि—विकारः। छात्रा विकुर्वते, पा १, ३, ३५। स्वरान् विकुरुते। चित्तं विकरोति कामः, पा १, ३, ३४। चेतांसि विक्रियन्ते, कु १, ६०। सम्—संस्कारः। संस्करोति, पा ६, १, १३७। सञ्चस्कार। सञ्चस्करिथ। सञ्चस्करिव। संस्क्रियात्। संस्कृषीष्ट। समस्कृत। समस्कृषाताम्। बाली सञ्चस्कार यथाविधि गुरुः, र १५, ३१।

क्षड्—तु, प। घनत्वम्।

सान्द्रता। लट् क्षडति। लिट् चक्षर्ड। लुट् क्षडिता। लुङ् अक्षडीत्। कूड्, कूडति, वो।

क्षत्—क्षतौ, तु, प। छेदनम्।

लट् क्षन्नति, पा ७, १, ५९। क्षन्नत्यरिशिरांसि सः, कवि १२२। तां हिधाक्षन्नच्छिलीमुखैः, भ १७, ९१। लिट् चक्षर्त्त। चक्षततुः। लुट् कर्त्तिता। लृट् कर्त्तिष्यति। कर्त्स्यति, पा ७, २, ५७। लुङ् अकर्त्तीत्। अकर्त्तिष्टाम्। अकर्त्तिषुः। अकर्त्तीद्दिहान् विदिषाम्, भ १५, ८७। रणे कर्त्स्यति गात्राणि, भ १६, १५। कोऽन्योऽकर्त्स्यत् प्राणान् सुरद्विषाम्, भ २१, १७। भुजौ चक्षततुस्तस्य, भ ६, ४५। सन् चिकर्त्तिषति। चिकर्त्सति, पा ७, २, ५७। यङ् चरीक्षर्त्यते। चरीकर्त्तिं। चरिकर्त्तिं। चर्कर्त्तिं। चर्करीति। णिच् कर्त्तयति। अचकर्त्तत्। अचीक्षतत्। (ई)

कृत्तम्। कृत्तिः। कर्त्तनम्। कृन्तनमपि। विरहिनिकृन्तनेति जयदेवः। अव—छेदनम्। स्निग्धमस्यावकर्त्तयेत्, मनुः ८, २८१। उत्—उत्कर्त्तनम्। निष्कोषणम्। खण्डयित्वा वहिष्करणम्। उत्कृत्योत्कृत्य गर्भानपि शकलयतः, महाना २, ८। नि—कुत्सितकर्त्तनम्। छेदनम्। न्यकृन्तं शक्रधाराभिः, भ १७, १२। निर्—उत्कर्त्तनम्। अलाबुमध्यान्निष्कृत्य बीजम्, भारत।

कृत्—कृती, रु, प। वेष्टनम्।

लट् कृणत्ति। कृन्तः। कृन्तन्ति, यं कृन्तन्ति गुणग्रामाः, कवि १२२। लङ् अकृणत्। अकृन्ताम्। शेषं पूर्ववत्।

कृन्व्—कृवि, भ्वा, प। १ हिंसा।

२ करणम्। ३ गमनम्। लट् कृणोति। कृणुतः। कृण्वन्ति, पा ३, १, ८०। लिङ् कृण्यात्। लिट् चकृन्व। चकृन्वतुः। लुट् कृन्विता।

कृप—(क्लृप्)।

कृप—अदन्तः। चु, प। दुर्बलता।

नासौ कृपयति प्रभुः, कवि २३५।

कृश्—दि, प। तनूकरणम्।

कार्श्यम्। लट् कृश्यति। लिट् चकर्श। चकृशतुः। लुट् कर्शिता। लृट् कर्शिष्यति। लुङ् अकृशत्। कृशित्वा, कर्शित्वा, पा १, २, २५। क्त कृशः, पा ८, २, ५५। कृश्यति चन्द्रं कृष्णपक्षे इति दुर्गादासः। शोककर्शितः, रामा।

कृष्—भ्वा, प। तु, उ। विलेखनम्।

आकर्षणम्। प्रापणम्। लट् कर्षति। कृषति। ०ते। कर्षति शाखां ग्रामम्। ग्राहो जले गजेन्द्रमपि कर्षति, हितोपः। सुखं कृषति शालेयमित्तुच्चेत्रच्च कर्षति, कवि १८२। लिट् चकर्ष। चकृषे। प्रसह्य सिंहः किल तां चकर्ष, र २, २७। लुट् कर्ष्टा, क्रष्टा। लृट् कर्ष्यति। ०ते। क्रक्ष्यति। ०ते, पा ६, १, ५८। लुङ् अक्राक्षीत्। अक्राष्टाम्। अक्राक्षुः। अकार्क्षीत्। अकार्ष्टाम्। अकार्क्षुः। अकृक्षत्। अकृक्षताम्। अकृक्षन्। अकृष्ट। अकृक्षाताम्। अकृक्षत। अकृक्षत। अकृक्षाताम्। अकृक्षन्त, कौ २४८। तं हस्ताभ्यामक्राक्षीत्, भ १५, ४७। कर्मणि, कृष्यते। अकर्षि। सन् चिकृक्षति। ०ते। यङ् चरीकृष्यते। चरीकर्ष्टि। चरीक्रष्टि। णिच् कर्षयति। अचकर्षत्। अचीकृषत्। कृष्टः। कृष्टिः। कर्षणम्। अनु, आ, वि—आकर्षणम्। धनुर्व्यकार्क्षीत्, २, ५३। अप—अपकर्षः। अपसारणम्। उद्—उत्कर्षः। निर्—निष्कर्षः। निष्क्रष्टुमर्थं चकमे कुवेरात्, र ५, २६। प्र—प्रकर्षः। विप्र—विप्रकर्षः।

कॄ—तु, प। क्षेपणम्। आच्छादनम्। व्याप्तनम्। लट् किरति, पा ७, १, १००। नरि नरि किरति द्राक् शायकान् पुष्पधन्वा। सौमित्रिमकिरद्बाणैः, भ १७, ४२। लिट् चकार। चकरतुः। दिशश्च पुष्पैश्चकरुः, भ ३, ५। चकरिथ। लुट् करिता, करीता, पा ७, २, ३८। करिष्यति, करीष्यति। आशिषि, कीर्य्यात्। लुङ् अकारीत्। अकारिष्टाम्। अकारिषुः। अकारिष्टां गिरौन्, भ १५, ८०। कर्मणि, कीर्य्यते। सन् चिकरिषति, पा ७, २, ७५। यङ् चेकीर्य्यते। चाकर्त्ति। णिच् कारयति। कीर्णः। कीर्णिः। विकिरः। विष्किरः। उत्करो धान्यानाम्, उत्करो रजसाम्। अप—आलिख्य विक्षेपणम्। अपस्किरते वृषभो हृष्टः। कुक्कुटो भक्षार्थी, श्वा

आश्रयार्थी, पा ६, १, १४२। अव—आच्छादनम्। वर्षणम्। कपिं बाणैरवाकिरत्, भ ९, ३४। अवाकिरन् तं लाजैः, र ४, २८। आ—व्यापनम्। आकीर्णम्, र १, ५१। उप, प्रति—छेदनम्। हिंसा। उपस्किरति। प्रतिस्कीर्णम्, पा ६, १, १४०, १६१। उरोविदारं प्रतिचस्करे नखैः, मा १, ४७। उद्—उत्क्षेपणम्। रजस्तुरगोत्कीर्णम्, र १, ४३। पुष्परेणूत्किरैर्वातैः, र १, ३९। समुद्—वेधनम्। मणौ वज्रसमुत्कीर्णे, र १, ४। वि—विक्षेपः। तण्डुलकणान् विकीर्य्य, हितोप। द्रुमान् विचकरुः, भ १४, २५। विनि—निक्षेपः। विनिकीर्य्य माम्, कु ४, ६। प्र—प्रक्षेपः। विस्तारः। वार्तन प्रकीर्णास्तवकोच्चयाः, भ ८, ६६। सम्—मिश्रणम्। वर्णाः सङ्कीर्णाः, मनुः १, ११६। क्षत्रिया वैश्याः सङ्कीर्य्यन्ते परस्परम्, भारत।

कॄ—कॄञ्, क्रया, उ। कॄ, क्रया, प।

हिंसा। क्रुणाति। क्रुणीते। लिङादौ पूर्ववत्। कॄ, चु, आ। ज्ञानम्। कारयते। बाणावलिं किरत्याजौ क्रुणाति तुरगान् रणे, कवि ४४। द्वितीयात्तु कर्त्तृगामिफलेऽपि न तङ्।

कॄत्—चु, प। संशब्दनम्।

कीर्त्तनम्। कीर्त्तयति, पा ७, १, १०१। कीर्त्तयन्ति च गोष्ठीषु यदृगुणानमूरोगणाः, कवि १२२। अचिकीर्त्तत्। अचीकृतत्। भ्रातुरचिकीर्त्तद्विक्रमम्, भ १५, ७२। विप्रसेवैव शूद्रस्य प्रशस्तं कर्म कीर्त्यते, मनुः १०, १२३।

कॢप्—कृपू, भ्वा, आ। सामर्थ्यम्।

योग्यता। पर्य्याप्तिः। सम्पत्तिः। उत्पत्तिः। लट् कल्पते, पा ८, २, १८। प्रतिकारविधानमायुषः सति शेषे हि फलाय कल्पते, र ८, ४१। सूर्य्ये तपत्यावरणाय दृष्टेः कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्रम्, र ५, १३। योऽर्थिनामीप्सितप्राप्त्यै कल्पते कल्पद्रुवत्। न कल्पयति मिथ्यार्थं शिरः कल्पति विद्विषाम्॥ कवि ८३। लिट् चक्लृपे। चक्लृपिषे। चकल्पसे। चक्लृपे चाश्वकुञ्जरम् (सज्जीकृतम्), भ १४, ८९। लुट् कल्पासि। कल्पितासे कल्पितासि, पा १, ३, ९१। ७, २, ६०। लट् कल्पिष्यति। कल्पिष्यते कल्पिष्यते। लङ् अकल्पिष्यत्। अकल्पिष्यत अकल्पिष्यथत। कल्पिष्यते हरेः प्रीतिः, भ १६, १२। तोषः सीतायास्तेतसि कल्पिष्यति, भ ९, ४५। वितथैव नोऽकल्पिष्यदुदयतिः, भ १८, ६९। आशिषि, कल्पिषीष्ट, क्लृपिषीष्ट। लुङ् अक्लृपत्। अकल्पिष्ट। अक्लृप्त। अकल्पिषाताम्। अक्लृप्साताम्। अकल्पिषत। अक्लृप्सत। सन् चिक्लृप्सति। चिकल्पिषते, पा १, ३, ९२। ७, २, ५९। यङ् चलीक्लृप्यते। चलीकल्प्ति। णिच् कल्पयति। क्लृप, चु, प। १ मिश्रणम्। २ चित्रीकरणम्। ३ कल्पनम्। कल्पयति। कल्पति, वो। विन्यासः। रचना। निर्माणम्। निरूपणम्। आसनं कल्पयामास, भारत। किङ्करैः कल्पितम्, भ १२, १२। इदं शास्त्रमकल्पयत्, मनुः १, १०२। न्यग्रोधमेव वासार्थं कल्पयामासतुः, रामा। तेषां कर्माण्यकल्पयत्, मनुः १, ८७। कल्पितः। कल्पयित्वा। कल्पना। क्लृप्तः। क्लृप्तिः। अनु—अनुकल्पः। अव—सम्भावना। अवकल्पयामि भवान् भुञ्जीत। नावकल्पमिदं ग्लायेत् यत् क्लृप्तेषु भवान्यि, भट्टिः। उप—विन्यासः। सम्पन्नता। आयोजनम्। आसनेषूप-

क्लृप्तेषु, मनुः ३, २०८। अन्नयायोपकल्पते, मनुः ३, २०२। यौवराज्याय रामस्य सर्वमेवोपकल्पताम्, रामा। परि—करणम्। परिकल्पितसान्निध्या, र ४,६। रिक्थजातं दशधा परिकल्प्य, मनुः ९, १५२। निश्चयः। यं धर्मं परिकल्पयेत्, मनुः १२, ११०। ध्यानलयेन परिकल्प्य भवन्तमतीव दुरापम्, गीतगो ४, ८। प्र—करणम्। अनुष्ठानम्। आयोजनम्। निरूपणम्। प्रक्लृप्तैः, भ २, २९। समानांशान् प्रकल्पयेत्, मनुः ९, ११६। प्रकल्प्स्यति तस्यार्थः (सम्पत्स्यते), भ १६, ११। वि—विकल्पः। संशयः। आदिष्टो न विकल्पेत, हितोप। किं तत् कथं वेति विकल्पयन्तः, भ ११, १०। सम्—संकल्पः। मानसक्रिया। इच्छा। संकल्पितेऽर्थे विहतालभक्तिम्, कु ३, ११।

केत—चु, प। अदन्तः।

१ श्रावणम्। २निमन्त्रणम्। मन्त्रणा, वो।

केप—केपृ, भ्वा, आ। १ कल्पनम्।

२ गतिः। केपते। चिकेपे। केपिता।

केल्—केल्, भ्वा, प। चलनम्।

केलति। च्केल्, च्केलति। चेलृ, चेलति। वेलृ, वेलति। केलः। केला।

केव—केवृ, भ्वा, आ। सेवा।

केवते, वो। क्लेवृ, क्लेवते। खेवृ, खेवते। गेवृ, गेवते।

कै—भ्वा, प। शब्दः।

लट् कायति। लिट् चकौ। चकतुः। लुट् कातो। कास्यति। लुङ् अकासीत्। अकासिष्टाम्।

क्रथ्—भ्वा, प, वो। बधः (क्रथ)।

क्रम्—क्रमु, दि, प। १ क्षरणम्।

कौटिल्यम्। २ दीप्तिः। लट् क्रस्यति। लिट् चक्रास। चक्रसतुः। लृट् क्रसिष्यति। णिच् क्रसयति। घटादिः। (उ) क्रसित्वा क्रस्वा।

क्रंस्—(कुंस) चु, प। दीप्तिः।

क्रु—क्रू—क्रूञ्) क्रा, उ। शब्दः।

क्रूय्—क्रूयी, भ्वा, आ। १ शब्दः।

२क्लेदः। ३दुर्गन्धः, वो। लट् क्रूयते। लिट् चुक्रूये। लुट् क्रूयिता। लुङ् अक्रूयिष्ट। णिच् क्रोपयति, पा ७, ३, ३६। अचुक्रुपत्। चेलक्रोपं हृष्टो देवः, पा ३, ४, ३३। (ई) क्रूतः।

क्लर्—भ्वा, प। कौटिल्यम्।

क्लरति। चक्लार। क्लरिता। अक्लारीत्।

क्लथ्—भ्वा, प। हिंसा।

लट् क्लथति। लिट् चक्लाथ। लुट् क्लथिता। लुङ् अक्लथीत्, अक्लाथीत्। क्लथ्, क्लथति। क्लथ् क्लथति। णिच् क्लाथयति। जासिनि प्रहणेति सूत्रे क्लाथेति मिस्वेऽपि हृद्भिनिपात्यते। मिस्वन्तु निपातनात् परत्वात् चिण्समुज्ञोरिति दीर्घं चरितार्थम्। अक्लाथि, अक्लाथि। क्लथं क्लथम्। क्लाथं क्लाथम्, कौ ८३। क्लथयति। क्लथयति। क्लथ, चु, उ, प, वो। पुनः पुनर्हृष्टीकरणम्। क्लाथयति।

क्लन्द्—क्लदृ—क्लदि, (कदि) भ्वा, आ।

वैक्लव्यम्। विवशता। वैकल्यम्। क्लन्दते। क्लदते। क्लन्दन्ते क्लान्दिशीकाश्च यस्य शत्रवः, कवि ७२। क्लदयति घटादिः।

क्लन्द्—क्लदि, (कदि) भ्वा, प।

१ आह्वानम्। २ रोदनम्। लट् क्लन्दति। मा पितः क्लन्द मा तात,

भारत। क्रन्दत्यशुजलैर्वाग्भिः क्रन्दयन्ति रिपुस्त्रियः, कवि ७२। लिट् चक्रन्द, चक्रन्द क्रोधविह्वला, भ ५, ५। रामेति चक्रन्दुः, भ १४, ४८। ३, २८। लुट् क्रन्दिता। लुङ् अक्रन्दीत्, भ १५, ८५। अक्रन्दिष्टाम्। सन् चिक्रन्दिषति। यङ् चाक्रन्द्यते। चाक्रन्ति। णिच् क्रन्दयति। क्रन्दितः। क्रन्दनम्। आ—आह्वानम्। आर्त्तनादः। रोदनम्। घोरसंग्रामः। आक्रन्दिषुः, भ १५,५०। आक्रंदि, चु, प। निरन्तरशब्दः। आक्रन्दयति यन्त्रम्। आक्रन्दः। संक्रन्दनः।

क्रप्—भ्वा, आ। क्रपा। दया।

क्रपते, क्रपते क्रपणेष्वेव, कवि ३३५। चक्रपे। क्रपिता। णिच् क्रपयति। अचिक्रपत्। अक्रपि, अक्रापि। क्रपा, की ४५२।

क्रम्—क्रसु, भ्वा, प। पादविक्षेपः।

गमनम्। उत्पतनम्। आक्रमणम्। क्रास्यति। क्रामति, पा ३,१,७०। ७, ३,७६। क्रम्यति वो। क्रष्णोरगौ पदा क्रामसि पुच्छदेशे, भारत। लिट् चक्राम। चक्रमतुः। लुट् क्रमिता। लृट् क्रमिष्यति। लुङ् अक्रमीत्। अक्रमिष्टाम्। अक्रमिषुः। अशोकवर्णिकां लवितुमक्रमीत्, भ ६, २३। अप्रतिबन्धोत्साहस्फीततासु आत्मनेपदम्, पा १,३,३८। क्रमते। क्रम्यते। चक्रमे। क्रन्ता, पा ७,२,३६। क्रंस्यते। अक्रंस्त। अक्रंसाताम्। अक्रंसत। शास्त्रे क्रमते बुद्धिः (न प्रतिहन्यते)। व्याकरणाध्ययनाय क्रमते (उत्सहते)। यस्मिन् क्रमन्ते शास्त्राणि (स्फीतानि भवन्ति), पा १, ३,३८। सन् चिक्रमिषति। चिक्रंसते। यङ् चङ्क्रम्यते। चङ्क्रन्ति। णिच् क्रमयति। अचिक्रमत्। संक्रामयतीति केचित्। जरामन्यस्मिन् संक्रामय, भारत। क्रमित्वा, क्रान्त्वा, क्रन्त्वा। क्रान्त्वा क्रान्त्वा स्थितं क्वचित्, भ ५,५१। क्रान्तः। ते क्रान्ताश्चेतसि विस्मयेन, र १४, १७। क्रमं बबन्ध क्रमितुम्, भ २, ६। क्रमणम्। कर्त्तव्येव क्षति कमो नेट्। कर्मणि तु प्रक्रमितव्यम्, की ३१६। अति—अतिक्रमः। उल्लङ्घनम्। व्यति—व्यतिक्रमः। अनु—अनुक्रमः। अनुसरणम्। अप—अपसरणम्। आ—आक्रमणम्। आक्रमते सूर्यः, पा १, ३,४०। उद्—उद्गमनम्। अतिक्रमः। व्यतिक्रमः। व्युद्—व्युत्क्रमः। व्युत्क्रम्य लक्ष्मणमुभौ भरतो ववन्दे, र १३, ७२। भ २२, ३। उप, प्र—आरभः। अम्भोनिधेस्तटमुपाक्रंस्त (गन्तुमारब्धवान्, भ ८, २५। असौ प्रक्रमते योद्धुमेकोऽपि बहुभिः सह। नाक्रम्यन्ति तथाप्येनं विक्रान्ता बहवोऽपि ते॥ कवि १८०। निर्—निष्क्रमः। निर्गमनम्। निरचिक्रमदिच्छातो वानरान्, भ ७,७०। परा—पराक्रमः। खे पराक्रंस्त तूर्णं स्तूनर्नभस्वतः, भ ८, २२। परि—परिक्रमः। वृक्षाद् वृक्षं परिक्रामन्, भ ८, ७०। वि—विक्रमः। जले विक्रममाणाः, भ ८, २४। साधु विक्रमते वाजी। विक्राम्यति सन्धिः (द्विधा भवति), पा १, ३, ४१। मृगान् विध्यन् विचक्रमे, भ ४, ६। सम्—संक्रमणम्। प्रवेशः। प्राप्तिः। णिच् रसातलं संक्रमिते तुरङ्गे, र १३, ३। भ्रमरसंक्रमितेक्षणवृत्तयः, र ६, ५४। अयं पाप इदमकार्य्यं मयि संक्रामयेत्।

क्री—डुक्रीञ्, क्रया, उ। क्रयः।

द्रव्यविनिमयः। लट् क्रीणाति, पा ३, १, ८१। क्रीणीतः, पा ६, ४, ११३।

क्रीणन्ति । क्रीणीते । दत्त्वा शस्त्रप्रहारञ्च तेषां क्रीणाति यः श्रियम्, कवि १३७। लिङ् क्रीणीयात् । लङ् अक्रीणात् । अक्रीणीताम् । अक्रीणन् । अक्रीणीत । अक्रीणत । लिट् चिक्राय । चिक्रयिथ, चिक्रेथ । चिक्रियिव । चिक्रियिषे । चिक्रिये । लुट् क्रेता । क्रेष्यति । ०ते । आशिषि, क्रीयात् । क्रेषीष्ट । लुङ् अक्रैषीत् । अक्रैष्टाम् । अक्रैषुः । अक्रेष्ट । अक्रेषाताम् । अक्रेषत । सन् चिक्रीषति । ०ते । यङ् चेक्रीयते । चेक्रयीति । चेक्रेति । णिच् क्रापयति, पा ६, १, ४८ । अचिक्रपत् । क्रीत्वा । ०क्रीय । क्रीतः । क्रयः । परि—क्रयविशेषः । वेतनस्वीकारः । परिक्रीणीते, पा १, ३, १८ । शतेन परिक्रीतः, पा १, ४, ४४ । सम्भोगाय परिक्रीतः, भ ८, ७८ । वि—विक्रयः । विक्रीणीते । अवक्रीणीते ।

क्रीड्—क्रीड्, भ्वा, प । विहारः ।

क्रीड़ा । लट् क्रीड़ति । क्रीड़न्ति स्म विरा अपि, कवि २३३ । लिट् चिक्रीड़ । चिक्रीड़तुः । लुट् क्रीड़िता । लृट् क्रीड़िष्यति । लुङ् अक्रीड़ीत् । अक्रीड़िष्टाम् । अक्रीड़िषुः । सन् चिक्रीड़िषति । यङ् चेक्रीड्यते । चेक्रीड्टि । णिच् क्रीड़यति । अचिक्रीड़त् । अनु—अनुक्रीड़ते, पा १, ३, २१ । आ—आक्रीड़ते । परि—परिक्रीड़ते । परिक्रीड़स्व, भ ८, १० । सम्—संक्रीड़ते । साधु संक्रीड़मानानि, भ ८, १० । कूजने तु, संक्रीड़ति चक्रम् । क्रीड़ा ।

क्रुञ्च—(क्रुञ्च्) भ्वा, प । कौटिल्यम् ।

क्रुड्—तु, प । निमज्जनम् ।

क्रुडति । चुक्रोड़ । क्रुड़िता । अक्रुडीत् ।

क्रुध्—दि, प । क्रोधः । रोषः ।

लट् देवदत्ताय क्रुध्यन्ति, पा १, ४, ३७ । सीतायै नाक्रुध्यत्, भ ८, ७५ । लिट् चुक्रोध । चुक्रुधतुः । चुक्रोध मारुतिः, भ १४, ८५ । लुट् क्रोद्धा । लृट् क्रोत्स्यति । लुङ् अक्रुधत्, दशाननोऽक्रुधत्, भ १५, १९ । सन् चुक्रुत्सति । यङ् चोक्रुध्यते । चोक्रोद्धि । णिच् क्रोधयति । अचुक्रुधत् । क्रुद्धः । अभि, अनु, प्रति, परि, सम्, देवदत्तमभिक्रुध्यति, पा, १, ४, ३८ । क्रुध्यन्तं न प्रतिक्रुध्येत्, मनुः ६, ४८ । संक्रुध्यसि मृषा माम्, भ ८, ७६ । अपमानं तं यदुनृपा न प्रचुक्रुधुः, मा ।

क्रुन्थ्—क्रया, प, वो । १ श्लेषणम् ।

२क्रोथः । क्रुथ्नाति । चुक्रुन्थ । क्रुन्थिता ।

क्रुश्—भ्वा, प । १ आह्वानम् ।

२ रोदनम् । लट् क्रोशति, एष क्रोशति दात्यूहः, रामा । क्रोशन्त्यस्तं कपिस्त्रियः, भ ६, १२४ । लिट् चुक्रोश । चुक्रुशतुः । चकम्पेऽतीव चुक्रोश, भ १४, ३१ । लुट् क्रोष्टा । लृट् क्रोक्ष्यति । लुङ् अक्रुक्षत् । अक्रुक्षताम् । सन् चुक्रुक्षति । यङ् चोक्रुश्यते । चोक्रुशीति, चोक्रोष्टि । णिच् क्रोशयति । अचुक्रुशत् । अनु—दया । किमनुक्रुश्य वैकल्यमुत्पादयसि । आ—रोदनम् । भर्त्सनम् । तं भीतङ्कारमाक्रुश्य, भ ५, ३९ । उद्, प्र, वि—चीत्कारः । रोदनम् । विचुक्रुशुः केचन साश्रमुच्चैः, भ ३, १० । हा हेति च विचुक्रुशे, भ १४, ४२ । विक्रोश्यन्ति, भ १६, ३२ । व्यक्रुक्षत्, भ १५, ४७ ।

क्रू—क्रूञ् क्रया, उ । शब्दः ।

क्रूणाति । क्रूणीते । क्रविता । क्रू, वो । क्रु इति जैमिनिः । कु इति रमानाथः ।

क्लथ्—(क्रथ्) भ्वा, प । हिंसा ।

क्लान्द्—क्लाद्—क्लादि (कदि) भ्वा, प ।

१ आह्वानम्। २ रोदनम्। क्लद्, क्लादि (कदि) भ्वा, आ। १ वैक्लव्यम्। २ वैकल्यम्। लट् क्लन्दति। ०ते। क्लादते। क्लादयति।

क्लप्—(क्लृप्) चु, प। कथनम्।

क्लम्—क्लमु, दि, प। ग्लानिः।

श्रमः। असामर्थ्यम्। मूर्च्छा। लट् क्लाम्यति। क्लामति, पा ७, ३, ७४, ७५। कायः क्लाम्यति यस्य प्रहरतो रिपून्। क्लामन्ति रिपुसेनाश्च भ्रमाना दिशो दश॥ कवि २२३। लङ्घादाहेन क्लाम्यतु, भ १२, ३८। अक्लाम्यद्रावणः, भ १७, १०२। लिट् चक्लाम, न चक्लाम न विव्यथे, भ ४,१०२,१४,१०१। लुट् क्लमिता। लृट् क्लामिष्यति। लुङ् अक्लमत्। (ड) क्लमित्वा, क्लान्त्वा। क्लान्तः। क्लान्तिः। क्लमः।

क्लव्—भ्वा, आ, वो। भयम्। क्लवते।

क्लिद्—क्लिदू, दि, प। आर्द्रीभावः।

लट् क्लिद्यति, अजस्रमस्रुभिस्तासां क्लिद्यन्ति नयनानि च, कवि १३१। लुद्यन्ति भूमौ क्लिद्यन्ति, भ १८, ११। लिट् चिक्लेद। चिक्लिदतुः। चिक्लेदिथ, चिक्लेत्थ। चिक्लिदिव, चिक्लिद्व। लुट् क्लेत्ता, क्लेदिता। लृट् क्लेत्स्यति, क्लेदिष्यति। लुङ् अक्लिदत्। अक्लिदताम्। सन् चिक्लेदिषति, चिक्लिदिषति, चिक्लित्सति। यङ् चेक्लिद्यते। चेक्लेत्ति। णिच् क्लेदयति। अचिक्लिदत्, रक्तैरचिक्लिदद् भूमिम्, भ १५,४८। क्लेदित्वा, क्लिदित्वा, क्लित्त्वा। क्लिन्नम्, उदकपरिक्लिन्नम्।

क्लिन्द्—क्लिदि, भ्वा, प। वो, ड।

परिदेवनम्। विलापः। शोकः। क्लिन्दति। सुतं भर्त्तारं दुःखार्त्ता क्लिन्दन्ति यदरिस्त्रियः, कवि १३१। आत्मनेपदे शोकार्थः सकर्मकः। क्लिन्दते चैत्रम्। क्लिन्दिता। उभयपदिषयं न पश्यति इति प्रदीपः।

क्लिश्—दि, आ। ड, वो।

क्लेशः। उपतापः। क्लिश्यति। ०ते, क्लिश्यते न च निष्फलम्, कवि ९३। क्त, क्लिशितः, क्लिष्टः, पा ७,२,५०।

क्लिश्—क्लिशू, क्रया, प। पीड़नम्। विबाधनम्। क्लेशः। लट् क्लिश्नाति। क्लिश्नीतः। क्लिश्नन्ति। नेन्द्रियाणि विरुद्धेषु क्लिश्नाति विषमेषु सः, कवि ९३। स क्लिश्नाति भुवनत्रयम्, कु २,४०। शक्रयमेन्द्रौ न क्लिश्नीतः (क्लेशं नानुभवतः), भ १८,३१। लिङ् क्लिश्नीयात्। हि क्लिशान। लङ् अक्लिश्नात्। लिट् चिक्लेश। चिक्लिशतुः। चिक्लेशिथ, चिक्लेष्ठ। नृपात्मजौ चिक्लिशतुः, भ ३,३१। लुट् क्लेशिता, क्लेष्टा। लृट् क्लेशिष्यति, क्लेक्ष्यति। लुङ् अक्लेशीत् पा ७, २, ४। अक्लिशत्, पा ३,१,४५। अक्लेशिष्टाम्। अक्लिक्षताम्। अक्लेशिषुः। अक्लिक्षन्। सन् चिक्लिशिषति, चिक्लेशिषति, चिक्लिक्षति। यङ् चेक्लिश्यते। चेक्लेष्टि। णिच् क्लेशयति। अचिक्लिशत्। भक्तं मां मातिचिक्लिशः, भ ६, १७। क्लिशित्वा, क्लिष्ट्वा। क्लिशितः, क्लिष्टः। क्लिशितवान्, क्लिष्टवान्, पा ७,२,५०।

क्लीब्—क्लीव्—क्लीब, क्लीब, भ्वा, आ।

अधार्ष्ट्यम्। अप्रगल्भता। लट् क्लीबते। क्लीवते। लिट् चिक्लीबे। लुट् क्लीबिता। क्लीवम्।

क्लुङ्—भ्वा, आ। अतिरिति मैत्रः।

क्लेश्—भ्वा, आ। १ अल्पीकरणम्।

२ बाधनम् । पीड़नम् । ३ बधः, वो । कथनं, प्रदीपः । क्लेशते, क्लेशते न ऋषावाक्यम्, कवि ६३ । चिक्लेशे । क्लेशिता । अक्लेशिष्ट ।

क्षण्—(अण्) भ्वा, प । शब्दः ।

क्षणति । चक्षाण । क्षणिता । अक्षणीत्, अक्षाणीत् । अक्षाणिषुश्चतोत्साहाः, भ ६,११ । निक्षाणो निक्षणः क्षाणः क्षणः क्षणनमित्यपि । वीणायाः क्षणिते प्रादेः प्रक्षाणप्रक्षणादय इत्यमरः ।

क्षथ्—क्षथे,—भ्वा, प । निष्पाकः ।

क्षथ्, (क्रथ्) भ्वा, प । हिंसा । लट् क्षथति । लिट् चक्षाथ । लुट् क्षथिता । लृट् क्षथिष्यति । लुङ् (ए) अक्षथीत् । णिच् क्षाथयति । (हिंसायाम्) क्षथयति । क्षाथः । क्षथः ।

क्षेल्—(केल्) भ्वा, प । गतिः ।

क्षञ्—क्षज्—जङ्—क्षजि—

"क्षज्, जक्षि" भ्वा, आ । १ गतिः । २ दानम् । क्षञ्जते । लिट् चक्षञ्जे । लुट् क्षञ्जिता । लुङ् अक्षञ्जिष्ट । सन् चिक्षञ्जिषते । यङ् चाक्षञ्ज्यते । णिच् क्षञ्जयति । अचक्षञ्जत् । कर्मणि, अक्षञ्जि, अक्षाञ्जि, पा ६, ४, ८२ । णमुल् क्षञ्जं क्षञ्जम्, क्षाञ्जं क्षाञ्जम् । क्षजते । क्षजयति । घटादिः । क्षजि, चु, प । क्लेशजीवनम् । आतङ्कः, वो । क्षञ्जयति । क्षजते । जङ्क्षते ।

क्षण्—क्षणु, तना, उ । हिंसा ।

लट् क्षणोति । क्षणुते । लिट् चक्षाण । चक्षणे । लुट् क्षणिता । लृट् क्षणिष्यति । ०ते । लुङ् अक्षणीत्, पा ७,२,७ । अक्षणिष्टाम् । अक्षणिषुः । अक्षणिष्ट अक्षत । अक्षणिष्ठाः, अक्षथाः । सन् चिक्षणिषति । ०ते । यङ् चङ्क्षण्यते । चङ्क्षणिट । उपदेशेऽस्य नकार इति धातुपारायणे व्याख्यातं तेन यङ्लुकि चङ्क्षन्ति । णिच् क्षाणयति । (उ) क्षणित्वा, क्षत्वा । क्षतः, पा ६, ४,३७ । क्षतिः । शोकान्धकारक्षतसर्वचेष्टा, भ ३,१९ । परिक्षतः । विक्षतः ।

क्षप—चु, प । अदन्तः ।

प्रेरणम् । क्षेपणम् । क्षपयति । पक्षिणीं क्षपयेन्निशाम्, स्मृतिः ।

क्षम्—क्षमूष्, भ्वा, आ ।

क्षमू, दि, प । सहनम् । मर्षणम् । क्षमा । शक्तिः । लट् क्षमते । क्षाम्यति, पा ७,३,७४ । क्षमते यो दरिद्राणां दुष्टान् न क्षमति प्रभुः । न क्षाम्यति क्षितीशानामपराधकणामपि ॥ कवि १६७ । लिट् चक्षाम । चक्षमतुः । चक्षमिथ, चक्षन्थ । चक्षमिव, चक्षख, पा ८, २, ६५ । चक्षमिव, चक्षण्म । चक्षमे । चक्षमिषे, चक्षंसे । चक्षमिध्वे, चक्षन्ध्वे । लुट् क्षमिता, क्षन्ता । लृट् क्षमिष्यति । ०ते । क्षंस्यति । ०ते । लुङ् अक्षमत् । अक्षमिष्ट, अक्षंस्त । अक्षमिषाताम्, अक्षंसाताम् । अक्षमिषत, अक्षंसत । आशिषि, क्षम्यात् । क्षमिषीष्ट, क्षंसीष्ट । ऋते रवेः क्षालयितुं क्षमेत कः, क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः, मा १,३८ । चक्षमिरे क्षीरलाभं न तस्य, र ७, ३४ । अक्षंस्त न तत्, भ १५,१५ । कामं क्षाम्यतु यः क्षमी, मा २,४३ । सन् चिक्षमिषति । ०ते । चिक्षंसति । ०ते । यङ् चङ्क्षम्यते । चङ्क्षन्ति । णिच् क्षमयति । अचिक्षमत् । क्षमित्वा, क्षान्त्वा । क्षान्तः । क्षमितुम्, क्षन्तुम्, तद्वान् क्षन्तुमर्हति । क्षान्तिः । क्षमा । अर्षतः क्षाम्यतेः

क्षान्तिः क्षमूषः क्षमतेः क्षमा, कौ १४२। क्षान्तः। क्षान्तवान्।

क्षम्—क्षपि, चु, प। १ क्षान्तिः।

२ कान्तिः। क्षम्पयति। क्षम्पति।

क्षर्—भ्वा, प। १ सञ्चलनम्।

२ क्षरणम्। ३ मोचनम्। लट् क्षरति। लिट् चक्षार। चक्षरतुः। लुट् क्षरिता। लृट् क्षरिष्यति। लुङ् अक्षारीत्। अक्षारिष्टाम्। अक्षारिषुः शराभ्यांसि तस्मिन् रक्षःपयोधराः, भ ६, ८। मदधाराः क्षरन्तु गजेषु, र १३, ७४। सन् चिक्षरिषति। यङ् चाक्षर्यते। चाक्षर्त्ति। णिच् क्षारयति। आ—आक्षारितः क्षारितोऽभिशस्त इत्यमरः। प्र—प्रच्युतिः। खादुल्काः प्रचक्षरुः, भ १४, ६७।

क्षल्—भ्वा, प, वो। १ सञ्चलनम्।

२ सञ्चयः। क्षलति। क्षल, चु, प। शौचक्रिया। शोधनम्। क्षालनम्। क्षालयति। क्षालयामि तव पादपङ्कजे, महाना ३, ४५। अचिक्षलत्। क्षालयितुं क्षमेत कः, मा १, ३८। प्र—प्रक्षालनम्। प्रक्षालनाद्धि पङ्कस्य दूरादस्पर्शनं वरम्। हस्तौ पादौ मुखं प्रक्षाल्य, मनुः ३, २६४। वि—विक्षालितः, र ५, ४४।

क्षि—भ्वा, प। क्षयः।

ऐश्वर्य्यम्, वो। अयमकर्मकः। अन्तर्भाविण्यर्थस्तु सकर्मकः, कौ ५०। क्षयति, क्षयति प्रत्यहं पापम्, कवि ११२। चिक्षाय। चिक्षियतुः। चिक्षयिथः, चिक्षेथ। चिक्षियिव। चिक्षियिम। क्षेता। क्षीयात्। अक्षैषीत्। क्षीणः। क्षितः। क्षेता।

क्षि—तु, प। १ निवासः। २ गतिः।

क्षियति, यशः क्षियति वो दस्योर्दस्य, कवि ११२। चिक्षाय। आसीन्महीक्षितामाद्यः, र १, ११। (महीं क्षियन्ति ईशते इति महीक्षितः। क्षिधातोरैश्वर्य्यार्थात् क्विप्) मल्लीनाथः। वोपदेवस्तु भ्वादिगणीयस्यैव ऐश्वर्य्यार्थमाह।

क्षि—क्षा, प। क्षिष् (क्षीष्) क्रया, प।

हिंसा। वधः। लट् क्षिणोति। क्षिणुतः। न तद् यशः शस्त्रभृतां क्षिणोति, र २, ४०। अक्षिणोद् धुर्य्यान्, भ १७, ६६, ६०। धनुरक्षिणोः, र ११, ७१। क्षिष्, क्षिणाति, क्षिणाति दुरितं दृष्ट्वा क्षिणोत्यर्थैश्च दुःस्थितान्, कवि ११०। क्षिणीतः। क्षिणन्ति। क्षिणीयात्। अक्षिणात्। लिट् चिक्षाय। चिक्षियतुः। चिक्षयिथ, चिक्षेथ। चिक्षियिव। लुट् क्षेता। लृट् क्षेष्यति। आशिषि, क्षीयात्। लुङ् अक्षैषीत्। अक्षैष्टाम्। अक्षैषुः। कर्म्मणि, क्षीयते। सन् चिक्षीषति। यङ् चेक्षीयते। चेक्षयीति। चेक्षति। णिच् क्षाययति। क्षित्वा। ०क्षीय, पा ६, ४, ५८। क्षीणः। प्रक्षीणः। उपक्षीणः, पा ६, ४, ६०। (आक्रोशे) क्षीणायुः क्षितायुर्जाल्मः। (दैन्ये) क्षितः क्षीणोऽयं तपस्वी, पा ६, ४, ६१। क्षितः कामो मया, कौ ३४६। क्षयः। क्षितिः। (ष) क्षिया। येन क्षयिततमसा (क्षयशब्दाच्चिच्), शकु ४, ४५।

क्षिण्—क्षिणु (क्षणु) तना, उ।

हिंसा। (लट् क्षेणोति, क्षेणुते)। क्षिणोति। क्षिणुते, भृत्यानां नित्यमज्ञानं क्षिणुते यः सदुक्तिभिः, कवि ११०। लिङ् क्षेणुयात्। लङ् अक्षेणोत्। लिट

क्षिक्षेण। लुट् क्षेक्षिता। लुङ् अक्षेक्षीत्। अक्षित, अक्षेक्षिष्ट। क्षिणु, क्षिणोति। यङ्लुकि, चेक्षेन्ति।

क्षिप्—दि, प, तु, उ। प्रेरणम्।

क्षेपणम्। त्यागः। लट् क्षिप्यति। क्षिपति। ०ते। क्षिपति प्रतिपक्षाणां हृदये यो भयं ध्रुवम्। क्षिप्यति श्रोत्रियाणाञ्च निष्कं पुष्कलमालये॥ कवि १८३। अस्त्रं वारुणमक्षिप्यदक्षिपदौद्रमिन्द्रजित्, भ १७, ४३। लिट् चिक्षेप। चिक्षिपतुः। चिक्षेपिथ। चिक्षिपे। लुट् क्षेप्ता। लृट् क्षेप्स्यति। ०ते। लुङ् अक्षैप्सीत्। अक्षैप्साम्। अक्षैप्सुः। अक्षिप्त। अक्षिप्साताम्। अक्षिप्सत। तेनाक्षिप्सतेषवः, भ १५, ६५। सन् चिक्षिप्सति। ०ते। यङ् चेक्षिप्यते। चेक्षेप्ति। णिच् क्षेपयति। अचिक्षिपत्। क्षिप्ता। क्षिप्तः। क्षिप्नुः। क्षेपणम्। क्षिपकः। क्षेप्तुं कालम्, महाना ४, ८१। तं क्षिपन् योजनं मृतम्, भ ६, ११५। अति, अभि, प्रति—अभिभवः, पा १, ३, ८०। अभिक्षिपन् रावणः पर्वतश्रियम्, भ ८, ४१। अधि—अधिक्षेपः। निन्दा। भर्त्सनम्। विशेषेणाधिक्षिप्तोऽस्मि, शकु ५, ८६। एतैरधिक्षिप्तः, मनुः ४, १८५। अव—कुत्सा। अधोविक्षेपः। आ—आक्षेपः। आकर्षणम्। निन्दा। पराभवः। प्रसाधिकालम्बितमग्रपादमाक्षिप्य, र ७, ७। समा—अपसारणम्। छायाः समाक्षिपिरे, भा १६, ४७। उद्—उत्क्षेपः। दूरीकरणम्। उन्नमनम्। शैलानुदक्षैप्सुः, भ १५, २४। उदक्षिपन् केतून्, भ ३, ३४। नि—निक्षेपः। न्यासः। अर्पणम्। तेन धूः सुचिवेषु निचिक्षिपे, र १, ३४। तं बन्धुता न्यक्षिपदाशु तैले, भ ३, २३। परि—वेष्टनम्। आवासः। प्राकारेण परिक्षिप्तः, भारत। परिक्षिप्ताः शाखिनोऽलिगाथकैः, भ ६, ८४। परिक्षेपौ। प्र—प्रक्षेपः। वि—विक्षेपः। सम्—सङ्क्षेपः। संहारः। सङ्क्षिप्य संरम्भम्, भ २, ५२।

क्षिव्—क्षीव्—क्षिवु, भ्वा, दि, वो, प।

निरसनम्। क्षेवति। क्षीव्यति।

क्षी—भ्वा, उ, वो। वधः। क्षीङ्, दि, आ।

क्षयः। क्षयति। ०ते। क्षीयते। शरीरकर्षणात् प्राणाः क्षीयन्ते, मनुः ७, ११२। आयुः परं क्षीयते, शान्तिश ५। दिवादिस्तु श्वाद्यादिवदाकृतिगणः तेन क्षीयते इत्यादिसिद्धिः, की १४४। क्षीष्, क्रया, प। हिंसा। क्षीणाति (क्षिणाति)।

क्षीज्—भ्वा, प। अव्यक्तशब्दः।

क्लिक्कनम्, वो। क्षीजति। क्षीजिता।

क्षीब्—क्षीव्—क्षीब, क्षीब, भ्वा, आ।

मदः। गर्वः। मत्तीभावः। क्षीबते। क्षीवते। क्त क्षीवः, पा ८, २, ५५। भ ६, ११३।

क्षीव्—क्षेव्—क्षीवु, क्षेवु, भ्वा, प।

निरसनम्। निष्ठीवनम्। क्षीव्, भ्वा, आ, वो। दर्पः। क्षीवति। क्षेवति। क्षीवते। शोकेन क्षीवते सर्वः क्षीवते हर्षगर्वितः, कवि ८५।

क्षु—टुक्षु, अदा, प। शब्दः। क्षुतम्।

लट् क्षौति। क्षुतः। क्षुवन्ति। लिट् चुक्षाव। चुक्षुवतुः। लुट् क्षविता। लृट् क्षविष्यति। लुङ् अक्षावीत्। अक्षाविष्टाम्। चुक्षावाशुभम्, भ १४, ५७। (ट्) क्षवथुः। क्षुतम्। क्षविता। चुक्षावयिषति। क्विप् क्षुत्।

क्षुद्—क्षुदिर्, रु, उ। सम्पेषणम्।

चूर्णनम्। मर्दनम्। लट् क्षुणत्ति। क्षुन्तः। क्षुन्दन्ति। क्षुन्ते। क्षुन्दाते। क्षुन्दते। क्षुणद्मि सर्पान् पाताले, भ ६, ३८। लिङ् क्षुन्यात्। क्षुन्दीत। लङ् अक्षुणत्। अक्षुन्ताम्। अक्षुन्दन्। अक्षुन्त। लिट् चुक्षोद। चुक्षुदे। लुट् क्षोत्ता। लृट् क्षोत्स्यति। °ते। लुङ् (इर्) अक्षुदत्। अक्षौत्सीत्। अक्षुदताम्, अक्षौत्ताम्। अक्षुदन्। अक्षौत्सुः। अक्षुत्त। अक्षुत्साताम्। अक्षुत्सत। ते तमक्षौत्सुः पादैः, भ १५, ४३। सन् चुक्षुत्सति। °ते। यङ् चोक्षुद्यते। चोक्षोत्ति। णिच् क्षोदयति। अचुक्षुदत्। क्षोदयन्ति नः क्षुद्राः, भ १९, २६। क्त क्षुण्णः। क्षोदः। प्र—चूर्णनम्। तस्य प्रचुक्षोद गदयाङ्गम्, भ १४, ३३, ८७।

क्षुध्—दि, प। बुभुक्षा। क्षुधा।

लट् क्षुध्यति। लिट् चुक्षोध। चुक्षुधतुः। लुट् क्षोद्धा। लृट् क्षोत्स्यति। लुङ् अक्षुधत्। अक्षुधताम्। सन् चुक्षुत्सति। यङ् चोक्षुध्यते। चोक्षोद्धि। णिच् क्षोधयति। अचुक्षुधत्। क्षुध्यन्तोऽप्यघसन् व्याला न त्वाम्, भ ५, ६९। क्षुधित्वा, क्षोधित्वा, पा १, २, २६। क्षुधितः, पा ६, २, ५२। क्षुधा। क्षुध्।

क्षुभ्—भ्वा, आ। दि, क्रया, प।

क्षोभः। सञ्चलनम्। विकारः। उद्वेगः। व्यथा। लट् क्षोभते। क्षुभ्यति, फणिपतिः क्षुभ्यति, महाना १, ३०। क्षुभ्नाति, पा ८, ४, ३९। क्षुभ्नीतः। क्षुभ्नन्ति। नाक्षुभ्नाद्राक्षसः, भ १७, ९०। यः क्षुभ्यति रिपुष्वेव क्षोभते नानुजीविषु। मनागपि मनो यस्य न क्षुभ्नाति महाहवे ॥ कवि ५६। लिट् चुक्षोभ। चुक्षुभे। रघोरभिभवाशङ्कि चुक्षुभे द्विषतां मनः, र ४, २१। नाभ्यचुक्षुभिरे, भ १४, ६। लुट् क्षोभिता। लृट् क्षोभिष्यति। °ते। अक्षोभिष्यत क्षेदियम्, भ २१, ६। लुङ् अक्षोभीत्। अक्षोभिष्टाम्। अक्षोभिषुः। दि, अक्षुभत्। भ्वा, अक्षुभत्, अक्षोभिष्ट। असौ नापि चाक्षुभत्, भ १५, ३८। सन् चुक्षुभिषति। °ते। चुक्षोभिषति। °ते। यङ् चोक्षुभ्यते। चोक्षोब्धि। णिच् क्षोभयति। अचुक्षुभत्। क्षुभितः, क्षुब्धः, पा ७, २, १८। क्षुभितं गणम्, भा १३, १०। क्षोभः। महाह्रद इव क्षुभ्यन्, भ ९, ११८। प्र—सञ्चलनम्। प्राक्षुभन् कुलपर्वताः, भ १५, १५। वि—णिच् विलोडनम्। विक्षोभयन् नागः सरः। सेना विक्षोभिता तैः, भारत। सम्—दुःस्थता। समस्तं सङ्क्षुब्धं त्रैलोक्यम्, चण्डी।

क्षुर्—तु, प। विलेखनम्।

क्षुरति। चुक्षोर। क्षोरिता। अक्षौरीत्।

क्षेव्—(क्षीव्)।

क्षै—भ्वा, प। क्षयः। क्षायति।

क्षायति द्विषतां कुलम्, कवि ११२। चक्षौ। क्षाता। क्षास्यति। अक्षासीत्। क्त क्षामः, पा ८, २, ५३।

क्ष्णु—अदा, प। तीक्ष्णीकरणम्।

लट् क्ष्णौति। क्ष्णुतः। क्ष्णुवन्ति। लिट् चुक्ष्णाव। चुक्ष्णुवतुः। लुट् क्ष्णविता। लुङ् अक्ष्णावीत्। क्त क्ष्णुतम्। प्रचुक्ष्णुवुर्महास्त्राणि, भ १४, ९१। सम्—आ, पा १, ३, ६५। समक्ष्णुवत शस्त्राणि, भ १७, ५५। संक्ष्णुवान इवोल्कणठाम्, भ ८, ४०।

क्ष्माय्—क्ष्मायी, भ्वा, आ। विधूननम्। कम्पनम्। लट् क्ष्मायते। अक्ष्मायत मही, भ १४, २१। १९, ७३। लिट् चक्ष्माये, चक्ष्माये मही। भ १४। २१। लुट् क्ष्मायिता। लुङ् अक्ष्मायिष्ट। सन् चिक्ष्मायिषते। यङ् चाक्ष्मायते। चाक्ष्माति। णिच् क्ष्मापयति। अचिक्ष्मपत्, पा ७, ३, ३९, ८९। क्ष्मामक्ष्मापयतां गतैः, भ १४, ८५। (ई) क्ष्मातः।

क्ष्मील्—(मील्) भ्वा, प। निमेषणम्। पक्ष्मभिश्चक्षुरावरणम्। क्ष्मीलति।

क्ष्विड्—जिक्ष्विड़ा (जिष्विदा) भ्वा, प। अव्यक्तशब्दः। कूजनम्। भ्वा, आ, वो। १ स्नेहनम्। २ मोचनम्। क्ष्वेडति। °ते। न क्ष्वेडेत् (अव्यक्तदम्भशब्दात्मकं क्ष्वेड़नं न कुर्य्यात्), मनुः ४, ६४। (जिघ्रा) क्ष्विडितं क्ष्विट्टं तेन।

क्ष्विद्—जिक्ष्विदा (जिष्विदा) भ्वा, प। अव्यक्तशब्दः। कूजनम्। भ्वा, आ। १ स्नेहनम्। २ मोचनम्। ३ मोहनम्। दि, प। १ स्नेहनम्। २ मोचनम्। क्ष्वेदति। °ते। क्ष्विद्यति। चिक्ष्वेद। चिक्ष्विदे। क्ष्वेदिता। (जिघ्रा) क्ष्विण्णः। क्ष्विण्णवान्, पा ७, २, १६। प्र—प्रक्ष्वेदितः, पा १, २, १९। प्रक्ष्वेदिताः परम् (अव्यक्तशब्दं कुर्वाणाः), भ ७, १०३।

क्ष्वेल्—(केल्) भ्वा, प। चलनम्।

## ( ख )

खक्ख्—भ्वा, प, वो। हास्यम्। खक्खति।

खच्—क्रया, प। भूतप्रादुर्भावः। अतिक्रान्तोत्पत्तिः। उत्पन्नस्य पुनरुत्पत्तिः। सम्पत्त्युत्पत्तिः, वो। पवित्रीभावः, वो। लट् खच्नाति। खच्नीतः। खच्नन्ति। लिट् चखाच। चखचतुः। लुट् खचिता। लुङ् अखचीत्, अखाचीत्। खच, चु, प। अदन्तः। बन्धनम्। खचयति। खचितः।

खज्—भ्वा, प। विलोड़नम्। मन्थः। खजति। चखाज। खजाका।

खञ्ज्—खजि, भ्वा, प। पाङ्गुल्यम्। गतिवैकल्यम्। खोटनम्। खञ्जति। चखञ्ज। खञ्जिता। खञ्जः। खञ्जन् प्रभञ्जनजनः, नै १४, १०७।

खट्—भ्वा, प। आकाङ्क्षा। खटति। चखाट। खटिता। खाटः। खट्वा।

खट्ट्—चु, प। संवरणम्। गोपनम्। आच्छादनम्। खट्टयति। अचखट्टत्।

खड्—खण्ड्—खड़ि (काड़ि) चु, प। भेदः। भञ्जनम्। खण्डनम्। खाडयति। खण्डयति। खण्डति। अचखण्डच्छक्तिम्, भ १२, ५४। खण्डं खण्डमखण्डयद् बाहुसहस्रम्, महाना २, ४। खण्डयित्वा। खण्डितः। खण्डनम्। परि—विनाशः। जयः। अखण्डमानं परिखण्डा शत्रुम्, भ १२, १७। खड़ि, भ्वा, आ। मन्थः। विलोडनम्। भञ्जनम्, वो। खण्डते। चखण्डे। खण्डिता। मानं खण्डयति स्त्रीणां खण्डते द्विषतां शिरः, कवि २६३।

खद्—भ्वा, प। १ स्थैर्य्यम्। २ हिंसा। ३ भक्षणम्। खदति। चखाद। खदिता। अखदीत्, अखादीत्। खदिरः।

खन्—खनु, भ्वा, उ। खननम्। अवदारणम्। लट् खनति। °ते। दृषितो

जाह्नवीतीरे कूपं खनति दुर्मतिः। लिट् चखान। चखने, पा ६, ४, ८८। लुट् खनिता। लृट् खनिष्यति। ०ते। आशिषि, खायात्। खन्यात्, पा ६, ४, ४३। लुङ् अखनीत्, अखानीत्। अखनिष्ट। कर्मणि, खायते। खन्यते। अखानि। सन् चिखनिषति। ०ते। यङ् चाखायते। चङ्खन्यते, पा ६, ४, ४३। चङ्खन्ति। चङ्खानः। णिच् खानयति। अचीखनत्। (उ) खनित्वा, खात्वा। खातः. पा ६,४,४२। खेयम्। खनित्रम्। खननम्। खनिः। खनकः।

उद्—उत्पाटनम्। उन्मूलनम्। उच्चखे वृक्षम्, भ १४, ८५। उच्चखाते नलेनाक्षिणी तस्य, भ १४, ३२। गिरिमुदखनीत्, भ १५, ५५। वज्रानुत्खाय तरसा, र ४, ३८। नि—रोपणम्। स्थापनम्। प्रवेशः। तं तौ भुवि निचखनुः, भ ४, ३। विषादशङ्कुश्च मतौ निचखे, भ ३, ८। तत्र जयस्तम्भान् निचखान, र ४, ३६। भुजे निचखान सायकम्, र ३, ५५। निचखान दूरं बाणान् ध्वजिन्या हृदयेषु, भा १७, ३१।

खम्ब्—(कम्ब्) भ्वा, प। १ हिंसा।

२ गतिः, वो। खम्बति। चखम्ब। खम्बिता।

खर्ज्—भ्वा, प। १ पूजनम्। २व्यथा।

३मार्जनम्। ४कण्डूयनम्। खर्जति। चखर्ज। खर्जिता। खर्जनम्। खर्जूः। खर्जूरः।

खर्द्—भ्वा, प। दन्दशूकक्रिया।

दंशन—हिंसनादि। दन्तकरणक क्रिया, दुर्गा। खर्दति। चखर्द। खर्दिता।

खर्व्—(कर्व्) भ्वा, प। गतिः। दर्पः।

खल्—भ्वा, प। १ सञ्चयः।

२ चलनम्, वो। खलति खलो धर्मात्।

खव्—(खच्) क्रया, प। भूतप्रादुर्भावः।

अतिक्रान्तोत्पत्तिः। सम्यक्त्यक्तोत्पत्तिः, वो। २ पवित्रीभावः, वो। लट् खौनाति, पा ६, ४, १९। खौनीतः। खौनन्ति। हि खौनीहि। लिट् चखाव। चखवतुः। लुट् खविता। लुङ् अखवीत्, अखावीत्। खवितः।

खष्—(कष्) भ्वा, प। हिंसा।

खाद्—खाट्, भ्वा, प। भक्षणम्।

लट् खादति, खादति पृष्ठमांसम्, हितो। लिट् चखाद। चखदतुः। दन्तैरोष्ठं चखाद, भ १४, ८७। लुट् खादिता। लृट् खादिष्यति। लुङ् अखादीत्। अखादिष्टाम्। अखादिषुः। तानखादीत्, भ १५,२५। सन् चिखादिषति। यङ् चाखाद्यते। चाखात्ति। णिच् खादयति। (ऋ) अचखादत्। वैदेहीं खादयिष्यामि राक्षसैः, भ १६, २३। तां प्रभिः खादयेद्राजा, मनुः ८, ३७१। खादित्वा। खादितः। खाद्यम्। खादनम्। खादकः। मां खादय मृगश्रेष्ठ, स्वार्थे णिच्।

खिट्—(किट्) भ्वा, प। त्रासः।

भयोत्पादनम्। खेटति। चिखेट। खेटिता। खेटति व्याघ्रात्। व्याघ्रो जनं खेटति, दुर्गा। विनापराधमारखान् न खेटति मृगानसौ, कवि १५५।

खिद्—तु, प। परिघातः।

खिद्, दि, रु, आ। दैन्यम्। दीनभावः। उपतप्तीभावः। लट् खिन्दति, पा ७, १, ५६। खिद्यते। स्वसुखनिरभिलाषः खिद्यसे लोकहेतोः, शकु ५,

१७। यस्य तटे भृङ्गावलिर्नाखिद्यत, मा ४,१२। खिन्ते। खिन्दाते। खिन्दते। अखिन्दानः स्वतेजसा, भ ६,३७। खिद्यते यो न भृत्येषु याचकेषु न खिन्दति। खिद्यते तेषु यैर्द्रव्यं दीयमानं न गृह्यते॥ कवि ६८। लिट् चिखेद। चिखिदे, भ १४, १०८। लुट् खेत्ता। लृट् खेत्स्यति। °ते। लुङ् अखैत्सीत्। अखैत्ताम्। अखैत्सुः। अखित्त। अखित्साताम्। अखित्सत। सन् चिखित्सति। °ते। यङ् चेखिद्यते। चेखेत्ति। णिच् खेदयति। अचीखिदत्। खिन्नः। खेदः। अखिन्नं वाजिकुञ्जरम्, भ १७, १०। परि—णिच्, परिखेदितविन्ध्यवीरुधः (परिस्पन्दित), भ १०, २८।

खु—खुङ् (उङ्) भ्वा, आ। शब्दः।

खवते। चुखुवे। खोता। अखोष्ट।

खुज्—खुजु (कुजु) भ्वा, प। स्तेयः।

खोजति। अखोजीत्। खोजित्वा, खुक्त्वा।

खुण्ड्—खुडि्, भ्वा, आ। खोटनम्।

खड्गव्यापारः। खुण्डते। खुडि् 'खुड'। चु, प। भेदः। खुण्डयति। खोड्यति, वो।

खुर्—तु, प। १ छेदनम्।

२ विलेखनम्, वो। खुरति। खोरिता। खुरः।

खुर्द् (कुर्द्)।

खेट—खेड—चु, प। अदन्तौ। भक्षणम्।

खेटयति। खेड्यति। अचिखेटत्। खेटयत्यरिवीरांश्च, कवि १५५।

खेल्—खेल्ल (केल्ल) भ्वा, प। १ चलनम्।

कम्पनम्। २ गतिः। ३ क्रीडा। खेलति। तस्याः कूले कृष्णोऽखेलत्, कुन्दोमञ्जरी ४, १। खेलन्ति सज्जना नित्यं खेलयन्ते च योषितः, कवि ६४। चिखेल। चिखेलतुः। खेलिता। अखेलीत्। णिच् खेलयति। (ऋ) अचिखेलत्। खेलितः। खेलनम्। निपीतकालकूटस्य हरस्येवाहिखेलनम्। खेलदनङ्ग—, गीतगो १, २६। खेला।

खेव्—(केव्) भ्वा, आ। सेवा।

खै—भ्वा, प। १ खैर्य्यम्। २ हिंसा।

३ खननम्। ४ खेदः। खायति। चखौ। चखतुः। खाता। अखासीत्।

खोट—खोड—चु, प। अदन्तौ।

खेपणम्, वो। खोटयति। खोडयति। अचुखोटत्। खोटृ (खोर्) भ्वा, प। गत्याघातः। खोटनम्। खोटति खड्गः, दुर्गा। संखोटति निराश्रयः, कवि २६७।

खोट—खोड—खोल—(खोर)।

ख्या—अदा, प। १ कथनम्।

२ ख्यातिः, वो। लट् ख्याति। लिङ् ख्यायात्। लङ् अख्यात्। अयं सार्वधातुकमात्रविषयः, कौ १२०। लिङादौ तु चक्षिङः ख्याजादेशे तस्यैव प्रयोगः। लिट् चख्यौ। चख्ये। लुट् ख्याता। लृट् ख्यास्यति। °ते। आशिषि, ख्यायात्, ख्येयात्। ख्यासीष्ट। लुङ् अख्यत्। अख्यत, पा ३, १, ५२। कर्मणि, ख्यायते। अख्यायि, तेन सोऽख्यायि राघवस्य, भ १५, ८६। सन् चिख्यासति। °ते। यङ् चाख्यायते। चाख्याति। चाख्येति। णिच् ख्यापयति। अचिख्यपत्। ख्यातः। ख्यातिः। ख्येयः। ख्यातव्यः। अभि—अभिख्या। शोभा। णिच् ख्यापनम्। तेषां दोषानभिख्याप्य, मनुः ८, २६२। आ—कथनम्।

वर्णनम्। आख्यन् वृत्तमस्मै, भ ३, २८। उपा—वर्णनम्। प्रत्या—निराकरणम्। उपेक्षा। उत्सवः। प्रत्याख्यातः, शकु ६, ३२। व्या—व्याख्या। विवरणम्। दृष्टान्वयमुखेनैव सर्वं व्याख्यायते मया, मल्लीनाथः। प्र, वि—ख्यातिः। सम्—संख्या। गणना। संपूर्वस्य ख्यातेः प्रयोगो नेति न्यासकारः, कौ १२०।

## ( ग )

गन्ध्—(घ्रा) भ्वा, प। हसनम्।

गज्—भ्वा, प। १ मदनम्। हर्षः।

२ शब्दः। लट् गजति। लिट् जगाज। जगजतुः। गम्भीरं जगजुर्गजाः, भ १४, ५। लुट् गजिता। लृट् गजिष्यति। लुङ् अगाजीत्, अगजीत्। चु, प। शब्दः। गाजयति।

गञ्ज्—गजि (गुज्) भ्वा, प। शब्दः।

गञ्जति। गञ्जिता। गञ्जितम्। गञ्जा। नेचे खञ्जनगञ्जने।

गड्—भ्वा, प। सेचनम्। क्षरणम्।

गड़ति। जगाड़। गडिता। अगडीत्, अगाडीत्। णिच् गडयति। घटादिः। गड़कः।

गण—अदन्तः। चु, प। संख्यानम्।

गणना। ज्ञानम्। गणयति। नाभाक्षरं गणय, शकु ६, ९०। लिट् गणयामास, लीलाकमलपत्राणि गणयामास पार्वती, कु ६, ८४। तां भक्तिमेवागणयद्विधिज्ञाम्, र ५, २०। सुखमेतावदजस्य गण्यताम्, र ८, ७०। गणयति च मे मूढहृदयम्, शकु ३, २१४। लुङ् अजीगणत्, अजगणत्, पा ७, ४, ९७। अजीगणद्दाशरथं न वाक्यम्, भ २, ५३। स तान् नाजीगणत् सर्वान्, भ १५, ५, ४५। ०गणय्य, पा ६, ४, ५६। वि—ज्ञानम्। निश्चयः। अदूरवर्त्तिनीं सिद्धिं विगणय्य, र १, ८८। फलनिष्पत्तिं विगणय्य, भा २, ३५। अव—अवज्ञा। अवगणितः।

गण्ड्—गड़ि, भ्वा, प। गण्डव्यापारः।

गण्डकम्पनचुम्बनादि। गण्डति पांशुना कार्कश्यमिति रमानाथः। गण्डति कपोलः पांशुना। केचित्तु, गण्ड इति शब्दस्य व्युत्पत्त्यर्थमेवायं धातुर्मन्तव्यो न त्वस्मान्यत्र प्रयोगः, दुर्गा।

गद्—भ्वा, प। कथनम्।

लट् गदति, यदेदान् गदति विस्पष्टम्, कवि २६५। लिट् जगाद। जगदतुः। जगाद मधुरं वचः, भ ७, ८५। लुट् गदिता। लृट् गदिष्यति। लुङ् अगदीत्, अमादीत्। कर्मणि, गद्यते। अगादि, तेनागादि सः, भ ५, ३१। इत्यसौ जगदे तया, भ ५, ५८। सन् जिगदिषति। यङ् जागद्यते। जागर्त्ति। णिच् गादयति। अजीगदत्। गदितम्। गद्यम्। गदनम्। गदः। नि—कथनम्। वर्णनम्। भूपालसिंहं निजगाद सिंहः, र २, ३३। इति निगदितवन्तं राघवस्तं जगाद, भ ३, ५६। प्रणिगदति, पा ८, ४, १७। प्रख्यगादीत्तम्, भ ९, ९९। सारङ्गं कीर्तिचक्रं सञ्जगदिरे इति गणक्रतानित्यत्वात्, दुर्गा। निगदः। निगादः।

गद्—अदन्तः। चु, प। मेघशब्दः, वो।

गदयति मेघः। अजगदत्।

गन्ध्—(वस्त) चु, आ। अर्दनम्।

गन्धयते। गन्धनम्। गति-हिंसा-याचनेष्विति रमानाथः।

गम्—गम्लृ, भ्वा, प। १ गमनम्।

२ प्राप्तिः। ३ ज्ञानम्। सर्वे गत्यर्थाः प्राप्त्यर्था ज्ञानार्थाश्च। लट् गच्छति, घर

७, ३, ७७। देवदत्तो ग्रामं गच्छति। कालो गच्छति धीमताम्, हितो। गच्छति पुरः शरीरम्, भक्तु १, २२८। लिट् जगाम। जग्मतुः, पा ६, ४, ८८। जगमिथ, जगन्थ। जगामासौ वनाद्रावणं प्रति, भ ५, ४। पक्षादुमाख्यां सुसुखो जगाम, कु १, २६। तस्मिन्नपत्ये न जगाम तृप्तिम्, कु १, २७। लुट् गन्ता। लृट् गमिष्यति, पा ७, २, ५८। लुङ् अगमत्। अगमताम्। लक्ष्मणं सागमत्, भ ४, ३०। सन् जिगमिषति। यङ् (कौटिल्ये) जङ्गम्यते। जङ्गन्ति। णिच् गमयति। अजीगमत्। (यापनम्) वेलां गमयति, भक्तु ३, २१। गत्वा। ०गत्य, ०गम्य, पा ६, ४, ३८। गतः, पा ६, ४, ३७। रात्रिर्गता मुञ्च शय्याम्, र ५, ६६। गतिः। गमनम्। गन्तुम्। गम्यम्। गन्तव्यः। गमनीयः। गच्छन्। गामुकः। गत्वरः। अच्छगत्य, पा १, ४, ६८। अस्तङ्गत्य, पा १, ४, ६८। अति—अतिक्रमः। व्यति—व्यतिगच्छन्ति, पा १, ३, १५। अधि—प्राप्तिः। लाभः। ज्ञानम्। अधिगत्य मुक्तिम्, नै २, १। गुरोरनुज्ञामधिगम्य मातः, र २, ६६। उन्नायानधिगच्छन्तः प्रद्रावैर्वसुधाभृताम् (जानन्तः), भ ७, ३७। अनु—अनुसरणम्। सर्वे मन्यरमनुजग्मुः, हितो। मृदङ्गध्वनिमन्वगच्छत्, र १६, १३। अन्तः—प्रवेशः। अप—अपसरणम्। दूरीभावः। व्ययः। तापो नापगतः। प्रातश्छलेनापजगाम रामः, भ ३, १६। व्यप—विनाशः। अपगमः। अभि—उपगमनम्। प्राप्तिः। अव—ज्ञानम्। निम्नानं ग्राववान् रामं त्वं कथं नावगच्छसि, भ ५, ८१। अवगम्य कथीकृतं वपुः, कु ४, १३। न भवति महिमा विना विपत्तेरवगमयन्निव पश्यतः पयोधिः, भ १०, ६२। आ—आगमनम्। प्राप्तिः। ज्ञानम्। आजगाम तत्तीर्थं जलं पातुम्। अनङ्गवशमागता। धर्माणामागतागमम्, भारत। (क्षमायां) आगमयस्व तावत् मा त्वरिष्ठा इत्यर्थः, कौ २४२। उपा—प्राप्तिः। परां तुष्टिमुपागता, भारत। प्रत्या—प्रत्यागमनम्। निर्जित्य प्रत्यागच्छत्। समा—आगमनम्। समवायः। उद्—उद्गतिः। शालपोत इवोद्गतः, भारत। प्रत्युद्—प्रत्युद्गतिः। सम्मानार्थं पुरोगमनम्। प्रत्युद्गता पार्थिवधर्मपत्नया, र २, २०। १, ४६। उप—स्वीकारः। सङ्गमः। प्राप्तिः। समीपगमनम्। यं सनातनः पितरमुपागमत् स्वयम्, भ १, १। नोपगच्छेत् स्त्रियमार्त्तवदर्शने, मनुः ४, ४०। अभ्युप—अङ्गीकारः। नि—ज्ञानम्। निर्—निर्गमः। निर्जगाम गृहान्मातुः, भारत। परि—प्राप्तिः। ज्ञानम्। वेष्टनम्। प्रथमपरिगतार्थः, र ७, ७१। प्र—प्रस्थानम्। प्रगमनीयम्। प्रति—प्रतिगमनम्। भवतु प्रतिगच्छामि तावत्, भक्तु १, २१६। वि—त्यागः। विगतज्वरः, भ ६, ८२। अद्धा च नो मा व्यगमत्, मनुः ३, २५८। सम्—सङ्गतिः। सङ्गमः। तत्र सङ्गच्छते, पा १, ३, १८। आशिषि, सङ्गंसीष्ट, सङ्गंसीष्ट। लुङ् समगंस्त। समगत, पा १, २, १३। सङ्गच्छ पौलस्त्य खेदं माम्, भ ५, ८१। कपिना समगंसत राक्षसाः, भ ८, ६। बधूवरौ सङ्गमयाञ्चकार, र ७, २०।

**गर्ब्**—(कर्ब्) भ्वा, प। हिंसा।

गतिः, वी। गर्ब्बति।

**गर्ज्**—भ्वा, प। शब्दः। गर्जनम्।

लट् गर्जति, गर्जति वारिदपटली। यत् प्रजानामुपर्य्युच्चैः पर्जन्योऽपि न गर्जति। गर्जयन्ति कथञ्चान्यैर्भिद्यमानास्तु तस्कराः॥ कवि २२०। लिट् जगर्ज। जगर्जतुः। रामो जगर्ज, भ ६, ३५। लुट् गर्जिता। लट् गर्जिष्यति। लुङ् अगर्जीत्। अगर्जिष्टाम्। अगर्जिषुः। कुम्भकर्णोऽगर्जीत्, भ १५, २१। सन् जिगर्जिषति। यङ् जागर्ज्यते। जागर्क्ति। गर्ज्, चु, प। शब्दः। गर्जयति। गर्जनम्। गर्जितम्। गर्जन् हरिः साभ्रसि शैलकुञ्जे, भ २, ६।

गर्द्—भ्वा, चु, वी, प। शब्दः।

गर्दति। गर्दयति। जगर्द। गर्दभः।

गर्ध्—चु, प। आकाङ्क्षा। गर्धयति।

गर्ब्—(कर्ब्) भ्वा, प। गतिः।

गर्व्—(कर्व्) भ्वा, प। गर्वः।

गर्वति, नीचो गर्वति सम्पदा, दुर्गा। सर्वो गर्वति विद्याभिः * * विद्याधनसमृद्धोऽपि यो न गर्वयते प्रभुः, कवि ७१। जगर्व। गर्विता। अगर्वीत्। गर्व—चु, आ। अदन्तः। मानः। दर्पः। अहङ्कारः। गर्वयते। अजगर्वत। गर्वापयते धनैर्नीचः, दुर्गा। गर्वः। गर्वितः। गर्वी।

गर्ह्—गल्ह्—भ्वा, आ। कुत्सा।

निन्दा। गर्हा। लट् गर्हते। गल्हते। न तथा गर्हते श्वानं मृगाङ्कं नापि गर्हति। गर्हयत्यभ्युपेतार्थत्यागिनं स नरं यथा॥ कवि १०८। अपिच, गर्हते हृदयं स्त्रीणाम्, कवि ३३। लिट् जगर्हे, जगर्हे लक्षणानि सा, भ १४, ५८। लुट् गर्हिता। लट् गर्हिष्यते। लुङ् अगर्हिष्ट। अगर्हिषाताम्। अगर्हिषत। सन् जिगर्हिषते। यङ् जागर्ह्यते। जागर्ढि। गर्ह्, चु, प। कुत्सा। गर्हयति। गर्हति, वो। गर्हितम्। गर्हणम्। गर्हा। वि—निन्दा। भर्त्सना। निषेधः। क्त्वा कर्म विगर्हितम्, मनुः ११, २३३। भ ६, १२६। व्रात्या आर्य्यविगर्हिताः, मनुः २, ३६।

गल्—भ्वा, प। १ भक्षणम्।

२ चरणम्। ३ पतनम्। लट् गलति, स्वयं हाराकारा गलति जलधारा कुवलयात्। मुषलाद्यगलत्ततः, भ १७, ८७। लिट् जगाल। जगलतुः। प्रतोदा जगलुः, भ १४,६६। लुट् गलिता। लुङ् अगालीत्। अगालिष्टाम्। सन् जिगलिषति। जागल्यते। जागलति। णिच गालयति। गल्, चु, आ। स्रवणम्। क्षरणम्। गालयते रक्तं क्षतस्य। दुर्गा। गलितम्। गलनम्। विपक्षे गलितादरौ, भ ५, ४३। गलितवयसामिच्छाकृणाम्, र ३, ६२। गलितयौवना कामिनी, काव्यप्र। गालितमण्ड ओदनः। अव—भ्रंशः। वलयमवागलत् कराभ्याम्, मा ८, ३४। पर्य्या—निःसरणम्। पर्णान्तपर्य्यागलदच्छबिन्दुः, भ २, ४। निर्—निःसरणम्। निष्कर्षः। निर्गलिताम्बुगर्भः शरद्घनः, र ५, १७। इति निर्गलितोऽर्थः। वि—भ्रंशः। मोचनम्। विगलितवसनम्, गीतगो ५, १३। विगलन्मानः, भ ८, ४०। रतिविगलितबन्धे केशपाशे, विक्रमोर्वश्यौ।

गल्भ्—भ्वा, आ। धार्ष्ट्यम्।

प्रगल्भता। गल्भते। जगल्भे। गल्भिता। प्रागभिप्रियतमं प्रजगल्भे, मा १०, १८। अति हि नाम प्रगल्भसे, उत्तर १८२। आजौ प्रगल्भते दोर्भ्यां द्विषां विघट्टयन् घटाः, कवि १५२।

गलह्—(गर्ह्) भ्वा, आ। कुत्सा।

गवेष—अदन्तः। चु, प। मार्गणम्।

अन्वेषणम्। अनुसन्धानम्। गवेषयति, गवेषयति सत्क्रियाम्, कवि २४७। गवेषणा। गवेषितम्।

गह—अदन्तः। चु, प। गहनम्।

दुर्बोधः। गहयति शास्त्रं जड़धीः, दुर्गा।

गा—गाङ्, भ्वा, आ। गतिः।

लट् गाते। गाते। आदादिकोऽयमिति हरदत्तादयः। फले तु न भेदः, की ६६। बहुवचने तु भेद एव। भ्वा, गान्ते। अदा, गाते। ए, गै। लिङ् गेत। गेयाताम्। लङ् अगात। इ, अगे। लिट् जगे। जगिषे। लुट् गाता। लृट् गास्यते। आशिषि, गासीष्ट। लुङ् अगास्त। अगासाताम्। अगासत। सन् जिगासते। यङ् जागायते। जागाति, जागेति। णिच् गापयति। अजीगपत्। गातः।

गाच—(व्रण) अदन्तः। चु, आ।

विचूर्णनम्। शैथिल्यम्, वो। गाचयते।

गाध्—गाध्, भ्वा, आ। १ प्रतिष्ठा।

२ लिप्सा। वाञ्छा। ३ ग्रन्थः। रचना। लट् गाधते। गाधते नार्थमन्यतः, कवि २६८। अगाधत ततो व्योम, भ ८, १। लिट् जगाधे। लुट् गाधिता। गाधितासे नभो भूयः, भ २२, २। लृट् गाधिष्यते। लुङ् अगाधिष्ट। अगाधिषाताम्। अगाधिषत। अजगाधत्। गाधनः।

गाह्—गाह्, भ्वा, आ। विलोड़नम्।

प्रवेशः। प्राप्तिः। सेवा। लट् गाहते, गाहते शास्त्रमत्यर्थम्, कवि २६८। मनस्तु मे संशयमेव गाहते, कु ५, ४६। गाहन्तां महिषा निपानसलिलम्, शकु २, ४२। लिट् जगाहे। जगाहिषे, जघाहे। जगाहिध्वे, जगाहिढ्वे, जघाढ्वे। जगतीं ग्राह इवापगां जगाहे, भा १३, २४। जगाहे द्यां निशाचरः, भ ५, ६४। जगाहिरे मार्गान्, भ २, ५४। लुट् गाहिता, गाढ़ा। लृट् गाहिष्यते, घाक्ष्यते। आशिषि, गाहिषीष्ट, घाक्षीष्ट। लुङ् अगाहिष्ट। अगाहिषाताम्। अगाहिषत। अगाढ। अघाक्षाताम्। अघाक्षत। अगाढ़ाः। अघाढ्वम्। अघाक्षि। सन् जिगाहिषते, जिघाक्षते। यङ् जागाह्यते। जागाढ़ि। णिच् गाहयति। अजीगहत्। गाहित्वा, गाढ्वा। गाढ़ः। तपस्विगाढा तमसा नदी, र ८, ७२। अव—अवगाहनम्। प्रवेशः। पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य, कु १, १। गिरिमवगाहावहे, भ ६, २८। अवगाहिष्यसे दिशः, भ १६, ३८। वि—अवगाहनम्। निमज्जनम्। स्नानम्। प्रवेशः। विलोड़नम्। गतिः। विगाह्य तमसाम्, र १४, ७६। विगाहितुं यामुनमम्बु, भ ३, ३८। शब्दगुणमात्मनः पदं विमानेन विगाहमानो हरिः, र, १३, १। विगाह्यमानां सरयूं नौभिः, र १४, ३०। सम्—विलोड़नम्। आक्रान्तिः। समगाहिष्ट चाम्बरम्, भ १५, ६८।

गु—गुङ् (उङ्) भ्वा, आ। शब्दः।

अव्यक्तशब्दः। गवते। जुगुवे। गोता। गोष्यते। अगोष्ट। जुगूषते। जोगूयते। जोगोति। गावयति। अजूगवत्। क्त, गुतम्। गुवाकः।

गु—"गू" तु, प। मलत्यागः।

पुरीषोत्सर्गः। गवति। जुगाव। जगु-

विथ, जुगुथ। गुता। गुथ्यति। अगुषीत्। अगुताम्, पा ८, २, २७। अगुषुः। गू—गुवति। गुविता। अगुवीत्। क्त, गूनः, कौ ३४७। गूथम्।

गुज्—भ्वा, तु, प। शब्दः। कूजनम्। गोजति। जुगोज। गोजिता। अगोजीत्। तु, गुजति। गुजिता। अगुजीत्।

गुञ्ज्—गुजि, भ्वा, प। अव्यक्तशब्दः। कूजनम्। तट् गुञ्जति। लिट् जुगुञ्ज। न षट्पदोऽसौ न जुगुञ्ज यः कलम्, भ २, १८। गुञ्जा जुगुञ्जुः, भ १४, २। लुट् गुञ्जिता। लुङ् अगुञ्जीत्। गुञ्जितम्। गुञ्जनम्। गुञ्जा।

गुड्—तु, प। १रक्षणम्। २व्याघातः। वो। गुड़ति। जुगोड़। गुड़िता। गुड़ितः। गुड़ः। गुड़िका।

गुण्ठ्—गुठि, चु, प, वो। वेष्टनम्। गुण्ठयति। गुण्ठति। अजुगुण्ठत्। अव—अवगुण्ठनम्। आवरणम्। शिरःप्रच्छादनम्। अवगुण्ठितः, मनुः ४, ४८। रत्ना ३, ७१।

गुण्ड्—गुड़ि, चु, प। १ वेष्टनम्। २ रक्षणम्। ३चूर्णीकरणम्। पेषणम्। गुण्डयति। गुण्डति। अजुगुण्डत्। गुण्डितः।

गुण—(कुण) अदन्तः। चु, प।

१ आमन्त्रणम्। २ अभ्यासः। ३ गुणनम्। पूरणम्। हन्तिः पूर्त्तिश्च गुणने इत्यङ्गविदः। गुणयति। गुणितम्। गुण आम्रेड़ने, गुणनिका इति मल्लीनाथः। मा २, ७५।

गुद्—(कुर्द्) भ्वा, आ। क्रीड़ा। गोदते। जुगुदे। गोदिता। अगोदिष्ट।

गुभ्—भ्वा, आ, वो। क्रीड़ा। दि, प,। परिवेष्टनम्। क्रया, प। रोषः। कोपः। लट् गोधते। गुध्यति। गुध्नाति, योऽस्मै गुध्नाति तद्दुर्गं तत्क्षणादेव गुध्यति, कवि २६८। लिट् जुगोध। जुगुधे। लुट् गोधिता। लृट् गोधिष्यति। ०ते। लुङ् अगोधीत्। अगोधिष्ट। गुधित्वा, पा १, २, ७। गुधितम्।

गुन्द्—(कुन्द्) चु, प। मिथ्योक्तिः।

गुप्—गुपू, भ्वा, प। रक्षणम्।

लट् गोपायति, पा ३,१,२८। गोपायति हरिः श्रियम, भ १८, २३। लिट् गोपायाञ्चकार, जुगोप। जुगुपतुः। जुगोपिथ, जुगोप्थ। जुगोपात्मानमलस्तः, र १, २१। २, ३। लुट् गोप्ता, गोपिता। गोपायिता, पा ३, १, ३१। लृट् गोप्स्यति, गोपिष्यति, गोपायिष्यति। आशिषि, गुप्यात्। गोपाय्यात्। लुङ् अगौप्सीत्। अगौप्ताम्। अगौप्सुः। अगोपौत्। अगोपिष्टाम्। अगोपिषुः। अगोपायीत्। अगोपायिष्टाम्। अगोपायिषुः। यानगोपौन्मखेषु सः, भ ५, ३७। अगोपिष्टां पुरीं लङ्कामगौप्तां रक्षसां बलम्, भ १५, ११३। सन् जुगुप्सति, जुगुपिषति, जुगोपिषति, जुगोपायिषति। यङ् जोगुप्यते, जोगोप्ति। णिच् गोपयति। अजूगुपत्। गुप्तः। गोप्ता। गोपनम्। गोपायति क्षितिमिमां चतुरब्धिसीमां धीमानधर्मवचनाच्च जुगुप्सते यः। वित्तं न गोपयति यस्तु वनौयकेभ्यो धीरो न गुप्यति महत्यपि कार्य्यजाते॥ कवि ६। प्र, निर्—रक्षणम्। प्रगोपयाञ्चकार पुरम्, भ १४, ८७। निर्जुगोप निशाचरान्, भ १४, १०६।

गुप्—भ्वा, आ। गोपनम्। अपक्लवः।

निन्दा । जुगुप्सा । गुपेर्निन्दायां सन् । गोपने तु णिच्, कौ १०१ । अधर्माज्जुगुप्सते, पा ३,१,५ । लिट् जुगुप्साञ्चक्रे । सा जुगुप्साम्बभूवेऽसून्, भ १४, ५९ । लुट् जुगुप्सिता । लृट् जुगुप्सिष्यते । लुङ् अजुगुप्सिष्ट । अजुगुप्सिषाताम् । अजुगुप्सिषत । किं त्वं मामजुगुप्सिष्ठाः, भ १५, १९ । सन् जुगुप्सिषते, पा १, ३, ६२ । (गोपने णिच्) गोपयति । गोपते, वो । किं काङ्क्षीं विजहासि कङ्कणभनत्कारञ्च किं गोपसे । राधाया वचनं नन्दान्तिके गोपतो गोविन्दस्य, गीतगो ६, १२ । निजुगोप हर्षमुदितम्, भा ६, ३८ । इत्यादौ परस्मैपदमपि । गोपनीयं कर्मण्यर्थं द्योतयित्वा, दर्पणः । अत्र क्रियापदं गुप्तं बुधैरपि न बुध्यते, विदग्धमुखमण्डनम् । नवनखपदमङ्कं गोपयत्यंशुकेन, दर्पण. ।

गुप्—दि, प । व्याकुलत्वम् ।

गुप्यति । जुगोप । जुगुपतुः । गोपिता । गोपिष्यति । अगुपत् । अगुपताम् । गुप् (कुप्) चु, प । १ दीप्तिः । २ गोपनम्, वो । गोपयति ।

गुफ्—गुम्फ्—गुन्फ्, तु, प । ग्रन्थनम् । गुफति । जुगोफ । गोफिता । गुम्फति । जुगुम्फ । गुम्फिता । अगुम्फीत् । गुम्फित्वा । गुम्फित्वा, पा १, २, २३ । गुम्फित्वेव निरस्यन् तरङ्गान्, भ ७, १०५ । गुम्फितम् । गुम्फनम् ।

गुर्—गुरी, तु, आ । उद्यमनम् ।

अवगोरणम् । गुरते । युक्तोऽपि यो नोद्गुरते स्वधर्मवित्, कवि ५१ । जुगुरे । गुरिता । गुरिष्यते । अगुरिष्ट । (ई) गूर्णः । गुरणम् । अप—णमुल, अपगारमपगारम् । अपगोरमपगोरम्, पा ६, १, ५३ । अव—ताड़नार्थं दण्डादीनामुद्यमनम् । ताड़नम् । ब्राह्मणायावगूर्य्य बधकाम्यया, मनुः ४, १६५ । न द्विजेऽवगुरेत्, मनुः ४, १६१ । उद्—उत्क्षेपः । उदगुरिषत द्रुमान्, भ १५, ३४ ।

गुर्द् (कुर्द्) ।

गुर्द्—गुर्दी, श्वा, प । उद्यमः ।

ताड़नाभिप्रायेण दण्डादेरूर्द्धीकरणम् । गूर्दति । जुगूर्द । अगूर्दीत् । (ई) गूर्णः ।

गुह्—गुह्, भ्वा, उ । संवरणम् ।

आच्छादनम् । गोपनम् । अपह्नवः । लट् गूहति । ०ते, पा ६,४,८९ । गूहेत् कूर्म इवाङ्गानि, मनुः ७, १०५ । लिट् जुगूह । जुगूहिथ, जुगोढ । जुगुहे । जुगुहिषे, जुघुक्ष । लुट् गूहिता, गाढा । लृट् गूहिष्यति । ०ते । घोक्ष्यति । ०ते । गूहिष्यामि क्षितिं कृत्स्नामद्य गात्रैर्वनौकसाम्, भ १६, ४१ । आशिषि; गुह्यात् । गूहिषीष्ट, घुक्षीष्ट । लुङ् अगूहीत् । अगूहिष्टाम् । अगूहिषुः । इड़भावे क्सः । अघुक्षत् । अगूहिष्ट । अगूहिषाताम् । अगूहिषत । पक्षे, अगूढ, अघुक्षत, पा ७, ३, ७३ । अघुक्षाताम् । अघुक्षन्त । अगूहिष्वहि, अगुह्वहि, अघुक्षावहि । अगूहीच्छायकैर्दिशः, भ १५, ९९ । मा घुक्षः पत्युरात्मानम्, भ ६, १६ । कर्मणि गुह्यते । अगूहि । सन् जुघुक्षति । ०ते, पा ७, २, १२ । यङ् जोगुह्यते । जोगोढि । णिच् गूहयति । अजूगुहत् । गूहित्वा, गूढ्वा । गूढः । गुह्यम्, गोह्यम् । गूहनम् । गूहनीयम् । गूहमानः स्वमात्मानम्, भ ८,४५ । उप—उपगूहनम् ।

आलिङ्गनम्। गाढमुपजुगूहेनम्, भ १४, ५२। मां तरङ्गहस्तैरुपगूहतीव, र १४, ६३। नि—गोपनम्। किं न स्मरसि स्मरन्ती वा निगूहसे, रामा। द्विधेव कृत्वा हृदयं निगूहते, भा १४, १२।

गू—(गु) तु, प। मलत्यागः। गुवति।

गूर्—गूरी, दि, आ। १ हिंसा।

२गतिः। गूर्य्यते। जुगूरे। गूरिता। अगूरिष्ट। गूर, चु, आ। उद्यमः। गूरयते। भग्नेषु नोदगूरयतेऽस्त्रमाहवे। या गर्य्यते श्रीरपि यस्य सम्मुखम्॥ कवि ५१। (ई) गूर्णः। उद्—उत्क्षेपः। उज्जुगूरे शैलम्, भ १४, ५१। अव—अवगोरणम्। ताड़नोद्यमः। अवगूर्य्य त्वब्दशतं सहस्रमभिहत्य च नरकं प्रतिपद्यते, मनुः ११, २०६।

गूर्द्—भ्वा, आ। वो। क्रीड़ा।

गूर्दते। गूर्द, चु, प। निकेतनम्। क्रीड़ा, वो। गूर्दयति।

गॄ—भ्वा, प। सेचनम्।

लट् गरति। जगार। जग्रतुः। गर्त्ता। गरिष्यति। ग्रियात्। अगार्षीत्। जिगीर्षति। जेग्रीयते। जगर्त्ति। गारयति। अजीगरत्।

गॄज्—गर्ज्—गर्जि, (गुज) भ्वा, प।

शब्दः। गर्जति। जगर्ज। गर्जिता। अगर्जीत्। गर्ज्जति। जगर्ज्ज। गर्ज्जनम्।

गृध्—गृधु, दि, प। आकाङ्क्षा।

गृध्यति, न गृध्यति परद्रव्यम्, कवि २५४। जगर्ध। गर्धिता। गर्धिष्यति। अगृधत्। जिगर्धिषति। जरीगृध्यते। जरीगर्द्धि। णिच् गर्द्धयति। (प्रलम्भने) गर्द्धयते, पा १, ३, ६९। न च गर्द्धयते परम्, कवि २५४। प्रच्छन्नः सोऽगर्द्धयत राक्षसान्, भ ८, ४३। (ङ) गर्द्धित्वा, गृद्ध्वा। गृद्धः। गर्द्धनः। गृध्नुः।

गृह्—गृह्ण, स्वा, आ। १ गर्हणम्।

२ ग्रहणम्। गर्हते। जगृहे। जगृहिषे, जघृक्षे। जगृहिध्वे। जगृहिढ्वे, जघृढ्वे। गर्हिता, गर्द्धा। गर्हिष्यते, घर्क्ष्यते। गर्हिषीष्ट, घृक्षीष्ट। अगर्हिष्ट, अघृक्षत। कविरहस्येऽदन्तोऽप्ययम्। द्विषां गृहयते शिरः, ३३। गृहाः। गृहम्।

गॄ—तु, प। भक्षणम्। क्रया, प। शब्दः।

स्तुतिः। उक्तिः। लट् गिरति। गिलति, पा ८, २, २१। गृणाति। गृणीतः। गृण्न्ति। भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति, गीता ११, २१। पौराणिकाश्चेष्टितानि गृणन्ति, अनर्घ १८। गृणाति सुभगं वचः, कवि २५८। लिट् जगार। जगरतुः। जगरिथ, जगलिथ। लुट् गरिता, गलिता, गरीता। लृट् गरिष्यति, गरीष्यति। आशिषि, गीर्य्यात्। लुङ् अगारीत्। अगारिष्टाम्। अगारिषुः। सन् जिगरिषति। (भावगर्हायां यङ्, पा ३, १, २४।) जेगिल्यते, पा ८, २, २०। जागर्त्ति। णिच् गारयति। अजीगरत्। गॄ, "गॄ" चु, आ। १ विज्ञानम्। विज्ञापनम्, वो। गारयते। कर्मणि, गीर्य्यते। गीर्णः। गिलितो वकेनेति गिलशब्दाच्चिच्। गीर्णिः। अपि—स्तुतिः। वर्णनम्। अव—आ, पा १, ३, ५१। अवगिरते। अवगिलते। अवगिरमाणाः पिशाचा मांसशोणितम्, भ ८, ३०। गृणातिरुपसर्गपूर्वो न प्रयुज्यत इति भाष्यम्, कौ २५३। अनु, प्रति—प्रोत्साहनम्, पा १, ४, ४१। गृणद्भ्योऽनुगृणन्त्यन्ये, भ ८, ७७। उद्—वमनम्।

स्नेहसुस्निरन्, मा १४,१। स तस्य शासनमुज्जगार, र १४, ५३। विक्षेपणाद्रागमिवोद्गिरन्ती चरणौ, कु १, ३३। नि—निगरणम्। निजेगिल्यते, पा ३, १,२४। सम्—प्रतिज्ञा। सङ्गिरते, पा १, ३, ५२। सङ्गिरन्ते गोष्ठीषु स्वामिनो गुणान्, भ ७, ३१। वस्तूनि देशांश्च निवर्त्तयिष्यन् रामं नृपः सङ्गिरमाण एव, भ ३, ८।

गेप्—गेपृ (केपृ) भ्वा, आ। १ कम्पनम्।

२ गतिः। गेपते। (ऋ) अजिगेपत्।

गेव्—(केव्) भ्वा, आ। सेवा।

गेष्—गेषृ, भ्वा, आ। अन्विच्छा।

अन्वेषणम्। अनुसन्धानम्, दुर्गा। गेषते। जिगेषे। गेषिता। अगेषिष्ट। अजिगेषत।

गै—(कै) भ्वा, प। शब्दः।

गानम्। कीर्त्तनम्। लट् गायति। गायेयुः साम सामगाः, भ १८, १३। लिट् जगौ। ब्रह्मपारायणं जगौ, उत्तरचरितम्। जगुः सरागम्, भ २, ४३। १३, २८। लुट् गाता। लृट् गास्यति। आशिषि, गेयात्, पा ६, ४, ६७। लुङ् अगासीत्। अगासिष्टाम्। अगासिषुः। कर्म्मणि, गीयते, पा ६, ४, ६६। गीयताम्, शकु १, १२। अगायि। सन् जिगासति। यङ् जेगीयते। जागेति, जागाति। णिच् गापयति। अजीगपत्। जयोदाहरणं बाह्वीर्गापयामास किन्नरान्, र ४, ७८। गीत्वा। ०गाय, पा ६, ४, ६८। गीतम्। गीतिः। गायकः। गायनः। गेयोऽयं साम्नाम्। गाथकः। गानम्। अनु—शब्दः। अनुजगुरथ दिव्यं दुन्दुभिध्वानम्, भा ३,६०। अव—निन्दा। उद्—उच्चैर्गानम्। उद्गीयमानं यशो वनदेवताभिः, र २, १२। उद्गास्यतां किन्नराणाम्, कु १,८। उप—शब्दः। उपगीयमाना भ्रमरैर्वनराजयः, भारत। भृङ्गकुलैरुपगीतवने, छन्दोमञ्जरी २२, २। नि—पाठः। श्रुतयो निगमेषु निगीताः, मनुः ६, १६। परि—कीर्त्तनम्। मान्धातृशब्दो लोकेषु परिगीयते, भारत। प्र—शब्दः। ऋष्यमूकमगाद्भृङ्गैः प्रगीतं सामगैरिव, भ ६, ६०। वि—गर्हा। निन्दा। केतक विगीयसे श्रिवेन, नै १, ५६। मां प्रसूय कथमस्तु विगीतः, अनर्घ १५।

गोम—अदन्तः। चु, प। लेपनम्।

गोमयति स्थानम्। अजुगोमत्।

गोष्ट—भ्वा, आ। सङ्घातः।

राशीकरणम्। गोष्टते धान्यं लोकः।

ग्रथ्—ग्रन्थ्—ग्रथि, भ्वा, आ।

१ कौटिल्यम्। वक्रीभावः। २ कुटिलीकरणम्। ग्रन्थते, काष्ठं ग्रन्थते लतां वायुः। जग्रन्थे। ग्रन्थिता। अग्रन्थिष्ट। "ग्रथते"

ग्रन्थ्—क्रया, प। सन्दर्भः। रचना।

ग्रन्थनम्। लट् ग्रथ्नाति मालाम्। ग्रथ्नीतः। ग्रथ्नन्ति। काचं मणिं काञ्चनमेकसूत्रे ग्रथ्नन्ति मूढाः। लिङ् ग्रथ्नीयात्। लङ् अग्रथ्नात्। अग्रथ्नीताम्। अग्रथ्नन्। यमलोकमिवाग्र्याद्वाच्यसैर्हतैः, भ १७, ६६। लिट् जग्रन्थ। जग्रथतुः, जग्रन्थतुः। ग्रेथतुः, कौ १६७। लुट् ग्रन्थिता। लृट् ग्रन्थिष्यति। आशिषि, ग्रथ्यात्। लुङ् अग्रन्थीत्। सन् जिग्रन्थिषति। यङ् जाग्रथ्यते। जाग्रन्थि। णिच् ग्रन्थयति। ग्रन्थ (ग्रन्थ) चु, प। सन्दर्भः। ग्रन्थयति। ग्रन्थ, चु,

प । बन्धनम् । ग्रन्थनम् । ग्रन्थयति । ग्रन्थति । "ग्रथ" ग्राथयति, ग्रथति । गाथां ग्रन्थयति प्रसन्नललितां श्लोकञ्च यो ग्रन्थति श्लाघ्यं ग्राथयति स्फुटार्थमधुरम् । ग्रथति यः श्लिष्टाक्षरं नाटकम्, कवि १२ । ग्रन्थिमुद्ग्रथयितुं दयितेशे, मा १०,६३ । कर्माशयं ग्रथितमुद्ग्रथयन्ति सन्तः, भाग ४।२२।३७। अयं चुरादिरित्येके नेत्यन्ये । वस्तुतस्तु नाम धातुरयम् । ग्रथित्वा, ग्रन्थित्वा, पा १, २, २३ । ग्रथितः । ग्रन्थनम् । ग्रन्थः । ग्रथितमौलिरसौ वनमालया, र ९, ५३ । कुसुमैर्ग्रथितां स्रजम्, र ८, ३५ । रुचो ग्रन्थित्वेव स्थितं तोयधिम्, भ ७, १०५ । उद्—बन्धनम् । लताप्रतानोद्ग्रथितैः स केशैः, र २, ८ । सम्—रचना । प्रियेण संग्रथ्य स्रजम्, भा ८, ३७ ।

ग्रस्—ग्रसु, श्वा, आ । भक्षणम् ।

आक्रमणम् । लट् ग्रसते, यावतो ग्रसते ग्रासान्, मनुः ३, १३३ । हिमांशुमाशु ग्रसते, मा २ । ४९ । लिट् जग्रसे, जग्रसे कालरात्रीव वानरान्, भ १४, ४३ । लृट् ग्रसिष्यते । लुङ् अग्रसिष्ट । सन् जिग्रसिषते । जाग्रस्यते । जाग्रस्ति । णिच् ग्रासयति । ग्रस, चु, प । १ग्रहणम् । २ग्रासः, वो । ग्रासयति । ग्रसति, ग्रसति तव मुखेन्दुं पूर्णचन्द्रं विहाय । ग्लसु, ग्लसते । (उ) ग्रसित्वा, ग्रस्त्वा । ग्रस्तः । रोगग्रस्तः विपद्ग्रस्तः । ग्रासः । पिण्डग्रः । अभि—आक्रमणम् । सम्—विनाशः । संग्रस्यतेऽसौ पुरुषाधिपेन, भ १२, ४ ।

ग्रह्—क्र्या, उ । उपादानम् ।

ग्रहणम् । स्वीकारः । धारणम् । प्राप्तिः । अवलम्बनम् । आश्रयः । लट् गृह्णाति, पा ६,१,१६ । गृह्णीते । लिङ् गृह्णीयात्, गृह्णीत । न नाभापि गृह्णीयात् पत्यौ प्रेते परस्य, मनुः ५,१,५२ । शरद्दीर्घं न गृह्णीयात् । न चेत् स मम गृह्णीयाद्वचः, भारत । हि गृहाण । गृहाण ग्रहम्, र ३, ५१ । लङ् अगृह्णात् । अगृह्णीताम् । अगृह्णन् । अगृह्णीत । अगृह्णात् तं मत्स्यं पाणिना, भारत । लिट् जग्राह । जग्रहिथ । जगृहे । जग्राह केशेषु तम्, भारत । तपसो मूलमाचारं जगृहुः, १, ११० । लुट् ग्रहीता, पा ७,२,३७। लृट् ग्रहीष्यति । ०ते । आर्षिषि, गृह्यात् । ग्रहीषीष्ट । लुङ् अग्रहीत्, पा ७, २, ५ । अग्रहीष्टाम् । अग्रहीषुः । अग्रहीष्ट । अग्रहीषाताम् । अग्रहीषत । ताभ्यो बालमग्रहीत्, र १, १८ । गर्भं धृतराष्ट्रादथ ग्रहीत् सा, भारत । प्राणानग्रहीद्विषाम् (निगृहीतवान्), भ ९, ९ । आयुरग्रहीत्, भ १५, ६३ । कर्मणि, गृह्यते । जगृहे । ग्रहीता, ग्राहिता । ग्रहीष्यते, ग्राहिष्यते । ग्रहीषीष्ट, ग्राहिषीष्ट । अग्राहि । अग्रहीषत, अग्राहिषत, पा ६, ४, ६२ । नेत्रवक्त्रविकारैश्च गृह्यतेऽन्तर्गतं मनः, मनुः, ८, २६ । जगृहाते तौ रत्नसा, भ ६, ४४ । सन् जिघृक्षति । ०ते, पा ७, २, १२ । १, २, ८ । यङ् जरीगृह्यते, पा ६, १, १६ । जाग्राढि । (जरीगर्ढि जरीगृह्णीति इति केचित्) जाग्रढः । जरीग्रढ इति कश्चित् । णिच् ग्राहयति । अजिग्रहत्, अजिग्रहत्तं जनको धनुस्तत्, भ २, ४२ । अयाचितारं न सुतां ग्राहयितुं शशाक, कु १, ५३ । इदं शास्त्रं मां ग्राहयामास, मनुः १, ५८ । ग्राहयित्वाहमात्मानं ततो दग्ध्वा च तां पुरीम्, भारत । गृहीत्वा । ०गृह्य । गृहीतः । ग्रहः । ग्रहणम् ।

ग्रहीतुम्। ग्रहीतव्यः। ग्राह्यः। ग्रहीता। ग्राही। ग्राहकः। गृह्णन्। पाणि—पाणिग्रहणम्। परिणयः। पाणिं गृह्णातु मे, चण्डी। अनेन पाणौ विधिवद् गृहीते, र ६, ६३। पाद—पादग्रहणम्। अभिवादनम्। तयोर्जगृहतुः पादान् राजा राज्ञी च, र १, ५८। अति—अतिक्रम्य ग्रहणम्। चारित्रतोऽतिगृह्यते, पा ५, ४, ४६। अनु—अनुग्रहः। महात्मानोऽनुगृह्णन्ति भजमानानरीनपि, मा २, १०। कुटुम्बिनीमनुगृह्णीष्व निवापदत्तिभिः, र ८, ८७। अव—अनादरः। निग्रहः। गमहानवगृह्य साध्यः, सा ५, ४६। अवगृह्यं पदम्, पा ३, १, ११६। अवग्राहः। अवग्रहः। अभि—अपचिकीर्षा। कलहाङ्कानम्। उद्—उद्यमः। शक्तिमुद्गृहीत्, भ १५, ५२। णिच्, उपन्यासः। शास्त्रं यत्नवोद्ग्राह्यते पुरः, मा २, ७५। मोञ्जिग्रहः सुनीतानि, भ १५, २०। उप—परिग्रहः। अव्यवसायिनं अनदेव ह्रियति नेच्छत्युपग्रहीतुं मच्छीः, क्षितौ। णिच्, उपहारः। उपग्राह्यः। नि—निग्रहः। पीड़नम्। गृह्णाण चापं निगृह्णाण ताड़काम्, अनर्घ ४५। निगृहीतधेनुः सिंहः, र २, ३३। अभ्यासनिगृहीतं मनः, र १०, २२। राज्ञां यशांसि निजिघृक्षयिष्यन्, भ ३, ४०। परि—परिग्रहः। आदानम्। स्वीकारः। स्वपुरमगात् परिगृह्य रामलक्ष्मणौ, भ ५, १०८। ज्ञानेन परिगृह्य तान्, मनुः २,१५१। प्र—प्रकर्षेण ग्रहणम्। बाहुं प्रगृह्याभ्यद्रवत, भारत। प्रगृह्यस्तामभीषवः, ऋक् १, ३७। प्रति—प्रतिग्रहः। स्वीकारः। लाभः। प्रत्यगृह्णीष्टां तावासनादि, भ २, १६। सर्वतः प्रतिगृह्णीयात्, मनुः १०, १०२। विधिवत् प्रतिगृह्य कन्याम्, मनुः ६, ७२। तथेति प्रतिजग्राह गुरोरादेशम्, र १, ६३। प्रतिजग्राह कालिङ्गस्तमस्त्रैः, र ४, ४२। प्रतिगृहीतं ब्राह्मणवचः, ऋक् १, ४७। वि—विग्रहः। समाहारः। यदा विगृह्णाति तदा हृतं यशः, भा १४, २४। विगृह्य नमुचिद्विषा, मा १, ५१। यत्क्षतेऽरीन् व्यगृह्णीम, भ १७, २३। वह्निना विगृहीतः, भ ६, ८६। व्यजिघृक्षत् सुरान्, भ १७, ३६। सम्—संग्रहः।

ग्रह—ग्रह्, चु, प, वो। ग्रहणम्।

ग्राहयति। ग्रहति। अयं वेट्। ग्रहीता। ग्राढा। अग्रहीत्। अग्राक्षीत्। ग्लह्, ग्लाहयति। ग्लहति। अग्लहीत्। अग्लाक्षीत्। ग्राहयते इत्येके।

ग्राम—अदन्तः। चु, प। आमन्त्रणम्। आभाषणम्। ग्रामयति। अजग्रामत्।

ग्रुच्—ग्रुचु, भ्वा, प। १ स्तेयकरणम्। २ गमनम्, वो। ग्रोचति। जुग्रोच। ग्रोचिता। अग्रुचत्, अग्रोचीत्, पा ३, १, ५८। (ङ) ग्रोचित्वा, ग्रुक्त्वा। ग्रुक्तः।

ग्लस्—(ग्रसु) भ्वा, आ। भक्षणम्।

ग्लह्—(ग्रह्) भ्वा, आ, वो। ग्रहणम्। ग्लहते। ग्लह्, चु, प, वो। आदानम्।

ग्लुच्—ग्लुचु (ग्रुचु) भ्वा, प। १ चौर्य्यम्। २ गमनम्। ग्लोचति। जुग्लोच। ग्लोचिता। अग्लुचत्, अग्लोचीत्, पा ३, १, ५८। बह्वनामग्लुचत् प्राणानग्लोचीच्च रणे यशः, भ १५, ३०। (ङ) ग्लोचित्वा, ग्लुक्त्वा। ग्लुक्तः।

ग्लुञ्च्—ग्लुञ्चु, भ्वा, प। गतिः।

ग्लुञ्चति। जुग्लुञ्च। ग्लुञ्चिता। अग्लुचत्, अग्लुञ्चीत्, पा १, ३, ५८। अनु-

मासिकलोपाभावमिच्छन्ति । अग्लुञ्चदिति प्रदीपः । ग्लुञ्चित्वा, ग्लुक्त्वा ।

ग्लेप्—ग्लेपृ, भ्वा, आ । दैन्यम् ।

ग्लेपृ (केपृ) भ्वा, आ । १ कम्पनम् । २ गतिः । ग्लेपते । (ऋ) अजिग्लेपत् । ग्लेपितः ।

ग्लेव्—ग्लेव्ह (केव्ह) भ्वा, आ । सेवा । ग्लेवते । जिग्लेव । (ऋ) अजिग्लेवत् ।

ग्लेष्—ग्लेषृ (गेषृ), भ्वा, आ ।

अन्वेषणम् । अनुसन्धानम्, दुर्गा । ग्लेषते, ग्लेषते यः सतां मार्गमिति हलायुधः ।

ग्लै—भ्वा, प । हर्षक्षयः । धातुक्षयः । क्लमः । लट् ग्लायति, न हृष्यति न ग्लायति, मनुः २, ९८ । लिट् जग्लौ । जग्लतुः । लुट् ग्लाता । लृट् ग्लास्यति । आशिषि, ग्लेयात्, ग्लायात्, पा ६, ४, ६८ । लुङ् अग्लासीत् । अग्लासिष्टाम् । अग्लासिषुः । सन् जिग्लासति । यङ् जाग्लायते । जाग्लेति, जाग्लाति । णिच्, (अनुपसर्गस्य) ग्लापयति, ग्लपयति । (सोपसर्गस्य) प्रग्लापयति । अजिग्लपो वैराणि, भ १५, १८ । ग्लपितः । ग्लानः । ग्लास्नुः । ग्लानिः ।

## ( घ )

घघ्—घग्घ्—गग्घ्—भ्वा, प ।

हसनम् । घघति । घग्घति । गग्घति, वो ।

घट्—भ्वा, आ । चेष्टा । यत्नः ।

लट् घटते । नानभीष्टे घटामहे, भ २०, २४ । घटेत सन्ध्यादिषु गुणेषु, भ १२, २६ । तथापि पुंविशेषत्वाद् घटतेऽस्य नियन्तृता, पञ्चदशी ६, १०६ । लिट् जघटे, जघटे तुरगाध्वरेण यष्टुम्, भ २२, ३१ । लुट् घटिता । लृट् घटिष्यते । न घटिष्ये जीवितुम्, भ १६, २३ । लुङ् अघटिष्ट । अघटिषाताम् । अघटिषत । तेन समं योद्धुमघटिष्ट, भ १५, ७७ । सन् जिघटिषते । यङ् जाघट्यते । जाघट्टि । णिच् घटयति, पा ६, ४, ८२ । अजीघटत् । कर्मणि, घटयिता, घटिता, घाटिता । अघटि, अघाटि । अजीघटत । (नियोगः) मां वक्तुं घटयति, भ १०, ७३ । (विधानम्) तद् घटयस्व, भ १२, ५ । (योगः) हृदयं तस्य घटयन्तीदमब्रवीत्, भारत । गात्राणि गात्रैर्घटयन्, भ ११, ११ । अनेन भैमीं घटयिष्यता, नै १, ४६ । घटय जघनमपिधानम् । घटय भुजबन्धनम् । घटय जघने काञ्चीम्, गौतमो ५, १३, १० । ३, १३, २५ । अन्यथा घटयिष्यामि, शकु । घटितः । काष्ठघटितवेतालः, हितो । घटनम् । घटना । घटा । घटकः । उत्कण्ठा घटमानषट्पदघटा, दर्पणः । प्र—को विश्वजनीनेषु कर्मसु प्राघटिष्यत, भ २१, १७ । प्रजघटे युद्धम्, भ १४, ७७ । वि—विश्लेषः । भेदः । विजघटे शैलैः, भ १४, ६६ । मन्त्रिणा पृथिवीपाल चित्तं विघटितं क्वचित् कः सन्धातुमीश्वरः, हितो । दृष्ट्वैव यं विघटते कोपाच्चेपो मृगीदृशाम् । विघाटयति चाश्कोटे वैरिणां करिणां घटा ॥ कवि २०० । सम्—संघटनम् । योगः ।

घट्—(कुप) चु, प । दीप्तिः ।

घट, चु, प । १ संघातः । योजना । २ बधः । घाटयति कपाटं द्वारि जनः, दुर्गा । उद्—उद्घाटनम् । मञ्जुषां यन्त्रैरुद्घाटयामास । द्वारमुद्घाटयामि, भारत । कार्यमुद्घाटितं क्वापि मध्ये विघटते, हितो । कमलवनोद्घाटनं

कुर्वते ये। प्रविघाटयिता समुत्पतन् हरिदश्वः कमलाकरानिव, भा २,४६।

घट्ट्—भ्वा, आ। चलनम्।

घट्टते। जघट्टे। घट्टिता। अघट्टिष्ट। अघट्टिषाताम्। अघट्टिषत। घट्ट, चु, प। चलनम्। घट्टयति, घट्टयति मेघो वायुना, दुर्गा। गुच्छाः करघट्टिताः, भ १४, २। घट्टः। आ—आघातः। आघट्टयामास अग्राङ्गुलिरस्य तूणी, भा १७, ३८। आघट्टनया नभस्वतः, भा १, १०। उत्—विघातः। अतिक्रमः। उद्घट्टते न कस्यापि धर्मम्। उद्घट्टयति गोष्ठीषु सर्वेषामेव यो गुणान्। कवि १६५। वि—अभिघातः। द्वारं विघट्टयन्, भारत। तदीयमातङ्गघटाविघट्टितैः, भा १, ६४। सम्—सङ्घर्षः। विश्लथं सङ्घट्टयन्नङ्गदमङ्गदेन, र ६,७३।

घण्—(घृण), तु, उ। दीप्तिः।

घण्ट्—घटि (कुप) चु, प। दीप्तिः।

घण्टयति। घण्टति। (इ) घण्टाते।

घम्ब्—(कम्ब्), भ्वा, प। हिंसा। गतिः, वो।

घर्व्—(कर्व्) भ्वा, प। गतिः। घर्वति।

घंष्—घषि, (घुषि), भ्वा, आ। अलङ्करणम्। चरणम्, वो। घंषते।

घस्—घस्लृ, भ्वा, प। भक्षणम्। अयं न सार्वत्रिकः, कौ ७५। लट् घसति। लोट् घसतु। लिङ् घसेत्। लङ् अघसत्। लिटि अस्याप्रयोगः। तत्र (अद) जघास, पा २, ४, ४०। लुट् घस्ता। लृट् घत्स्यति, पा ७, ४, ४६। लृङ् अघत्स्यत्। आशिषि, अस्याप्रयोगः, कौ ७६। लुङ् अघसत्, ता ३, १, ५५। घस्मरः, पा ३,२,१६०।

घंस्—घसि, वो। भ्वा, आ। चरणम्। घंसते। अयं कैश्चिन्न मन्यते, दुर्गा।

घिष्—घुष्—घृष्—घिणि, घुणि, घृणि। भ्वा, आ। ग्रहणम्। घिष्णते। जिघिष्णे। घुष्णते। जुघुष्णे। घृष्णते। तुम् टुत्वञ्च, कौ ५६। घृष्णते न परद्रव्यम्, कवि ३३। जघृष्णे।

घु—घुङ् (उङ्) भ्वा, आ। शब्दः। घवते।

घुट्—भ्वा, आ। १ परिवर्त्तनम्। गतवतः प्रत्यागमनम्। २ विनिमयः, वो। तु, प। प्रतिघातः। लट् घोटते। घुटति। लिट् जुघोट। जुघुटिथ। जुघुटे। लुट् घोटिता। लृट् घोटिष्यते। लुङ् अघुटत्। अघोटिष्ट। तु, घुटिता। घुटिष्यति। अघुटीत्। घोटकः। यस्य व्याघोटते दण्डो नाक्रुतार्थः कुतश्चन। व्याघुटन्ति विपक्षाश्च यत् सम्मुखमुपागताः॥ कवि १४६।

घुड्—तु, प, वो। व्याघातः। घुडति। जुघोड़। घुडिता। अघुड़ीत्।

घुण्—भ्वा, आ। तु, प। भ्रमणम्। घोणते। जुघुणे। घोणिता। अघोणिष्ट। घुणति। जुघोण। घोणिता। अघोणीत्।

घुष्—घुणि (घिणि) भ्वा, आ। ग्रहणम्। घुष्णते। जुघुष्णे। घुष्णिता।

घुर्—तु, प। १ भीमार्थः। भयानकरसनिमित्तीभावः। २ध्वनिः। ३ आर्त्तध्वनिः। घुरति व्याघ्रः (मनुष्याणां भयहेतुर्भवति, दुर्गा)। जुघोर। घोरिता। अघोरीत्, अघोरीच्च महाघोरम्, भ १५, ६६। जुघुरुर्घोरम्, भ १४, ४०। घोरः।

घुष्—घुषिर्, भ्वा, प। १ विशब्दनम्। प्रतिज्ञानम्। २ शब्दः। ३ बधः, वो। घोषति। नावद्यं घोषति हरि यस्य कश्चिदुपद्रवम्। घोषयन्ति पुनः सर्वे दीर्घमायुर्यदाश्रितः॥ कवि १४१। जुघोष। जुघुषतुः। घोषिता। घोषिष्यति। (ईर्) अघुषत्। अघोषीत्। घुषिर्—चु, प। १ स्तुतिः। २ विशब्दनम्। कथनम्। आविस्करणम्। नानाशब्दकरणम्, दुर्गा। घोषणा। घोषयति। घोषति। अघुषत्, अघोषीत्। ण्यन्तस्य तु, अजूघुषत्। दुष्मन्त इति घुष्यताम्, शकु ६, १८४। चमूरस्य जयमघोषयत्, र ८, १०। इति घोषयतीव डिण्डिमः, हितो। क्त, घुषितं वाक्यम् (शब्देन प्रकटीकृताभिप्रायम्) घुष्टा रज्जुः। घुष्टौ पादौ, पा ७, २, २३। ज्याघुष्टकठिनाङ्गुष्टः, भ ५, ५७। आ—घोषणा। सततक्रन्दनम्। आङ्पूर्वो घुषिः क्रन्दसातत्ये इत्याहुः, कौ १७८। आघोषयति। आघोषति शोकार्त्तः (सततं क्रन्दति), दुर्गा। अभिषेच्ये सुतमित्याघोषयन् भूमिपतिः, भ ३, २। उद्—उच्चैर्घुष्टम्। प्रोद्—निनादनम्। क्रन्दिनी प्रोद्घुष्टा क्रौञ्चकुररैः, भारत। वि—घोषणा। विघुष्य हृतं चौरैः, मनुः ८, २, ३३। सम्—शब्दः। रामसंघुषितं नैतत्, भ ५, ६५। संघुषितं संघुष्टं वाक्यम्। संघुषितौ संघुष्टौ पादौ, पा ७, २, २८।

घुंष्—घुषि, घसि, घृसि, भ्वा, आ। कान्तिकरणम्। अलङ्करणम्। घुंषते, घुंषते चन्दनो गात्रम्, दुर्गा। घंसते, कौ ७३। घृंसते इति प्रदीपः।

घूर्—घूरी, दि, आ। १ हिंसा। २वयोहानिः। घूर्य्यते। जुघूरे। (ई) घूर्णः।

घूर्ण्—(घुण) भ्वा, आ। तु, प, ड, वो। भ्रमणम्। घूर्णति। ते। नौर्घूर्णते चपलेव स्त्री। वायुर्घूर्णते भीमः। घूर्णतीव मे मनः, भारत। घूर्णते शात्रवस्यापि यद्गुणश्रवणाच्छिरः। मित्रोदासीनभूतानां घूर्णतीति किमद्भुतम्॥ कवि २३१। लिट् जुघूर्ण। ०र्णे। जलधिर्जुघूर्णे, राघवपाण्डवीयम्। लुट् घूर्णिता। लृट् घूर्णिष्यति। ०ते। लुङ् अघूर्णीत्। अघूर्णिष्ट। अघूर्णिष्टां चतौ, भ १५, १८। घूर्णतौ, घूर्णन्तौ। घूर्णमानः। घूर्णितः। घूर्णनम्। आ—चक्रवद् भ्रमणम्। आजुघूर्णुर्हरिराक्षसाः, भ १४, ७७।

घृ—(गृ), भ्वा, प। सेचनम्। घरति। जघार। घर्त्ता। घृ, चु, प। १सेचनम्। २ आच्छादनम्। ३ प्रस्रवणम्। ४ स्रावणम्। घारयति। अभिसेकः। मस्तिष्काक्तवसाभिघारितमहामांसाहुतीर्जुह्वताम्, प्रबोधचन्द्रोदयम्। घृतम्। घृणा। घर्मः।

घृण्—घृणु, तना, उ। दीप्तिः। घर्णीति। घर्णुते। (घृणोति। घृणुते)। घृणु, घर्णीति। घर्णुते। घणु, वो। घणोति। घणुते। (उ) घर्णित्वा, घृत्वा। घृतः। घृणिः।

घृष्—घृषि (घर्षि), भ्वा, आ। ग्रहणम्।

घृष्—घृषु, भ्वा, प। संघर्षः। घर्षणम्। हिंसा इत्येके। घर्षति चन्दनं लोकः, दुर्गा। जघर्ष। जघृषतुः। घर्षिता। अघर्षीत्। (उ) घर्षित्वा, घृष्ट्वा। घृष्टः। घर्षणम्। घृष्टं घृष्टं त्यजति न पुनश्चन्दनं चारुगन्धः। उद्—

ऊर्ध्वं घर्षणम्। चूडामणिभिरुद्घृष्टपादपीठं महीक्षिताम्, र १७, १८।

घोर्—घोर्ट्, भ्वा, प।

गतिचातुर्य्यम्। घोरति। घोर्ट्, "घोरति"।

घ्रा—भ्वा, प। आघ्राणम्।

गन्धग्रहणम्। लट् जिघ्रति, पा ७, ३, ७८। दीपनिर्वाणगन्धञ्च न जिघ्रन्ति गतायुषः, स्मृतिः। लिट् जघ्रौ। जघ्रतुः। जघ्रिथ, जघ्राथ। जघ्रिव। लुट् घ्राता। लृट् घ्रास्यति। आशिषि, घ्रायात्, घ्रेयात्, पा ६, ४, ६८। लुङ् अघ्रात्, अघ्रासीत्, पा २, ४, ७८। अघ्राताम्, अघ्रासिष्टाम्। अघ्रुः, अघ्रासिषुः। सन् जिघ्रासति। यङ् जेघ्रीयते, पा ७, ४, २१। जाघ्रेति। जाघ्राति। जाघ्रीत। णिच् घ्रापयति। अजिघ्रपत्, अजिघ्रियत, पा ७, ४६। अजिघ्रपन्न्यानीषधीः, भ १५, १०९। क्त, घ्राणम्, घ्रातम्, पा ८, २, ५६। मनोजिघ्रः सपद्मौजनः, काव्यप्रकाशः। अव, आ, उप—आघ्राणम्। अवजिघ्रेच्च तान् पिण्डान्, मनुः ३, २१८। आघ्राय गन्धम्, रत्ना ३, ५७। आघ्रायि गन्धवहस्तेन, भ २, १०। आजघ्रुर्मूर्ध्नि बालान् चुचुम्बुश्च, भ १४, १२। आमोदमुपजिघ्रन्तौ, र १, ४४। मूर्ध्नि तमुपजघ्रौ, र १२, ७०।

( ङ )

ङु—ङुङ् (उङ्), भ्वा, आ। शब्दः।

लट् ङवते। लिट् जुङुवे। लुट् ङोता। लुङ् अङोष्ट। सन् जुङूषते, पा ७, ४, ६२। यङ् ओङूयते।

( च )

चक्—भ्वा, आ, उ, वो। १ तृप्तिः। २ प्रतिघातः। चकति। ०ते। लिट् चचाक। चेके। लुट् चकिता। लुङ् अचकिष्ट। णिच् (तृप्तौ) चकयति, घटादिः। (प्रतिघाते) चाकयति, कौ ८३। क्त, चकितम्। चकोरः।

चकास्—चकास्, अदा, प। दीप्तिः।

लट् चकास्ति। चकास्तः। चकासति, अमरास्त्वकासति, भ १८, २४। चिराय तस्मिन् कुरवस्त्वकासति, भा १, १७। लिङ् चकास्यात्। हि चकाधि। चकाद्धीति केचित्। लङ् अचकात्। अचकाद्, पा ८, २, ७४। लिट् चकासाञ्चकार भूः, भ ३, ३७। लुट् चकासिता। लृट् चकासिष्यति। लुङ् अचकासीत्। अचकासिष्टाम्। अचकासिषुः। सन् चिचकासिषति। णिच् चकासयति। अचीचकासत्, पा ७, ४, २। अचचकासत्, वो। तं दीप्तिवितानकेन चकासयामासतुः, मा ३, ६। चकासतं चारु चमूरुचर्मणा, मा १, ८।

चक्—चिक्—चुक्—चु, प।

व्यथनम्। चक्कयति। चिक्कयति। चुक्कयति।

चच्, चचिङ्, अदा, आ। १ कथनम्।

२ दर्शनम्। लट् चष्टे। चचाते। चक्षते। चक्षे। चङ्ढ्वे। लिङ् चचीत। लङ् अचष्ट। अचष्टाः। अचङ्ढ्वम्। लिट् चख्यौ, चक्ष्यौ, पा २, ४, ५५। चक्षे, चक्ष्ये, चच्चक्षे। लुट् ख्याता, क्ष्याता, पा २, ४, ५४। लृट् ख्यास्यति। ०ते। क्ष्यास्यति। ०ते। आशिषि, ख्यायात्, क्ष्यायात्, क्ष्येयात्। लुङ् अख्यत्, अक्ष्यासीत्। अख्यताम्, अक्ष्यासिष्टाम्। अख्यन्, अक्ष्यासिषुः। अख्यत, अक्ष्यास्त। कर्मणि, ख्यायते, क्ष्यायते। आ—कथनम्। लक्षणा-

चक्ष, भ ६, २० । जगतामशर्म भृशमाचचक्षिरे, भा १२, २५ । युवामाचचाथाम्, भ ६, ८१ । न चाचक्षीत कस्यचित्, मनुः ४, ५८ । प्रत्या—प्रत्याख्यानम् । अस्वीकारः । गुरुपुत्रीति कृत्वाऽहं प्रत्याचक्षे न दोषतः, भारत । व्या—व्याख्या । विवरणम् । मेधातिथिगोविन्दराजौ तु इति व्याचक्षाते, मनुटीका १०, ११३ । प्र, परि—कीर्त्तनम् । कथनम् । तं देशं ब्रह्मावर्त्तं प्रचक्षते, मनुः २, १७ । हिरण्यपूर्वं कपिलं प्रचक्षते, मा १, ४२ । सम्—वर्जनम् । अस्मिन्नर्थे क्शाऽादेशो न स्यात् । समचक्षिष्ट । सचक्ष्या दुर्जनाः । विचक्षणः । नृचक्षसो राक्षसा इत्यादयोऽपि ।

चघ्—स्वा, प । बधः, वो ।

चघ्नोति । अयं वैदिक इति कश्चित् ।

चच्च्—चन्चु, भ्वा, प । गतिः ।

चच्चति । चचच्च । चच्चिता । चच्चात् । अचच्चात् । चण्डि चच्चन्ति वाताः, छन्दोमञ्जरौ १८, १ । चच्चद्भुजभ्रमितचण्डगदा—, वेणीसंहारम् । विषीदति रोदिति चच्चति, गीतगो ४, ८ । चच्चित्वा, चक्का ।

चट्—चटे (कटे), भ्वा, प । १ वर्षणम् ।

२ आवरणम् । ३ भेदः, वो । चटति । (ए) अचटीत् । चट्, चु, प । १ भेदनम् । २ बधः, वो । चाटयति । उद्—उच्चाटनम् । अपसारणम् । उच्चाटनीयः करतालिकानां दानादिदानीं भवतीभिरेषः, नै ३, ७ ।

चण्—भ्वा, प । १ दानम् ।

२ शब्दः, वो । चणति । चचाण । चेणतुः । चणिता । अचणीत्, अचाणीत् । चिचणिषति । चच्चण्यते । चच्चण्टि । चणयति, घटादिः । (गमनहिंसयोः) चणयति, चाणयति । अचीचणत्, अचचाणत्, वो । चन्, वो । चनति । चणकम् ।

चण्ड्—चडि, भ्वा, चु, आ । कोपः ।

चण्डते । चण्डयते । ०ति, वो । चण्डः । चण्डी । चण्डालः ।

चत्—चद्—चते, चदे, भ्वा, उ ।

याचनम् । चतति । ०ते । चचात । चेते । चतिता । चतिष्यति । ०ते । (ए) अचतीत् । अचतिष्ट । चद्, चदति । ०ते । चत्वारः ।

चन्—(चण्), भ्वा, प, वो ।

दानशब्दयोः ।

चन्द्—चदि, भ्वा, प । १ आह्लादः ।

२ दीप्तिः, वो । चन्दति । चचन्द । चन्द्रः । चन्दनः । कुन्दः ।

चप्—भ्वा, प । १ सान्त्वनम् ।

२ उपशमः, वो । चपति । चचाप । चेपतुः । चपिता । चप् (चह्), चु, प । १ शाठ्यम् । २ क्रूरीकरणम्, वो । चपयति, घटादिः ।

चम्—चमु, भ्वा, प । भक्षणम् ।

चमति । चचाम । चेमतुः । चचाम मधु माध्वीकम्, भ १४, ९४ । मांसं चेमुः, भ १४, ५३ । चमिता । चमिष्यति । अचमीत् । चिचमिषति । चच्चम्यते । चच्चन्ति । चामयति । अचचामत् । (उ) चमित्वा, चान्त्वा । चान्तः । आ—आचमनम् । उपस्पर्शः । भक्षणम् । आचामति, पा ७, ३, ७५ । आचामेत् । विचमति । त्रिराचामेदपः, मनुः २, ६० । अनुज्ञाभिरङ्गिराचामेत्, मनुः २, ६१ । मण्डमाचामति मृगः, उत्तर १३२ । वायुराचामति स्वेदलवान्

मुखे ते, र ९, ६८ । १३, २० । समा—संहारः । महेषुजालानि अर्कः पयांसीव समाचचाम, भा १७, ३५ ।

चम्प्—चपि, चु, प । गतिः । चम्पयति । चम्पति ।

चम्ब्—(कम्ब्) भ्वा, प । हिंसागत्योः ।

चय्—(अय्) भ्वा, आ । गतिः ।

चयते । चेये । चयिता । अचयिष्ट ।

चर्—भ्वा, प । १ गतिः । भ्रमणम् । २भक्षणम् । ३आचरणम्, वो । आ—सेवा । लट् चरति, शम्बूको नाम तपश्चरति, उत्तर ४० । लिट् चचार । चेरतुः । चचाराश्रमपर्य्यन्ते हरिणानि, भारत । चेरतुः खरदूषणौ, भ ५, १ । चेरुर्हविष्यं भुञ्जानाः कात्यायन्यर्चनव्रतम्, भागवतम् । लुट् चरिता । लृट् चरिष्यति, परिवादस्ते महाँल्लोके चरिष्यति, रामा । लुङ् अचारीत् । अचारिष्टाम् । अजारिषुः । सन् चिचरिषति । यङ् (भावगर्हायाम्) चञ्चूर्य्यते, पा ७, ४, ८७, ८८ । चञ्चूर्त्ति । चञ्चूर्य्यन्तेऽभितो लङ्काम्, भ १८, २५ । णिच् चारयति । अचीचरत् । चर, चु, प । संशयः । असंशयः, वो । विचारयति यो धर्ममिति हलायुधः । चरित्वा । चरितम् । चूर्त्तिः, पा ७, ४, ८८ । चरणम् । चरितव्यम् । चर्य्यम् । चरित्रम् । चरिष्णुः । चरः । चारः । चरणः । चर्म । अति—अतिचारः । अतिक्रम्य गमनम् । लङ्घनम् । अतिचारं गते जीवे, ज्योतिषम् । अनु—अनुगमनम् । सहगमनम् । अप—मन्दाचरणम् । अभि—अभिचारः । अतिक्रमः । मारणम् । श्येनेनाभिचरन् । पतिं या नाभिचरति, मनुः, ५, १६५ । व्यभि—व्यभिचारः । व्यभिचचार न तापकरोऽनलः, नै । आ—आचरणम् । यद् यदाचरति श्रेष्ठः, मौ ३, २१ । जानन्नपि हि मेधावी जड़वल्लोक आचरेत्, मनुः, २, ११० । विप्रान् शूद्रवदाचरेत् । समा—अनुष्ठानम् । करणम् । स्नानं समाचरति चारु नदीप्रवाहे, स्मृतिः । उद्—उदयः । कुम्भपूरणभव उच्चचार निनादः, र ९, ७४ । तूर्य्यध्वनिरुदचरत्, र १६, ८७ । समुच्चरच्चारुपतत्रिचित्रं वनम्, भ २, २४ । गुरुवचनमुच्चरते (उच्चैरुच्चैः गच्छति), पा १, ३, ५३ । पथः च्यावा उदचरन्त, भ ८, ३१ । मघोनि दिवमुच्चरमाणे, नै ५, ४८ । उच्चरेत् (मूत्रपुरीषोत्सर्गं कुर्य्यात्), मनुः ४, ४९ । णिच्, उच्चारणम् । मुखसहितनासिकयोच्चार्य्यमाणोऽनुनासिकः, पा १, १, ८ । उप—उपचारः । पूजा । भजनम् । सेवा । सुग्रीवविभीषणादीनुपाचरत्, र १४, १७ । ४, ६२ । एनमुपाचरत्, र ५, १२ । उपचर्य्यः स्त्रिया देववत् पतिः, मनुः ५, १४५ । गिरिमुपचचार सा, कु १, ६१ । परि—परिचर्य्या । सेवा । शुश्रूषा । गुरुं परिचरेत्, मनुः २, २४३ । प्र—प्रचारः । तावद्रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति, रामा । वि—विचरणम् । भ्रमणम् । व्यचारीन्निरङ्कुशः, भ १५, ८८ । विचचार दावम्, र २, ८ । हंसं विचरन्तमल्लिके, नै १, ११७ । णिच्, मीमांसा । अवधारणम् । सर्वेषां गुणदोषौ विचारयेत्, मनुः ७, १०८ । विचारयति यो धर्मं विद्वद्भिर्ब्राह्मणैः सह । विचारयत्यस्य लोके यावच्चन्द्रोज्ज्वलं यशः ॥ कवि १२५ । सम्—गमनम् । सङ्क्रमणम् । रथेन सञ्चरते, १, ३, ५४ । यानैः समचरन्यत्ते समचारीदशङ्कितः, भ ८, ३२, ३६ । क्वचित् पथा सञ्चरते

सुराणाम्, र २३, १९। सञ्चारयामास जरां पुत्रे, भारत। सञ्चारिते ऋषे, र ६, ८। यूथानि सञ्चार्य्य हिपेन्द्रः, शकु ५, ९।

चर्च्—भ्वा, तु, प। १परिभाषणम्। कथनम्। २ तर्जनम्। भर्त्सनम्। चर्चति। ऋर्च्, ऋर्चति। ऋर्छ् ऋर्छति। ऋर्भ्, ऋर्भति। चर्च्, चु, प। अध्ययनम्। अनुशीलनम्। चर्चयति वेदं विप्रः, दुर्गा। (अनुलेपनम्।) चन्दनचर्चितनीलकलेवर, गीतगो १, ४०। चर्चितः। चर्चा। मृगमदछन्नचर्चा, छन्दोमञ्जरी १५, ४। चर्चरी। चार्चिक्यम्। ऋर्भरः।

चर्ब्—(कर्ब्) भ्वा, प। गतिः। चर्बति।

चर्व्—भ्वा, प। अदनम्। चर्वणम्। चर्वति। चचर्व। चर्वितः। अचर्वीत्। चर्व्, चु, प, वो। चर्वणम्। चर्वयति। चर्वति। रथं वक्षे निःक्षिप्य दशनैश्चर्वयति, चण्डी।

चल्—भ्वा, प। १कम्पनम्। अस्थैर्य्यम्। २गतिः, वो। चल्, तु, प। विलासः। क्रीड़नम्। लट् चलति, न चलति खलु वाक्यं सज्जनानाम्। स्वधर्म्मान्न चलन्ति, मनुः ७, १५। चलत्येकेन पादेन तिष्ठत्येकेन बुद्धिमान्, हितो। चल सखि कुञ्जम्, गीतगो ५, ११। लिट् चचाल। चेलतुः। छिन्नाश्चेलुः क्षणं भुजाः, भ १४, ४०। लुट् चलिता। लृट् चलिष्यति। लुङ् अचालीत्। अचालिष्टाम्। अचालिषुः। सपत्नोऽद्रिरिवाचालीत्, भ १५, २४। सन् चिचलिषति। यङ् चाचल्यते। चाचलीति। णिच् (कम्पने घटादिः) चलयति। तरून् चलयन् शनैः, भ ८, ६०। चलयन् शृङ्गरुचस्तवारुकान्, र ८, ५४। शीलं चालयति (अन्यथा करोति)। सूत्रं चालयति (क्षिपति)। चालयति हस्तिनं यन्त्रा, दुर्गा। गोपालो दण्डेन पशुगणान् चालयन्। चालयन् सकलां पृथ्वीमिति चालशब्दाण्णिच्। चल्, चु, प। पोषणम्। चालयति। चलित्वा। चलितः। चलनम्। चलः। चालः। चालकः। तु, चलती, चलन्ती। प्रहृष्टमना मृगाक्षिकं चलितः, हितो। ऊद्—प्रस्थानम्। स्थितः स्थितामुच्चलितः प्रयाताम्, र २, ६। उच्चाल बलभिल्लखः, भ ११, ५१। प्र—प्रमथनम्। क्रम्पः। प्रसिद्धिः। रोषात् प्रचलितो नृपतिसागरः, भारत। वि—स्खलनम्। च्युतिः। अस्थैर्य्यम्। क्षोभः। व्यचालीदम्बसां पतिः, भ १५, ७०। धर्म्माद्विचलितं नृपं हन्ति, मनुः ७, २८। तं धर्मं न विचालयेत्, मनुः ७, १३। सम्—णिच्, सञ्चालनम्। सञ्चालयामि ललिनीदलतालवृन्तम्, शकु ३, १२८।

चष्—भ्वा, उ। भक्षणम्। प, वो। बधः। चषति। ०ते। चषकः। चषालः। चाषः।

चह्—भ्वा, चु, प। परिकल्कनम्। श्राठ्यम्। प्रतारणा। चहति। चचाह। चहिता। अचहीत्। चहयति, घटादिः। अचीचहत्। चह, चु, प। अदन्तः। १दम्भः। २श्राठ्यम्। चहयति। अचचहत्।

चाय्—चायृ, भ्वा, उ। १ पूजा। अर्चना। २चाक्षुषज्ञानम्। चायति। ०ते। चचाय। ०ये। तं पर्वतीयाः प्रमदाश्चचायिरे, भा १२,५१। चायिता। अचायीत्। अचायिष्ट। चिकीर्षति। ०ते। चेकीयते, पा ६,१,२१। चेकयीति,

चेकेति । चेकीतः । (ऋ) अचचायत् । शम्भुं न च ते निचायितुमभिप्रसेहिरे (द्रष्टुम्), भा १२,१८ । अपचितिः, की ४४९ । अपचितः । अपचायितः, पा ७, २, ३० ।

चि—चिञ्, श्वा, उ, वो । सञ्चयः ।

चिञ्, श्वा, उ । चयनम् । राशीकरणम् । लट् चयति । ०ते । वृक्षं पुष्पं चिनोति । चिनुते । चिन्वते । लिङ् चिनुयात् । लङ् अचिनोत् । अचिनुताम् । अचिन्वन् । अचिनुत । लिट् चिकाय, चिचाय, पा ७, ३, ५८ । चिकेथ, चिकायिथ । चिक्ये, चिच्ये । लुट् चेता । लृट् चेष्यति । ०ते । आशिषि, चीयात् । चेषीष्ट । लुङ् अचैषीत् । अचेष्टाम् । अचैषुः । अचेष्ट । अचेषाताम् । अचेषत । भूमावचैषुस्तान् हतान्, भ १५, ७६ । कर्मणि, चीयते । चायिता । चायिष्यते । चायिषीष्ट । अचायि । अचायिषत । राजहंस तव सैव शुभ्रता चीयते नच न चापचीयते, काव्यप्रकाशः । सन् चिकीषति । ०ते । चिचीषति । ०ते, पा ७, ३, ५८ । यङ् चेचीयते । चेचयीति, चेचेति । णिच् चाययति, चाययति, पा ६, १, ५४ । चिञ्, चु, उ, प, वो । चयनम् । चययति । ०ते । चाययति । ०ते । चपयति । ०ते, पा ७, ३, ३६ । चितः । चेयः, पा ३, १, ९७ । चेतव्यः । चयः । चयनम् । चिन्वन् । चिन्वानः । परराष्ट्राणि नैषधं चिन्वन्तः, भारत । काय्यः । निकाय्यः । अग्निचित् । अप—अपचयः । हानिः । क्षयः । पूजा । णिच् अपचितः, अपचायितः, पा ७, ३, ३० । अपचितमपि गात्रम्, शकु २, ३४ । अपचितद्विषः (अपचितानां पूजितानां द्विषः), भ ९, २२ । पूजा नमस्यापचितीत्यमरः । अव—चयनम् । अवचिन्वाना कुसुमानि वृक्षान्, भ ६, १० । अवचितबलिपुष्पा सा, कु १, ६० । आ—आप्तिः । आच्छादनम् । सञ्चयः । संग्रहः । आचिनोद् भूमिं हतैः, भ १७, ६९ । आचिचाय शरैः सेनामाचिकाय च राघवौ, भ १४, ४६ । आचिक्यिते तौ पन्नगैः, भ १४, ४७ । उद्—चयनम् । उच्चिक्यिरे पुष्पफलं वनानि, भ ३, ३८ । सञ्चयः । उप—उपचयः । वृद्धिः । उपाचायिष्ट सामर्थ्यं तस्य, भ ९, ३३ । अधोऽधः पश्यतः कस्य महिमा नोपचीयते, हितो । यशस्तोमानुच्चैरुपचिनु, अनर्घ १४ । महिमानमुपचिनोति, अनर्घ ३१ । नि—निचयः । व्याप्तिः । निचितं खमुपेत्य नीरदैः, घटकर्परः १ । परिणिचिनोति, पा ८,४,१७ । निर्—निश्चयः । अभिधेयं न निश्चिनोमि, अनर्घ ७० । न निश्चिकाय चन्द्रम्, भ १०, ६७ । निरचायि भेदो नौषधीनां तेन, भ १५, १०७ । परि—परिचयः । अभ्यासः । परिचेतुमुपांशु धारणाम्, र ८, १८ । प्र—प्रचयः । व्याप्तिः । वृद्धिः । पुञ्जिः प्रचितान् गोष्ठान्, भ २, १४ । प्रचीयमाना सा, र ३, ७ । वि—सञ्चयः । चिन्ता । अन्वेषणम् । विष्णुं विचिन्वन्ति योगिनो मुक्तये, र १०, २३ । त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते, भागवतम् । सम्—सञ्चयः । सञ्चिकाय तपः, र १९, २ । तपः प्रत्यहं सञ्चिनोति, शकु २, ९४ ।

चिक्क्—(चक्क्) चु, प । पीडनम् ।

चिट्—श्वा, चु, वो, प । परप्रेष्यम् ।

चेटति । चेटयति । चेटः । चेटी ।

चित्—चितौ, श्वा, प । १ संज्ञानम् । जागरणम् । २ज्ञानम् । लट् चेतति ।

अविद्यानिद्रयाक्रान्ते जगत्येकः स चेतति, कवि १२६। नेषूनचेतन्नस्यन्तम्, भ १७, १६। लिट् चिचेत। चिचितुः। चिचेतिथ। चिचेत राक्षस्तत्कच्छम, भ १४, ६२। तद् यातुधानैश्चिचिते, भ २, २८। लुट् चेतिता। लृट् चेतिष्यति। लुङ् अचेतीत्। अचेतिष्टाम्। अचेतिषुः। नाचेतीत्तान्, भ १५, ३८। एवं तेऽचेतिषुः सर्वे (संज्ञां लब्धवन्तः), भ १५, १०६। सन् चिचितिषति, चिचेतिषति। यङ् चेचित्यते। चेचेक्ति। णिच् चेतयति। यावद् राक्षस्यश्चेतयन्ति न (प्रतिबुध्यन्ते, स्वार्थे णिच्), भ ८, १२३। चित्, च्, आ। १ सञ्चेतनम्। संवेदनम्। ज्ञानम्, बो। चेतयते, धिया चेतयते सर्वं परस्य हृदये स्थितम्, कवि १२६। सर्वे राजानश्चेतयध्वम्, अनर्घ १०८। अचीचितत। चितित्वा, चेतित्वा, पा १, २, २६। (ई) चित्तम्। चेतनः। चेतना। चित्। चेतः।

चित्र—अदन्तः। चु, प।

१ चित्रीकरणम्। आलेख्यकरणम्। २ क्षणिकैक्षणम्। कदाचिद्दर्शनम्। ३ अङ्गतदर्शनम्, बो। चित्रयति। चित्रापयति। चित्रयति प्रतिमां लोकः। चित्रयति राहुं लोकः (कदाचित् पश्यति), दुर्गा। चिचैश्चित्रयति व्योम, कवि १५३। क्रौञ्चपदालोचित्रिततीरा, छन्दोम २५, १। वागदेवता चरितचित्रचित्तसद्मा, गीतगो १, २।

चिन्त्—चिति, चु, प। स्मृतिः। चिन्ता। चिन्तयति। चिन्तति। यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता, नीतिशतकम् १। विद्यामर्थञ्च चिन्तयेत्, हितो। सुग्रीवोऽचिन्तयत् कपिः, भ ६, ८६। लिट् चिन्तयामास। लुट् चिन्तयिता। लृट् चिन्तयिष्यति। लुङ् अचिचिन्तत्। चिन्तयित्वा। °चिन्त्य। चिन्तितः। चिन्तनम्। चिन्ता। परि, वि, सम्—अत्यन्तचिन्ता। ध्यानम्। स्मरणम्। विचिन्तयन्तीयमनन्यमानसा, शकु ४, १८। विचिन्तयन्त्या भवदापदम्, भा १, ३७।

चिल्—तु, प। वसनम्।

चिलति। चिचेल। चेलिता। चेलम्।

चिल्ल्—भ्वा, प। १ शैथिल्यम्। २भावकरणम्। ह्रावकरणम्। चिल्लति। चिल्लः। चिल्ली।

चीक्—(शीक्) चु, प। आमर्शनम्। स्पर्शः। चीकयति। चीकति। चन्द्रावतीतरङ्गार्द्रांश्चीकयन्ति च यद्वपुः, हलायुधः। भट्टमल्लस्तु मर्षणे इति मूर्धन्यषमध्यं पठित्वा क्षमार्थमाह, दुर्गा।

चीव्—(चीव्)।

चीभ्—चीभृ—(शीभृ) भ्वा, आ।

कत्थनम्। श्लाघा। प्रशंसा, बो। चीभते। चिचीभे। चीभिता। (ऋ) अचिचीभत्। ओष्ठ्यवकारादिरयमित्येके, दुर्गा।

चीय्—चीव्, चीयृ, बो, चीट्, भ्वा, च।

१आदानम्। २संवरणम्। चीयति। °ते। चीवति। °ते। चिचीव। °वे। पवर्गलतीयान्तोऽप्ययम्। (ऋ) अचिचीवत्। चीव्, चु, प। दीप्तिः। चीवयति।

चुक्—(चक्) चु, प। पीड़ा।

चुच्—(शुच्) भ्वा, प। अभिषवः।

चुट्—तु, चु, प। छेदनम्।

चुटति। चोटयति। चुचोट। चुटिता। अचुटीत्। चुट्—भ्वा, प, बो।

अल्पीभावः। चोटति नदी ग्रीष्मे, दुर्गा। अव्यक्तीभाव इति प्रदीपः।

चुट्—चु, प। अल्पीभावः। चुटयति।

चुड्—तु, प। संवरणम्।

चुडति। चुचोड। चुडिता। अचुडीत्।

चुड्ड्—(चुदड्) भ्वा, प। भावकरणम्। अभिप्रायसूचनम्। चुड्डति। क्विप् चुत्।

चुण्—तु, प, वो। छेदनम्।

चुणति। चुचोण। चुणिता। अचुणीत्।

चुण्ट्—चुण्ड्, चुटि, चुडि, भ्वा, प। अल्पीभावः। अव्यक्तीभावः। चुटि, चुडि, चु, प। छेदनम्। चुडि, वो, भ्वा, आ, चु, प। रोषः। चुण्टति। चुण्टयति। चुण्टति। चुण्डति। चुण्डयति। चुण्डति। ०ते।

चुत्—चुतिर् (द्युतिर्) भ्वा, प।

चुद्—चु, प। प्रेरणम्। क्षेपणम्। चालनम्। नियोगः। प्रश्नः। चोदयति। अचूचुदत्। चोद्यमानः सिसृक्षया, मनुः १, ७५। शरैर्मन्मथचोदितैः। तान् वधे मातुरचोदयत्। चोदयामास तं सभा वै क्रियतामिति। शिष्यान् समानीयाचार्य्योऽर्थमचोदयत्, भारत। चोदितः। चोद्यम्। चोदना। प्र, सम्—प्रेरणम्। कथनम्। परिवेषयेत प्रयतो गुणान् सर्वान् प्रचोदयन्, मनुः ३, २२८। सञ्चोदयामास शीघ्रं याहीति सारथिम्, रामा।

चुन्द्—(बुन्द्)।

चुप्—भ्वा, प। मन्दगमनम्। शनैर्गतिः। चोपति। चोपिता।

चुम्ब्—चुबि, भ्वा, प। चुम्बनम्।

लट् चुम्बति, श्लिष्यति कामपि चुम्बति कामपि, गीतगो १, ४४। नौतिवक्त्रं चुम्बतु मल्लिकाम्, हितो। लिट् चुचुम्ब, चारु चुचुम्ब नितम्बवती दयितम्। गीतगो १।४३। चुचुम्बुश्च सुतप्रियाः, भ १४, १२। प्रियामुखं क्रिमुरुषञ्चुचुम्बे। व्यतिहारितङ्, दुर्गा। कृ २, ३८। लुट् चुम्बिता। लुङ् अचुम्बीत्। अचुम्बिष्टाम्। अचुम्बिषुः। चुबि, चु, प। चुम्बनम्। चुम्बयति। चुम्बितम्। चुम्बनम्। चूडाचुम्बितकङ्कपत्रम्, महाना २, ३। उदयाचलचुम्बिबिम्बं चकास्ति, काव्यप्रकाशः।

चुर्—चु, प। स्तेयम्। चौर्य्यम्।

लट् चोरयति, पा ३, १, २५। चोरयति, वो। कर्तृगामिनि फले तु आत्मनेपदम्। चोरयते, पा १, ३, ७४। यश्चास्मिं चोरयेद् गृहाद्, मनुः ८, ३, ३३। लिट् चोरयामास। लुट् चोरयिता। लृट् चोरयिष्यति। आशिषि, चोर्य्यात्। लुङ् अचूचुरत्, पा ३, १, ४८। अचूचुरच्चन्द्रमसोऽभिरामताम्, मा १, १६।

चुल्—चु, प। उन्नतिः। चोलयति।

चुलुम्प्—भ्वा, प। सौत्रधातुः। लोपः। चुलुम्पति। चुलुम्पाञ्चकार।

चुल्ल्—भ्वा, प। १अभिप्रायसूचनम्। २ हावकरणम्। विलासः। चुल्लति। चुचुल्ल। चुल्लिता। चुल्लन्ति चारुनयनाश्च सह प्रियेण, कवि ४७। चुल्ली।

चूण्—चु, प। सङ्कोचः।

चूणयति चक्षुः (सङ्कुचितं स्यात्), दुर्गा।

चूर्—चूरी, दि, आ। दाहः।

चूर्य्यते, चूर्य्यते चौरवृत्तीन् यः, कवि

८८। चुचूरे। चूरिता। (ई) चूर्णः।

चूर्ण्—चु, प। १ पेषणम्।

चूर्णीकरणम्। २ प्रेरणम्। चूर्णयति, चूर्णयत्यरिमण्डलं यः, कवि ८८। अचुचूर्णत्। अश्मवर्षमचूर्णयं शरजालैः, भारते। चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः, गीतगो ११, २७। तान् प्राचुचूर्णत् पदाभ्याम्, भ १५, ३६।

चूष्—भ्वा, प। पानम्।

चषति। चुचूष। चूषिता। अचूषीत्। तत्तदा चूषति, अनर्घ १५४।

चृत्—चृती, तु, प। १हिंसा।

२ग्रन्थनम्। लट् चृतति। लिट् चचर्त। चचृततुः। लुट् चर्त्तिता। लृट् चर्त्तिष्यति, चक्ष्यति, पा ३,२,५७। चक्ष्यन्ति बालवृद्धान्, भ १६, २०। लृङ् अचर्त्तिष्यत्, अचक्ष्यत्। लुङ् अचर्तीत्। अचर्त्तिष्टाम्। अचर्त्तिषुः। सन् चिचर्त्तिषति। चिचृत्सति। यङ् चरीचृत्यते। चरीचर्त्ति। णिच् चर्त्तयति। अचीचृतत्, अचचर्त्तत्। चृत्, तु, प, वो। सन्दीपनम्। चर्त्तयति। चर्त्तति। (ई) चृत्तः।

चृप्—चु, प। सन्दीपनम्।

चर्पयति। चर्पति।

चेल्—चेल्ल (केलृ), भ्वा, प।

१गतिः। २कम्पः, वो। चेलति। (ऋ) अचिचेलत्। चेल्ल, चेल्लति, वो। चेलम्।

चेष्ट्—भ्वा, आ। चेष्टा। यत्नः।

व्यापारः। परिस्पन्दनम्। लट् चेष्टते, यदा स देवो जागर्त्ति तदेदं चेष्टते जगत्, मनुः १, ५२। सर्वं चेष्टते स्वस्थाः कृतेर्ज्ञानवानपि, गीतगो ३, ३३। कार्य्यार्थं नातिचेष्टेत, हितो। लिट् चिचेष्टे। लुट् चेष्टिता। लुङ् अचेष्टिष्ट। अचेष्टिषाताम्। अचेष्टिषत। णिच् चेष्टयति। अचिचेष्टत्, अचचेष्टत्, पा ७, ४,८६। योऽमचिचेष्टद्बावी, भ १५, ६०। चेष्टितम्। चेष्टनम्। चेष्टा। तं शोणितपरीताङ्गं चेष्टमानं महीतले। वि—परिस्पन्दनम्। सिन्धुनीरविचेष्टनैः, र ४, ७०।

च्यु—चुङ्, भ्वा, आ। गमनम्।

पतनम्। च्युतिः। भ्रंशः। स्खलनम्। च्यवते। उत्पद्यन्ते च्यवन्ते, मनुः १२, ८६। चुच्युवे। चोता। चोष्यते। अचोष्ट। अचोषाताम्। अचोषत। अचोष्ट सत्त्वान्नृपतिः, भ ३, २०। चुच्यूषते। चोच्यूयते। चोच्यवीति। च्यावयति। अचिच्यवत्, अचुच्यवत्। चिच्यावयिषति, चुच्यावयिषति, पा ७, ४, ८१। च्यु, चु, प। १हासः। २सङ्घनम्। च्यावयति। रक्षमरुच्युतम्, भ ६, ७१। च्युतो विधिः, र २, ४७। रतिच्युता, र ८, ६७। हृतभार्य्ये च्युते राज्यात् रामे, भ ७, ८२। प्र—भ्रंशः। आवः। गर्भप्रच्युतिदोषेण, भारत। स्वर्गात् प्रच्यवेत, स्मृतिः।

च्युत्—चुस्, च्युतिर्, च्युतिर्, भ्वा, प। आसेचनम्। ईषदार्द्रीकरणम्। सर्वतआर्द्रीकरणम्। क्षरणम्, वो। लट् च्योतति। च्योतति घृतं वह्नौ यज्वा, दुर्गा। लिट् चुच्योत। चुच्युततुः। लुट् च्योतिता। लृट् च्योतिष्यति। लुङ् (इर्) अच्युतत्, अच्योतीत्, पा ३, १, ५७। अच्युतताम्, अच्योतिष्टाम्। अच्युतन्, अच्योतिषुः। शोणितं सम्प्रहारेऽच्युतत्, भ ६, २८। सैन्यमच्युतत् रक्तम्, भ १५, ११४। इदं कवचमच्योतीत्, भ ६, २८। सन् च चोतिषति,

च्युतिषति । यङ् चोच्यूयते । चोच्यो-त्ति । णिच् च्यौतयति । अचुच्युतत् । च्युत्, चोतति । च्युचोत । चोतिता । अचुतत्, अचोतीत् ।

च्यस्—(च्यु) चु, प । १त्यागः ।

२सङ्गनम् । ३हसनम् । च्योसयति ।

( छ )

छद्—च्, उ । अपवारणम् ।

आच्छादनम् । गोपनम् । छादयति । ०ते । छदति । ०ते । सतं शरैश्छादयन्, भ ६, ५८ । छादितः, छन्नः, पा ७,२, २७ । छन्नोऽभ्रेण चन्द्रमाः, भारत । अद्रीन्द्रं तुङ्गशैलतरुच्छन्नम्, भ ६,६३ । ऊर्जने घटादिः । छद अपवारणे इति चौरादिकस्य घटादावयमनुवादः । छदयति पुत्रं पिता (बलवन्तं प्राणवन्तं वा करोति ) अन्यत्र छादयति (अपवारयति) स्वार्थेणिचि तु, छादयति (बलीभवति, प्राणीभवति, अपवारयति वा)। छद, चु, प । अदन्तः । संवरणम् । अपवारणम् । छदयति, छदयति सुरलोकं यो गुणैर्यश्च युद्धे सुरयुवतिविमुक्ताश्छादयन्ति स्रजश्च, कवि १६ । अव, आ, प्र—आच्छादनम् । संवरणम् । शरजालैः प्रच्छन्नं विन्ध्यम्, भ ७, ५३ । सीतां दिदृक्षुः प्रच्छन्नः, भ ८, ४३ । व्याधो जालं विस्तीर्य प्रच्छन्नो भूत्वा स्थितः, हितो । सम्—आच्छादनम् । व्यापनम् । सेना महीं संच्छादयामास प्रावृषि व्योमिवाम्बुदः, रामा ।

छन्द्—छदि, चु, प । संवरणम् ।

गोपनम् । आच्छादनम् । छन्दयति, छन्दति । अचच्छन्दत् । छदि, छन्द् चु, प । दीप्तिः । छन्दयति, छन्दति । उप—प्रलोभनम् । प्रार्थना । उपच्छन्दयति मयि प्रयोज्यं त्वया न प्रतिषेधरौक्ष्यम्, र ५, ५८ ।

छम्—छमु (चमु) भ्वा, प । भक्षणम् ।

छम्प्—चम्प, छपि, च, प । गतिः ।

छर्द्—चु, प । वमनम् ।

उद्गिरणम् । छर्दयति । अचच्छर्दत् ।

छल् णिजन्तनामधातुः । छलना ।

छलयति । शिरीषप्रसवावतंसाश्छलयन्ति मौनान्, र १६, ६१ । निर्ग्रीथेऽभ्येत्य चाकस्मादस्मान् स छलयिष्यति, भारत । बलिं छलयते तुभ्यम्, गीतगो १, १६ । छलयसि विक्रमणे बलिम्, गीतगो १, ६ । केनापि छलितस्तातः, अनर्घ १२१ ।

छष्, भ्वा, उ । हिंसा । छषति । ०ते ।

छिद्—छिदिर् रु, उ । छेदनम् ।

द्वैधीकरणम् । लट् छिनत्ति । छिन्तः । छिन्दन्ति । छिनत्सि । छिन्थे । छिन्दाते । छिन्दते । छिनत्ति नित्यमज्ञानम्, कवि २४६ । नैनं छिन्दन्ति शास्त्राणि, गी २, २३ । छिनद्मि चण्डाचरान्, भ ६, ३६ । लिङ् छिन्द्यात् । छिन्दीत । हि छिन्धि । लङ् अच्छिनत् । अच्छिन्ताम् । अच्छिन्दन् । अच्छिनः । अच्छिनत् । अच्छिन्त । लिट् चिच्छेद । चिच्छिदे । लुट् छेत्ता । लृट् छेत्स्यति । ०ते । लुङ् (इर्) अच्छिदत्, अच्छैत्सीत् । अच्छैत्ताम् । अच्छैत्सुः । अच्छित्त । अच्छित्साताम् । अच्छित्सत । तैतं दन्तैरच्छिदन्, भ १५, ४३ । वामव्याख्येण तं पाणिं रामोऽच्छैत्सीत्, भ १५, ६७ । स वृक्षमच्छिदत्, भ १५, ६८ । कर्मणि, छिद्यते । अच्छेदि, अच्छेदि तेनास्य किरीटम्, भ १५, ६४ । सन् चिच्छित्सति । ०ते । यङ् चेच्छि-

यते। चेच्छेत्ति। णिच् छेदयति। अचिच्छिदत्। छित्त्वा। ०छिद्य। छिन्नः। छेदः। छेदनम्। छित्तिः। छिदुरः। आ—आक्षिप्य ग्रहणम्। छेदनम्। उच्छेदः। इयं जातवेदोमुखादाच्छिनत्ति, कु २, ४६। आच्छेत्स्याम्येतस्य धनुर्ज्याम्। अर्त्तारमाच्छेत्स्यति कामिनीभ्यः, भारत। अव—अवच्छेदः, परिच्छेदः। विशेषः। उद्—उच्छेदः। उन्मूलनम्। नोच्छिन्द्यादात्मनो मूलम्, मनुः ७, १३६। एतान्यपि मतां गेहे नोच्छिद्यन्ते कदाचन, मनुः ३, १ १। मूर्च्छान्तरायं मुहुरुच्छिनत्ति, भा १६, ६। परि—परिच्छेदः। इयत्तयावधारणम्। निर्णयः। परिच्छिन्नप्रभावर्द्धिर्न मया, कु २, ५८। तं शीर्षच्छेद्यं परिच्छिद्य, र १५, ५१। परात्मनोः परिच्छिद्य बलाबलम्, र १७, ६०। यस्य यशः परिच्छेत्तुमियत्तयाऽलम्, र ६, ७१। वि—छेदः। अर्द्धं विच्छिन्नम्, शकु १, ३२। विच्छिद्यमाने कुले, अ ३, ५२। सम्—उच्छेदः। ज्ञानसंच्छिन्नसंशयः, गी ४, ४१।

छिद्र—अदन्तः। चु, प। भेदः।

रन्ध्रकरणम्। कर्णरन्ध्रकरणम्। छिद्रयति। छिद्रितः। छिद्रणम्।

छुट्—(चुट्), तु, कु, चु, प। छेदः।

छुटति। छोटिका अङ्गुलिध्वनिः।

छुड्—(थुड्), तु, प। संवरणम्।

छुप्—तु, प। स्पर्शः।

छुपति। चुच्छोप। छोप्ता। अच्छौप्सीत्।

छुर्—तु, प। छेदनम्।

छुरति। चुच्छोर। छुरिता। आशिषि, छुर्य्यात्, पा ८, २, ७८। अच्छुरीत्। ल छुरितः (रञ्जनम्), अभिक्किरणच्छुरित जलधर, गीतगो ११, २८। अलक्तच्छुरितं हृदयम्, गीतगो ८, १०। मनःशिलाविच्छुरिताः, कु १, ५६। छुरिका। छुरणम्।

छूद्—उच्छूदिर्, रु, उ। १ दीप्तिः।

२ देवनम्। क्रीडनम्। ३ वमनम्, वो। देवनाजिगीषेच्छाव्यवहारस्तुतिव्युतिक्रीडागतय इति केचित्, दुर्गा। लट् छूणत्ति। छून्त्। लिङ् छून्यात्। छून्दीत। लङ् अच्छूणत्। अच्छून्तः। लिट चच्छूद। चच्छूदे। चच्छूदिषे, चच्छूत्से। लुट् छूदिता। लृट् छूत्स्यति। ०ते। छूदिष्यति। ०ते, पा ७, २, ५७। लुङ् (इर्) अच्छूदत्, अच्छूदीत्। अच्छूदिष्ट। सन् चिच्छूदिषति। ०ते। चिच्छूत्सति। ०ते। यङ् चरीच्छूद्यते। चरीच्छूत्ति। छृदी चु, प। सन्दीपनम्। छर्दयति। छर्दति। छर्दिता। छर्दिष्यति। (ञ) छृदित्वा, छृत्वा। छृणः।

छृप्—(चृप्) चु, प। सन्दीपनम्।

छेद्—अदन्तः। चु, प। छेदनम्।

छो—दि, प। छेदनम्।

छ्यति, पा ७, ३, ७१। चच्छौ। चच्छतुः। छाता। छास्यति। छायात्। अच्छात्। अच्छासीत्, पा २, ४, ४८। णिच् छाययति, पा ७, ३, ३७। यङ् चाच्छायते। चाच्छाति, चाच्छेति। अवच्छतम्। अवच्छातम्।

छ्य—छ्युङ् (च्युङ्) स्वा, आ। गतिः।

## (ज)

जक्ष्—अदा, प। १ भक्षणम्। २ हसनम्। लट् जक्षिति, पा ७, २,

७६। जक्षितः। जक्षति, पा ७, १, ४। जक्षिमोऽनपराधेऽपि नरान्, भ ४, ३८। लिङ् जक्ष्यात्। लङ् अजक्षत्, अजक्षीत्। अजक्षिताम्। अजक्षुः। लिट् जजक्ष। जजक्षुः, भ १३, २८। लुट् जक्षिता। लृट् जक्षिष्यति। लुङ् अजक्षीत्। अजक्षिष्टाम्। अजक्षिषुः। अजक्षीदङ्गमागतान्, भ १५, ४६। सन् जिजक्षिषति। यङ् जाजक्ष्यते। णिच् जक्षयति। अजजक्षत्।

जङ्घ्—जङ्घि, वो, भ्वा, आ।

१गतिः। २दानम्। जङ्घते। अजङ्घि, अजाङ्घि। घटादिः। (चङ्घ्)।

जज्—जञ्ज्—जजि, भ्वा, प।

युद्धम्। जजति। जञ्जति।

जट्—भ्वा, प। संघातः।

जटति केशः (परस्परं लग्नः स्यात्), जटा।

जन्—जनी, दि, आ। प्रादुर्भावः।

उत्पत्तिः। जननम्। स्फुटीभावः। लट् जायते, पा ७, ३, ७८। गोमयाद् वृश्चिको जायते, पा १,४,३०। त्वमत्रा-जायथाः, भ १७,३२। लिट् जज्ञे, पा ६,४,८८। लुट् जनिता। लृट् जनिष्यते। लुङ् अजनिष्ट। अजनि, पा ३, १, ६१। ७, ३, ३५। अजनिषाताम्। अजनिषत। नाजनिष्टास्य साध्वसम्, भ १५, ८८। रक्तनेत्रोऽजनि क्षणात्, भ ६,३२। भावे, जायते, जन्यते। अ-जनि। सन् जिजनिषते। यङ् जाजायते। जञ्जन्यते, पा ६, ४, ४३। जञ्ज-न्ति। णिच् जनयति। अजीजनत्। घटादिः। अपरा वीरमजीजनत् सुतम्, र ८,२८। यं देवं देवकी देवी वसुदे-वादजीजनत्, स्मृतिः। वैदेह्या जनये-यमानन्दम्, भ ८,५७। लोभो जनयते तृषाम्, हितो। जनित्वा। जातः। जातिः। जननम्। जनकः। जनः। जनिता। जन्यम्। जन्यो घटः। जन्युः। अजः। बीजम्। प्रजा। प्रजनः। प्रज-निष्णुः। णिच् जनयित्वा। जनितः। जनयिता। जनयितव्यम्। अधि—उत्-कृष्टभावः। ब्राह्मणो जायमानो हि पृथिव्यामधिजायते (उपरि भवति), मनुः १, ९९। अनु—अनन्तरजननम्। पुत्रिकायां कृतायान्तु यदि पुत्रोऽनु-जायते, मनुः ९,१३१। तमजोऽनुजातः (उपसृष्टत्वात् सकर्मकता), र ६,७८। अभि—उत्पत्तिः। वृद्धिः। कामात् क्रोधोऽभिजायते, गी २, ६२। तथा-प्यनुदिनं तृष्णा ममैतेष्वभिजायते, भारत। उप—जननम्। अस्मिंस्तु निर्गुणे गोत्रे नापत्यमुपजायते, हितो। सङ्कल्पेषूपजायते, गी २, ६२। प्र—प्रसवः। उत्पत्तिः। प्रजायन्ते सुतान् नार्यः। सा प्रजज्ञे कुमारं मातापित्रोः प्रजायन्ते पुत्राः, भारत। वि—प्रसवः। तेन विध्वसहो विजज्ञे। समां समां विजायते इति पाणिनिः, ५,२,१२। (मल्लीनाथः), र १८,२४। तस्य सृष्टयः पुत्रो व्यजायत, रामा। मानात् क्रोधो व्यजायत, भारत। सम्—उत्पत्तिः। ततः संजज्ञिरे वीराः, भारत। रक्षणा-र्थं संजायते राज्ञः, मनुः ८,१७२।

जप्—भ्वा, प। १ जपः। पाठः।

कथनम्। २मानसम्। वृद्धुचारः। (जिह्वोष्ठादिव्यापाररहितं शब्दार्थयो-श्चिन्तनम्), दुर्गा। लट् जपति। लिट् जजाप। जेपतुः। लुट् जपिता। लृट् जपिष्यति। लुङ् अजापीत्, अज-पीत्। अजपिष्टाम्। अजपिषुः। सन् जिजपिषति। यङ् (भाव-

गर्हायाम्) जञ्जप्यते। जञ्जप्ति, पा ७, ४, ८६। ३, १, २४। णिच् जापयति। अजीजपत्। जपित्वा, जप्त्वा, इत्येके। जप्तः। प्रजप्तः। प्रजपितः इति संक्षिप्तसारः। जपः। जपनम्। जप्यम्। जपन् सन्ध्याम्, भ ४, १४। गायत्रीं दशधा जप्त्वा, स्मृतिः। जपित्वा सूक्तम्, मनुः ११, २५१। दुष्वप्नजप्त—, नै ११, २६। सर्वथा जप्तविद्यानां विद्या नातिप्रसीदति। अभि—अभिमन्त्रणम्। ओषधिं मन्त्रैरभिजजाप च, रामा। उप—भेदः। भेदोपजापावित्यमरः। उपजप्यानुपजपेत्, मनुः ७, १८७। मत्वा सहिष्णूनपरोपजप्यान्, भ १२, ३२।

जभ्—(यभ्), भ्वा, प। रमणम्।

विपरीतरमणम्। जभति। जजाभ। जेभतुः। जभिता। यङ् (भावगर्हायाम्) जञ्जभ्यते, पा ७, ४, ८६। जञ्जब्धि।

जम्—जसु (चसु) भ्वा, प। भक्षणम्।

जभ्—जभी, भ्वा, आ।

गात्रविनामः। जृम्भणम्। जम्भते, पा ७, १, ६१। जजम्भे। जम्भिता। अजम्भिष्ट। जिजम्भिषते। जञ्जभ्यते, पा ७, ४, ८६। जम्भयति। (ई) जब्भः। जभि, वो, भ्वा, प। रमणम्। जम्भति। जम्भिता। जभि, चु, प। नाशनम्। जम्भयति। जम्भति।

जर्च्—जर्क्—जर्ज्—जर्भ्—जर्व्।

जर्च् जर्क् जर्भ् वो, तु, प। जर्ज् जर्व् भ्वा, प। जर्ज् (चर्च्) तु, प। १ उक्तिः। २भर्त्सनम्। तर्जनम्। जर्चति। जर्क्ति। जर्जति। जर्भर्ति। जर्वति।

जल्—भ्वा, प। १घातनम्।

तैक्ष्ण्यम्। २जीवनम्। ३आच्छादनम्। ४समृद्धिः। जलति। जजाल। जेलतुः। जलिता। अजालीत्। जल्, चु, प। आच्छादनम्। अपवारणम्। जालयति। जालः। जलः। जालम्। जलम्।

जल्प्—(जप्) भ्वा, प। जल्पनम्।

जल्पति, दूतः सर्वं जल्पति, हितो। जल्पिता। अजल्पीत्। जल्पितः, भ ८, १२५।

जष्—(कष्), भ्वा, प। ङ, वो। हिंसा।

जस्—जसु, दि, प। मोक्षणम्।

मोचनम्। जस्यति। जजास। जेसतुः। जसिता। अजसत्, पुषादिः। अजासीत्, वो। (ङ) जसित्वा, जस्त्वा। जस्तः। जसु, चु, प। १हिंसा। २ताडनम्। ३ अनादरः, वो। जासयति, जसति। उद्—उन्मूलनम्। निर्जीजसोज्जासयितुं जगद्द्रुहाम्, मा १,३७। मन्योरुज्जासयात्मनः, भ ८, १२०।

जंस्—जसि, चु, प। १रक्षणम्।

२ मोक्षणम्। जंसयति, जंसति।

जाग्ट—अदा, प। निद्राक्षयः।

जागरणम्। लट् जागर्त्ति। जाग्टतः। जाग्रति, पा ७,१,४। निशायां जागर्त्ति संयमी। जाग्रति भूतानि, गौ २,६८। जागर्त्ति रक्षःषु दैवम् (चेष्टते), भ १८,११। दण्डः सुप्तेषु जागर्त्ति, मनुः ७,१८। लिङ् जाग्र्यात्। लङ् अजागः। अजाग्टताम्। अजागरुः, पा ७, ३८३। लिट् जागरामास। जजागार, पा ३,१,३८। जागरामासतुः। जजागरतुः, पा ७,३,८५। जजागरिथ। अपसर्पेर्जजागार, र १७, ५१। लुट् जागरिता। लृट् जागरिष्यति। आग्निषि,

जागर्य्यात्, पा ३,४,१०४। लुङ् अजागरीत्, पा ७, २, ५। अजागरिष्टाम्। अजागरिषुः। भावे जागर्य्यते। अजागरि, पा ७,३,८५। सन् जिजागरिषति, पा ३,१,२२। णिच् जागरयति, पा ७,३,८५। जागरित्वा। ०जागर्य्य। जागरितः। जागरणम्। जागरः। जागर्य्या। जागरूकः। जाग्रत्। दिशो निरीक्ष्यमाणस्य नास्ति जागरतो भयमिति जागरशब्दाच्चिच्। प्र—निद्राक्षयः। अवधानम्। प्रजागराञ्चक्रुर्वानराः, भ १४, ६१। प्रजागराञ्चकारारिरीहासु, भ ६,२।

जि—भ्वा, प। १जयः।

उत्कर्षप्राप्तिः। २ अभिभवः। न्यूनीकरणम्। ३ न्यूनीभावः। ४स्वीकरणम्। ५अतिक्रमः। ६वशक्रिया। लट् जयति देवः। जयति शत्रून्। देवदत्तं शतं जयति। जेस्वन्स्वोरन्त इदिति पद्मनाभः। अनभिधानादस्मात् तुवन्त्वोः प्रयोगाभावः। किन्तु तयोः स्थाने तिवन्ती इति। किञ्च तुपः स्थाने तातङ् दृश्यते। यथा, भावगम्यलयः शोऽपि जयतादवागगोचरः, दुर्गा। जयति रघुवंशतिलकः, महाना १,३। जयन्ति यमुनाकूले रहः केलयः, गीतगो १, १। वपुःप्रकर्षादजयद् गुरुम्, र ३, ३४। लिट् जिगाय। जिग्यतुः, पा ७,३,५७। जिगयिथ, जिगेथ। गर्जितानन्तरां वृष्टिं सौभाग्येन जिगाय ग, कु २, ५३। न मे मायां जिगायेशोऽपि, भ १४, ४६। लुट् जेता। लृट् ष्यति। सुरालयं जेष्यावः, भ १६, ६। आशिषि, जीयात्। लुङ् अजैषीत्। अजैष्टाम्। अजैषुः। त्वमजैषुः पुरा सुरान्, भ १५, १२। कर्मणि, जीयते। जायिता। जायिष्यते। जायिषीष्ट। अजायि। अजायिषत। केन जायिष्यते यमः, भ १६, २। वेपमानजननीशिरश्छिदा प्रागजीयत घृणा ततो मही, र ११,६५। सन् जिगीषति, पा ७,३,५७। यङ् जेजीयते। जेजयीति। जेजेति। णिच् जापयति, पा ६, १, ४८। ७,३,३६। अजीजपत्। जित्वा। ०जित्य। जितः। जयः। जेतव्यः। जेयः। जय्यः, पा ६, १, ८१। जयी। जित्। जेतुम्। जिष्णुः। जेता। जित्वरः। व्यति—परस्पराभिभवः। व्यतिजयते, पा १, ३, १४। व्यतिजिग्ये समुद्रोऽपि न धैर्य्यं तस्य गच्छतः, भ ८, ४। अधि—न्यूनीकरणम्। विनाशनम्। रावणवद् वयं सपत्नानधिजीयास्म, भ १९, २। अव—स्वीकरणम्। उद्धारः। अपहृतं सर्वस्वमवजित्य, मनुः ११,८१। निर्—अभिभवः। पराजयः। अनेकशो निर्जितराजकस्वम्, भ २, ५२। शत्रुं निर्जित्य, भ ७,९४। परा—पराजयः। पराजयते, पा १, ३, १९। असहनम्। अभिभवः। अध्ययनात् पराजयते, पा १, ४, २६। शत्रून् पराजयते। अद्रिं खं पराजयमान उन्नत्या, भ ८,९। सीतां पराजयमानां रावणस्य प्रीतेः, भ ८,९१। वि—विजयः। उत्कर्षप्राप्तिः। पराजयः। न्यूनीकरणम्। वशीकरणम्। विजयते, पा १, ३, १९। भो राजन्! विजयतां भवान्, शकु ५, ७१। व्यजेष्ठा विघ्ननायकान्, भ ६,६८। विजिग्ये सेनाम्, भ १४, १०६। व्यजेष्ट षड्वर्गम्, भ १, २। नन्दनस्य लक्ष्मीर्विजिग्ये भवनैः, भ ११, ३५।

जिन्व्—जिवि, भ्वा, प। प्रीणनम्।

जिन्वति। जिजिन्व। अजिन्वीत्।

जिवि (अजि) चु, प । दीप्तिः । जिन्वयति । दिवि, दिन्वति ।

जिम्—जिमु (चमु) भ्वा, प । भक्षणम् । जेमति । जेमनं लेप आहार इत्यमरः । (ड) जिमित्वा जिन्त्वा ।

जिष्—जिषु, भ्वा, प । सेचनम् ।

जीव्—भ्वा, प । प्राणधारणम् । जीवनम् । जीविकानिर्वाहः । लट् जीवति । त्वयि जीवति जीवामि । स्वाहारात् किञ्चिदुद्धृत्य ददति तेनासौ जीवति, हितो । लिट् जिजीव । जिजीवतुः । हरिं युधि समुपेत्य न दानवा जिजीवुः, छन्दो १३, ६ । लुट् जीविता । लुङ् अजीवीत । अजीविष्टाम् । अजीविषुः । यावदजीविषम्, भ १५, ११ । सन् जिजीविषति । यङ् जेजीव्यते । जेजीवीति । णिच् जीवयति । अजिजीवत् । अजीजिवत्, पा ७ ४, ३ । कपीनजीजिवत्, भ १५, ११ । जीवित्वा । ०जीव्य । जीवितः । जीवनम् । जीवकः । जीवः । जीवी । जीव्यम् । जीविका । अति—अत्यजीवदमरालकेश्वरौ (अतिक्रम्य अजीवत्), र १८, १५ । अनु—अनुजीवनम् । आश्रयः । अनुजीवी । उद्—उज्जीवनम् । पुनर्जीवनम् । उदजीवत् सुमित्राभूः, भ १७, ८५ । उप—उपजीवनम् । आश्रयः । ग्रहणम् । जीवनोपायः । स्त्रीधनानि यो मोहादुपजीवति, मनुः ३, ५२ । पजन्यमिव भूतानि महाद्रुममिव द्विजाः । बान्धवास्त्वोपजीवन्ति सहस्राचीमिवामराः । एतद्वारतं कविभिरुपजीव्यते, भारत । सम्—जीवनम् । सीतां मायेति शंसन्ती समजीवयत्, र १२, ९४ । भस्मराशीकृतं दृष्ट्वा विद्यया समजीवयत् । कीर्त्तिः पुरुषं सञ्जीवयति, भारत ।

जु—भ्वा, प । सौत्रधातुः । वेगगतिः । जुङ्, भ्वा, आ, वो गतिः । जवति । ०ते । णिच् अजीजवत् । जिजावयिषति, पा ७, ४, ८० ।

जुङ्—जुगि, भ्वा, प । वर्जनम् ।

"जुच्च"—जुचि, चु, प । दीप्तिः ।

जुड्—तु, प । मतिः ।

जुड़ति । जुजोड़ । जोड़िता । अजोड़ीत् । जुड्, तु, प । बन्धनम् । जुड़ति, तानुच्छृङ्खलतापन्नान् शृङ्खलेन जुड़त्यसौ, कवि ११३ । जुड़िता । अजुड़ीत् । जुड्, चु, प । प्रेरणम् । जोड़यति । अजजुड़त् । दण्डं जोड़यति हिट्सु बलं तेषाञ्च जोड़ति, कवि ११३ ।

जुत्—जुद्, भ्वा, आ । दीप्तिः । जोतते । जुजुते । युद्, योतते ।

जुन्—(जुड्), तु, प । गमनम् । जुनति । मरुतो जुनन्ति, कौ १५२ ।

जुर्व्—जुर्वी (उर्वी) भ्वा, प । बधः ।

जुष्—चु, प, वो । पेषणम् । चूर्णीकरणम् । जोषयति ।

जुष्—जुषी, तु, आ । १ प्रीतिः । हर्षः । २ सेवनम् । भजनम् । आश्रयः । उपयोगः । लट् जुषते । न किं सुधा नाकजुषो जुषन्ते, राघवपाण्डवीयम् १, ६८ । तन्निबोध जुषस्व च, भारत । अचमज्जुषत, भ १७, ४२ । लिट् जुजुषे, रथं जुजुषे (आरूढ), भ १४, ८५ । लुट् जोषिता । लुङ् अजोषिष्ट । अजोषिषाताम् । अजोषिषत । सन् जुजुषिषते, जुजोषिषते । यङ् जोजुष्यते ।

जोजोष्टि। णिच् जोषयति। अजूजुषत्। जुष्, चु, प। १ परितर्कणम्। जुहः। २हिंसा। ३ परितर्पणम्। जोषयति। जोषति। (ई) जुष्टः। ब्रह्मसमूहजुष्टः, भ १, ४। आश्रममण्डलं मृगगणैर्जुष्टम्, भारत। ऋषिजुष्टजले, अमरः। कश्मलमनार्य्यजुष्टम्, गौ २,२। प्र—विषयेषु प्रजुष्टानि (प्रसक्तानि), मनुः २, ९६। सजूः। सजुषौ।

जूर्—जूरी, (घूरी) दि, आ।

१ हिंसा। २ वयोहानिः। जूर्य्यते। जुजूरे। जूरिता। भर्त्रे नखेभ्यश्च चिरं जुजूरे (क्रुध्यति स्म), भ ११, ८। (ई) जूर्णः।

जूष्—(यूष्) भ्वा, प। आ, वो। हिंसा।

जृ—भ्वा, प, वो। व्यक्तारः।

तिरस्कारः। जरति। जजार। जर्त्ता।

जृभ्—जृभ्—जृभि, जृभी, (जभी)।

भ्वा, आ। गात्रविनामः। गात्रभङ्गः। जृम्भणम्। प्रकाशः। प्रादुर्भावः। लट् जृम्भते। जृम्भते बाला गर्भभरालसा। सा द। लिट् जजृम्भे, मधुर्जजृम्भे, कु ३, २४। लृट् जृम्भिता। लुङ् अजृम्भिष्ट। जृम्भितम्। जृभी, जर्भर्त्ति, वो। (ई) जृभ्यः। जृम्भमाणश्चुषी परिमृज्य, अनर्घ ८५। भार्य्यां नेच्छेत चाम्रतीं च्युवतीं जृम्भमाणां वा, मनुः ४, ४३। उद्—उदयः। विकाशः। हर्षः। शीतांशुरुज्जृम्भते, रत्ना ३,१०२। सुकृतमुज्जृम्भते स्म, नै २, १०५। व्यालं बालमृणालतन्तुभिरसौ रोद्धुं समुज्जृम्भते, नीतिशतकम् ९०। अम्भोजमुज्जृम्भते, अनर्घ २४। वि—जृम्भणम्। व्याप्तिः। व्यजृम्भिषतापरे, भ १५, १०८। विजृम्भितस्य अन्धकारस्य, र ७, ४२। तूर्य्यनिस्वनाः सद्मनि व्यजृम्भन्त, र ३, १९। १२, ९२।

जॄ—जॄष्, दि, प। जॄ, क्रया, प।

वयोहानिः। ज्वरा। जीर्णीभावः। परिपाकः। विलयः। क्षयः। लट् जीर्य्यति, वज्रं जीर्य्यति वज्रिणः, महाना ५, ५०। सोऽहदानि जीर्य्यन्ति कालेन। तृष्णा न जीर्य्यति जीर्य्यतः, भारत। जृणाति। जृणीतः। कायो न जीर्य्यति जृणाति न यस्य शक्तिः, कवि ९। लिट् जजार। जजरतुः। जेरतुः, पा ६, ४, १२४। जेरुराशा दशास्यस्य, भ १४, ११२। लुट् जरिता, जरीता। लृट् जरिष्यति, जरीष्यति। आशिषि, जीर्य्यात्। लुङ् दि, अजारीत्। अजरत्, पा ३, १, ५८। क्रया, अजारीत्। अजारिष्टाम्। अजारिषुः। अजारीदिव च प्रज्ञा बलं शोकात्तथाजरत्, ६,३०। उदरेऽजरन्नन्ये तस्य, भ १५, ५०। सन् जिजरिषति, जिजरीषति, जिजीर्षति। यङ् जेजीर्य्यते। जाजर्त्ति। णिच् दि, जरयति, घटादिः। क्रया, जारयति। जॄ, चु, प। वयोहानिः। जारयति, जरति। यद्विद्विषां जरति चेतसि भोगतृष्णा तेषां वपूंषि विषिनेषु च जारयन्ति, कवि ९। जरित्वा, जरीत्वा, पा ७, २, ५५। जरित्वेव जवेन निपेतुः शाखिनः, भ ९,४१। जीर्णः। जीर्णिः। जरन्, पा ३, २, २०४। (ष) जरा। जर्जरः।

जेष्—जेषृ (एषृ) भ्वा, आ। गतिः।

जेह्—जेह्, भ्वा, आ। प्रयत्नगत्योः।

जै—(च्यै) भ्वा, प। क्षयः।

जायति। जजौ। जाता। अजासीत्।

ज्ञप्—चु, प । १ ज्ञानम् ।

२ज्ञापनम् । ज्ञप मिच्चेति चुरादौ ज्ञापनं मारणादिकञ्च तस्यार्थः, कौ ८४ । (मारणालोकननिशानतोषण-स्तुतयः), दुर्गा । ज्ञपयति, पा ६, ४, ९२ । अजिज्ञपत् । ज्ञीप्सति, पा ७, ४, ५५ । जिज्ञपयिषति, पा, ७, २, ४९ । ज्ञपितः । ज्ञप्तः, पा ७, २, २७ । प्रतिपज्ज्ञप्तिश्चेतना इत्यमरः ।

ज्ञा—क्र्या, प ।

अनुपसर्गात् आ, पा १, ३, ७६ । ज्ञानम् । बोधः । जानाति, पा ७, ३, ७९ । जानीते, गां जानीते, पा १, ३, ७६ । सर्पिषो जानीते, पा १, ३, ४५ । २, ३, ५१ । सन्दर्भशुद्धिं गिरां जानीते जयदेव एव, गीतगो १, ४ । लिङ् जानीयात् । जानीत । लङ् अजानात् । अजानीत । अजानत । लिट् जज्ञौ । जज्ञतुः । जज्ञिथ, जज्ञाथ । जज्ञिव । यज्ञे । लुट् । ज्ञाता । लृट् ज्ञास्यति । ०ते । आशिषि, ज्ञायात्, ज्ञेयात् । ज्ञासीष्ट । लुङ् अज्ञासीत् । अज्ञासिषुः । मा ज्ञासीस्त्वं सुखी रामः, भ १५, ९ । भोगेषु रतो विद्युन्नाशं नाज्ञासिषम्, भ ७,२६ । लृङ् नाज्ञास्यत्खमिदं सर्वम्, भ ५,८ । कर्मणि, ज्ञायते । अज्ञे । ज्ञाता, ज्ञायिता । ज्ञास्यते, ज्ञायिष्यते । ज्ञासीष्ट, ज्ञायिसीष्ट । अज्ञायि । अज्ञायिषत, अज्ञासत । ज्ञास्येऽहं समस्तैर्ज्ञायिष्यन्ते मया, भ १६, ४०, ४१ । ननं नाज्ञायिषि त्वया, भ ४, ३२ । सन् जिज्ञासते, पा १, ३, ६७ । जिज्ञासमानो बलमस्य बाह्वोः, भ २, ४३ । भावं जिज्ञासमाना मुनिहोमधेनुः, र २, २६ । हयान् जिज्ञासाञ्चक्रिरे, भ १४, ९१ । यङ् जाज्ञायते । जाज्ञेति । णिच् (१मारणम्, २ तोषणम्, ३ चातुषज्ञानम्, ४ ज्ञापनम् ५ तीक्ष्णीकरणम् एष्वेवार्थेषु जानातिर्मित्, कौ ८४) । मारणादौ ज्ञा चुरादिर्घटादिश्चेति वो । ज्ञपयति । अजिज्ञपत् । अज्ञपि, अज्ञापि । ज्ञपं ज्ञपम् । ज्ञापं ज्ञापम् । ज्ञा, चु, प । नियोगः । प्रेरणम् । ज्ञापयति भृत्यं स्वामी, दुर्गा । आज्ञापयति यो भृत्यान् यज्ञे संज्ञपयत्यजान् । भूपाश्च भक्तिनम्राभिर्वाग्भिर्विज्ञापयन्ति यम् ॥ कवि ६९ । तज्ज्ञापयत्याचार्यः विज्ञापना भर्तृषु सिद्धिमेति, कौ ८४ । जिज्ञापयिषति, जिज्ञपयिषति । ज्ञीप्सति, पा ७, २, ४९ । ज्ञात्वा । ०ज्ञाय । ज्ञातः । ज्ञानम् । ज्ञेयम् । ज्ञाता । ज्ञपितः । ज्ञप्तः, पा ७, २,२७ । ज्ञापितः । ज्ञापनम् । अनु—अनुज्ञा । त्वामनुजानामि न गन्तव्यम्, रामा । ततोऽनुजज्ञे गमनं सुतस्य (कर्मणि लिट्), भ १, २३ । अनुजिज्ञासति पुत्रम्, पा १, ३, ५८ । अनुजिज्ञासता लङ्काद्रुमनिन्दुना उदैयत, भ ८,३५ । अप—अपह्नवः । गोपनम् । अतमपजानीते, पा १, ३, ४४ । आत्मानमपजानानः शशमात्रोऽनयद्दिनम्, भ ८, ३६ । अभि—अभिज्ञानम् । स्मरणम् । ज्ञानम् । अभिजानासि यत् काश्मीरेष्ववसाम, पा ३, २, ११२ । सम्भविष्यत्येकस्यामभिजानासि मातरि, भ ६, १३८ । प्रत्यभि—प्रत्यभिज्ञा । अनुभवः । स्वयूथ्यस्वरान् प्रत्यभिजानते, अनर्घ ८५ । अव—अवज्ञा । अवमानना । अवजानासि मां यस्मात्, र १, ७८ । आ—णिच् आज्ञा । आदेशः । शासनम् । विज्ञापनम् । आज्ञापय लोकेषु यत् करणीयम्, कु ३, ३ । यथाज्ञापयत्यायुष्मान्, शकु १, २९ । उप—आ-

अज्ञानम्। उपज्ञा ज्ञानमाद्यं आदित्यमरः। पाणिनिनोपज्ञातं व्याकरणम् (विनोपदेशेन ज्ञातम्), पा, ४, ३, ११९। प्रनि—अवगतिः। प्रणिजानीहि, भ ९, १००। परि—ज्ञानम्। निश्चयः। शब्दहेतुं परिज्ञाय, हितो। प्र—सम्यग् बोधः। परिज्ञानम्। न स्त्रियं प्रजानाति कस्मिदप्राप्तयौवनः, भारत। प्रति—प्रतिज्ञा। शतं प्रतिजानीते, पा १,३,४६। प्रतिजज्ञे रक्षसां बधम्, भ १४, ६४। प्रत्यज्ञास्त क्रियापटुः, भ ८, २६। वि—विशिष्टज्ञानम्। णिच् विज्ञापनम्। विभीषणः प्रणम्य व्यजिज्ञपत्, अनर्घ १५४। इति विज्ञापितो राज्ञा मुनिः, र १, ७४। सम्—ज्ञानम्। अवेक्षणम्। शतं संजानीते, पा १, ३, ४६। संजानान् परिहरन् (चेतयतः), भ ८, २७। (उत्कण्ठापूर्वकस्मरणम्) मातरं मातुर्वा संजानाति, पा २, ३, ५२। णिच् (मारणम्) संज्ञपयति शत्रून्।

ज्या—क्रया, प। वयोहानिः।

जरा। लट् जिनाति। जिनीतः। जिनन्ति, पा ६, १, १६। लिङ् जिनीयात्। लङ् अजिनात्। लिट् जिज्यौ, पा ६, १, १७। जिज्यतुः। जिज्यिथ, जिज्याथ। जिज्यिव। लुट् ज्याता। लृट् ज्यास्यति। आशिषि, जीयात्। लुङ् अज्यासीत्। अज्यासिष्टाम्। अज्यासिषुः। कर्मणि जीयते। सन् जिज्यासति। यङ् जेजीयते। जाज्यति, जाज्येति। णिच् ज्यापयति। जीत्वा। ॰ज्याय, पा ६, २, ४२। जीनः, पा ८, २, ४४। ज्यानिः।

ज्यु—ज्युङ् (च्युङ्) भ्वा, आ। गतिः।

ज्यत्—ज्यतिर्, भ्वा, प, वो। (जत्व)।

ज्युत्, भ्वा, आ, वो। दीप्तिः। ज्योतति। ०ते।

ज्यो—ज्योङ्, भ्वा, आ। १नियमः। २व्रतस्यादेशः। ३उपनयनम्। ज्यवते।

ज्रि—(जि) भ्वा, प। अभिभवः।

न्यूनीभावः। न्यूनीकरणम्। ज्री, क्रया, प, वो। ज्रि (जॄ) ज्री, वो, चु, प। वयोहानिः। जीर्णीभावः। ज्रयति। ज्रिणाति। जिज्राय। ज्रेता। अज्रैषीत्। ज्राययति, ज्रययति। ज्रीणः। ज्रीणिः।

ज्वर्—भ्वा, प। रोगः।

ज्वरति। जज्वार। ज्वरिता। अज्वारीत्। जिज्वरिषति। जाज्वर्यते। जाज्वर्त्ति, पा ६, ४, २०। णिच् ज्वरयति, घटादिः। अजिज्वरत्। ज्वरितम्। क्विप् ज्वः, ज्वरौ। सम्—सन्तापः। सन्तापसज्वरौ समौ इत्यमरः। संज्वारी।

ज्वल्—भ्वा, प। १ दीप्तिः। ज्वलनम्। २ कम्पः, वो। लट् ज्वलति। रात्रौ ज्वलन्ति महौषधयः, अनर्घ १८। धिगिदमंशुकं ज्वलति, रत्ना ४,१८१। लिटे जज्वाल। जज्वलतुः। जज्वाल स राजा, भ १, ४। लुट् ज्वलिता। लृट् ज्वलिष्यति। लुङ् अज्वालीत्। अज्वालिष्टाम्। अज्वालिषुः, गिरावज्वालिषू रात्रौ महौषध्यः, भ १५, १०६। सन् जिज्वलिषति। यङ् जाज्वल्यते। जाज्वलति। णिच् ज्वलयति, ज्वालयति। उपसर्गात्तु प्रज्वलयति। प्रज्वालयतीति तु घञन्तात् तत् करोतीति णौ सिद्धम्, कौ ८६। ज्वलितम्। ज्वलनम्। ज्वलः। ज्वालः। अग्निर्ज्वलन्, भ ६, १२। उट्—उज्ज्वलीभावः। दीप्तिः। प्रज्वलनम्। रणाङ्गानि प्रज्वलुः, भ १४, ८८।

## ( झ )

झट्—(जट्) भ्वा, प । संघातः ।

राशीकरणम् । झटति । जझाट । झटिता ।

झम्—झन् (चमु) भ्वा, प । अदनम् ।

झर्च्—झर्क्—झर्भ्—(चर्च्)

भ्वा, तु, प । १परिभाषणम् । उक्तिः । २ तर्जनम् । भर्त्सनम् । झर्वति । झर्क्वति, वो । झर्भति ।

झष्—(कष्), भ्वा, प । हिंसा ।

झष्, भ्वा, उ । १ आदानम् । ग्रहणम् । २ संवरणम् । आच्छादनम् । झषति । °ते ।

झु—झू—झ्यू—झुङ्, झूङ्, झ्यूङ् ।

भ्वा, आ । गतिः । झवते वो, 'झावते' ।

झूष्—(यूष्), भ्वा, प । हिंसा ।

झृ—झृष् (जृष्), दि, झृ (जृ) ।

क्रया, प । वयोहानिः । जीर्णीभावः । झरिष्यति, झृणाति । जझार । जझरतुः । झरिता, झरीता । अझारीत् । (ष) झरा । झर्झरः ।

## ( ट )

टङ्—टङ्कि, चु, प । बन्धनम् ।

टङ्कयति । टङ्कति । उट्—उल्लेखः । उट्टङ्कितः । नाकृष्टं न च टंकितं न नमितं नोत्थापितं धनुः, महाना १। २४ ।

टल्—भ्वा, प । १ वैकल्यम् ।

व्याकुलत्वम् । २ वैक्लव्यम् । विह्वलीभावः । टलति । टटाल । टेलतुः । टलिता । अटालीत् । टृल् टृलति । टलः । टालः । टृलः । टृालः ।

टिक्—टीक्, टिक्क, टीक्क, (कक्कि)

भ्वा, आ । गतिः । टिकते । टिटिके । टेकिता । टीकते । टिटीके । टीकिता । टीक्क, टीकतं इति कश्चित् । टीका ।

टिप्, चु, प, वो । प्रेरणम् । टेपयति ।

टुल्—(टल्), भ्वा, प । विक्लवः ।

## ( ड )

डिप्—(डम्प, डम्भ, डिम्प, डिम्भ)

चु, आ, उ, वो । संघातः । डापयति । °ते । डपि, डम्पयति । °ते । डभि, डम्भयति । °ते । डिपि, डिम्पयति । °ते । डिभि, डिम्भयति । °ते ।

डम्ब्—डवि, चु, प, वो । नोदनम् । प्रेरणम् । डम्बयति । डिवि, डिम्बयति, वो । वि—अनुकरणम् । ऋतुर्विडम्बयामास तम्, र ४, १८ । विडम्बना । विडम्बते (लंवि) ।

डिप्, दि, तु, चु, प । क्षेपणम् ।

प्रेरणम् । डिप्यति । डिपति । डिडेप । डेपिता । अडिपत् । तु, डिपिता । अडिपीत् । डिप (डप) चु, आ, उ, वो । सङ्घातः । डेपयति । °ते । डिपन्ति यस्य मातङ्गा डिप्यन्ति च तुरङ्गमाः । डेपयन्ति मनुष्याश्च युद्धे निम्नोन्नतां भुवम् ॥ कवि ८६ ।

डिम्ब्—डिबि (डबि)

डी, डीङ्, भ्वा, दि, आ । १उड्डयनम् । नभोगमनम् । २ गतिः, वो । लट् डयते, डीयते । लिट् डिड्ये । लुट् डयिता । लृट् डयिष्यते । लुङ् अडयिष्ट । अडयिषाताम् । अडयिषत । सन् डिडयिषते । यङ् डेडीयते । डेडयीति । णिच् डाययति । अडीडयत् । क्त डीनः, पा ८, २, ४५ । गार्योचन्द्र-

मते श्वा, डयितः, डयितवान्। डड्—डड्डयनम्। डड्डीयन्ते शरा यस्य कोटिशः समराङ्गणे। भग्नानासरिसैन्यानामुड्डयन्ते रजांसि च॥ कवि १४२। उदडीयत पक्षिभिः, नै २, ५। प्रोड्डिनोड्डीनसंडीनान्येताः खगगतिक्रिया इत्यमरः। अव—अधोगतिः।

## ( ढ )

ढुण्ढ्—ढुन्ढ्, भ्वा, प। अन्वेषणम्।

ढुण्ढति। ढुण्ढ्यते गौर्गोपेन।

ढौक्—ढौक्ष (कांक्षि) भ्वा, आ।

गतिः। लट् ढौकते। वदनं ढौकते (आहृणोति), शकु ३, १८५। लिट् डुढौके, यान्तं वने रात्रिचरी डुढौके, भ २, २३। डुढौकिरे पुनर्लङ्काम्, भ १४, ७१। लुट् ढौकिता। लट् ढौकिष्यते। लुङ् अढौक्षिष्ट। अढौक्षाताम्। अढौक्षिषत। सन् डुढौक्षिषते। यङ् डोढौक्यते। णिच् ढौकयति। अडुढौकत्, पा ७, ४, २। अढौकयद्रथम्, भ १७, १०३। उप—उपढौकनम्। कृष्णेन हर्षादुपढौकितानि पुष्पाणि, कौस्तुभे ५ किरणः।

## ( त )

तक्—भ्वा, प। १ हसनम्।

२ सहनम्, वो। तकति। ततोक। तकिता।

तक्ष्—तक्षूं, भ्वा, प। तनूकरणम्।

कृशीकरणम्। तक्षणम्। लट् तक्षति, तक्ष्णोति, पा ३, १, ७६। लिट् ततक्ष। ततक्षतुः। ततक्षिथ, ततष्ठ। लुट् तक्षिता, तष्टा। लट् तक्षिष्यति, तक्ष्यति। लुङ् अतक्षीत्, अताक्षीत्। अतक्षिष्टाम्, अताक्षिष्टाम्। अतक्षिषुः, अताक्षुः। सन् तितक्षिषति, तितक्षति। यङ् तातक्ष्यते। तातष्टि। णिच् तक्षयति। अततक्षत्। निर्, सम्—भर्त्सनम्। अयनम्। सन्तक्षति वाग्भिः, पा ३, १, ७६। मर्मच्छिदा नो वचसा निरतक्षन्नरातयः, भा ११, ४९। तक्ष्, श्वा, प। १ त्वचनम्। आच्छादनम्। २ त्वचो ग्रहणम्। ३ परिग्रहः। तक्षति। ततक्ष। तक्षिता।

तङ्क्, तंकि, भ्वा, प। कृच्छ्रजीवनम्।

दौस्थ्यम्। तङ्कति। ततङ्क। तङ्किता। अतङ्कीत्। आ—आतङ्कः। भयम्।

तङ्ग्—तगि (अगि) भ्वा, प। १ गतिः।

२ स्खलनम्। ३ कम्पः, वो। तङ्गति। ततङ्ग। तङ्गिता। तगि, तङ्गति, वो।

तच्, तच्छ्, तन्चू, तन्जू, रु, प।

सङ्कोचः। लट् तनक्ति। तङ्क्तः। तञ्चन्ति। तञ्छन्ति। तनच्मि, तनज्मि। लङ् अतनक्। लिट् ततक्ष। लुट् तङ्क्ता, तक्षिता। लट् तङ्क्ष्यति, तक्षिष्यति। लुङ् अताङ्क्षीत्। अताङ्क्ताम्। अताङ्क्षुः। अतक्षीत्। अतक्षिष्टाम्। अतक्षिषुः। सन् तितङ्क्षति, तितक्षिषति। यङ् तातक्ष्यते। तातङ्क्ति। णिच् तक्षयति। तक्त्वा, तक्षित्वा। तक्तः। तन्चु (तन्चु) भ्वा, प। गतिः। तञ्चति। तञ्चिता। (उ) तञ्चित्वा, तक्त्वा। तक्तः।

तट्—भ्वा, प। उच्छ्रायः।

उच्चीभावः। तटति। ततोट। तटिता। तट्, चु, प, वो। आहतिः। ताटयति।

तड्—चु, प। आघातः।

ताडनम्। तड् (अजि) च, प। दीप्तिः। ताडयति। अतीतडत्। अतु-

ताड़च्च मुष्टिना (ताड़ं करोतीति णिच्), भ १५, ७८। शिष्यार्थं ताड़यत्तौ, मनु ४, १६४। तं वृक्षैरताड़यत्, भ ८, ३२। अताड़यन् मृदङ्गांश्च, भ १७, ७।

तण्ड्—तड़ि, भ्वा, आ। ताड़नम्। आघातः। तण्डते। ततण्डे। वितण्डा।

तन्—तनु, त, उ। विस्तारः।

व्याप्तिः। प्रसारणम्। लट् तनोति, पा ३,१,७९। तनुतः। तन्वन्ति। तन्वः, तनुथः। तनुते। तन्वाते। तन्वते। तनोति रविरातपम्, कु २, ३३। हि, तनु। तनवानि। लिङ् तनुयात्। तन्वीत। लङ् अतनोत्। अतनुताम्। अतन्वन्। अतनवम्। अतनुत। अतन्वाताम्। अतन्वत। तरवः पुष्पान्तरानतन्वन्, भ १०, २२। लिट् ततान। तेनतुः। तेनिथ। तेने। कुतूहलं तस्य ततान, भ २, १७। कूलानि सरोजलक्ष्मीं तेनुः स्खलपद्महासैः, भ २, ३। पितुर्मुदं तेन ततान सोऽर्भकः, र ३, २५। लुट् तनिता। लृट् तनिष्यति। ०ते। लुङ् अतनीत्, अतानीत्। अतानिष्टाम्। अतानिषुः। अतत, अतनिष्ट। अतनिषाताम्। अतनिषत। अतथाः। अतनिष्ठाः, पा २, ४, ७९। अतानिष्टां तमो यथा, भ १५, ९१। कर्मणि, तायते। तन्यते, पा ६,४,४४। अतानि। सन् तितनिषति। ०ते। तितांसति। ०ते। तितंसति। ०ते, पा ६, ४, १७। यङ् तन्तन्यते। तन्तन्ति, पा ६, ४, ४४। णिच् तानयति। अतीतनत्। तनु, चु, प। १ श्रद्धा। २ उपक्षतिः। ३ आघातः हिंसा वर्जनम् वो। ४ सुनीतिः। ५ शब्दः। ६ उपतापः, दुर्गा। ७ (उपसर्गात्) दीर्घीकरणम्। विस्तारः। तानयति, तनति। (उ) तनित्वा, तत्वा। ०तत्य। ततम्। तन्तिः। तननम्। तानः। तन्वन्। तत्। व्यति—अन्योन्यविस्तारः। व्यत्यतन्वातां मूर्त्ती, भ ८, ३। अव—व्याप्तिः। गरुत्मतां सन्ततिभिरन्तरीक्षमवतेने, भा १६, ४३। आ—व्याप्तिः। जड़तामातनोति, उत्तर ९१। उद्—ऊर्द्ध विस्तारः। उत्तानः। परि—सर्वतो विस्तारः। वेष्टनम्। प्र—विस्तारः। श्रुतिभिर्वाचस्पत्यं प्रतायते, मा २,३०। वि—विस्तारः। वितत्य शार्ङ्गम्, भ ३, ४७। क्रौतुकक्रियां वितेनतुः, र ११, ५३। कर्म व्यतानीत् (प्रारब्धवान्), भ १, ११। वितेनुषु अध्वरेषु, कु २, ४६। णिच् दीर्घीकरणम्। विस्तारः। वितानयति, वितानयति यः कीर्त्तिं वितनत्यसकृं यशः। वितनोति च यः स्त्रीणां हृदये मन्मथव्यथाम्॥ कवि ९२। सम्—विस्तारः। सन्ततम्। सततम्।

तन्त्र्—तन्त्रि, चु, आ।

१ कुटुम्बधारणम्। पोषणम्। २ धारणम्। धरणम्। ३ विस्तारः। तन्त्रयते। प्रजाः प्रजाः स्वा इव तन्त्रयित्वा, शक्कु, ५, ९।

तन्त्र्—तन्द्र, तन्त्रि, तन्द्रि, चु, प।

१ सादः। अवसादः। २मोहः। तन्त्रयति। तन्त्रीः। तन्द्रयति। तन्द्रीः। सौत्रधातुद्वयमिति केचित्, दुर्गा।

तप्—भ्वा, प। सन्तापः।

दाहः। शोकः। तप्, हि, आ। १ ऐश्वर्य्यम्। प्रभुभावः। २उपतापः, मो। ३ तपःकरणम्। लट् तपति। अर्जनार्थं आत्मनेपदं यक् च। तप्यते तपस्तापसः,

संक्षिप्त । अयं धातुरैश्वर्ये वा तङश्यनौ लभते । अन्यदा तु शब्विकरणः परस्मैपदी, कौ १३६ । तपत्यादित्यवद्ब्रह्म तप्यते यः परन्तपः । तपते रिपुराष्ट्रञ्च तापयत्यहितं सताम् ॥ कवि २६ । तपति तनुगात्रि ! मदनस्त्वाम, शकु ३, ८८ । रविस्तपति नि शङ्कम्, भ १६, ६ । तपत्यादित्यवच्चैव चक्षूंषि च मनांसि च, मनु ७, ६ । तपति न मां किशलयशयनेन, गीतगो ७, ३१ । लिट् ततापः । तेपे । लुट् तप्ता । लृट् तप्स्यति । ०ते । लुङ् अताप्सीत् । अताप्साम् । अताप्सुः । अतप्त । अतप्साताम् । अतप्सत । वनमताप्सीच्चनैर्भानुः, भ ६, २ । भावकर्मणोः, तप्यते । अन्वतप्त पापेन, पा ३, १, ६५ । कर्मकर्त्तरि, अतप्त तपस्तापसः । तपति तापसं तपः (दुःखयति) । तप्यते तपस्तापसः (अर्जयति), पा ३, १, ८८ । तेपे तपः कपटवामनः, अनर्घ ३४ । सन् तितप्सति । ०ते । यङ् तातप्यते । तातप्ति । तप्, चु, प । दाहः । तापयति । तप्यति । तप्ता । अतौतपत् । अयमात्मनेपदीति केचित् । तापयते, दुर्गा । तप्, भ्वा, उ, वो । दाहः । तपति । ०ते । तर्पिता । अयं सेट् इति बोपदेवः । तप्तम् । तपनम् । तापः । तपनः । अनु—अनुतापः । अश्वात्तापः । शोकः । अन्वतप्त पापेन, पा ३, १, ६५ । विरहः किमनुतापयेद्विपश्चितम्, र ८, ६० । अभि—उत्तापः । अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते, र ८, ४४ । आ—आतपः । व्यतिः । उद्—उत्तापः । सन्तापः । दीप्तिः । उत्तपति सुवर्णं सुवर्णकारः, पा ३, १, ८८ । उत्तपते, पा १, ३, २७ । उत्तपमान आतपः, भ ८, १५ । उप—उपतापः । निर्—उत्तापः । निष्टपति सुपर्णम् (सकृदग्निं संशयति) । निस्तपति सुवर्णम् (पुनः पुनरग्निं संशयति), पा ८, ३, १०२ । निष्टप्तोमिवात्मानम्, भ ६, ८५ । परि—परितापः । अनुतापः । शोकः । सन्तापः । व्यथा । कं स्त्रीकृता न विषयाः परितापयन्ति, हितो । हितादपेतः परितप्यसे, भा ११, २८ । परितप्यते नोत्तमः परवृद्धिभिः, भा १६, २३ । प्र—प्रतापः । सन्तापः । भासस्तोग्राः प्रतपन्ति, गी ११, ३० । प्रतपतु नरेन्द्रचन्द्रः, रत्ना १, ६ । वि—दीप्तिः । वितपते रविः, पा १, ३, २७ । भ ८, १४ । सम्—सन्तापः ।

तम्—तमु, दि, प । १ आकाङ्क्षा ।

२ ग्लानिः, वो । क्षयीभावः । तान्यति, पा ७, ३, ७४ । न च दुःखेन तान्यति, कवि २४५ । तताम । तेमतुः । तमिता । तमिष्यति । अतमत् । (अतमत्, अतामीत्, वो) । णिच् तमयति । अतमि, अतामि, पा ६, ४, ६३ । ७, ३, ३४ । (ड) तमित्वा, तान्त्वा । तान्तः । मृदुलतान्तलतान्तमनोहरम्, मा ६, २ । उदरेण तान्यता, भा ८, १७ । उद्—उत्कण्ठा । उत्तान्यति मे मनः, रत्ना ३, ८४ । सम्—ग्लानिः । चिन्तासु सन्तान्यति, गीतगो ४, २१ ।

तस्व्—(कस्व्) भ्वा, प । हिंसा ।

तय्—(अय्) स्वा, आ । गतिः ।

पालनम्, वो । तयते, तयते क्षत्रवृत्तं यः, कवि ४० । तेये । तयिता । अतयिष्ट । तेये पुरात्, भ १४, ७५ । धरित्रीं तेये, भ १४, १०८ ।

तर्क्—(कुप्) चु, प । १ दीप्तिः ।

२ वितर्कः । ऊहः । संशयः । ३ लट्

तर्कयति। वृक्षसेचनादत्रभवतीं परिश्रान्तां तर्कयामि। शकु १, २१। लिट् तर्कयामास। लुट तर्कयिता। लुङ् अततर्कत। तर्कयित्वा। ०तर्क्य। तर्कितः। तर्कणम्। तर्कः। प्र, वि—वितर्कः। प्रतर्कयन्नन्यमृगेन्द्रनादान्, भ २८।

तर्ज्—भ्वा, प। भर्त्सनम्।

तर्जति। ततर्ज, तं ततर्ज, भ १४, ८०। तर्जिता। अतर्जीत्। अतर्जिष्टाम्। अतर्जिषुः। तितर्जिषति। तातर्ज्यते। तातर्क्ति। णिच् तर्जयति। तर्ज्, चु, आ। तर्जनम्। तर्जयते। तर्जयति भर्त्सयति इत्यपि दृश्यते कविष्यिति आख्यातचन्द्रिका, रघुटीका १२, ४१। अहितान् तर्जयन्निव केतुभिः, र ४, २८। तावतर्जयदम्बरे, र १२, ४१। सोऽतर्जयत् सूतम्, भ १७, १३। सखीमङ्गुल्या तर्जयति, शकु १, १८२। तर्जते यो हि भूपालान् न तर्जयति सज्जनान्, कवि २५६। तर्जनी।

तर्द्—भ्वा, प। हिंसा। तर्दति।

तर्ब्—भ्वा, प। गतिः। तर्बति।

तल्—चु, प। प्रतिष्ठा।

तालयति। तलति, वो। अतीतलत्।

तंस्—तसु, दि, प। उपक्षयः।

वस्तुहानिः। उत्क्षेपणम्, वो। तस्यति। ततास। तसिता। अतसत् (अतसत्, अतसीत्, अतासीत्, वो)। (उ) तंसित्वा, तस्त्वा। तस्तः।

तंस्—तंसि, चु, प। अलङ्करणम्।

अवतंसयति। अवतंसति, वो। उत्तंसयिष्यति कचांस्तव देवि! भीमः, वेणी ११।

ताय्—तायृ, भ्वा, आ। १ सन्तानः। प्रबन्धः। विस्तारः। २पालनम्। लट् तायते। अमर्षोऽतायत, भ १७, ५०। कामास्तेऽन्यत्र तायन्ताम्, भ २०, २५। तायते स्वकुलव्रतम्, कवि ४०। लिट् तताये। लुट् तायिता। लृट् तायिष्यते। लुङ् अतायिष्ट। अतायि, पा ३, १, ६१। अतायिषाताम्। अतायिषत। अतायि सत्त्वमस्य (सन्ततम्), भ ६, ३३। णिच् ताययति। (ऋ) अततायत्। मायां व्यतायेताम्, भ १७, १०५।

तिक्—तिग्, भ्वा, प। १गतिः।

२आस्कन्दनम्। गतिविशेषः। ३बधः, वो। तिक्नोति। तिग्नोति। तिक्क (ककि) भ्वा, आ। गतिः। तेकते। तेकिता।

तिघ्—भ्वा, प, वो। घातः। तिघ्नोति।

तिज्—भ्वा, आ। १ निशानम्।

तीक्ष्णीकरणम्। २ क्षमा। सहनम्। (क्षमायां सन्) तितिक्षतेऽपराधम्, पा ३, १, ५। अतिवादांस्तितिक्षेत, मनु ६, ४७। तितिक्षते क्षमी यस्तु सापराधेषु साधुषु। लिट् तितिक्षाञ्चक्रे। लुट् तितिक्षिता। लुङ् अतितिक्षिष्ट। तिज्, चु, प। निशानम्। तेजनम्। तेजयति कुसुमचापमतेजयदंशुभिर्हिमकरः, र ९, ४१। तेजयन्ति यमाक्रम्य, कवि १६८। रुद्र—उत्तेजनम्। प्रेरणम्। उद्दीपनम्। व्यग्रकरणम्। तीक्ष्णीकरणम्।

तिप्—तिप्, भ्वा, आ। क्षरणम्।

च्युतिः। तेपते। तितिपे। तितिपिषे। तेप्ता। क्षीरस्वामी त्वयं सेट् इति बभ्राम। विभाषितेट् इति बोपदेवः। तेप्स्यते। तिप्सीष्ट। अतिप्त। अतिप्साताम्। दिप्, देपते इति कश्चित्।

तिम्—दि, प। आर्द्रीभावः।

क्लेदनम्। तिम्यति। तितेम। तेमिता। तेमिष्यति, ते।

तिल्—तिल्ल्—भ्वा, प। गतिः।

तिल, तु, चु, प। स्नेहनम्। स्निग्धीभावः। तेलति। तिल्लति। तिलति। तेलयति। तेतिल्यते शिशुजनो धनिनां गृहेषु तिल्लन्ति यौवनमदेन रते युवानः। कवि ४७।

तीक्, तीक्ष (कंकि) भ्वा, आ। गतिः।

तीम्—(तिम्) दि, प। क्लेदनम्।

तीम्यति।

तीर—(पार) चु, प। अदन्तः।

कर्मसमाप्तिः। तीरयति। अतितीरत्।

तीव्—(पीव्), भ्वा, प। स्थौल्यम्।

तीवति। यस्तु नातीव तीवति, कवि ८५।

तु—अदा, प। सौत्रधातुः।

१गतिः। २वृद्धिः। पूर्त्तिः। ३हिंसा। ४जीवनम्। वृत्तिः, वो। तौति। तवीति, पा ७, ३, ९५। तुतः। तुवीतः। तुवन्ति। तुताव। तोता। तोष्यति। अतौषीत्।

तुज्—भ्वा, प। हिंसा। तोजति।

तुञ्ज्—तुजि, भ्वा, प। १पालनम्।

२बलम्। ३ हिंसा। ४ जीवनम्, वो। ५ याच्ञा, वो। तुञ्जति। तुतुञ्ज। तुञ्जिता। अतुञ्जीत्। तुञ्जः। तुजि, (कुप) चु, प। दीप्तिः। तुजि, चु, प। १हिंसा। २बलम्। ३ दानम्। ४वासः। तुञ्जयति। तुञ्जति। तोजयतीति केचित्। एवं लजि, लञ्जयति।

तुट्—तु, प। कलहकरणम्।

तुटति। तुतोट। तुटिता। अतुटीत्।

तुड्—तुडृ, भ्वा, प। तुड्, तु, प।

तोड़नम्। दारणम्। भेदः। हिंसा। तोडति। तुतोड। तोडिता। तुडति। तुडिता। अतुड़ीत्।

तुण्ड्—भ्वा, प, वो। अनादरः।

तुण्—तु, प। कुटिलीकरणम्।

तुणति। तुतोण। तोणिता। अतोणीत्।

तुण्ड्—तुडि, भ्वा, आ, वो। बधः।

निपीड़नम्। तुण्डते पान्थं पिकः, दुर्गा।

तुत्थ—चु, प। अदन्तः। आवरणम्।

तुत्थयति। तुत्थापयति, वो। पांशुर्दिशां सुखमतुत्थयदुत्थितोऽद्रेः, मा ५, ११।

तुद्—तु, उ। व्यथनम्।

पीड़नम्। ताड़नम्। लट् तुदति। ०ते, पा ३, १, ७७। तुदसि मर्माणि वाक्शरैः, भारत। अतुदन् शक्तिभिर्दृढम्, भ १७, १२। लिट् तुतोद। तुतोदिथ। तुतुदे। तुतोद गदयारिम्, भ १४, ८१। लुट् तोत्ता। लट् तोत्स्यति। ०ते। लुङ् अतौत्सीत्। अतौत्ताम्। अतौत्सुः। अतुत्त। अतुत्साताम्। अतुत्सत। अतौत्सुः शूलैः, भ १५, ४। सन् तुतुत्सति। ०ते। यङ् तोतुद्यते। तोतोत्ति। णिच् तोदयति। अतूतुदत्। तुत्त्वा। तुन्नः। तोदः। तोत्त्रम्। विधुन्तुदः। कर्मसु निस्तुतोद (व्यथयामास), भा १७, ४३। अरुन्तुदः।

तुन्द् (चन्द्)।

तुप्—तुफ्, भ्वा, प। हिंसा।

तु, प। १ हिंसा। २ क्षेपः, वो। तोपति। तुपति। तोफति। तुफति। तुम्फति, वो।

तुभ्—भ्वा, आ। दि, क्रया, प।

हिंसा। वधः। लट् तोभते। तुभ्यति। तुभ्नाति। तुभ्नीतः। तुभ्नन्ति। मुष्टिनाऽतुभ्नात्तम्, भ १७, ७९। अज्ञानतुभ्नात्, भ १७, ८०। लिट् तुतोभ। तुतुभे। लुट् तोभिता। लुङ् भ्वा, अतुभत्। अतोभिष्ट। दि, अतुभत्। क्रया, अतोभीत्।

तुम्फ्, तुम्फ्, तुन्प्, तुन्फ्, भ्वा, प।

हिंसा। तु, प। १ हिंसा। २ क्षेपः, वो। तुम्पति। तुम्फति। प्रस्तुम्पति गौः, पा ६, १, १५। न यङ्लुकि, प्रतोतुम्पीति।

तुम्ब्—तुबि, भ्वा, प। अर्दनम्।

पीड़नम्। तुम्बति। तुबि, चु, प। १ अर्दनम्। २ अदर्शनम्। तुम्बयति। तुपि, तुम्पति। तुम्पयतीत्येके।

तुर्व्—तुर्वी (उर्वी), भ्वा, प।

हननम्। तूर्वति। तुतूर्व। तूर्विता। (ई) तूर्णम्। क्विप् तूः, तुरौ।

तुल्—चु, प। उन्मानम्।

परिमाणम्। तोलयति, तोलयति काञ्चनं वणिक्, दुर्गा। तोलति, वो। यस्तोलयति दारिद्र्यकर्दमे पतितान्, कवि २०४। अतूतुलत्। पृथिवी तोलयिष्यते (ऊर्ध्वं क्षेप्स्यते), भ १६, १६। तुलयति, तुलना, इत्यादौ तुलाशब्दात् णिच्, कौ १७३। त्वदीयं सौन्दर्यं तुहिनगिरिकन्ये! तुलयितुम् इति शङ्करोक्तम्। रामे रुद्रशरासनं तुलयति, महाना १, ३१। अन्तःसारं घन तुलयितुं नानिल शक्ष्यति त्वाम्। मेघ २०। तोलितम्। तोलनम्। उद्—उत्तोलनम्। ऊर्ध्वनयनम्।

तुष्—दि, प। प्रीतिः। तुष्टि।

लट् तुष्यति। तुष्यन्ति ब्राह्मणा नित्यम्, कवि १३८। लिट् तुतोष। तुतुषतुः। तुतोषिथ। ततोष हतवान्, र ३, ६३। तुतुषुर्वानराः सर्वे, भ १४, ११२। लुट् तोष्टा। तोष्टा च भरतः परम्, भ २२, १४। लृट् तोक्ष्यति। स्वयम्भूः कस्य तोक्ष्यति, भ १६, ३। लुङ् अतुषत्। अतुषत् कुम्भकर्णः, भ १५, ८। सन् तुतुक्षति। यङ् तोतुष्यते। तोतोष्टि। णिच् तोषयति। अतूतुषत्। गुरून् सम्यगतूतुषः, भ ६, ६८। मूल्येन तोषयेदेनमाधिस्तेनोऽन्यथा भवेत्, मनु ८, १४४। प्र, परि—परितोषः। प्रतुष्यति श्रोत्रसुखैरपथ्यैः, भ १२, ८३। सम्—सन्तोषः। भोजनविशेषैर्वायसं सन्तोष्य, हितो।

तुस्—भ्वा, प। शब्दः।

तोसति। तुतोस। तोसिता। अतोसीत्।

तुह्—तुहिर् (उहिर्) भ्वा, प।

अर्दनम्। वधः, वो। तोहति। अतुहत्। अतोहीत्।

तूड्—तूडृ, भ्वा, प, वो। अनादरः।

तूडृ (तुडृ) भ्वा, प। तोड़नम्। दारणम्।

तूण्, चु, प, वो। अदन्तः। सङ्कोचः।

तूणयति। अतुतूणत्। तूणः।

तूण—चु, प, वो। सङ्कोचः।

तूण्, रु, आ। पूरणम्। तूणयति। °ते।

तूर्—तूरी, दि, आ। १ वरा।

२ हिंसा। तूर्य्यते, तूर्य्यते न क्वचित् कार्य्ये, कवि २५५। तुतूरे। (ई) तूर्णः।

तूल्—श्वा, प। निष्कर्षः।

निष्कोषणम्। अन्तर्गतस्य वह्निनिःसारणम्। तूलति। तुतूल। अतूलीत्। तूल, चु, प, वो। परिमाणम्। तूलयति काञ्चनं वणिक्। तूलयत्यपि देवेन्द्रं संग्रामे भुजविक्रमात्, कवि २०४। तूल, चु, आ। पूरणम्। तूलयते। तूली। तूलिका।

तूष—श्वा, प। तुष्टिः।

तूषति। तूषन्ति कुलदेवताः, कवि १४८। तुतूष। तूषिता। अतूषीत्।

तृच्—श्वा, प। गतिः।

तृच्चति। ततृच्च। तृच्चिता। अतृच्चीत्।

तृण्—तृण, त, उ। भक्षणम्।

तर्णोति। तर्णुते। (तृणोति, तृणुते)। बर्हींषि तर्णोति। हरिणी तृणुते तृणम्, अनर्घ ३५। तृणोति शात्रवं युद्धे, कवि ७४। (उ) तर्णिता, तृत्वा। तृतः। तर्णकः। तृणम्।

तृद्—उतृदिर्, रु, उ। १ हिंसा।

२ अनादरः। लट् तृणत्ति। तृन्ते। भूतिं तृणद्मि यज्ञाणाम्, भ ६, ३८। हि तृन्धि। लिङ् तृन्द्यात्। तृन्दीत। लङ् अतृणत्। अतृन्ताम्। अतृन्दन्। अतृणदम्। अतृन्त। लिट् ततर्द, रथाश्वान् रिपोस्ततर्द शाखिना, भ १४, १०८। ततृदे। ततृदिषे। ततृत्से, पा ७, २, ५७। लुट् तर्दिता। लृट् तर्दिष्यति। ०ते। तर्त्स्यति। ०ते। लृङ् अतर्दिष्यत्। ०त। अतर्त्स्यत्। ०त। लुङ् (इर्) अतृदत्। अतर्दीत्। अतर्दिष्टाम्। अतर्दिषुः। भ १५, ४४। सन् तितर्दिषति। ०ते। यङ् तरीतृद्यते। तरीतर्त्ति। मन् तितृत्सति। ०ते। तर्दयति। अतीतृदत्। (उ) तर्दित्वा, तृत्वा। तृत्तम्। वि—ताड़नम्। मर्माणि च वितर्त्स्यति, भ १६, १५।

तृप्—दि, प। १ प्रीणनम्।

तर्पणम्। २ तृप्तिः। तृप्तीभावः। तृप्, श्वा, प। प्रीणनम्। लट् तृप्यति। तृप्नोति, पा ८,४,४९। तृप्नुतः। तृप्नुवन्ति। नाग्निस्तृप्यति काष्ठानाम्। को न तृप्यति वित्तेन, हितो। कथयञ्च न हि तृप्यामि, भारत। स्वन्दोनि तृप्यतु मधूनि पिबन्निवायम्, नै १४, १०९। यस्तृप्नोति पितॄन्, कवि १०। द्यूतं तृप्यति यो धनम्, कवि १५४। लिङ् तृप्नुयात्। लङ् अतृप्नोत्। लिट् ततर्प ततृपतुः। ततर्पिथ, ततृप्थ, ततर्प्थ। ततृपिव, ततृप्व। लुट् तर्पिता, तर्प्ता, तृप्ता, पा ६, १, ५९। ७, २, ४५। लृट् तर्पिष्यति, तर्प्स्यति, तृप्स्यति। अद्य तर्प्स्यन्ति मांसादाः, भ १६, २९। लुङ् अतर्पीत्, अतार्प्सीत्, अतृप्सीत्। अतृपत्। अतर्पिष्टाम्, अतार्प्टाम्, अतृप्टाम्। पितॄनतार्प्सीन्नरक्तोयैः, भ २,५२। प्राशीच्चातृपत्, भ १५, २९। नातार्प्टीद् भक्षयन्, भ १५, ४९। सन् तितर्पिषति, तितृप्सति। यङ् तरीतृप्यते। तरीतर्प्ति। णिच् तर्पयति। अतीतृपत्, अततर्पत्। तृप्, चु, प। १तृप्तिः। २ प्रीणनम्। ३ सन्दीपनम्। तर्पयति। तर्पति। तर्पिता। तृप्तः। तृप्तिः। तर्पणम्। यशस्तर्पयतीव यः,

कवि १५४। हविषा योऽग्निमयं तर्पति देवांस्तर्पयति प्रियोपकरणैः, कवि १०। अप—अपतर्पणम्। भोजनाभावः। आ—आतर्पणम्। प्रीणनम्। आलेपनम्। परि—सम्यक्तृप्तिः। परितृप्तिः। सम्—सन्तर्पणम्। यावज्जराशैनं रिपुः शवाशान् सन्तर्पयति, भ १२, ७५।

तृप्—तृफ्—तु, प। तृप्तिः।

तृपति। तृफति। तर्पिता। अतर्पीत्, कौ १५१।

तृम्प्—तृम्फ्, तृन्प्, तृन्फ्, तु, प।

तृप्तिः। तृम्पति, तृम्फति। नलोपेऽपि नुम्, कौ १५१। तृपति तृफति, वो। ततृम्फ। अतृम्फीत्।

तृष्—जितृष्, दि, प। तृष्णा।

पिपासा। आकाङ्क्षा। तृष्यति। ततर्ष। तत्तृषतुः। तर्षिता। तर्षिष्यति। अतृषत्। अतर्षीत्, वो। क्षुताश्च कपयोऽतृषन्, भ १५, ५१। सन् तितर्षिषति। यङ् तरीतृष्यते। णिच् तर्षयति। अतीतृषत्। तृषित्वा, तर्षित्वा, पा १, २२५। तृषित्वाऽनिशं स्वादु पिबन्तम्, भ ७, १०६। तृषितः। तर्षः। तृष्णा। तृष्णक्। अनु—अभिलाषः।

तृह्—तृंह्, तु, प। तृह्, रु, प।

हिंसा। बधः। लट् तृंहति। तृणेढि, पा ७, ३, ९२। तृण्ढः। तृंहन्ति। तृणेच्छि। तृणेह्मि, भ ६, ३९। लोट् तृणेढु। तृण्ढि। तृणहानि। तृणेढु रामः, भ १, १९। तृणहानि दुराचारा राक्षसीः, भ २०, ३। लिङ् तृंह्यात्। लङ् अतृनेट्। अतृण्ढाम्। अतृंहन्। अतृणहम्। अतृणेट् प्रवृन्, भ १७, १५। अतृंहंस्तोमरैः, भ १७, १२। लिट् ततर्ह। ततृहतुः। ततर्हिथ, ततर्ढ। लुट् तर्हिता, तर्ढा। रु, तर्हिता। लृट् तर्हिष्यति, तर्ढ्यति। लुङ् अतृक्षत्, अतर्हीत्। रु, अतर्हीत्। सन् तितृक्षति। तितर्हिषति। यङ् तरीतृह्यते। तरीतर्ढि। णिच् तर्हयति। अततर्हत्। अतीतृहत्, पा ७, ४, ७। तर्हित्वा, तृढ्वा। तृढः, तृढः सौमित्रिपत्तिभिः, भ १४, ३५।

तृंह्—तृन्ह् (तृह्) तु, प।

हिंसा। तृंहति। नलोपेऽपि नुम्, कौ १५१। तृहति, वो। ततृंह। तृंहिता, तृण्ढा। तृंहिष्यति, तृङ्क्ष्यति। आशिषि, तृह्यात्। अतृंहीत्, अतार्ङ्क्षीत्। अतृंहिष्टाम्, अतार्ष्टाम्। अतृंहिषुः, अतार्ङ्क्षुः। सन् तितृंहति, तितृंहिषति।

तॄ—स्था, प। प्लवनम्।

जलोपरिस्थितिः। २तरणम्। अतिक्रमणम्। उत्तरणम्। ३अभिभवः, वो। लट् तरति, तरति सकलदुःखं वामनं भावयेद् यः, दुर्गा। न बाहुभ्यां नदीं तरेत्, मनु ४, ७७। लिट् ततार। तेरतुः, पा ६, ४, १२२। तेरिथ। लुट् तरिता, तरीता, पा ७, २, ३८। लृट् तरिष्यति, तरीष्यति। शिला तरिष्यत्युदके न पर्णम्, भ १२, ७७। मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि, गी १८, ५८। आशिषि, तीर्यात्। लुङ् अतारीत्। अतारिष्टाम्। अतारिषुः। सन् तितरिषति, तितरीषति, तितीर्षति, पा ७, २, ४१। यङ् तेतीर्यते। तातर्त्ति। णिच् तारयति। अतीतरत्। तीर्त्वा। तीर्य्य। तीर्णः, क्षुच्छं तीर्णः, र १४, ६। तरणम्। तरितुम्, तरीतुम्, तर्त्तुम्। तरितव्यम्,

तरीतव्यम्, तर्त्तव्यमिति केचित् । तरः । आतरः । अति—अतिक्रमः । अतितरन्त्येव मृत्युं श्रुतिपरायणाः, गौ १३, २५ । अव—अवतरणम् । द्यादवततार, र १, ५५ । विमानं ज्योतिष्पथादवततार, र १३,६८ । स्वभुजादवतारिता धूः, र १,३४ । अङ्गराजादवतार्य्य चक्षुः, र ६, ३० । उद्—उत्तरणम् । उत्तेरुर्नदान्, भ ७, ५५ । ६, ८५ । उदतारीदुदन्वन्तम्, भ १५, १० । णिच् (उद्गमनम्) अज्ञानभुक्तमुत्तार्य्य, मनु ११, १६० । निर्—निस्तारः । अतिक्रमः । क्रमेण निस्तीर्य्य च दोहदव्यथाम्, र ३, ७ । आपदं निस्तरेद् यथा, भारत । निस्तारयति दुर्गात्, मनु ३, ८८ । प्र—णिच् प्रतारणा । वि—वितरणम् । दानम् । सम्—सन्तरणम् । उत्तरणम् । सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं सन्तरिष्यसि, गौ ४, ३६ । दौहित्र एनं सन्तारयति पौत्रवत्, मनु ८, १३८ ।

तेज्—भ्वा, प । पालनम् । तेजति ।

तेप्—तेपृ (तिपृ) भ्वा, आ ।

१क्षरणम् । च्युतिः । २कम्पनम् । तेपते । तेपन्ते यस्य वक्त्रेन्दोर्लावण्यामृतबिन्दवः, कवि १६६ । संवीक्ष्य तेपते स्त्रीणां वपुः, कवि १६६ । तितेपे । तेपिता । देपते इत्येके ।

तेव्—तेवृ, भ्वा, आ । १ क्रीड़नम् ।

२ रोदनमिति भट्टमल्लः । तेवते ।

तोड्—तोडृ, वो । भ्वा, प । अनादरः ।

त्यज्—भ्वा, प । हानिः । त्यागः ।

लट् त्यजति । त्यज क्षोभम्, भ ५, २३ । बाणमत्यजत्, भ ६, १२२ । लिट् तत्याज । तत्यजतुः । तत्यजिथ, तत्यक्थ । तत्यजिव । लुट् त्यक्ता । लृट् त्यक्ष्यति । लुङ् अत्याक्षीत् । अत्याक्ताम् । अत्याक्षुः । अत्याक्तामायुधानीकम्, भ १५, ११३ । सन् तित्यक्षति । यङ् तात्यज्यते । तात्यक्ति । त्याजयति । तं प्राणैरतित्यजत्, भ १५, १२० । त्यक्ता । त्यक्तः । त्यागः । त्यक्तव्यम् । त्यागिमम् । त्याज्यः । परि—परित्यागः । वर्जनम् । कस्तस्य धर्मदारपरित्यागिनो नाम कीर्त्तयिष्यति, शकु टी ७, ८८ । सन्, वर्जनम् । सन्त्याजयाञ्चकार सीताम्, भ ५, १०४ ।

त्रख्—(इख्) भ्वा, प । गतिः । त्रखति ।

त्रङ्क्—त्रकि (कंकि) भ्वा, आ । गतिः ।

त्रङ्ख्—'त्रखि' (इख्) भ्वा, प । गतिः ।

त्रङ्ग्—त्रगि, वो, भ्वा, प । गतिः ।

त्रन्द्—त्रदि, भ्वा, प । चेष्टा । त्रन्दति ।

त्रप्—त्रपूष्, भ्वा, आ । लज्जा ।

लट् त्रपते । लिट् चेपे, पा ६, ४, १२२ । त्रेपाते । लुट् त्रपिता, त्रप्ता । लृट् त्रपिष्यते, त्रप्स्यते । आशिष, त्रपिषीष्ट, त्रप्सीष्ट । लुङ् अत्रपिष्ट, अत्रप्त । अत्रपिषाताम्, अत्रप्साताम् । अत्रपिषत, अत्रप्सत । सन् तित्रपिषते, तित्रप्सते । यङ् तात्रप्यते । तात्रपूति । णिच् त्रपयति, त्रापयति । अतत्रपत् । (ष) त्रपा । त्रप्तः । अप—अपत्रपा । लज्जा सापत्रपाऽन्यत इत्यमरः । बलैरपचेपे, भ १४, ८४ । हृदयमपत्रपते, उत्तर १७२ ।

त्रस्—त्रसी, दि, प । उद्वेगः ।

त्रासः । लट् त्रस्यति, त्रसति, पा ३, १, ५० । त्रसति कः सति नाश्रयबाधने, नै ४, १६ । त्रस्यन्ति शत्रवो यस्मात् त्रसन्ति परदारगाः, कवि १०६ । तत्रास । तत्रसतुः, त्रेसतुः । तत्र-

सिथ, त्रेसिथ, पा ६, ४, १२४। लुट् त्रसिता। लृट् त्रसिष्यति। लुङ् अत्रासीत्, अत्रसीत्। मा त्रसीः, भ ८, ११९। कपेरत्रासिषुर्नादात्, भ ९, ११। सन् तित्रसिषति। यङ् तात्रस्यते। तात्रस्ति। णिच् त्रासयति। अतित्रसत्। त्रस्, चु, प। १धारणम्। २ग्रहणम्। ३वारणम्। बधः, वो। त्रासयति। (ई) त्रस्तः। त्रस्नुः। त्रासः। त्रस्यन् वैरायमाणेभ्यः, भ १५, ७५। वि, सम्—भयम्। सन्त्रस्तुर्द्विषः, भ १४, ३९। सन्त्रासयाञ्चकारारिम्, भ ५, १०४।

त्रंस्—त्रसि (कुप) चु, प। दीप्तिः।

'त्रा'—अदा, प। रक्षणम्।

त्राति। कैश्चिददादौ त्रा इति पठ्यते। तेन त्राहीति संक्षिप्तसारम्। चक्रिंस्त्राहीति मुग्धबोधम्।

त्रुट्—तु, प। छेदनम्। भेदः।

विदीर्णभावः। त्रुट्यति, त्रुटति, पा ३,१,७०। यावन्नाम दन्ता न त्रुट्यन्ति तावत्त्व पाशं छिनद्मि, हितो। त्रुटन्ति सर्वसन्देहांस्त्रुट्यन्ति ग्रन्थयो हृदि, कवि ३८। तुत्रोट। तुत्रुटतुः। त्रुटिता। अत्रुटीत्। त्रुट्, चु, आ। छेदनम्। त्रोटयते। त्रुटितम्। त्रुट्यङ्गीमधनुः, नहाना १, ३७।

त्रुप्—त्रुफ्—त्रुम्प्—त्रुम्फ्—

त्रुन्प, त्रुन्फ, (तुप) भ्वा, प। हिंसा। त्रोपति। त्रोफति। त्रुम्पति। त्रुम्फति।

त्रै—त्रैङ्, भ्वा, आ। पालनम्।

त्राणम्। रक्षणम्। लट् त्रायते, त्रायते वर्णधर्मश्च, कवि ४०। त्रायते महतो भयात्, गौ २,४०। पुत्राम्नो नरकात् त्रायते पितरं सुतः, मनु ९,१३८। तत्रे। त्राता। त्रास्यते। अत्रास्त। अत्रासाताम्। अत्रासत। द्रुतमत्रास्त सुग्रीवो भ्रातृव्यं शत्रुसङ्कटात्, भ १५,१२०। मा न त्रास्थाः क्षतां पुरम्, भ १२। परि—परित्राणम्। रक्षणम्। त्रातः, त्राणः, पा ८,२,५६।

त्रौक्—त्रौक्ष (कक्षि) भ्वा, आ।

गतिः। त्रौकते। तुत्रौके। त्रौकिता। अत्रौकिष्ट। तुत्रौकिषते। तोत्रौक्यते। चौकयति।

त्रक्ष्—त्रक्षू (तक्षू) भ्वा, प।

तक्षणम्। तनूकरणम्। कृशीकरणम्। त्रक्षति काष्ठं तक्षा, दुर्गा। तत्रक्ष। त्रक्षिता, त्रष्टा। त्रक्षिष्यति, त्रक्ष्यति। अत्राक्षीत्, अत्रक्षीत्। त्रक्ष त्रक्षने तक्षवत्, वो।

त्रङ्—त्रगि, भ्वा, प। कम्पः।

त्रगि (अगि) भ्वा, प। गतिः। त्रङ्गति।

त्रच्—तु, प। संवरणम्।

आच्छादनम्। त्रचति। त्रक्।

त्रञ्चु—त्रन्चु (तन्चु) भ्वा, प। गतिः।

त्रन्चु, रु, प, वो। सङ्कोचः। त्रञ्चति, त्रनक्ति। तत्रञ्च। त्रञ्चिता। त्रञ्चित्वा, त्रङ्क्ता।

त्वर्—ञित्वरा, भ्वा, आ। त्वरा।

वेगः। सम्भ्रमः। त्वरते, त्वरते धर्म एव यः, कवि २५५। त्वरस्व वत्से! उत्तर २४०। तत्वरे। नानुनेतुमबलाः स तत्वरे। त्वरिता। अत्वरिष्ट। निहन्तुमत्वरिष्टारीन्, भ १५, ४९। सन् तित्वरिषते। यङ् तात्वर्यते तातूर्क्ति, पा ६, ४, २०। णिच्

त्वरयति। दूतास्त्वरयन्ति माम्, रामा। अतत्वरत्, पा ७, ४, ९५। अतत्वरतां योद्धुम्, भ १५,६०। त्वरितः, तूर्णः, पा ७, २, २८। त्वरा।

त्विष्—भ्वा, उ। दीप्तिः।

उज्ज्वलीभावः। त्वेषति। ०ते। तित्वेष। तित्विषे। वानरास्त्वित्विषुः, भ १४, ७०। त्वेष्टा। त्वेक्ष्यति। ०ते। आशिषि, त्विष्यात्। त्विक्षीष्ट। अत्विक्षत्। ०त। तित्विक्षति। ०ते। तित्विष्यते। तित्वेष्टि। त्वेषयति। अतित्विषत्। अव—निवासदानदीप्तिषु। अवत्वेषति। ०ते। (निवसति ददाति दीप्यते वा), दुर्गा। दाननिरसनयोरिति प्रदीपः।

त्वर्—भ्वा, प। क्षिप्रगतिः।

कपटगमनम्। त्वट् त्वरति। लङ् अत्वरत्। लिट् तत्वार। तत्वरतुः। लुट् त्वरिता। स्वट् त्वरिष्यति। लुङ् अत्वारीत्। अत्वारिष्टाम्। अत्वारिषुः। त्वरुः।

(थ)

थुड्—तु, प। संवरणम्।

आच्छादनम्। थुडति। तुथोड। थुडिता। अथुडीत्। लेखनवत् थोडनमपि। स्थुड्, स्थुडति। खुड्, खुडति। कुड्, कुडति।

थुर्व्—थुर्वी (सर्वी) भ्वा, प।

हिंसनम्। थुर्वति। (ई) थूर्णम्।

(द)

दक्ष—भ्वा, आ। १ हिंसा। २वेगः।

शीघ्रकरणम्। दक्षते, दक्षते सर्वकार्येषु कुलं दक्षयते द्विषाम्, कवि २६६। ददक्षे। दक्षिता। अदक्षिष्ट। णिच् दक्षयति। अददक्षत्। कर्मणि, अदक्षि, अदाक्षि। गतिहिंसनयोः घटादिः कौ ८२। दक्षः। दक्षा। दक्षिणा।

दघ्—स्वा, प। घातनम्।

पालनम्। दघ्नोति। छान्दसोऽयम्, कौ १४८। बोपदेवस्तु भाषायामपि पठितवान्।

दङ्—दघि, भ्वा, प। १ पालनम्। २ वर्जनम्। दङ्क्ति। दङ्क्तिता।

दण्ड—अदन्तः। चु, प।

दण्डनिपातनम्। दण्डयति, दण्डापयति, वो। तान् सहस्रञ्च दण्डयेत्, मनु ९, २३४। कौटसाक्ष्यं कुर्वाणान् दण्डयित्वा प्रवासयेत्, मनु ८, १२३। अनृतन्तु वदन् दण्ड्यः स्ववित्तस्यांशमष्टमम्, मनु ८, ३६।

दद्—भ्वा, आ। १ दानम्।

२ धारणम्, वो। ददते, ददते द्रविणं ब्राह्मणेभ्यो यः, कवि १७५। विट विटपमसुं ददख तच्छै, मा ७, ५३। ददे, पा ६, ४, १२७। दत्तिता। अदत्त।

दध्—भ्वा, आ। १ धारणम्।

२दानम्, वो। दधते, दधते यः सदाचारम्, कवि १७४। देधे। दधिता।

दन्व्—दवि, भ्वा, प, वो। गतिः।

दन्वति। ददन्व। दन्विता। अदन्वीत्।

दभ्—दम्भ्—दभि, चु, प, वो।

प्रेरणम्। दभि, चु, आ, वो। राज्ञीकरणम्। दाभयति। दम्भयति। ०ते। दभिर्धातुष्वपठितोऽपि वार्त्तिकबलात् स्वीकार्यः। स्वत् दाभ्यः, कौ १३२।

दभ्—दन्भु, स्वा, प। दम्भः।

परवञ्चनहेतुव्यापारः। गर्वः। दम्भोति। ददम्भ। ददम्भतुः, देभतुः, कौ १४८। दम्भिता। दम्भिष्यति। दभ्यात्। अदम्भीत्। अदम्भिष्टाम्। गजालातैरदम्भिषुः (दग्धवन्तः), भ १५, ३। सन् दिदम्भिषति, पा ७, २, ४९। धिप्सति, धीप्सति, पा ७, ४, ५६। भूयस्त्वं धिप्सुमाक्षय राजपुत्रं दिदम्भिषुः, भ ९, ३३। यङ् दादभ्यते। दादम्भ्धि। णिच् दम्भयति। अदद म्भत्। (उ) दम्भित्वा, दब्ध्वा। दम्भ.।

दम्—दमु, दि, प। १ उपशमः।

शान्तीभावः। २शन्तीकरणम्। शासनम्। दमनम्। लट् दाम्यति पा ७, ३, ७४। यमो दाम्यति, राक्षसान्, भ १८, २०। लिट् ददाम। देमतुः। लुट् दमिता। लुङ् अदमत् (अदमत्, अदमीत्, वो) जानुभ्यामदमच्चान्यान्, भ १५, ३७। णिच् दमयति। ०ते, पा १, ३, ८९। (उ) दमित्वा, दान्त्वा, पा ७, २, ५६। दान्तः। णिच् दान्तः, दमितः, पा ७, २, २७। अदान्तास्त्विदशैरपि, भ ९, १९। तनुश्रिया कमनीयतामदं दमयन्ती, नै २, १८। दमौ, पा ३, २, १४१। प्र—दमनम्। प्रादमयत्त वन्यः पुष्पेषुम्, भ ८, ६२।

दय्—भ्वा, आ। १ दानम्।

२गमनम्। ३रक्षणम्। ४हिंसा। ५ आदानम्। ग्रहणम्। ६ दया। अनुकम्पा। लट् दयते। दयते दीनं दयालुः, दुर्गा। तेषां दयसे न कस्मात्, भ २, ३३। योऽर्थिभ्यो दयते धनम्, कवि ८४। सर्पिषो दयते। लिट् दयाञ्चक्रे, पा ३, १, ३७। दयाञ्चक्रे न राक्षसः, भ ५, १०६। लुट् दयिता। लृट् दयिष्यते। लुङ् अदयिष्ट। अदयिषाताम्। अदयिषत। स्वेषामप्यदयिष्ट न, भ १५, ६३। दयितः। दया। रामस्य दयमानः, भ ८, ११९। न गजा नगजा दयिता दयिता (इष्टा रक्षिताः), भ १०, ९। दया।

दरिद्रा—अदा, प। दुर्गतिः।

क्लेशेनावस्थानम्। अकिञ्चनीभावः। लट् दरिद्राति। दरिद्रितः। दरिद्रति, पा ६, ४, ११२, ११४। दरिद्रातु यथा हरिः, भ ५, ८६। नेदानीं शक्रयज्ञेन्द्रो दरिद्रितः, भ १८, ३१। उपर्युपरि पश्यन्तः सर्व एव दरिद्रति, हितो। लिङ् दरिद्रियात्। लङ् अदरिद्रात्। ०द्रिताम्। ०द्रुः। लिट् दरिद्राञ्चकार। ददरिद्रौ (ददरिद्र, वो) तन्निर्मूलम्, कौ १२५। ददरिद्रतुः। लुट् दरिद्रिता। लृट् दरिद्रिष्यति। आशिषि, दरिद्र्यात्। लुङ् अदरिद्रौत्, अदरिद्रासीत्। अदरिद्रिष्टाम्, अदरिद्रासिष्टाम्। अदरिद्रिषुः, अदरिद्रासिषुः। भावे, अदरिद्रि, अदरिद्रायि। सन् दिदरिद्रिषति, दिदरिद्रासति। णिच् दरिद्रयति। क्त दरिद्रितः। अच् दरिद्रः। दरिद्रायकः। दरिद्राणम्। तृच् दरिद्रिता, कौ ३१६। दरिद्रणीयम्। क्वसु ददरिद्वान्, ददरिद्रावानित्येके।

दल्—भ्वा, प। १ विशरणम्।

भेदः। विदारणम्। २विदीर्णीभावः। विकसनम्। लट् दलति, दलति सा हृदि विरहभरेण, गीतगो ७, ३५। लिट् ददाल। देलतुः। ददाल भूः, भ १४, २०। लुट् दलिता। लृट् दलिष्यति। लुङ् अदालीत्। अदालिष्टाम्। अदा-

लिषुः शिलादेहे, भ १५, ३८। णिच् दलयति (दालयति, वो)। दलयन्नष्टौ कुलच्माभृतः, महाना १, २३। दल्, चु, प। भेदः। दालयति। मुष्टिनादालयत्तस्य मूर्द्धानम् भ १७, ७८। दलितः। दलनम्। दालः। कुदालः। दाड़िमम्। दलच्चण्डीशचाप—, महाना १, ३३। वि—भेदः। विकाशः। त्वदिषुभिर्व्यदलिष्यद् वक्षोऽपि, नै ४, ८८। दरविदलितमल्ली, गीतगो १, ३६। शेफालिकां विदलितामवलोक्य तन्वी।

दंश्—दन्श्, भ्वा, प। दंशनम्।

दन्तव्यापारः। लट् दशति, पा ३, ४, २५। पदा स्पृशन्तं दशति द्विजिह्वः, र १४, ४। दशति विम्बफलं शुकश्रावकः, दुर्गा। विम्बाधरं दशसि चेद् भ्रमर! प्रियायाः, शकु ६, १४५। लिट् ददंश। ददंशतुः। ददशतुः, वो। ददंशिथ, ददंष्ठ। लुट् दंष्टा। लृट् दङ्क्ष्यति। आशिषि, दश्यात्। लुङ् अदाङ्क्षीत्। अदाङ्ष्टाम्। अदाङ्क्षुः, अदाङ्क्षुरदशन्, भ १५, ४। १७, १३। कर्मणि, दश्यते। अदंशि। सन् दिदङ्क्षति। यङ् (भावगर्हायाम्) दन्दश्यते, पा ७, ४, ८६। दंदशीति। दन्दष्टि। दंदंष्टि, दंदंशीति वो। णिच् दंशयति। अददंशत्। दंशि, चु, आ। १दंशनम्। २दर्शनम्। दंशयते, दंशति। आकुस्मीयमात्मनेपदं णिच्सन्नियोगेनैवेति व्याख्यातारः। नलोपस्तु भ्वादेरेव, कौ १७६। नाहिदंशयते कञ्चिदियया गरुड़ाख्यया, कवि २०५। भट्टमल्लमते दंशनमिह सन्नाहः तेन अदंशयन्नरहितशौर्य्यदंशनास्तनूः, मा १७, २१। केचित् तु चुरादिष्वभयपदीषु पठन्ति (टीका)। दंशि (कृप) चु, प। दौंशिः। दंशयति। दष्टः। दंशनम्।

दंस्—दंसु (तसु) दि, प। १क्षयः। वस्तुहानिः। २उत्क्षेपणम्, वो। दंस्यति। ददांस। दंसिता। अदंसत्। अदांसीत्, वो। दंस् (दंस्)।

दंस्—दंसि, चु, प, वो। दौंसिः।

दंसि, चु, आ। १दर्शनम्। २दंशनम्, सन्नाहः, दन्तव्यापारश्च। दंसयति। °ते। दंसति। दंस—इति कश्चिद् दासयते।

दह्—भ्वा, प। भस्मीकरणम्।

दाहः। सन्तापः। लट् दहति, मदनानलो दहति मम मानसम्, गीतगो १०, २। लिट् ददाह। देहतुः। देहिथ, ददग्ध। लुट् दग्धा। लृट् धक्ष्यति। क्रुध्यन् कुलं धक्ष्यति विप्रवह्निः, भ १, २३। लुङ् अधाक्षीत्। अदाग्धाम्। अधाक्षुः। दृष्टाधाक्षीदिव द्विषः, भ १५, २२! कर्मणि, दह्यते। अदाहि। शरीरं मे दह्यते मदनाग्निना, महाना ४, २८। शोकेन देहे जनता, भ ३, ११। सन् दिधक्षति। यङ् (भावगर्हायाम्) दन्दह्यते, पा ७, ४, ८६। दन्दग्धि। यत्तु दन्दह्यते लोकम्, मा २, ११। णिच् दाहयति। अदीदहत्। दग्ध्वा। दग्धः। दाहः। दहनम्। निर्—दाहः। प्रणाशः। सन्तापः। एनो निर्दहन्त्याशु तपसा, मनु ११, २४१।

दंह्—दंहि, चु, प, वो। १दाहः। २दौंहिः। दंहयति।

दा—दाण्, भ्वा, प, डुदाञ्, जु, उ।

दानम्। वितरणम्। लट् यच्छति, पा ७, ३, ७८। ददाति। दत्तः। ददति। दत्ते। ददते ब्राह्मणास्तस्मै आ-

शिषः, कवि १७५ । लिङ् दद्यात् । ददीत । हि, देहि, पा ६, ४, ११९ । स्व, दत्स्व । वाचं देहि, भ ६, १८ । भयानि दत्त सीतायै, भ ८, ८६ । लङ् अददात् । अदत्ताम् । अददुः । अदत्त । रत्नानि चाददुर्गाश्च, भ १७, ५३ । लिट् ददौ । ददिथ, ददाथ । ददे । अस्त्रजातं तस्मै ददौ, भ २, २२ । लुट् दाता । लृट् दास्यति । °ते । आशिषि, देयात् । दासीष्ट । लुङ् अदात् । अदाताम् । अदुः । अदित । अदिषाताम् । अदिषत, पा १, २, १७ । स्कन्धस्य विश्रान्तिमदाम्, नै ३, १९ । कर्मणि, दीयते । ददे । सुता ददे तस्य सुताय मैथिली, भ १ । दायिता । दायिष्यते । दायिषीष्ट । अदायि । अदायिषत । सन् दित्सति । °ते, पा ७, ४, ५४ । यङ् देदीयते, पा ६, ४, ६६ । दादेति । दादाति । णिच् दापयति । अदीदपत् । वणिजो दापयेत् करान्, मनु ७,१२७ । तौ नृपेण दाप्यौ दमम्, मनु ८,५९ । दत्त्वा । °दाय । दत्तः । दत्तिः । प्रदत्तम् । प्रत्तम् । दानम् । देयः । (डु) दत्रिमः । ददः । दारुः । दाता । दायः । आ—आदानम् । ग्रहणम् । स्वीकरणम् । आदत्ते, पा १,३,२० । आदत्तः । आत्तः, पा ७,४,४७ । भ ६,८३ । नीलस्त्वादित पर्वतम्, भ १५,४३ । राजान्नं तेज आदत्ते (नाशयति), मनु ४,२, १८ । आयच्छते, पा १,३,२८ । व्या—व्यादानम् । प्रसारणम् । मुखं व्याददाति । नदी कूलं व्याददाति, पा १, ३,२० । प्र—प्रदानम् । सम्प्रदानम् । प्रकृष्टदानम् । कन्या प्रदीयते, मनु ८, २०४ । सम्—सम्प्रदानम् । समन्तत्यागः । आयच्छते, °ति कूपाद्रज्जुम्, पा १, ३, २० । सम्—दास्या मालां संयच्छते कामुकः (दास्यै ददाति), पा १, ३, ५५ ।

दा—दाप्, अदा, प । छेदनम् ।

दाति, दाति दारिद्र्यमर्थिनाम्, कवि २४ । दायात् । अदासीत् । कर्मणि, दायते । दिदासति । दादायते । क्त, दातम्, दितम् । दितिः । दात्रम् ।

दान्—भ्वा, उ । १आर्जवम् ।

ऋजुभावः । ऋजूकरणम् । २खण्डनम् । नाशनम् । आर्जवे सन् इति भट्टोजिदीक्षितवोपदेवौ । स्वार्थे इति क्रमदीश्वरपद्मनाभौ । दीदांसति, °ते दस्युम् पा ३,१,६ । परार्थे तु दानयति, दानति, °ते, वो । तत्र तिवादयो न स्युरिति रमानाथः ।

दाय्—भ्वा, आ, वो । दानम् ।

दायते, दीनानां दायते नित्यम्, कवि ८४ । (ऋ) अददायत् ।

दाश्—दास्—दाशृ, दासृ, भ्वा, उ ।

दानम् । दाशति । °ते । दासति । °ते । दाशृ, चु, आ, वो । दानम् । दाशयते । दाशान् सुपुत्राशिषम्, र ।

दिन्व्—दिवि (जिवि) भ्वा, प ।

प्रीणनम् । दिन्वति । दिदिन्व । दिन्विता ।

दिप्—दिपृ (तिपृ) भ्वा, आ ।

क्षरणम् ।

दिम्प्—चु, उ, वो । सङ्घातः । (डप) ।

दिम्भ्—दिभि, चु, प, वो । प्रेरणम् ।

चु, आ, वो । सङ्घातः । दिम्भयति । °ते ।

दिव्—दिवु, दि, प । १क्रीड़ा ।

२विजयेच्छा । ३व्यवहारः । क्रयविक्रयणादिः । ४ दीप्तिः । ५ स्तुतिः ।

हर्षः। ७मदः। मत्तीभावः। ८स्वप्नः। निद्रा। ९ कान्तिः। इच्छा। १०गतिः। लट् दीव्यति, पा ३, १, ६९। ८, २, ७७। अक्षैः अक्षान् वा दीव्यति, पा १, ४, ४३। शतस्य दीव्यति, पा २,३,५८। स्त्रैरैन दीव्यन्ति विषयान् भ ८, ७८। अधिलङ्कं स्त्रियो दीव्य, भ ५, ३८। अदीव्यद्रौद्रं शस्त्रम्, भ १७, ८७। प्राणिद्यूतेश्च दीव्यति, कवि ८४। लिट् दिदेव। दिदिवतुः। लुट् देविता। लृट् देविष्यति। आशिषि, दीव्यात्। लुङ् अदेवीत्। अदेविष्टाम्। अदेविषुः। अदेवीद् बन्धु भोगानाम्, भ ८, १२२। सन् दिदेविषति, दुद्यूषति, पा ७,२,४९। ६,४, १९। मृगः प्राणैर्दिदेविषन्, भ ५,५७। तेनादुद्यूषयद्ग्रामम्, भ ५, ५९। यङ् देदीव्यते। देदिवीति, देदेति, देदीति, वो। णिच् देवयति। अदीदिवत्। (ङ) देवित्वा, द्यूत्वा, पा ७,२,५६। ०दीव्य। द्यूतम्। द्यूनः। आद्यूनः। परिद्यूनः, पा ८,२,४९। देवनम्। अक्षा द्यूताः। मनसा देवी। अक्षा दीव्यन्ते क्षात्रेण न त्वक्षैर्दीव्यते, दुर्गा। प्र—विक्रयः। प्रादेवीदात्मसम्पदम्, भ ८,११२। प्रादेवीत् परिघं परिघेण, भ ९,९। शतस्य शतं वा प्रदीव्यति, पा २,३,५९। दिव्, च्, प। १मर्दनम्। २अर्दनम्। पीड़नम्, वो। ३याचनम्। ४गतिः। देवयति। देवति। दिव्, च् आ। परिकूजनम्। परिदेवयते कश्चित्तस्य राष्ट्रेन दुःखितः, कवि ६०।

दिश्—तु, उ। अतिसर्जनम्। दानम्। आज्ञा। आदेशः। निर्देशः। कथनम्। लट् दिशति। ०ते। दिशेत्युक्तो दिशेन्न यः साक्षिणः, मनु ८,५७। लिट दिदेश। दिदिशे। दिदेश यानाय निदेशकारिणः, नै १,५६। दिदेश कौत्साय समस्तमेव, र ५,१०। लुट् देष्टा। लृट् देक्ष्यति। ०ते। आशिषि, दिश्यात्। दिक्षीष्ट। लुङ् अदिक्षत्। अदिक्षत। सन्—दिदिक्षति। ०ते। यङ् देदिश्यते। देदेष्टि। णिच् देशयति। अदीदिशत्। दिष्टः। दिष्टिः। दिष्ट्वा। ०दिश्य। देष्टुम्। दिक्। देशः। अति—अतिदेशः। आरोपः। अप—व्यप—अपदेशः। रोगशान्तिमपदिश्य, र १९,५४। व्याजः। आ—आदेशः। अनुमतिः। आज्ञा। आदिक्षत् तस्य सिंहासनम्। आदिक्षदस्याभिगमं वनाय, भ ३, ९। अग्निशरणस्य मार्गमादेशय, शकु ५,४४। प्रत्या—प्रत्यादेशः। निराकरणम्। निवारणम्। स्वप्नेऽहं प्रत्यादिष्टा। प्रत्यादिदेशैनमभाषमाणा, र ६,२५। प्रजानां प्रत्यादिदेशाविनयं विनेता, र ६, ३९। तव मन्त्रैः प्रत्यादिश्यन्त इव मे शराः, र १,६२। उद्—उद्देशः। अभिप्रायः। तमुद्दिश्य चिक्षेप लगुड़ेन शृगालो हतः, हितो। उप—उपदेशः। हितोक्तिः। निर्देशः। कौर्त्तनम्। विद्वानेवोपदेष्टव्यः। वानरानुपदिश्य, हितो। ब्राह्मणस्य कर्मेदमुपदिष्टम्, मनु २, १९०। नि—निदेशः। शासनम्। निर्—निर्देशः। विधानम्। कथनम्। आदेशः। पौठमासन्नं निरदिक्षच्च काञ्चनम्, भ १५, ८। प्र—दानम्। निर्देशः। उपदेशः। प्रदिशसि जलं चातकेभ्यः, मेघ ११७। प्रदिश्यारात् सुतोच्चैर्मुनिकेतनम्, भ ४, ५। दाहं प्रादिदेश वानरस्य, भ ९,१३७। सम्—सन्देशः। दानम्। भ्रात्रे राज्यं सन्दिश्य, भ ६,१४१। अभिदूतं काञ्चिदिति सन्दिदिशे, मा ९, ५६।

दिह्—अदा, उ। १उपचयः।

दृद्धिः। दृद्धिकरणम्। २ लेपनम्, वो। लट् देग्धि। दिग्धः। दिहन्ति। धेच्चि। दिग्धे। हि, दिग्धि। स्व, धिच्च। लिङ् दिच्चात्। दिहीत। लङ् अधेक्। अदिग्धाम्। अदिहन्। अदिग्ध। अदिहाताम्। अदिहंश्चन्दनैः शुभैः, भ १७, ५४। लिट् दिदेह। दिदिहे। लुट् देग्धा। लृट् धेक्ष्यति। ०ते। लुङ् अधिक्षत्। अदिग्ध, अधिक्षत। सन् दिधिक्षति। ०ते। यङ् देदिह्यते। देदेग्धि। णिच् देहयति। अदीदिहत्। दिग्धः। अस्रदिग्धः, र १६,१५। सचन्दनोशीरसुगन्धदिग्धः, भ। देग्धुम्। देहः। सम्—सन्देहः। संग्रयः। सन्दिग्धो विजयो युधि, हितो।

दी—दीङ्, दि, आ। क्षयः।

दीनभावः। लट् दीयते। दीयन्ते प्रत्यहं यस्य दुरितानि, कवि ८४। लिट् दिदीये। दिदीयाते, पा ६, ४, ६२। लुट् दाता। लृट् दास्यते। लुङ् अदास्त, पा ६,१,५०। सन् दिदीषते, पा १,२,९। दिदासते, सङ्क्षिप्तसारः। यङ् देदीयते। देदयीति, देदेति। णिच् दाययति। दीत्वा। दाय। दीनः। उपदानम्।

दीक्ष्—भ्वा, आ। १ मुण्डनम्।

२यजनम्। ३उपनयनम्। ४नियमग्रहणम्। व्रतानुष्ठानम्। ५व्रतादिष्टविध्यनुष्ठानम्। अभिषेकः। दीक्षते। दिदीक्षे। दीक्षिता। अदीक्षिष्ट। दीक्षस्व तुरगाध्वरे, भ २०,१४। दीक्षितः। दीक्षणीयः। दीक्षा।

दीधी—दीधीङ्, अदा, आ। छान्दसः।

१दीप्तिः। २क्रीड़नम्। दीधीते। दीध्याते। दीध्यते। ऐप् दीध्यै, पा १, १, ६। दीध्याञ्चक्रे। दीधिता, पा ७, ४, ५२। दीधिष्यते। आदीध्यनम्। आदीध्यकः। ल्यप् आदीध्य। दीधितिः। दीधीवेव्योर्ङित्वेऽपि छान्दसत्वात् व्यत्ययेन परस्मैपदम्। दीध्यत्, वेव्यत्, कौ १८३। अदीधयुः, दुर्गा।

दीप्—दीपी, दि, आ। दीप्तिः।

ज्वलनम्। शोभा। उज्ज्वलीभावः। लट् दीप्यते, तारापतिर्दीप्यते, अनर्घ १४८। लिट् दिदीपे, पुनर्दिदीपे मदुर्दिनश्रीः, र ५, ४७। लुट् दीपिता। लृट् दीपिष्यते। लुङ् अदीपि। अदीपिष्ट, पा ३,१,६१। अदीपिषाताम्। अदीपिषत। कुशोऽदीपि रघुव्याघ्रः, भ ६,३२। देवानवेक्ष्यदीपिष्ट, भ १५, ८८। सन् दिदीपिषते। यङ् देदीप्यते। देदीप्ति। णिच् दीपयति। अदीदिपत्, अदिदीपत्, पा ७,४,३। लङ्कामग्निनादीदिपन्, भ १५, ११०। वृन्दावनान्तरमदीपयदिन्दुः, गीतगो ७,१। (ई) दीप्तः। दीप्तिः। दीपनम्। दीपिता। दीप्रः। प्रदीपः। आ—ज्वलनम्। मङ्गलालेपनम्। आदीप्त क्षयानुः, भ २, ३। उद्—उद्दीपनम्। प्रकाशनम्। उज्ज्वलनम्। उत्तेजनम्। उप, प्र—ज्वलनम्। दाहः। सम्—सन्दीपनम्। उद्दीपनम्। मालिखत्व इवाग्नेः सम्यग्दीप्तेऽनखे, दीपिका।

दु—स्वा, प। गतिः। टु दु, स्वा, प।

१उपतापः। उपतप्तीभावः। २उपतप्तीकरणम्। परितापः। पीड़नम्। लट् दवति। दुनोति, सुखं तव दुनोति माम्, र ८, ५६। मन्मथेन दुनोमि, गीतगो ३,९। कर्णिकारं दुनोति निर्गन्धतया स्व चेतः, कु ३, २८। सखीसंवासो दुनोति मनः, गीतगो ७,४०।

लङ् अदुनोत्। अदुनुताम्। अदुन्वन्। प्रणयिनीः सोऽदुनोत्, र १९, २१। सारथिमदुनोत्, भ १७, ९९। लिट् दुदाव। दुदुवतुः। दुदविथ, दुदोथ। दुदुविव। अरीन् दुदाव क्रतान्तवत्, भ १४, ८५। लुट् दोता। दविता, वो। लृट् दोष्यति। आशिषि, दूयात्। लुङ् अदौषीत्। अदावीत्, वो। अदोष्टाम्। अदौषुः। सन् दुदूषति। यङ् दोदूयते। दोदोति। णिच् दावयति। अदूदवत्। क्ष, श्वा, दूनः। श्वा, दुतः। श्वदुतया दुतयेति, माघः ६,५९। की २४७। (टु) दवथुः। दावः। दवः।

दुःख—(सुख) अदन्तः। चु, प।

दुःखकरणम्। दुःखयति। दुःखापयति, वो। दुष्ख, दुष्खयतीत्यपि।

दुर्व्—दुर्वी (उर्वी) श्वा, प। बधः।

दूर्वति। दुदूर्व। दूर्विता।

दुल्—चु, प। उत्क्षेपः।

दोलयति, दोलयत्यरिवर्गस्य जीविताशाञ्च यः सदा, कवि २१०। दोलयति धूलिम्, दुर्गा।

दुष्—दि, प। वैक्लव्यम्।

अशुद्धीभावः। दोषः। लट् दुष्यति, स्वादन् मांसं न दुष्यति, मनु ५,३२। दुदोष। दुदुषतुः। दोष्टा। दोक्ष्यति। अदुषत्। अदुक्षत्, वो। दुदुक्षति। दोदुष्यते। दोदोष्टि। णिच् दूषयति। (चित्तदूषणे) दूषयति दोषयति चित्तं कामः, पा ६,४,९०,९१। तस्याभिषेकसम्भारं दूषयामास पार्थिवाम्बुभिः, र १२,४। योऽकामां दूषयेत् कन्याम्, मनु ८,३,६५। दुष्टः। दूषणम्। दोषः। अभि—अभिदूषितः। शिवदूत्यभिदूषिताः पेतुः, चण्डी। प्र—व्यभिचारः। अधर्माभिभवात्। प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः, गौ १, ४०।

दुह्—दुहिर् (उहिर्) श्वा, प।

अर्दनम्। दोहति। दोहिता। अदुहत्। अदोहीत्।

दुह्—अदा, उ। प्रपूरणम्। दोहनम्।

व्यक्तीकरणम्। लट् दोग्धि। दुग्धः। दुहन्ति। धोक्षि। दुग्धे। दुहाते। दुहते। धुक्षे। धुग्ध्वे। कामान् दुग्धे, उत्तर १८९। पयो गां दुहन्ति, भ १२,७३। पयो दोग्धि पाषाणम्, भ ८,८२। प्राणानात्मानम्, भ ६,९। लोट् दोग्धु। दुग्धि। दोहानि। धुक्ष्व। धुग्ध्वम्। दोहै। लिङ् दुह्यात्। दुहीत। लङ् अधोक्। अदुग्ध। लिट् दुदोह। दुदुहे। दुदोह गां स यज्ञाय, र १,२६। रत्नानि धरित्री दुदुहुः, कु १,२। लुट् दोग्धा। लृट् धोक्ष्यति। ०ते। लुङ् अधुक्षत्। अदुग्ध, अधुक्षत। त—थास्—ध्वम्—वहिषु लङ्वदपि। अधुक्षाताम्। अधुक्षन्त। कर्मणि, दुह्यते। अदोहि। कर्मकर्तरि, गौः पयो दुग्धे, पा ३,१,८९। स्वयं प्रदुग्धे वसूनि मेदिनी, भा १,१८। अदोहीव विषादोऽस्य (स्वयं स्रवित इव), भ ६,३४। सन् दुधुक्षति। ०ते। दोदुह्यते। दोदोग्धि। णिच् दोहयति। अदूदुहत्। दुग्ध्वा। दुग्धः। दोहनम्। दोहः। दोग्धव्यः। कामदुघा।

दू—दूङ्, दि, आ। उपतापः।

खेदः। उपतप्तीभावः। उपतप्तीकरणम्। दूयते, दुर्जनोक्त्या न दूयते, कवि २५६। कथं पश्यन् न दूयसे, र १,७१। दृष्ट्वा शून्यानि दूये सरयूजलानि, र

१६, २१ । १, ७१ । दुदुवे । दविता । अदविष्ट । क्त, दूनः, पा ८, २, ४५ ।

दृ—दृङ् तु, आ । आदरः ।

प्रीत्या सम्भ्रमः । प्रायेणायमाङ्पूर्वः । आद्रियते, पा ७,४,२८ । यः सदाद्रियते धर्मम्, कवि ७३ । ददे । दद्रिषे । दर्त्ता । दरिष्यते । दृषीष्ट । अदृत । अदृषाताम् । दिदरिषते, पा ७, २, ७५ । देद्रीयते । दर्दर्त्ति । दारयति । अदीदरत् । आदृतः । आदरः । आदृत्यस्तेन, भ ६,५५ ।

"दृ, स्वा, प । हननम् । क्रया, चु, प । भयम् । दृणोति । दृणाति । दारयति ।" भये घटादिरिति कश्चित् । दरयति ।

दृप्—दि, प । १हर्षः । २मोहनम् ।

गर्वः । दर्पः । दृप्यति । ददर्प । दृप्तुः । ददर्पिथ, दद्रप्थ, ददर्प्थ । एवं विजिग्ये तां सेनां प्रहस्योऽति ददर्प च, भ १४,१०६ । दर्पिता, दर्प्ता, द्रप्ता । दर्पिष्यति, द्रप्स्यति, दर्प्स्यति । अदर्पीत्, अद्राप्सीत्, अदार्प्सीत्, अदृपत्, की १०४ । दिदर्पिषति, दिदृप्सति । दरीदृप्यते । दर्दर्प्ति । दर्पयति । अदीदृपत् । कं क्रीर्न दर्पयति, क्षिती । दर्पित्वा, दृप्त्वा । दृप्तः । दर्पः । दर्पकः । दृप्, दृफ्, दृम्फ्, तु, प । उत्क्लेशः । पीड़नम् । दृपति । दृफति । दृम्फति । ददर्प । दर्पिता । अदर्पीत् । दृप् (चृप्) चु, प । सन्दीपनम् । उद्दीपनम् । दर्पयति । दर्पति ।

दृभ्—दृभी, तु, प । ग्रन्थनम् ।

दृभति । ददर्भ । दर्भिता । अदर्भीत् । दृभ्, चु, प । सन्दर्भः । रचना । दर्भयति । दर्भति, वो । दृभी, चु, प । भयम् । दर्भयति । दर्भति । (अ) दृब्धः । सन्दर्भः । दर्भः ।

दृम्प्—(डप्) चु, उ, वो । सङ्घातः ।

दृश्—दृशिर्, भ्वा, प । प्रेक्षणम् ।

दर्शनम् । ज्ञानम् । साक्षात्कारः । लट् पश्यति, पा ७,३,७८ । आश्चर्यमिव पश्यामि स्वप्नान् पश्यामि दारुणान्, रामा । अहं पश्यामि तपसा क्षिप्रं द्रक्ष्यसि नैषधम्, भारत । पश्यामि त्वां (जानामि) । सोऽपश्यत् प्रणिधानेन सन्ततेः स्वप्नकारणम्, र १, ७५ । अर्थान् धर्मेण पश्यति (निरूपयति), मनु ८, १७५ । एवं साङ्ख्यं योगञ्च यः पश्यति स पश्यति, गी ५, ५ । लिट् ददर्श । दृदृशतुः । ददर्शिथ, ददृष्ठ, पा ७,२,६५ । दृदृक्षति । लुट् द्रष्टा, पा ६,१,५८ । लृट् द्रक्ष्यति । आशिषि, दृक्षात् । लुङ् अद्राक्षीत्, पा ३,१,४७ । अदर्शत्, पा ७,४,१६ । अद्राष्टाम्, अदर्शताम् । अद्राक्षुः, अदर्शन् । मा दर्शतान्यं भरतञ्च मत्तः, भ ३,१५ । कर्मणि, दृश्यते । अदृश्यत स्वावरराजकन्या, कु, ३, ५२ । दृष्ट्वा, प्रतीयूषा पूर्वदृष्टे जनेन, भ ३, १८ । दर्शिता, द्रष्टा । दर्शितावस्त्वया ताः, भ २२, ४, १० । दर्शिष्यते, द्रक्ष्यते । त्वयाच्च कृतार्थो द्रक्ष्यते पतिः, भ ५, ५८ । दर्शिषीष्ट, दृक्षीष्ट । रक्षोभिर्दर्शिषीष्ठास्त्वं दृक्षीरन् भवता च ते, भ १८,२८ । अदर्शि । अदर्शिषाताम् । अदृक्षाताम् । तेन येऽदर्शिषत शत्रवः, भ १५,७२ । अदृक्षतास्यांसि नखोत्पलानि, भ २, १० । सन् दिदृक्षते, पा १,३,५७ । यङ् दरीदृश्यते । दरीदर्ष्टि । णिच् दर्शयति । °ते । अदीदृशत्, अददर्शत्, पा ७, ४, ७ । वैर्यं का न ददर्शयेत्, भ १५, १२ ।

वनितां दर्शयिताहे, नै ५,७१। दृष्ट्वा। °दृश्य। दृष्टः। दृष्टिः। दर्शनम्। द्रष्टुम्। द्रष्टा। द्रष्टव्यम्। दृश्यम्। दर्शनीयम्। पारदृश्वा। सदृक्। अनु—आलोचना। आलोकनम्। यथा भूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति, गी १३, ३०। अभि—लक्ष्यीकरणम्। उद्—उत्प्रेक्षणम्। अर्व् दर्शनम्। उत्पश्यतः सिंहनिपातमुग्रम्, र २, ६०। तावुदपश्यदुत्थितौ जनः, मा १,१५। उप—प्रदर्शनम्। नवे राज्ञि सदसद्भेदोपदर्शितम्, र ४,८। नि—निदर्शनम्। परं नृपं निदर्शयामास तत्रैव, र ६, ३१। परि—परिदर्शनम्। प्र—प्रदर्शनम्। सम्—सन्दर्शनम्। सम्पश्यते, कौ २४६।

दृह्—दृंह्—दृढि, भ्वा, प। दृढिः। दर्हति। दृंहति। ज्ञा, दृढ़, पा ७, २, २०।

दॄ—भ्वा, प, वो। भयम्।

दॄ, दि, प। विदारः। दॄ, क्रया, प। १विदारणम्। २भयम्, वो। लट् दरति। दीर्यते। दृणाति, दृणाति च रिपून् रणे। दरन्ति दिगधीशाश्च यस्य दिग्विजयोद्यमे, कवि ७३। हृदयं दीर्य्यतीव मे, भारत। न दीर्य्ये सहस्रधाऽहम्, उत्तर २,२३। न विदीर्य्येऽहम्, कु ४,५। इत्यादावात्मनेपदमपि। लिट् ददार। ददरतुः, ददृतुः, पा ७, ४, ११, १२। ब्रह्माख्रेण ददाराद्रिम्, भारत। लुट् दरिता, दरीता। लृट् दरिष्यति, दरीष्यति। लुङ् अदारीत्। अदारिष्टाम्। अदारिषुः। सन् दिदरिषति, दिदरीषति, दिदीर्षति। यङ् देदीर्य्यते, दादर्त्ति। णिच् दारयति। अददरत्, मुष्टिनाददरत्तस्य मूर्द्धानम्, भ १२, ८१। भये घटादिः। दरयति। भयादन्यत्र दारयति। क्रयादेरयं मिश्चार्थोऽनुवादः। धात्वन्तरमेवेदमिति मते तु दरति, कौ ८३। दीर्त्वा। °दीर्य्य। दीर्णः। दीर्णिः। दरणम्। दरः। दारः। दारा। अव—अवदारणम्। खननम्। उर्वीमवदारयद्भिः, र १३,३। द्रुतावदीर्णे इत्यमरः। वि—विदारः। तस्य हृदयं विदद्रे, र १४, ३३। स्तनं विददार काकः, अनर्घ १२२।

दे—देङ्, भ्वा, आ। पालनम्।

रक्षणम्। दयते। दिग्ये। दिग्याते, पा ७,४,९। दाता। दास्यते। दासीष्ट। अदित। अदिषाताम्। अदिषत। अदिथाः, पा १,२,१७। दित्सते, पा ७, ४, ५४। देदीयते। दादेति। णिच् दापयति। कर्मणि, दीयते। दत्तः।

देप् (तिप्, तेप्)।

देव्—देव् (तेव्) भ्वा, आ।

१देवनम्। क्रीडनम्। २रोदनमिति भट्टमल्लः। ३दीप्तिः। देवते, देवते कन्दुकैर्नित्यम्, कवि ६०। अदेवत न्यायकैः, भ १७,१०२। दिदेवे। देविता। अदेविष्ट। अदेविषाताम्। अदेविष्ट ब्रह्मास्त्रम् (द्योततेस्म), भ १५, ९४। देवयति। अदिदेवत्। परि—परिदेवनम्। विलापः। भ्रातुः पर्य्यदेविष्ट सा पुरः, भ ४, ३४। १४,४८। आत्मनः परिदेवध्वे, भ ७,८६। आदेवकः।

दै—दैप्, भ्वा, प। शोधनम्।

शुद्धीकरणम्। दायति। योऽवदायति कीर्त्तिञ्च, कवि २४। ददौ। दाता। दास्यति। दायात्। अदासीत्। कर्मणि, दायते। दिदासति। दादायते। दादा-

ति। दापयति। अदीदपत्। अव—शुक्लीभावः। अवदातः। श्वित्यते श्वेतते त्रीणि स्युः शुक्लत्वेऽवदायति, भट्टमल्लः।

दो—दि, प। छेदनम्।

प्रणिद्यति। ददौ। दाता। देयात्। अदात्। दीयते। दित्सति। दित्वा। ०दाय। दितः। दितिः। दानम्। शिरोऽवद्यति विद्विषाम्, कवि २४।

द्यु—अदा, प। अभिगमनम्।

द्यौति। दुद्याव। द्योता। अद्यौषीत्।

द्युत्—भ्वा, आ। दीप्तिः। प्रकाशः।

द्योतते। दिद्युते, पा ७, ४, ६७। दिद्युते यथा रविः, भ १४, १०४। द्योतिता। द्योतिष्यते। द्योतिषीष्ट। अद्युतत्। अद्योतिष्ट, पा १, ३, ६१। दिद्युतिषते, दिद्योतिषते, पा १, २, २६। ७, ४, ६७। देद्युत्यते। देद्योत्ति। द्योतयति। अदिद्युतत्। गोपनीयं कमप्यर्थं द्योतयित्वा कथञ्चन, दर्पणः। स्नेहो मयि द्योत्यते, वीर २४। द्युतित्वा, द्योतित्वा। द्युतितः। द्योतनम्। द्योतः। द्युतिः। उद्—औज्ज्वल्यम्। तद्वंशोः कुलमुद्योतयामासुः, र १०,८०। वि—शोभा। शस्त्रैरद्यो विदिद्युते, भ ९,३६। विद्योतस्व स्त्रियः प्रति, भ ८,८८। व्यद्योतिष्ट सभावेद्यामसौ नरशिखित्रयौ, मा २,३।

द्यै—भ्वा, प। न्यक्करणम्।

द्यायति। दद्यौ। द्याता। अद्यासीत्।

द्रम्—भ्वा, प। गतिः।

द्रमति। ददाम। वानरा ददमुः, भ १४, ७०। द्रमिता। अद्रमीत्। दंद्रमणः।

द्रा—अदा, प। १ पलायनम्।

२ निद्रा। अस्मिन्नर्थे निपूर्वः एवेति रमानाथः। द्राति। ददौ। ददतुः। द्राता। द्रायात्, द्रेयात्। अद्रासीत्। अद्रासिष्टाम्। दिद्रासति। दाद्रायते। दाद्राति। दाद्रेति। द्रापयति। अदिद्रपत्। क्त, द्राणः। नि—निद्रा। तदा निदद्रावुपपल्वलं खगः, नै: १, १२१। निद्रान्, भ १०,७४। निद्रालुः।

द्राख्—द्राखृ (ओखृ) भ्वा, प।

१शोषणम्। २भूषणम्। ३सामर्थ्यम्। ४ निवारणम्। द्राखति, द्राखति चीणतापन्नं वपुः कवि १०९। ध्राखृ, ध्राखति। राखृ, राखति। लाखृ, लाखति।

द्राघ्—द्राघृ, भ्वा, आ। १सामर्थ्यम्।

२आयामः, वो। दीर्घीकरणम्। ३ श्रमः। द्राघते, द्राघते वपुरत्यर्थं यद्वियोगे मृगीदृशाम् कवि १०९। दद्राघे। द्राघिता। अद्राघिष्ट। द्राघयन्ति मे श्लोकं स्मर्यमाणा गुणास्तव, भ १८,३३। ध्राघृ, ध्राघते। राघृ, राघते। लाघृ, लाघते। उल्लाघः, पा ८, २, ५५।

द्राङ्—द्राञ्चि, भ्वा, प।

१घोरशब्दः। २आकाङ्क्षा। द्राङ्कति। ध्राञ्चि, ध्राङ्कति। ध्वाञ्चि, ध्वाङ्कति। ध्माञ्चि, ध्माङ्कति, न ध्माङ्कति जनः कश्चित्, कवि १९४। ध्माङ्कः।

द्राड्—द्राडृ, भ्वा, आ। १भेदः।

२बधः, वो। द्राडते। ध्राडृ, ध्राडते।

द्राह्—द्राहृ, भ्वा, आ। १जागरणम्।

२निःक्षेपः। द्राहते, द्राहते च निभागमे वपुः, कवि १०९। (ऋ) अदद्राहत्।

द्रु-(दु) भ्वा, प। १गतिः।

२द्रवीभावः, वो। ३पलायनम्। द्रवति, द्रवति चन्द्रकान्तः, उत्तर। नद्यः समुद्रं द्रवन्ति, गौ ११,२८। दुद्राव। दुद्रुवतुः। दुद्रोथ। दुद्रुव। भयाद् दुद्रुवुस्ते, भारत। द्रोता। द्रोष्यति। द्रूयात्। अदुद्रुवत्, पा ३,१,४८। रज्ज्वाद्यानदुद्रुवत्, भ ८,५८। दुद्रूषति। दोद्रूयते। दोद्रोति। द्रावयति। अदुद्रवत्, अदिद्रवत्। दिद्रावयिषति, दुद्रावयिषति, पा ७,४,८१। द्रुतः। द्रुतिः। द्रुवः। द्रावः। गभस्तिधाराभिरिव द्रुतानि भानोस्तेजांसि, भ २,११। अनु—अनुद्रवणम् उप—उपद्रुवः। प्र, वि—पलायनम्। भीताः प्रादुद्रवन्, भ १४,२५।

द्रुड्—भ्वा, तु, प, वो। मज्जनम्।

द्रोड़ति। द्रोड़िता। द्रुड़ति। द्रुड़िता।

द्रुण्—तु, प। १हिंसा। २गतिः।

२ कौटिल्यम्। द्रुणति। द्रोणिता। द्रुणति प्रकृतो यस्य दिक्षु खेषु रिपुव्रजः, कवि २४०। द्रोणः। द्रोणी। द्रुणः।

द्रुह्—दि, प। जिघांसा।

अपकारः। लट् द्रुह्यति, देवदत्ताय द्रुह्यति, पा १, ४, ३७। लिट् दुद्रोह। दुद्रुहतुः। दुद्रोग्ध। दुद्रोढ़। दुद्रोहिथ। लुट् द्रोग्धा, द्रोढा, द्राहिता, पा ८, २,३३। लट् ध्रोक्ष्यति, द्रोहिष्यति। लङ् अदुद्रुहत्, षुषादिः। सन् दुद्रोहिषति, दुद्रुहिषति, दुध्रुक्षति। यङ् दोद्रुह्यते। दोद्रोग्धि, दोद्रोढि। णिच् द्रोहयति। अदुद्रुहत्। द्रोहित्वा, द्रुहित्वा। दुग्धः। दूढ़ः। द्रोहः। द्रोहः। द्रोही। द्रोग्धव्यम्। द्रोढ़व्यम्। द्रोहितव्यम्। अभि—निन्दा। अपकारः। देवदत्तमभिद्रुह्यति, पा १, ४, ३८। किंसखा योऽभिद्रुह्यति, पा २,१,६४। वि—विद्रोहः।

द्रू—द्रूङ्, स्वा, वो। क्रया, उ। १वधः।

२गतिः, वो। द्रूणोति। द्रूणाति। द्रूणुते। द्रूणीते। द्रूणाति द्रोणवद् युद्धे, कवि २१०। दुद्राव। दुद्रुवे। तं दुद्रावाद्रिणा कपिः, भ १४,८१। द्रविता। अद्रावीत्। अद्रविष्ट।

द्रेक्—द्रेक्, भ्वा, आ। १शब्दः।

२उत्साहः। शब्दोत्साहः। द्रेकः। उन्नतिः। द्रेकते। दिद्रेके। द्रेकिता। अद्रेकिष्ट। प्राद्रेकत हयद्विपम् (शब्दितवत्), भ १७,८। भ्रेक्, भ्रेकते। अदिभ्रेक्षत्।

द्रै—भ्वा, प। स्वप्नः। द्रायति।

द्विष्—अदा, उ। अप्रीतिः।

द्वेषः। निन्दा। विरोधः। लट् द्वेष्टि। द्विष्टः। द्विषन्ति। द्वेक्षि। द्विष्टे। द्विड्ढि। लिङ् द्विष्यात्। द्विषीत। लङ् अद्वेट्। अद्विष्टाम्। अद्विषुः। अद्विषन्, पा ३, ४, ११२। अद्विष्ट। द्वेष्टि गुणिभ्योऽपि, भ १८, ९। द्विषन्ति मन्दाश्चरितं महात्मनाम्, कु, ५, ७५। अद्विषुः स्वेभ्यः अद्विषन् वानरेभ्यः, भ १७,६१। लिट् दिद्वेष। दिद्वेषिथ। दिद्विषे। दिद्विषिषे। लुट् द्वेष्टा। लृट् द्वेक्ष्यति। ०ते। आशिषि, द्विष्यात्। द्विक्षीष्ट। लुङ् अद्विक्षत्। ०त। सन् दिद्विक्षति। ०ते। यङ् देद्विष्यते। देद्वेष्टि। णिच् द्वेषयति। अदिद्विषत्। द्विड्वा। द्विष्टः। द्वेषणम्। द्वेषः। द्वेष्टुम्। द्वेष्टा। द्विट्। द्वेषणः। क्विप्

वनेचराग्र्याणाम्, भ ५, ९७। वि—विद्वेषः। विरागः। सद्यश्चून् विद्वेषयन्, भ १२, ३३।

दृ—ध्वा, प। १आच्छादनम्।

२अनादरः। इरति। दद्वार। दद्वरतुः। दर्त्ता। दरिष्यति। अद्वार्षीत्। अद्वार्ष्टाम्। द्वारम्। द्वाः।

(ध)

धक्क्—चु, प। नाशनम्। धक्कयति।

धण्—धन्—(अण्) भ्वा, प। शब्दः।

धणति। दधाण। धणिता। धनति, वो।

धन्व्—धवि, भ्वा, प। गतिः। धन्वति।

धा—ङुधाञ्, ह्वा, उ। १धारणम्।

२प्रीणनम्। ३दानम्, वो। लट् दधाति। धत्तः। दधति। धत्ते। दधाते। दधते, दधते शासनं यस्य शिरसा च नरेश्वराः, कवि १७४। काचः काञ्चनसंसर्गाद्धत्ते मारकतीं द्युतिम्, हितो। सेषुं चापं धत्ते, भ ४,२६। हि, धेहि, पा ६,४,११९। स्व, धत्स्व। लिङ् दध्यात्। दधीत। धर्मं दध्यान्मनः, मनु १२,२३। लङ् अदधात्। अधत्ताम्। अदधुः। अधत्त। अदधत। लिट् दधौ। दधिथ, दधाथ। दधिव। दधे, लब्धे समाधिं स दधे मृगाविव्, भ २,७। दधुः कुमारानुगमे मनांसि, भ ३, ११। दधतुर्भुवनद्वयम्, र १,२६। लुट् धाता। लृट् धास्यति। ॰ते। न मुदं धास्यति (जनयिष्यति), नै ३, १५। आशिषि, धेयात्। धासीष्ट। लुङ् अधात्। अधाताम्। अधुः, पा २, ४, ७७। अधित। अधिषाताम्। अधिषत, पा १,२,१७। कर्मणि, धीयते। दधे। धायिता। धायिष्यते। धायिषीष्ट। अधायि। अधायिषत। सन् धित्सति। ॰ते, पा ७, ४, ५४। यङ् देधीयते, पा ६,४,६६। दाधेति, दाधाति। णिच धापयति। अदीधपत्। हित्वा। ॰धाय। हितः। हितिः। धानम्। धातुम्। धाता। धायः। धेयः। धातव्यः। धान्यम्। अन्तर्, तिरस्—अन्तर्धानम्। अन्तर्धत्स्व रामात्, भ ५, ३२। कृष्णमेघस्तिरोदधे, र १०,४८। पुरस्—पुरस्करणम्। तुरासाहं पुरोधाय, कु २, १। श्रत्—श्रद्धा। विश्वासः। आदरः। सद्भावना। श्रद्धत्ते राघवे, र ११,४२। परतः श्रद्दधतेऽथवा बुधाः, मा १६, ४०। अपि—आच्छादनम्। पिदध्वं पाणिभिर्मुखम्, भ ७,६९। अभि—अभिधानम्। आख्यानम्। कबन्धबधमभ्यधुः, भ ७,७८। क्षेत्रमित्यभिधीयते, गी १३,१। अव—अवधानम्। प्रणिधानम्। अवहितोऽस्मि। देव! अवधीयताम्, हितो। व्यव—व्यवधानम्। व्यवधाय देहम्, र ९, ५७। आ—आधानम्। अर्पणम्। स्थापनम्। धारणम्। सरिन्मुखाभ्युच्चयमादधानम्, भ २,८। समा—समाधानम्। उत्कन्नामापदं यस्तु समाधत्ते स बुद्धिमान्, हितो। सम्प्रति धीमद्भिः समाधीयते, दायभागः १७९। उप—उपधानम्। अर्पणम्। शेते भुजमुपधाय, रामा। बाहुलतोपधायिनौ शेते, कु ५,१२। भीमे चोपाधितानने, भ १५,४७। हृदि चैनामुपधातुमर्हसि, र ८,७८। नि—निधानम्। स्थापनम्। न्यासः। शवमजिने निधाय, भ ३,३५। न्यधायिषातां चरणौ भुवस्तले, मा १, १३। प्रेतं निदध्युर्भूमौ, मनु ५,६८। प्रनि—प्रणिधानम्। अवधानम्। प्रतिनि—प्रतिनिधिकरणम्। सन्नि—सन्निधानम्। विपत् सन्निहिता तस्य, हितो।

परि—परिधानम्। वि—विधानम्। करणम्। अनुष्ठानम्। दैवं न विदधे ननं युगपत् सुखमावयोः, भ ६, १४०। यन्नग्निष्टाग्नं सतामन्नं विधीयते, मनु ३,११८। सहसा विदधीत न क्रियाम्, भा २,३०। द्विषता विहितं त्वयाथवा (समर्पितम्), भा २,१७। अनुवि—अनुविधानम्। साधनम्। प्रतिवि—प्रतिविधानम्। प्रतिकारः। तथापि शङ्कितः प्रतिविधास्यते, वीर २३। सम्—सन्धानम्। योगः। आरोपणम्। धनुषि समधत्त सायकम्, र ३, ५३। शत्रुणा नहि सन्दध्यात्, हितो। सन्दधाति धनुष्येव योग्यकालेषु सायकम्, कवि १३२। अनु—अनुसन्धानम्। धर्मोपदेशं यस्तर्केणानुसन्धत्ते, मनु १२, १०६। अभिसम्—अभिसन्धिः। अभिप्रायः। त्वया अभिसन्धीयते कामिसार्थः, शकु ३,१४।

धाव्—धावु, भ्वा, उ। १गतिः।

२वेग.। शीघ्रगतिः। ३मार्जनम्। शुद्धीभावः। शुद्धीकरणम्। लट् धावति। ०ते। यस्य रोषारुणा दृष्टिर्धावते यत्र शात्रवे। पाशपाणिस्तत्रस्तस्मिन् यमदूतोऽपि धावति॥ कवि १२८। लिट् दधाव। ०वे। दधावाङ्गिश्चतुरस्रम्, भ १४, ५०। लुट् धाविता। लृट् धाविष्यति। ०ते। लुङ् अधावीत्। अधाविष्ट। अधावीदरिसम्मुखम्, भ १५, ६७। सन् दिधाविषति। ०ते। यङ् दाधाव्यते। णिच् धावयति। अदीधवत्। न पादौ धावयेत् कांस्ये, मनु ४, ६५। (उ) धौत्वा, पा ६,४,१८। धावित्वा। धौतः पटः। अस्यजवे निष्ठाया अप्रयोगः, दुर्गा। गतौ धावित इति पद्मनाभः। पश्चाद्धावितोऽचिन्तयत्, हितो। दृष्टिधौतः, र ११,८०। धावनम्। धावकः। धवलः। अनु—अनुधावनम्। पश्चाद्धावनम्। अनुसन्धानम्। अप—पलायनम्। अभि—अभिमुखगतिः। तं हन्तुमभ्यधावत, भ ६, ४१। वि, निर्—मार्जनम्। निर्धौतहारगुलिका, र ५,७०। पानीयैर्विदधाविरे ऽञ्जनानि, मा ८, ५०।

धि—तु, प। धारणम्।

धियति। दिधाय। धेता। अधैषीत्।

धिच्छ् (धुच्छ्)।

धिन्व्— धिवि (जिवि) भ्वा, प।

१प्रीणनम्। २गतिः, वो। धिनोति, पा ३, १, ८०। धिनुतः। धिन्वन्ति। धिनोमि। धिन्वः। धिन्मः, पा ६, ४, १०७। धिनोति हृद्येन हिरण्यरेतसम्, भा १,२२। दिधिन्व। धिन्विता। धिन्विष्यति। अधिन्वीत्।

धी—धीङ्, दि, आ। १आधारः।

२आराधनम्। ३अनादरः, वो। धीयते। दिध्ये। धेता। धेष्यते। अधेष्ट। क्त, धीनः।

धु—धुञ्, स्वा, उ। कम्पनम्।

धुनोति। धुनुते। धुनोति चासिं तनुते च कीर्त्तिम्। कूलंस्थतांस्तरूनधुन्वन् वारोणि, भ १०,२२। दुधाव। दुधुवे। धोता। अधौषीत्। अधोष्ट, कौ १४६।

धुच्छ्—धिच्छ्—स्वा, आ। १सन्दीपनम्।

२क्लेशनम्। ३जीवनम्। धुच्छते। धिच्छते। दुधुच्छे। धुच्छिता। अधुच्छिष्ट। दुधुच्छिषते, दोधुच्छ्यते। दोधुष्टि। णिच् धुच्छयति। अदुधुच्छत्। सम्—सन्दीपनम्। शरारग्निः सन्धुच्यताम्, भ २,२८।

धू—धूञ् ध्वा, वो, स्वा, क्रया, उ, धू, तु, प।

कम्पनम्। विधूननम्। ध्वा, धवति। ०ते। दुधाव। दुधुवे। धविता। अधावीत्। तु, धवति। धुविता। अधुवीत्। धूनोति। धूनुते। धुनाति। धुनीते। धूनोति चम्पकवनानि धूनोत्यशोकं चूतं धुनानि धुवति स्फुटितातिमुक्तम्। वायुर्विधूनयति चम्पकपुष्परेणून् यत्कानने धवति चन्दनमञ्जरीश्च॥ कवि ८। लिट् दुधाव। दुधुवे। दुधुवुर्वाजिनः स्कन्धान्, र ४, ६७। लुट् धोता, धविता, पा ७,२,४४। लट् धोष्यति। ०ते। धविष्यति। ०ते। अधावीत्। अधाविष्टाम्। अधाविषुः, पा ७, २, ७२। अधोष्ट, अधविष्ट। मा न धावीररिं रणे, भ ६, ५०। सन् दुधूषति। ०ते, पा ७,२,१२। यङ् दोधूयते, दोधोति। णिच् धूनयति, कौ १८१। धूञ्, चु, उ। कम्पनम। धूनयति। धवति। ०ते। धावयतीति केचित्, कौ १८१। धनुरधूनयन्महत्, भ १७, ६४। धूत्वा। ०धूय। धूतः। क्रया, धूनः, पा ८,२,४४। ७, २, १३। धूनिः। अव—निरासः। व्यायामवधूय, र ३,६३। अवधूतभयाः, र ९, १९। आ—ईषत् कम्पः। उद्—उत्क्षेपः। रजःकणैः खुरोद्धूतैः, र ८,६। निर्, वि—निरासः। क्षयः। ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः, गी ५, १७। विधूतपापास्ते यान्ति ब्रह्मलोकमनामयम्, स्मृतिः।

धूप—भ्वा, प। सन्तापनम्।

सन्तापीकरणम्। धूपायति, ०ते, वो। पा ३,१,२८। धूपायाञ्चकार, दुधूप। धूपायिता, धूपिता। अधूपायीत्, अधूपीत्। धूप्, चु, प, वो। दीप्तिः। धूपयति।

धूर्—धूरी (गूरी) दि, आ।

१हिंसा। २गतिः। धूर्य्यते। जात्या धूर्य्याय धूर्य्यन्ते, कवि १३९। दुधूरे। धूरिता।

धूर्व्—धूर्वी (ज्वी) भ्वा, प।

हननम्। धूर्वति। दुधूर्व। (ई) धूर्णः। धूर्त्तः। धूः धुरौ, धुरः।

धूस्—धूष्—धूस्, चु, प।

कान्तिकरणम्। भूषणम्। धूशयति

धृ—धृङ्, भ्वा, उ। धारणम्।

धृङ्, भ्वा, आ। १अवध्वंसनम्। चूर्णीभावः। २पतनम्, वो। ३अविध्वंसनम्। ४ख्यापनमिति गोविन्दभट्टः। धृङ्, तु, आ। १अवस्थितिः। जीवनम। २धारणम्, वो। लट् धरति। ०ते। ध्रियते, पा ७, ४, २८। ध्रियते यावदेकोऽपि रिपुः, मा २,३५। धरते यो धुरं धर्म्यां धैर्य्यं धारयति ध्रुवम्। ध्रियते यच्च धीः सम्यक् ध्रियति श्रीश्च साध्वसौ॥ कवि ३५। लिट् दधार। दधे। लुट् धर्त्ता। लट् धरिष्यति। ०ते। आशिषि, ध्रियात्। धृषोष्ट। लुङ् अधार्षीत्। अधार्ष्टाम्। अधार्षुः। अधृत। अधृषाताम्। अधृषत। कर्मणि, ध्रियते। अधारि, अधारि पद्मेषु तदङ्घ्रिणा धृणा, कै १,२०। ताभिर्गर्भः प्रजाभूत्यै दध्रे, र ३,५९। सन् दिधीर्षति। ०ते। त्, दिधरिषते, पा ७, २, ७५। यङ् देधीयते। दर्धर्त्ति। णिच् धारयति। ०ते। अदीधरत्। ०ते। धृ, चु, प, वो। धारणम्। धारयति। धारयन् मस्करिव्रतम्, भ ५, ६२। अधारयन् स्रजः काञ्चीः, भ १७,५४। गृहीतापरिशोधनम्। देवदत्ताय शतं धारयति, पा

१,४,३५ । धारयन्निव तस्थौ वासूनि प्रत्यपद्यत, भ ८,७४ । अर्थान्तरवृत्तित्वमस्य प्रसिद्धमेव । दण्डधारो महीपतिः दण्डप्रयोक्ता इत्यर्थः । ग्रन्थसहस्रधारिणं ग्रन्थसहस्रग्राहकमित्यर्थः, इति गोयीचन्द्रः । धृत्वा । ०धृत्य । धृतः । धृतिः । धरणम् । धर्त्तुम् । धर्त्तव्यम् । धारकः । धर्मः । णिच्, धारयित्वा । ०धार्य्य । धारितः । धारणम् । धारणा । अव—णिच्, अवधारणम् । निश्चयः । निरूपणम् । अवधारय सौमित्रे भूषणान्तरमाप्यतः, महाना ४,१९ । उद्—उद्धारः । मोचनम् । उददीधरत् प्रपितामहान् भगीरथः, उत्तर । निर्, सम्—निर्द्धारणम् । निश्चयः । प्रत्नुरीभवन् न निरधारितमः, मा ९,२० ।

धृज्—धृङ्ग्—धृजि, भ्वा, प । गतिः ।

धृष्—धृष्, स्वा, प, वो । १ संहतिः । २हिंसा । जि धृषा, स्वा, प । प्रागल्भ्यम् । दम्भः । लट् धर्षति । धृष्णोति । न धृष्णोति गुरोरग्रे न धर्षति निजाः प्रजाः । तमेव धर्षयत्येकं, कवि ८७ । अधृष्णोद् रावणः, भ १७, ८१ । लिट् दधर्ष । दधृषतुः । वानरा दधृषुः, भ १४, १०२ । लुट् धर्षिता । लृट् धर्षिष्यति । लुङ् अधर्षीत् । अधर्षिष्टाम् । अधर्षिषुः । सन् दिधर्षिषति । यङ् दरीधृष्यते । दरीधर्षि । णिच् धर्षयति । अदधर्षत्, अदीधृषत्, पा ७, ४,७ । धृष् (धृषा, वो) चु, प । १प्रसहनम् । २ अमर्षः । अभिभवः, वो । धर्षणम् । धृष्, चु, आ, वो । शक्तिबन्धनम् । निःशक्तीकरणम् । धर्षयति । धर्षति । धर्षयते । न धर्षति निजाः प्रजाः । तमेव धर्षयत्येकं यत्तास्तु प्रतिकूलति, हलायुधः । (उ) धर्षित्वा, धृष्ट्वा । (आ) धर्षितं धृष्टं तेन । (ज्ञि) धृष्टोऽस्ति । धृष्टः, पा ७,१,१९ । धर्षितः । धर्षितवान्, पा १,२,१९ । धर्षणम् ।

धृ—(जॄ) क्रया, प । वयोहानिः ।

धृणाति । दधरतुः । धरीता, धरिता ।

धे—धेट्, भ्वा, प । पानम् ।

लट् धयति । लिट् दधौ, पा ६, १, ४५ । लुट् धाता । लृट् धास्यति । आशिषि, धेयात् । लुङ् अधात्, पा २,४,७८ । अधासीत्, पा ७,२,७३ । अदधत्, पा ३,१,४९ । अधाताम्, अधासिष्टाम्, अदधताम् । अधाद्सामधासीच्च रुधिरम्, भ १५,२९ । त्वं नो मतिमिवाधासीर्नष्टा प्राणानिवादधः, भ ६,१८ । कर्मणि, धीयते । अधायि । सन् धित्सति, पा ७,४,५४ । यङ् देधीयते । दाधेति, दाधाति । णिच् धापयति । ०ते । धौत्वा । ०धाय, पा ६,४, ६९ । धौतः, कौ ३६१ । धयनम् । धयः । स्तनन्धयः । धे(ट्) स्तनन्धयौ । न वारयेद् गां धयन्तीम्, मनु ४,५९ । सम्—सन्धिः । न सन्धयति केनापि सर्वत्र विजयी नृपः, कवि १३२ ।

धेक—अदन्तः । चु, प । दर्शनम् ।

धोर्—धोर्च्छ (धोर्च्छृ) भ्वा, प ।

गतिचातुर्य्यम् । धोरति । धोरन्त्यधोरणाक्रान्ता विनीता यस्य वारणाः, कवि १३९ । (च्छ) अदुधोरत् । आधोरणः । धोरितम् ।

ध्मा—भ्वा, प । १शब्दः ।

शङ्खादिवादनम् । २अग्निसंयोगः । ३अग्नेरुज्ज्वलीकरणम्, दुर्गा । लट् धमति, पा ७, ३, ७८ । कम्बूंश्च तारा-

नधमन्, भ ३, ३४। लिट् दध्मौ। दध्मतुः। लुट् ध्माता। लट् ध्मास्यति। आशिषि, ध्मेयात्, ध्मायात्। लुङ् अध्मासीत्। अध्मासिष्टाम्। कर्मणि, ध्मायते। अध्मायि। सन् दिध्मासति। यङ् देध्मीयते, पा ७,४,३१। दाध्मीति, दाध्माति। णिच् ध्मापयति। अदिध्मपत्। क्त, ध्मातः। ध्वा—शब्दः। दाहः। स्फीतिः। दर्पाध्मातः। आध्मातमुदरं भृशम्, सुश्रुतः।

ध्माङ् (द्राङ्)।

ध्यै—ध्मा, प। चिन्ता। ध्यानम्।

ध्यायति, ध्यायत्यनिष्टं चेतसा, मनु ९,२१। दध्यौ। दध्यतुः। ध्याता। ध्यास्यति। ध्येयात्, ध्यायात्। अध्यासीत्। अध्यासिष्टाम्। दिध्यासति। दाध्यायते। दाध्याति। णिच् ध्यापयति। अदिध्यपत्। ध्यात्वा। ०ध्याय। ध्यातः। ध्यानम्। ध्येयः। क्विप् धीः। विषयात् ध्यायन्, गी २, ६२। अनु—स्मरणम्। चिन्ता। अनुग्रहः। अनुदध्युरनुध्येयं (अनुध्यानमनुग्रहः), र १७, ३६। अभि—चिन्ता। सङ्कल्पः। परधनलिप्सा। नि—स्मरणम्। दर्शनम्। तद्विदध्यौ सः, भ १४, ५६। निर्वर्णनन्तु निध्यानं दर्शनालोकनेक्षणमित्यमरः। चिरं निदध्यौ दुहतः स गां दुहः, मा १२,४०।

ध्रज्, ध्रञ्ज्—ध्रजि (भृजि) ध्वा, प। गतिः

ध्रण्—ध्रन्—(धण) ध्वा, प। शब्दः।

ध्रस्—उध्रस्, क्र्या, चु, प।

उच्छ्वृत्तिः। ध्रस्राति। ध्रासयति। उकारो धात्ववयवः। उध्रस्राति। उध्रसाञ्चकार।

ध्राख्—ध्राख (ओख) ध्वा, प।

१शोषणम्। २अलमर्थः। ध्राखति।

ध्राघ् (द्राघ्) ध्राङ्ग् (द्राङ्ग्) ध्राङ् (द्राङ्)

ध्रिञ्—ध्वा, प, वो। गतिः। ध्रेजते।

ध्रु—ध्रू, वो, ध्वा, प। ध्रु, ध्रुव्, तु, प।

१गतिः। २स्थैर्य्यम्। ध्रुवति। ध्रुवति। दुध्राव। दुध्रोव। दुध्रुवतुः। तं दुध्रावाद्रिणा कपिः (आपादितवान्), भ १४, ८१। ध्रु, ध्रोता, ध्रोष्यति, अध्रौषीत्। ध्रू, ध्रविता, ध्रविष्यति, अध्रावीत्। तु, ध्रुता, ध्रुष्यति, अध्रुषीत्, अध्रुताम्। ध्रुव, ध्रुविता, ध्रुविष्यति, अध्रुवीत्, अध्रुविष्टाम्।

ध्रेक् (द्रेक्)।

ध्रै—ध्वा, प। ह्लसिः। ध्रायति।

ध्वञ्—ध्वञ्ज्—ध्वञ्जि (भृज) ध्वा, प।

गतिः। ध्वजति। ध्वञ्जति।

ध्वण्—(अण) ध्वा, प। शब्दः।

ध्वन्—ध्वा, प। शब्दः।

ध्वनति। ध्वनन्ति यद्गुणान् मर्त्या ध्वनयन्ति च खेचराः, कवि २५५। दध्वान। दध्वनतुः। दध्वान मेघनद्धौमम्, भ ९,५। पणवा दध्वनुर्हताः, भ १७,३। ध्वनिता। ध्वनिष्यति। अध्वनीत्, अध्वानीत्। दिध्वनिषति। दन्ध्वन्यते। दन्ध्वन्ति। ध्वनयति घण्टाम्। अन्यत्र ध्वानयति (अशब्दाक्षरमुच्चारयति)। अदिध्वनत्। ध्वन—अदन्तः। चु, प। शब्दः। ध्वनयति। अदध्वनत् ध्वनितः। ध्वननम्। ध्वानः। ध्वानः। ध्वनति मधुपसमूहे, गौतगो ५, ४।

ध्वंस्—ध्वन्सु, भ्वा, आ।

१अवस्रंसनम्। ध्वंसः। अधःपतनम्। २ गमनम्। ध्वंसते, ध्वंसते यदि भवाद्दृशस्ततः, भा १३, ४२। तमांसि ध्वंसन्ते, वीर ५। ध्वंसेत हृदयं क्षयः, भा ११,५७। दध्वंसे। प्राणा दध्वंसिरे, भ १४, १५। ध्वंसिता। ध्वंसिष्यते। अध्वसत्। अध्वंसिष्ट, पा १, ३, ८१। अस्वसमध्वसत्, भ १५, ८३। सन् दिध्वंसिषते। यङ् दनीध्वस्यते, पा ७, ४, ८४। दनीध्वस्ति। णिच् ध्वंसयति। अदध्वंसत्। मूर्द्धानमदध्वंसन्नरद्विषः। भ १५, ८१। (ङ) ध्वंसित्वा, ध्वस्त्वा। ध्वस्तः। ध्वंसः। अप, अव—चूर्णनम्। निन्दा। वि—निपातः। क्षयः।

ध्वाङ्क्ष्—(द्राङ्क्ष्)।

ध्वृ—भ्वा, प। कुटिलीकरणम्। ध्वरति। दध्वार। दध्वरतुः। ध्वर्त्ता।

## (न)

नक्क्—(धक्क्) चु, प। नाशनम्।

नक्ष्—णक्ष् (टक्ष) भ्वा, प। गतिः।

नख्—नङ्ख्—णख्, णखि (ङख)

भ्वा, प। गतिः। नखति। नङ्खति।

नज् ओनजी, तु, आ, वो। लज्जा।

नट्—णट्, भ्वा, प। १नर्त्तनम्।

हिंसा, वो। नटति। नटन्ति नाटके यस्य चरितं भरतादयः, कवि १७८। ननाट। नेटतुः। नटिता। अनटीत्, अनाटीत्। नृतिनतिगतिषु घटादिर्णोपदेश एव, कौ ८२। नटयति। नाट्येन केन नटयिष्यति दीर्घमायुः, अनर्घ। प्रणटयति। नट्, चु, प। अवस्यन्दनम्। नाट्यम्। अभिनयः। अनुकरणम्। भ्रंशः, वो। नाटयति। दृक्षसेचनं नाटयति, शक्रु १,८०। ईश्वरस्याभिख्यां नाटयत्येष शैलः, मा ४, ६५। नट, (अजि) चु, प। दीप्तिः। नाटयति। उद्—हिंसा। वृषलस्योन्नाटयति, पा २, ३, ५६। नटः। नाटकम्।

नड्—णड्, चु, प। भ्रंशः। नाड़यति।

नद्—णद्, भ्वा, प। अव्यक्तशब्दः।

नादः। लट् नदति। नवाम्बुमत्ताः शिखिनो नदन्ति, घटकर्परः २। लिट् ननाद। नेदतुः। दुन्दुभयो नेदुः, रामा। लुट् नदिता। लृट् नदिष्यति। लुङ् अनादीत्, अनदीत्। सन् निनदिषति। यङ् नानद्यते। नानत्ति। णिच् नादयति। अनीनदत्। णद्, चु, प। दीप्तिः। नादयति। उद्, नि—उच्चनादः। असोढ सिंहध्वनिरुन्ननाद, कु १, ५७। मदपटुनिनदद्गौराजहंसैः, र १, ७५। अम्बुदैः शिखिगणो विनाद्यते (प्रयोजकणिजन्तस्य सकर्मकत्वम्), घटकर्परः। प्रणदति, प्रणिनदति, पा ८, ४, १७। निनदः। निनादः।

नन्द्—टुनदि, भ्वा, प। समृद्धिः।

आनन्दः। नन्दति। ननन्द। ननन्द पश्यन् स खलीः, भा ४, २। ननन्दतुस्तत्सदृशेन तत्समौ, र ३, २३। नन्दिता। नन्दिष्यति। नन्द्यात्। अनन्दीत्। अनान्दिषुः। निनन्दिषति। नानन्द्यते। नानन्ति। नन्दयति। अननन्दत्। गोपाङ्गनानृत्यमनन्दयत्तम्, भ २, १६। नन्दित्वा। ०दन्द्य। नन्दितः। नन्दनम्। (टु) नन्द्यद्युः। नन्दनः, पा

३, १, १३४ । नन्दकः । नन्दः । नन्दा । नन्दी । अभि—अभिनन्दनम् । सम्भावनम् । प्रशंसा । सन्तोषणम् । प्रोत्साहनम् । कामना । नाभिनन्देत मरणं नाभिनन्देत जीवितम् (न कामयेत), मनु ६. ४५ । तत्तत् प्राप्य शुभाशुभं नाभिनन्दति न द्वेष्टि (प्रशंसति), गी २, ५७ । वाग्भिः सखीनां प्रियमभ्यनन्दत्, र ७, ६६ । दिवौकसोऽपि सीतादेवीमभिनन्दन्ति, वीर १·४ । सेनापते वचनं ते नाभिनन्दामि, शक्र २, ४१ । आ—आनन्दः । आनन्दितारस्त्वां द्रष्टा, भ २२, १४ । आननन्दुर्नरान्, भ १५, ५६ । प्रति—संवर्द्धनम् । प्रीत्या प्रतिननन्दतुः, र १, ५८ । प्रतिनन्द्य तथाशीर्भिः, भारत ।

नभ्—णभ् (तुभ) भ्वा, आ । दि, क्रया, प ।

हिंसा । बधः । नभते । नभ्यति । नभ्नाति । ननाभ । नेभे, स तं नेभे, भ १४, ३२ । नभिता । नभिष्यति । °ते । भ्वा, अनभत् । अनभिष्ट । दि, अनभत् । क्रया, अनभीत्, अनाभीत् ।

नम्—णम्, भ्वा, प । १प्रह्वत्वम् ।

नम्रीभावः । २नमस्करणम् । ३शब्दः । शब्दार्थो न भाषायाम्, दुर्गा । लट् नमति, भक्त्या नमति यो देवान्, कवि २५३ । प्रहर नमतु चापम्, वीर ३३ । नम क्षितीन्द्रम्, भ १२, ३९ । लिट् ननाम । नेमतुः । नेमिथ, ननन्थ । सविभ्रमं नेमुः, भ ३, ४३ । लुट् नन्ता । लृट् नंस्यति । लुङ् अनंसीत् । अनंसिष्टाम् । अनंसिषुः, पा ७, २, ७३ । अनंसीद् भूभरेणास्य, भ १५, २५ । अनंसीच्चरणौ तस्य, भ ९, ५१ । भावकर्मणोः, नम्यते । अनामि । कर्मकर्त्तरि, नमते । अनंस्त दण्डः स्वयमेव, पा ३,१,८९ । सन् निनंसति । यङ् नंनम्यते । नंनम्ति । नंनम्यमानाः फलादित्सयेव लताः, भ २,२५ । णिच् नमयति, नामयति । सोपसर्गस्य तु प्रणमयति । अनौनमत् । नमयति धनुरैशं यः, महाना १, २३ । नत्वा । °नत्य, नम्य । नतः । नतिः । नमनम् । नन्ता । नम्रः । नम्रस्त्रः । अव, आ—अवनतिः । उद्—उन्नतिः । उन्नमति मेघः, मृच्छ १६६ । समुन्नताम काचित्, भा १०, ५३ । उप—उपस्थितिः । प्रणतिः । अकामोपनतैर्नमस्, र १०, ३९ । परि—परिणामः । परिपाकः । परिणमन्ति न पल्लवानि, भा ५, ३७ । रत्नं चेत क्वचिदस्ति तत् परिणमत्यस्मासु शक्रादपि, वीर १० । विपरि—विपरिणामः । विरूपावस्था । विपरिणमते दौर्जन्यम्, अनर्घ ९२ । प्र—प्रणतिः । गुरवे प्रणम्य, र १३,७० । तामञ्जलिभिः प्रणेमुः, र १४, १३ ।

नस्—भ्वा, प, वो । गतिः । नस्यति ।

नय्—णय् (अय) भ्वा, आ । १गतिः । २रक्षा, वो । नयते । नेये । नयिता ।

नर्द्—(गर्द्) भ्वा, प । शब्दः । गर्जनम् । नर्दति । ननर्द । नर्दिता । अनर्दीत् । अनर्दिषुः कपिव्याघ्राः, भ १५, ३५ । प्रनर्दति । प्रनर्दकः, पा ८, ४, १४ । कष्टं विनर्दतः, भ ९, १८ ।

नर्ब्—भ्वा, प, वो । गतिः । नर्बति ।

नल्—णल, भ्वा, प । १गन्थः । अर्दनमिति गोविन्दभट्टः । २बन्धनम् । नलति । णल्, चु, प, वो । दीप्तिः । नालयति ।

नश्—णश्, दि, प । १नाशः ।

क्षयः । मरणम् । २अदर्शनम् । तिरोभावः । लुक्कायनम् । पलायनम् । लट् नश्यति । ध्रुवाणि तस्य नश्यन्ति, हितो । लिट् ननाश । नेशतुः । नेशिथ, ननंष्ट । नेशिव । नेश, कौ १४० । नेशुर्निशाचराः, भ १४, ११२ । लुट् नशिता, नंष्टा, पा ७, २, ४५ । ७, १, ६० । लृट् नशिष्यति, नङ्क्ष्यति । लृङ् अनशिष्यत्, अनङ्क्ष्यत् । आशिषि, नश्यात् । लुङ् अनशत्(अनेशत्, वो) । चेष्टा अनेशन्निखिलास्तदास्याः । नै । अम् अनेशम् । सन् निनशिषति, निनङ्क्षति । यङ् नानश्यते । नानंष्टि । णिच् नाशयति । अनीनशत् । सूनो रथमनाशयत् (दूरमपनीतवान्), भ १७, १०२ । तेषामज्ञानजं तमो नाशयामि, गी १०,११ । तपो मा नीनशः, भा ११ ३१ । नशित्वा, नष्ट्वा, नंष्ट्वा, पा ६, ४, ३२ । नष्टः । नष्टिः । नशनम् । नाशः । नशितुम् । नंष्टुम् । नाशकः । नश्वरः । प्र, वि—विनाशः । प्रणशिष्यति, प्रनङ्क्ष्यति । प्रनष्टः । प्रणाशः, पा ८, ४, ३६ । प्राणशन्, भ १५, ४८ । विनङ्क्ष्यति पुरी क्षिप्रम्, भ १६, २६ ।

नस्—णस्, भ्वा, आ । कौटिल्यम् ।

नह्—णह्, दि, उ । बन्धनम् ।

लट् नह्यति । ०ते । लिट् ननाह । नेहतुः । नेहिथ । ननद्ध । नेहे । लुट् नद्धा, पा ८, २, ३४ । लृट् नत्स्यति । ०ते । अनात्सीत् । अनाद्धाम् । अनात्सुः । अनद्ध । अनत्साताम् । सन् निनत्सति । ०ते । यङ् नानह्यते । नानद्धि । णिच् नाहयति । अनीनहत् । नद्ध्वा । ०नह्य । नद्धः । नद्धव्यम् । नाहः, उपानत् । अपि—आच्छादनम् । कवचं परिनह्य, भ ३, ४७ । उद्—उन्नमय्य बन्धनम् । भुजङ्गभोगोद्वटजटाकलापम्, कु ३, ४६ । सम्—आच्छादनम् । समवायः । मिलनम् । समनद्धान् वर्मभिः, भ १७, ४ । समनात्सीत् सैन्यम्, भ १५, १११ । कुसुममिव यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्, शकु १, १०२ । परि—परिणाहः । दैर्घ्यम् । पर्य्याणद्धम् । निराणद्धम् । पर्य्यवनद्धम् । प्रावनद्धः, पा ८, ४, २, ३८ ।

नाथ्—नाध्—नाथृ, णाधृ, भ्वा, आ ।

१प्रार्थना । २उपतापः । ३ऐश्वर्य्यम् । ४आशीर्वादः । इष्टार्थयंसनम् । आशिषि एव नाथेरात्मनेपदम्, अन्यत्र नाथति, कौ ३२ । आशिषि नित्यम्, अन्यत्र विभाषयेति केचित्, दुर्गा । लट् नाथति । ०ते । नाधते । नाथन्ति के नाम न लोकनाथम्, नै ३, २५ । नाथसे किमु पतिं न भूभृतः, भा १३, ५८ । सर्पिषो नाथते, कौ २४२ । धृत्या नाथस्व वैदेहि, भ ८, १२० । लिट् ननाथ । ०थे । लुट् नाथिता । लृट् नाथिष्यति । ०ते । लुङ् अनाथौत् । अनाथिष्टाम् । अनाथिषुः । अनाथिष्ट । णिच् नाथयति । अननाथत् । अनु, उप—प्रार्थना । राजानमुपनाथति, पा २, ३, ५५ ।

नास्—णास्, भ्वा, आ । शब्दः ।

नासते । नासा । नासिका । नस शब्दे इत्येके इति प्रदीपः ।

निच्—णिच्, भ्वा, प । चुम्बनम् ।

निच्चति, निच्चति स्तनकच्चोरुकपोलाच्चिगलादिकम्, कवि १९९ । निनिच्च । निचिता । निचिष्यति । प्रणि-

क्षिष्यति नो भूयः, भ ८,१ ६। प्रणिच्चणम्। प्रनिच्चणम्, पा ८, ४, ३३।

निज्—णिजिर्, भ्वा, उ। १शौचम्।

निर्मलीकरणम्। २पोषणम्। लट् नेनेक्ति। नेनिक्तः। नेनिजति। नैनिक्ते, पा ७, ४, ७५। यत्पादौ मौलिरत्नांशुजालैर्नेनेक्ति राजकम्, कवि १३०। लोट् नेनेक्तु। नेनिग्धि। नेनिजानि, पा ७, ३, ८७। लिङ् नेनिज्यात्। नेनिजीत। लङ् अनेनेक्। अनेनिक्ताम्। अनेनिजुः। अनेनिजम्। अनेनिक्त। लिट् निनेज। निनिजे। लुट् नेक्ता। लृट् नेक्ष्यति। °ते। आशिषि, निज्यात्। निक्षीष्ट। लुङ् अनिजत्। अनैक्षीत्। अनिजताम्। अनैक्ताम्। अनिक्त। अनिक्षाताम्। सन् निनिक्षति। °ते। यङ् नेनिज्यते। नेनिजीति। णिच् नेजयति। अनीनिजत। निक्षा। निक्तः। नेजनम्। अव—अवनेजनम्। प्रक्षालनम्। निर्—निर्णेजनम्। शोधनम्। अङ्घ्रिनिर्णिक्तम्, मनु ५, १२७। चेलनिर्णेजकः।

निञ्ज्—णिजि, अदा, आ। शुद्धिः।

निङ्क्ते। निनिञ्जे। निञ्जिता। अनिञ्जिष्ट।

निट्—नेट्—णिट, णेट, भ्वा, उ।

१कुत्सा। २सन्निकर्षः। नेटति। °ते। नेटते न परं कञ्चित्, कवि १५०।

निन्द्—णिदि, भ्वा, प। कुत्सा।

निन्दा। निन्दति। तं निन्दन्ति परीवादं परस्य विदधाति यः, कवि १५०। निन्दसि श्रुतिजातम्, गीतगो १,१३। निनिन्द। निनिन्दतुः। निनिन्द रूपं हृदयेन पार्वती, कु ५,१। निन्दिता। निन्दिष्यति। अनिन्दीत्। अनिन्दिष्टाम्। कर्मणि, निन्द्यते। अनिन्दि। निनिन्दिषति। यङ् नेनिन्द्यते। नेनिन्दि। निन्दयति। अनिनिन्दत्। निन्दित्वा। °निन्द्य। निन्दितः। निन्दनम्। निन्दनीयम्। निन्दा। निन्दकः। प्रनिन्दति, प्रणिन्दति, पा ८, ४, ३३। प्रणिच्चिष्यति नो भूयः, भ ८, १०६।

निन्व् (पिन्व्)।

निल्—णिल्, तु, प। गहनम्।

दुर्बोधः। निलति। निनेल। नेलिता।

निवास—अदन्तः, चु, प।

आच्छादनम्। निवासयति यश्चिरं चीनांशुकम्। कवि।

निश्—णिश्, भ्वा, प। समाधिः।

नेशति। प्रणेशति। निशा।

निष्—णिषु, भ्वा, प, वो। सेचनम्।

निष्क्—णिष्क्, चु, आ। परिमाणम्।

निष्कयते।

निंस्—णिंसि, अदा, आ। चुम्बनम्।

निंस्ते। निंसाते। निंसते। निंस्से। दन्तच्छदम्, भ ५, १८। सुखं निंस्से मुखं स्त्रीणां यत्प्रजा, कवि १८८। निनिंसे। निंसिता। अनिंसिष्ट। प्रणिंसनम्, प्रनिंसनम्, पा ८, ४, ३३। दन्त्यान्तोऽयम्। आभरणकारस्तु तालव्यान्त इति बभ्राम, कौ १२३।

नी—णीञ्, भ्वा, उ। प्रापणम्।

नयनम्। लट् नयति। °ते। अजा ग्रामं नयति गोपः, दुर्गा। नयन्ते यद्गुणाः सर्वं यस्तान्नयति दिक्षु खम्, कवि १७१। मामपि तत्र नय, हितो।

(सम्मानने) शास्त्रे नयते । (ज्ञाने) तत्त्वं नयते, पा १, ३, ३६ । लिट् निनाय । निनयिथ, निनेथ । निन्यिव । निन्ये । संविष्टः कुशशयने निशां निनाय, र १,९६ । लुट् नेता । लृट् नेष्यति । ०ते । आशिषि, नीयात् । नेषीष्ट । लुङ् अनैषीत् । अनैष्टाम् । अनैषुः । अनेष्ट । अनेषाताम् । अनेषत । अनैषीद्राजसान् क्षयम्, भ १५, १० । कर्मणि, नीयते अजा ग्रामम् । अनायि । कपिनाऽनेषत क्षयं द्विषः, भ ९, २२ । सन् निनीषति । ०ते । यङ् नेनीयते । नेनेति, नेनयीति । णिच् नाययति । अनीनयत् । नीत्वा । ०नीय । नीतः । नीतिः । नयनम् । नयः । नेतुम् । नेता । नायकः । नेत्रम् । नयनम् । अनु—अनुनयः । मारीचोऽनुनयंस्तासात्, भ ५, ४६ । स चानुनीतः प्रणतेन पश्चात्, र ५, ५४ । अप—अपसारणम् । अचूनपनेष्यामि, भ १६, ३० । अभि—अभिनयः । अनुकरणम् । कुसुमावचयमभिनयन्त्यौ, शकु ४, १, १२ । आ—आनयनम् । तेनाङ्गनाभिरानायि सः, १, १० । उदा—उत्सङ्गीकरणम् । बालकमुदानयते । प्रत्या—प्रत्यानयनम् । प्रत्यानेष्यति शत्रुभ्यो वन्दीमिव जयश्रियम्, कु २,५२ । उद्—उत्क्षेपणम् । दण्डमुन्नयते, पा १, ३, ३६ । (उन्नतिः वृद्धिः) समुन्नयन् भूतिम्, भा १, ८ । उप—उपनयनम् । भृतिः । माणवकमुपनयते, कर्मकरानुपनयते, पा १, ३, ३६ । विद्वानुपानेष्ट तान्, भ १, १५ । (प्रापणम्) आर्घ्यस्यासनमुपनय, मृच्छ २७५ । अर्घ्यमुपनीय, भ ६, ७० । भिक्षामुपनयति भिक्षोः करतले, मृच्छा ३, ७१ । (उपस्थितिः) मत्प्रभोगः कथमुपनयेत्, मे ९४ । नि—प्रापणम् । उदकं निनयेच्छेषं पिण्डान्तिके, मनु ३, २१८ । निर्—निर्णयः । कार्यं निर्णीयते परैः, हितो ।परि—परिणयः । परिणेष्यति पार्वतीं यदा हरः, कु ४, ४२ । प्र—प्रणयनम् । रचना । प्रापणम् । मुग्धबोधं व्याकरणं प्रणीयते । तस्यार्घ्यं प्रणीय, भ ५, ७ । वि—धर्मादिषु व्ययः । ऋणादिपरिशोधनम् । अपनयनम् । शतं विनयते, करं विनयते, पा १, ३, ३६ । क्रोधं विनयते, परस्य क्रोधं विनयति, पा १, ३, ३७ । विनयन्ति स्म तद्योधा मधुभिर्विजयश्रमम्, र ४, ६८ । (शासनम् । शिक्षा) विनेष्यन्निव दुष्टसत्त्वान्, र २, ८ । मा चापलायेति गणान् व्यनैषीत्, कु ३, ४१ । विनिन्युरेनं गुरवः, र ३, २९ ।

नील्—णील्, स्वा, प । १नीलवर्णः । २तत्करणम् । प्रणीलते । नीलम् । नीली ।

नीव्—(पीव) णीव्, वो । भ्वा, प । स्थौल्यम् । नीवति ।

नु—णु, अदा, प । स्तुतिः । लट् नौति । नुतः । नुवन्ति । लिङ् नुयात् । लङ् अनौत् । अनुताम् । लिट् नुनाव । नुनुवतुः । नविता । नोता, वा । लुट् अनावीत् । अनौषीत्, वीः । सन् नुनूषति । यङ् नोनूयते । नोनोति । णिच् नावयति । अनूनवत् । नुत्वा । नुतः । नुतिः । आ—सोत्कण्ठशब्दः । आनुते शिवा, कौ २४३ । पतत्रिणो मन्द्रमानुवानाः, भ ८,६७ ।

नुड्—तु, प, वो । बधः । नुडति ।

नुद्—णुद्, तु, उ । प्रेरणम् । क्षेपणम् । निरासः । अपसारणम् । लट् नुदति । ०ते । मन्दं मन्दं नुदति

पवनस्वाम्, मे ६। पापं नुदति, वीर २३। लिट् नुनोद। नुनुदे। संशयं नुनोद, र ६, ६८। नृपतेर्व्यंजनादिभिस्त्मो नुनुदे, र ८, ४१। लुट् नोत्ता। लृट् नोत्स्यति। ते। आशिषि, नुद्यात्। नुत्सीष्ट। लुङ् अनौत्सीत्। अनौत्ताम्। अनौत्सुः। अनुत्त। अनुत्साताम्। अनुत्सत। सन् नुनुत्सति। ते। यङ् नोनुद्यते। नोनोत्ति। णिच् नोदयति। अनूनुदत्। नुत्त्वा। नुन्नः। नुत्तः, पा ८, २, ५६। नुत्तिः। नोदनम्। नोदः। आत्मापराधं नुदतः शुश्रूषया, र १६, ८५। अप—अपनोदनम्। अपनुनुदुर्न देहखेदान्, भ १०, १३। निर्—प्रत्याख्यानम्। खण्डनम्। आघातः। पयो मांसं श्राकञ्चैव न निर्नुदेत्, मनु ४, २५०। प्र—प्रेरणम्। वि—णिच् विनोदनम्। प्रीणनम्। यापनम्। दूरीकरणम्। क्व खिन्नमात्मानं विनोदयामि, शकु ३,२०। विनोदयिष्यन्ति मुनिकन्यकास्त्वाम्, र १४, ७७। तापं विनोदय दृष्टिभिः, गीतगो १०, १३।

नू—णू, तु, प। स्तवनम्।

नुवति, नुवति त्रिषु लोकेषु षड्गुणान् प्रयतो जनः, कवि ४२। नुनाव। नुविता। अनुवीत्। परिणूतगुणोदयः, कौ १५३। क्वस्वान्तोऽयमिति वररुचिः।

नृत्—नृती, दि, प। गात्रविक्षेपः।

नर्त्तनम्। नृत्यति, नृत्यति युवतिजनेन समम्, गीतगो। ननर्त्त। नर्तुः सहावम्, भ ३, ४३। नर्त्तिता। नर्त्स्यति, नर्त्तिष्यति। अनर्त्स्यत्, अनर्त्तिष्यत्, पा ७,२,५७। नर्त्स्यन्ति मुदा युताः, १६, २०। अनर्त्तीत्। अनर्त्तिष्टाम्। अनर्त्तिषुः। निनृत्सति, निनर्त्तिषति। नरीनृत्यते, पा ८, ४, ३९। नरीनर्त्ति। णिच् नर्त्तयति। ते। अननर्त्तत्, अनीनृतत्। नर्त्तित्वा। नृत्तम्, नृत्यम्। नर्त्तनम्। नर्त्तकः, नर्त्तकी। आ—रणनृत्यम्। काम्यनम्। मञ्जिरानर्त्तितनक्तमालैः, र ५, ४२।

नृ—क्र्या, प। नयनम्। प्रापणम्।

नृणाति। प्रापणे, नरयति, घटादिः। नीर्णः।

नेद् (निद्) नेष् (एष)।

## (प)

पच्—भ्वा, चु, प। परिग्रहः।

पचति। पचयति। अदन्तः, वी। पक्वः।

पच्—ङ्पचष्। भ्वा, उ। पाकः।

रन्धनम्। परिणामः। परिणतावस्था। विनाग्नेरुष्मणो भावः। लट् पचति। ते। तण्डुलानोदनं पचति। पचाम्यन्नं चतुर्विधम्, गी १५, १४। शाकं पचति। भूतानि कालः पचति, भारत। लिट् पपाच। पेचिथ, पपक्थ। पेचिव। पेचे। लुट् पक्ता। लृट् पक्ष्यति। ते। आशिषि, पच्यात्। पक्षीष्ट। लुङ् अपाक्षीत्। अपाक्ताम्। अपाक्षुः। अपक्त। अपक्षाताम्। अपक्षत। कर्मणि, पच्यते। अपाचि। स्वयं एव सुकृतां काङ्क्षितं पच्यते, र ११, ५०। नरके पच्यते घोरे। सन् पिपक्षति। ते। यङ् पापच्यते। पापचीति, पापक्ति। णिच् पाचयति। अपीपचत्। पक्ता। पच्य। पक्वः, पा ८, २, ५२। पक्तिः। पचनम्। पाकः। पाकिमम्। पचा। पक्तुम्। पक्ता। पाचकः। पचः, पा।

(ङ्) पक्किमम्। ददर्श मालूरफलं पचेलिमम्, नै १, ९४। परिपाकः। विपाकः। पच (पञ्च)।

पञ्च्—पचि, भ्वा, आ। व्यक्तीकरणम्।

पञ्चते। पचु पचते, वो। पचति। पञ्चति इत्यप्येके। पचि, चु, प। विस्तारः। पञ्चयति। प्रपञ्चय पञ्चमरागम्, गीतगो, १०, १३। यो वाग्मी वादिनां मध्ये वाचमुच्चैः प्रपञ्चते। प्रपञ्चयन्ति यत् कीर्त्तिं दिक्षु खेषु महाजनाः॥ कवि ४७। पञ्चकः। पङ्कः। पञ्चनम्। पङ्क्तिः।

पट्—(अट) भ्वा, प। गतिः।

पटति। पट् (क्षेप) चु, प। १दीप्तिः। २विदारः। छेदनम्। पाटयति। अपीपटत्। उद्—उत्पाटनम्। प्रांशुमुत्पाटयामास मुक्तास्तम्बमिव द्रुमम्, र १५,१९। विभेदः। केतकवर्हं विपाटयामास नखाग्रैः, र ६, १७। पट, चु, प। अदन्तः। वेष्टनम्। पटयति। पटः। पटी।

पठ्—भ्वा, प। कथनम्। पाठः।

पठति श्लोकं धीरः। पपाठ। पेठतुः। पेठिथ। पठिता। पठिष्यति। अपठीत्, अपाठीत्। कर्मणि, पठ्यते। अपाठि। श्लोकः कस्य कवेरमुष्य कृतिनस्तत् पठ्यतां पठ्यते। पिपठिषति। पापठ्यते। पापठ्टि। पाठयति। अपीपठत्। पठित्वा। पठितः। पठितिः। पठनम्। पाठः। पाठकः। पठत्सु तेषु, नै १, ३४।

पण्—भ्वा, आ। १व्यवहारः।

वाणिज्यम्। २स्तुतिः। व्यवहारे, शतस्य पणते, पा २,३,५७। पेणे। पणिता। अपणिष्टः। प्राणानामपणिष्ट, भ ८, १२१। स्तुतावेवायः। आयाल्लाभान्नात्मनेपदम्, कौ ५९। पणायति, पा ३, १, २८। °ते, वो। पणायाञ्चक्रार। पेणे, पा ३,१,३१। पणायितासि, पणितासे। पणायिष्यति, पणिष्यते। आपिपणि, पणाय्यात्। पणिषीष्ट। अपणायीत्। अपणिष्ट। बोपदेवमते व्यवहारेऽपि आयः। नचोपलेभे बणिजां पणायाः, बणिजां पणायान् इति जयमङ्गलधृतपाठः। पणायान् पणलाभान् इति तस्यार्थः, भ ३, २७। पणायित्वा, पणित्वा। °पणाय्य, पण्य। पणायितः। पणितः। पण्यम्। पणः। आपणः।

पण्ड्—पडि, भ्वा, आ। गतिः।

पडि, चु, प। १नाशनम्। २राशीकरणम्, वो। पण्डते। पण्डयति, पण्डति। पण्डा। पण्डितः

पत्—पत्लृ, भ्वा, प। १गतिः।

२पतनम्। भ्रंशः। पातित्यम्। ३ऐश्वर्य्यम्, वो। लट् पतति, पतत्यधोधाम, मा १, २। पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः, गी १, ४१। सुरापः पतति, स्मृतिः। लिट् पपात। पेततुः। पेतिथ। पच्चौ पपात खम्, भ ५,१००। भुवि पपात मूर्च्छितः, रामा। लुट् पतिता। लृट् पतिष्यति। भानुरप्यपतिष्यत् स्वाम्, भ २१, ६। लुङ् अपप्तत्, पा ७, ४, १९। कर्मभावयोः पत्यते। अपाति। सन् पिपतिषति, पित्सति, पा ७, ४, ५४। यङ् पनीपत्यते। पनीपत्ति, पा ७, ४, ८४। णिच् पातयति। अपीपतत्। पतित्वा। °पत्य। पतितः, पा ७,२,१६। पतनम्। पातः, पतः। पतितुम्। पातकः। पातुकः। उत्पतिष्णुः। पत्रं पतङ्गः पातालं पन्थाः। अनु—अनुपातः। अभि

—अभिमुखपतनम्। आ—आगमनम्। उपस्थितिः। शनैरापततस्तान्, भ ३, ४८। उद्—उत्पतनम्। उड्डयनम्। उत्पातः। नि—निपतनम्। अधःपतनम्। उपस्थितिः। निपतन्ति रणेषु यस्य बाणाः, कवि ४८। मरणव्याधिशोकानां किमद्य निपतिष्यति। णिच्—निपातनम्। ज्योत्स्ना दृत्यते मत्वर्थे संज्ञायां निपात्यन्ते, पा ५, २, १४। कात्यायनीव महिषं विनिपातयामि। प्रणि—प्रणिपातः। संनि—मिलनम्। निर्—निर्गमः। प्र—निपतनम्। उपस्थितिः। प्रापन्नाकृतिस्तत्र, भ १५, ५३। सम्—गतिः। सम्पत्य तत् सनीडे, भ ५, ३१। पद्, दि, आ, वो। ऐश्वर्यम्। पद्यते। क्षौणीतलेऽधिपद्यते यः, कवि ४८। पेते। पतिता। पतः, पद्, आद्योऽदन्तः। द्वितीयो हलन्तः। चु, प। १गतिः। पतनम्। २ऐश्वर्यम्, वो। अदन्ताद्वा णिच् पतयति, पतति। पतयन्ति समन्ततो विपक्षाः, कवि ४८। पताञ्चकार। पतिता। अपतीत्, कौ १८२। पातयति। अपीपतत्। णिज्रहितौ पतमृषाविव अदन्तौ।

पथ्—पथे, श्वा, प। गतिः।

पथ्—(पृथ्) चु, प। प्रक्षेपः।

(पथति। पथयत्युत्तरापथम्, कवि २३७।)

पद्—श्वा, प, वो। ऐश्वर्यम्।

पदति। पद अदन्तः। चु, आ। गतिः। पदयते। संपरिक्षिप्य लक्ष्माणि पदयन्ते पदातयः। आहवे राजलक्ष्मीश्च यस्य सम्पद्यते ध्रुवम्॥ कवि २०७।

पद्—दि, आ। गतिः। प्राप्तिः।

पद्यते। पेदे। पत्ता। पत्स्यते। पत्सीष्ट। अपादि, पा ३, १, ६०। अपत्साताम्। अपत्सत। पित्सते, पा ७, ४, ५४। पनीपद्यते। पनीपत्ति, पा ७, ४, ८४। णिच् पादयति। अपीपदत्। पत्त्वा। ०पत्य। पन्नः। पत्तिः। पत्तुम्। पत्तव्यम्। णिच् पादितम्। पादनम्। पादयितव्यम्। अनु, अभि—प्राप्तिः। जरां सद्योऽन्वपद्यत, भारत। अभिपेदे राघवं मदनातुरा, र १२, ३२। आ—आगमनम्। प्राप्तिः। आपत्प्राप्तिः। आपत्तिः। तर्कोपन्यासः। उत्पत्तिः। निशाचरादापादि ध्वंसः, भ ६, ३१। एष रावणिरापादि (आगतः), भ १५, ८९। व्या—मरणम्। व्यापन्नानां गवां, स्मृतिः। व्या—णिच्—व्यापादनम्। हननम्। आत्मानं तव द्वारि व्यापादयामि, हितो। उद्—उत्पत्तिः। उदपादि भव्या, कु १,२२। व्युद्—व्युत्पत्तिः। नामरूढ़मपि व्युदपादि, मा १०, २३। उप—उपयोगः। सम्भावनम्। सिद्धिः। सम्पन्नता। प्राप्तिः। सङ्गतिः। मद्भावायोपपद्यते (उपयुक्तो भवति), गौ १३, १८। नैतत् त्वयि उपपद्यते (योग्यं न भवति), गौ २, ३। पौत्रदौहित्रयोर्विशेषो नोपपद्यते (न सम्भाव्यते), मनु ९,१३९। पञ्चमो नोपपद्यते (पञ्चमस्य सम्बन्धो नास्ति), मनु ९,१८९। सर्वं सखे त्वय्युपपन्नमेतत् (सिद्ध), कु ३,१२। अभ्युप—अनुग्रहः। रतिमभ्युपपत्तुमातुराम्, कु ४, २५। निर्—निष्पत्तिः। सिद्धिः। प्र—गतिः। प्राप्तिः। तपोवनं प्रपेदे, भ ४,१। ये यथा मां प्रपद्यन्ते (भजन्ते), गी ४,११। प्रति—अङ्गीकारः। प्राप्तिः।

ज्ञानम्। सिद्धिः। प्रतिपादनम्। न मासे प्रतिपत्तासे आत्मेत्, भ ८,९५। चेतो बालिवधं न प्रतिपद्यते (न प्रत्येति), भ १६, १११। प्रत्यपत्या हितं न च (नावगतवान्), भ १५, १४। विधिना प्रतिपादयिष्यता नववैधव्यम्, कु ४, १। विप्रति—विरुद्धज्ञानम्। विरोधः। वि—विपत्तिः। त्वयापि चिन्ताङ्गि विपद्यते यदि, नै १, १४१। त्वन्नाथा विपत्स्यसे, उत्तर ४४। सम्—उत्पत्तिः। सम्यक्ता। प्राप्तिः। णिच्—सम्पादनम्। सम्पत्स्यते वः कामोऽयम्, कु २, ५४। स्वसुः सम्पाद्य पाणिग्रहणम्, र ७, २९।

पन्—(पण्) भ्वा, आ। स्तुतिः।

पनायति। °ते, वो। पनायाञ्चकार। पेने। पनायितासि। पनितासे। अपनायीत्। अपनिष्ट।

पन्थ्—पथि, चु, प। गतिः।

पम्ब्—भ्वा, प, वो। गतिः। पम्बति।

पय्—(अय्) भ्वा, आ। गतिः।

पर्ण—अदन्तः। चु, प। हरितभावः।

पर्द्—भ्वा, आ। अपानशब्दः।

पर्प्—भ्वा, प। गतिः। पर्पति।

पर्ब्—(अर्ब्) भ्वा, प। गतिः।

पर्व्, भ्वा, प, वो। पूरणम्। पर्वति।

पर्ष्, स्पर्ष् (वर्ष) भ्वा, आ। क्षेपणम्।

पल्—पल्ल्, वो। भ्वा, प। गतिः।

पलन्ति यद्विषो दिक्षु, कवि २५९।

पल्—चु, प, वो। पालनम्।

पालयति।

पल्यूल् (वल्यूल्)।

पश्—पष्—पस्—भ्वा, ड, वो।

१ ग्रन्थनम्। २ पीडनम्। ३ स्पर्शः।

पश्यति। °ते। पषति। °ते। पसति। °ते। पश्, पष्, पस्, वो, चु, प। बन्धनम्। पाशयति। पाषयति। पासयति। सम्पाशयति यः शत्रून् शृङ्खलैः। विपाशयति चात्मानम्॥ कवि २३०। पश, पष, अदन्तौ। चु, प। १गतिः। (२विहृतिः। ३स्पर्शनम्। ४बन्धनम्, वो) पशयति। पषयति। सोपसर्गप्रयोगो माभूत्, दुर्गा। पश सौत्रधातुः। यङ् पाप्यश्यते, पा ७, ४, ८६।

पंश्—पंस्—पंशि, पंसि, चु, प।

नाशनम्। पंशयति। पंसयति।

पा—भ्वा, प। पानम्।

लट् पिबति, पा ७, ३, ५८। पिबसि रतिसर्वस्वमधरम्, शकु १, १३१। अशोककलिकाश्चाष्टौ ये पिबन्ति, स्मृतिः। दुःशासनस्य रुधिरं न पिबाम्युरस्तः, वेणीसं। पिबन्ति मधु, कवि ६५। लिट् पपौ। पपतुः। पपिथ, पपाथ। पपिव। तं पपौ लोचनाभ्याम् (ददर्श), र २,१८। लुट् पाता। आशिषि, पेयात्, पा ६,४,६७। लुङ् अपात्। अपाताम्। अपुः, पा २, ४, ७७। कर्मणि, पीयते। अपायि। अपायिषाताम्। अपासाताम्। सन् पिपासति। यङ् पेपीयते, पा ६,४,६६। पापेति, पापाति। णिच् पाययति। °ते, पा ७, ३, ३७। अपिप्यत्, पा ७, ४, ४। पीत्वा। °पाय। पीतः। पीतिः। पानम्। पाता। पायौ। पातव्यम्। पानीयम्। पेयम्। सुरापः। रविपीतजला नदी, कु ४,४४।

पा, अदा, प। पालनम्। रक्षणम्।

पाति। उपप्लवेभ्यः प्रजाः पासि, र २,४८। यः कीर्त्तिं पाति, कवि २६।

अधर्मान्मां पाहि, भारत। पपौ। पाता। पायात्। अपासीत्। कर्मणि, पायते। पिपासति। पापायते। णिच् पालयति। अपीपलत्, पा ७, ३, ३७। पात्वा। पातः। पान्तौ मुनीन्, भ ६, ८६। प्रति—प्रतिपालनम्। प्रतीक्षा। अन्यासक्तो देव स्तदवसरं प्रतिपालयामि, शकु ५, २६।

पार—अदन्तः। चु, प।

कर्मसमाप्तिः। शक्तिः। पारयति। अपपारत्। कर्मणि, पार्य्यते। पारितः। पारणा। जवेन गां पतितुमपारयन्तः (अशक्नुवन्तः), भा ४, १०।

पाल्—चु, प। रक्षणम्। पालनम्।

पालयति। पालति भूमिपालः।

पि—तु, प। गतिः। पियति।

पिच्छ्—चु, प। छेदनम्। पिच्छ्, वो।

पिच्छ्—तु, प, वो। बाधः। पिच्छति।

पिञ्ज्—पिजि, अदा, आ। १वर्णः।

पिञ्जीभावः। २सम्पर्कः। ३अव्यक्तशब्दः। ४पूजनम्, वो। पिञ्जते। पिपिञ्जे। पिञ्जिता। पिजि, पिज (तुजि) चु, प। १हिंसा। २बलम्। ३आदानम्, वो। ४निवासः। दीप्तिः, वो। पिञ्जयति। पिञ्जति। पेजयति। पिञ्जरः। पिञ्जलः।

पिट्—भ्वा, प। १शब्दः। २सङ्घातः।

पेटति। पेटः। पेटी। पिटकः। पिटाकः।

पिठ्—भ्वा, प। १हिंसा। २क्लेशः।

पिण्ड्—पिडि, भ्वा, आ। चु, प।

संहतिः। पिण्डीकरणम्। पिण्डते। पिण्डयति। पिण्डम्। पिण्डी।

पिन्व्—पिवि, णिवि, मिवि, षिवि, श्वा, प। सेचनम्। पिन्वति। निन्वति।

पिष्—चु, प, वो। प्रेरणम्।

पिश्—तु, प। १अवयवः।

२दीपनम्। पिशति, पा ७, १५, ८। त्वष्टा रूपाणि पिंशतु, कौ १५७। पिपेश। पेशिता।

पिष्—पिष्ल्, रु, प। सञ्चूर्णनम्।

पेषणम्। घर्षणम्। हिंसनम्। लट् पिनष्टि। पिंष्टः। पिंषन्ति। पिनक्षि। शुष्कपेषं पिनष्म्यहम्, भ ६, ३७। पिनष्टि चौरस्य, पा २, ३, ५६। हि पिण्ढि सुन्दरि चन्दनम्। आनिप् पिनषाणि। लिङ् पिंष्यात्। लङ् अपिनट्। अपिंष्टाम्। अपिनट् च रथानीकम्, भ १७, ६६। लिट् पिपेष। पिपिषतुः। पिपेषाश्व रथं कपिः, भ १४, ८०। लुट् पेष्टा। लृट् पेक्ष्यति। लुङ् अपिषत्। कर्मणि, पिष्यते। अपेषि। अपिक्षातां सहस्रे द्वे तद्दैन वनौकसाम्, भ १५, ६९। सन् पिपिक्षति। यङ् पेपिष्यते। पेपेष्टि। णिच् पेषयति। अपीपिषत्। पिष्ट्वा। पिष्टः। पेषणम्। पेष्टुम्।

पिस्—पेस्—पिस्ट, पेस्ट, भ्वा, प।

गतिः। पिस्, चु, प। १गतिः। २हिंसा। ३दानम्। ४प्राणनम्। ५वासः, वो। मूर्द्धन्यान्तोऽयमिति केचित्, दुर्गा। पेसति। पेसयति।

पिंस्—पिसि (कृप) चु, प। दीप्तिः।

पी—पीङ्, दि, आ। पानम्।

पीयते। पीयन्ते च प्रियाधरम्, कवि ६५। पिप्ये। पेष्यते। पेषीष्ट। अपेष्ट। पीत्वा। ०पीय। पीतः। कथां निपीय, नै १, १।

पीड्—चु, प। १अवगाहनम्।
२बधः, वो। क्लेशः। पीड़नम्। पीड़यति। पीड़यन्ति जनं धाराः, भ ७,९। पीड़तीति हलायुधः। यथा—राष्ट्रं पीड़ति नाभीयं पीड़यत्यरिमण्डलम्, कवि २५१। पीड़यामास। पीड़यिता। अपिपीड़त्, अपीपिड़त्, पा ७,४,३। नीलमपीपिड़च्छरैः, भ १५,८२। कर्मणि, व्याधिभिः पीड्यते, मनु ५,५०। आ—भूषणम्। क्लेशः। उद्—उत्पीड़नम्। उपद्रवः। अन्योऽन्यमुत्पीड़यत् स्तनद्वयम्, कु २,४०। उप, नि-संश्लेषः। पीड़नम्। हननम्। निपीड्य पादौ, र २,२३। निर्दयं निपीड्य, मा १६,३। निर्—निष्पीड़नम्। आर्द्रवस्त्रादेर्निर्जलीकरणम्।

पील्—भ्वा, प। स्तम्भनम्।

पीव्—भ्वा, प। स्थौल्यम्।

पुक्—(युक्) भ्वा, प। प्रमादः।

पुट—तु, प। संश्लेषणम्।

पुटति। पुपोट। पुटिता। अपुटीत्। जुट् (क्रुप) चु, प। १दीप्तिः। २चूर्णीकरणम्। पोटयति। पुट, अदन्तः। चु, प। संसर्गः। पुटयति। पुटितः। पुटम्। पोटा।

पुट्—(चुट्) चु, प। अल्पीभावः।

पुड्—तु, प। त्यागः। उत्कर्षः।

पुडति। पुपोड। पुडिता। अपुडीत्।

पुण्—तु, प। धर्माचरणम्।

पुणति शुभं लोकः, दुर्गा। पोणिता। पुण (पृण)। पुण्यम्। निपुणः।

पुण्ट—पुटि (अजि) चु, प। दीप्तिः।

पुण्ड्—पुड़ि (मुड़ि) भ्वा, प। खण्डनम्। चूर्णनम्। पुण्डति। पौण्ड्रीत्येके। पुण्ड्रः। पुण्ड्रकम्। पुण्डरीकम्।

पुथ्—दि, प। हिंसा। पुथ् (क्रुप)।

चु, प। दीप्तिः। पुथति। पोथयति।

पुन्थ्—पुथि (क्रुथि) भ्वा, प। १हिंसा। २पीड़नम्। पुन्थति। युथि, युन्थति।

पुर्—तु, प। अग्रगमनम्। पोरिता।

पुल्—भ्वा, तु, चु, प। महत्त्वम्। पोलति। पुल्लति, वो। पोलयति। पुलकः। विपुलः।

पुष्—भ्वा, क्रया, प।

पोषणम्। भरणम्। वर्द्धनम्। उपचयः। लट् पोषति। पुष्णाति। पुष्णीतः। पुष्णन्ति। तृणं न पुष्णाति यशांसि पुष्यति प्रवारणैर्विश्रमनांसि पोषति। भृत्यांश्च यः पोषयतीप्सितैर्धनैः, कवि २१। ईप्सितव्याहृतयो विपरीतमर्थं न पुष्णन्ति (बोधयन्ति), कु ३, ६३। हि पुषाण। लिङ् पुष्णीयात्। लङ् अपुष्णात्। अपुष्णीताम्। अपुष्णन्। लिट् पुपोष। पुपुषतुः। पुपोषिथ। लावण्यमयान् विशेषान् पुपोष, कु १, २५। उत्कर्षं पुपुषुर्गुणाः, र ४, ११। लुट् पोषिता। लृट् पोषिष्यति। लुङ् अपोषीत्। अपोषिष्टाम्। सन् पुपोषिषति, पुपुषिषति। यङ् पोपुष्यते। पोपोष्टि। णिच् पोषयति। अपूपुषत्। पोषित्वा। ०पुष्य। पुषितः। पोषणम्। पोष्यः। पोषकः।

पुष्, दि, प। पोषणम्।

उपचयः। पुष्यति। स पुष्यतितरां त्वाम्, भ ४, २९। पुष्यति स्वां न शोभाम्, शकु, १, ८१। वर्षं पुष्यत्यनेकं सरयूप्रवाहः, र १६, ५८। देह-

मपुष्यः सुरामिषैः, भ १७, ७२। पुपोष। पोष्टा। पोष्यति। अपुषत्, पा ३, १, ५५। अस्मानपुषत् स्वपोषम्, भ ३, १३। पुपुक्षति। पुष्, चु, प। धारणम्। पोषयति आभरणम्। परपिण्डेनात्मानं पोषयामि, हितो। पुष्टा। पुष्टः। पुष्टिः। बलिपुष्टकुलादिबाल्यपुष्टैः पृथगस्मादचिरेण भाविततैः, मा २, ११६।

पुष्प्—दि, प। विकसनम्।

पुष्प्यति। शरदि पुष्प्यन्ति सप्तच्छदाः। पुपुष्प। पुष्पिता। पुष्पम्।

'पुस्—प्युस्' दि, प।

दाहविभागयोः।

'पुस्'—चु, प। उत्सर्गः।

पोसयति।

पुंस्—चु, प। १वर्जनम्। २मर्दनम्।

पुस्त्—चु, प। आदरानादरबन्धनेषु।

पू—पूङ्, भ्वा, दि, आ।

पूञ्, क्र्या, उ। पवनम्। पवित्रीकरणम्। शुद्धीकरणम्। पवते। पवसे हविः, भ ६, ६४। पूयते। पुनाति। पुनीते, पा ७, ३, ८०। होमाग्निधूमसुरभिः पवते मारुतो मृदुः। गोदावरीतरङ्गार्द्रः पुनाति भुवि यत्प्रजाः॥ कवि १८०। जाह्नवी नः पुनातु। हि पुनीहि। भागीरथि पुनीहि माम्। लिङ् पुनीयात्। पुनीत। लङ् अपुनात्। अपुनीत। लिट् पुपाव। पुपविथ। पुपुवे। लुट् पविता। लृट् पविष्यति। °ते। आशिषि, पूयात्। पविषीष्ट। लुङ् अपावीत्। अपविष्ट। सन् पूङ्, पिपविषते, पा ७, २, ७४। पूञ्, पुपूषति। °ते। यङ् पोपूयते। पोपोति। णिच् पावयति। अपीपवत्, पा ७, ४, ८०। पूङ्, पवित्वा, पूत्वा। पवितः। पूतः, पा १, २, २२। ७, २, ५१। सूनोऽपि गङ्गासलिलैः पवित्वा सहाश्वमात्मानम्, भ ३, १८। पूञ्, पूत्वा। पूतः, पा ७, २, ११। विनाग्नेः पूना यवाः। पूतिः। वपनम्। पवितुम्। पावकः। पवमानः। पवित्रम्। त्वदीयैश्चरितैर्महीधरः पावितः, कु ५, ३७। उद्—वस्त्रपूतत्वम्। द्रवाणामिव सर्वेषां शुद्धिरुत्पवनं स्मृतम्, स्मृतिः।

पूज—चु, प। पूजा। अर्चना।

सम्मानः। प्रशंसा। पूजयति। राजानं पूजयति, रत्ना १, १३३। पूजयामास। पूजयिता। पूजयिष्यति। अपूपुजत्। अपूपुजन् विष्टरस्राद्यमाल्यैः, भ २, १६। कर्मणि, पूज्यते। अपूजि। अपूजयिषाताम्, अपूजिषाताम्। पूजयित्वा। °पूज्य। पूजितः। पूजनम्। पूजा। पूजकः। पूजनीयम्। पूज्यम्। पूजयितव्यम्।

पूण्—'पुण्' (पुल्) चु, प।

राशीकरणम्। पूणयति धान्यम्, दुर्गा।

पूय्—पूयी, भ्वा, आ। १भेदः।

२दुर्गन्धः। पूयते। (ई) पूतः। पूयः।

पूर्—पूरी, दि, चु, आ।

आप्यायनम्। प्रीणनम्। पूरणम्। वर्द्धनम्। पूर्यते। पितॄन् पूरयति श्राद्धे पूर्यन्ते पितरस्तच्च, कवि १५१। पुपूरे, राज्ञः पुरो भूपतिभिः पुपूरे, राघवपाण्डवीय २, ३। निःस्वनैर्द्यौः पुपूरे, भ १४, ९९। वेणून् पुपूरिरे मुखमारुतैः, भ १४, २। पूरिता। अ-

पूरि। अपूरिष्ट, पा ३, १, ६१। अपूरिषाताम्। अपूरिषत। चु, पूरयति, पूरति। पूरय मधुरिपुकामम्, गीतगो ५, १४। कपीनां सङ्घाताः पूरयन्तो दिशः, भ ७, ३०। पूरयन्ति मनोरथान्, हितो। पूरित्वा, पूरयित्वा। ०पूर्य। पूर्णः। चु, पूर्णः। पूरितः, पा ७, २, २७। पूर्त्तिः। पूरणम्। पूरकः। उदरं शाकेनापि प्रपूर्य्यते, हितो।

पूर्व्—पुर्व (पर्व) भ्वा, प।

पूरणम्। पूर्व (गूर्द) चु, प। निवासः। निमन्त्रणम्, वो। पूर्वति, पूर्वयति। अयं वर्ग्यवान्तोऽपि।

पूल्—भ्वा, चु, प। राशीकरणम्।

पूलति, पूलयति। पूलः। पञ्चपूली।

पूष्—भ्वा, प। वृद्धिः। पूषति।

प्रतिक्षणं पूषति यस्य विक्रमः, कवि २१।

पॄ—(पॄ) भ्वा, प। १पालनम्।

२पूरणम्। पॄ, स्वा, प। प्रीतिः। प्रीणनम्। पृङ्, तु, आ। आयासः। व्यापारः। प्रायेणायं व्याङ्पूर्वः। लट् पिपर्त्ति। पिपृतः। पिप्रति। पृणोति। व्याप्रियते। धर्मे व्याप्रियते नित्यं पिपर्त्ति पृथिवीञ्च यः। पारयत्यर्थिनामाशाम्, कवि ३७। लङ् अपिपः। अपिपृताम्। अपिपरुः। अपृणीत्। व्याप्रियत। लिट् पपार। पप्रतुः। पप्रे। लुट् पर्त्ता। लट् परिष्यति। ०ते। लुङ् अपार्षीत्। अपार्ष्टाम्। अपार्षुः। अपृत। अपृषाताम्। सन् पुपूर्षति। ०ते। यङ् पेप्रीयते। पर्पर्त्ति। णिच् पारयति। अपीपरत्। पॄ, चु, प। परिपूरणम्। पारयति। पृत्वा। ०पृत्य। पृतः। परणम्।

पृच्—पृची, अदा, आ। सम्पर्कः।

संसर्गः। पृचि, पृज्, पृजि, इत्येके। पृक्ते। पृङ्क्ते। पपृचे। ०क्षे। पपृजे। ०क्षे। पृच्, पृची, रु, प। सम्पर्कः। संसर्गः। योगः। संश्लेषः। पृणक्ति। पृङ्क्तः। पृञ्चन्ति। हि पृङ्ग्धि। लङ् अपृणक्। अपृणग्धनुषा शरम्, भ ६, ३९। लिट् पपर्च। पपृचतुः। पर्चिता। पर्चिष्यति। अपर्चीत्। अपर्चिष्टाम्। पिपर्चिषति। परीपृच्यते। पर्चयति। पृच् (युज्) चु, प। १संयमनम्। बन्धनम्। २सम्पर्कः, वो। पर्चयति। पर्चति। (ई) पृक्तः। पृक्तस्तुषारैर्गिरिनिर्झराणाम्, र २, १३। सम्—सम्पर्कः। योगः। स्यन्दनौ समपृक्तेतामुभयोः (कर्मणि लङ्), भ १७, १०६। वागर्थाविव सम्पृक्तौ, र १, १। सम्पर्की। सम्पृक्ते नाभिशस्तैर्यः संपृणक्ति न पापिभिः। सम्पर्चयति न क्षुद्रैर्न सम्पर्चति वञ्चकैः॥ कवि २८। सम्पृक्ते मधुना चूर्णे भिषक्।

पृड्—तु, प। १सुखनः।

२प्रीणनम्, वो। पृडति। पर्डिता।

पृण्—तु, प। प्रीणनम्। पृणति।

पृथ्—चु, प। प्रक्षेपः। पर्थयति।

अपीपृथत्, अपपर्थत्, पा ७, ४, ७।

पृष्—पृषु, भ्वा, प। १सेकः।

२हिंसा। ३क्लेशः। पर्षति। पपर्ष। पृष्टः। पृषितामित्यौणादिकम्।

पॄ—भ्वा, क्रया, प। १पालनम्।

२पूरणम्। लट् पिपर्त्ति, पा ७, ४, ७७। पिपूर्त्तः। पिपुरति, पा ७, १, १०२। पिपर्मि। पिपूर्वः। पृणाति। पृणीतः।

पृणन्ति । लिङ् पिपूर्य्यात्, पृणीयात् । लङ् अपिपः । अपिपूर्त्ताम् । अपिपन्नः । अपृणात् । अपृणीताम् । अपृणन् । लिट् पपार । पपरतुः । पप्रतुः, पा ७,४,१२ । लुट् परीता, परिता । लृट् परीष्यति, परिष्यति । आशिषि, पूर्य्यात् । लुङ् अपारीत् । अपारिष्टाम् । अपारिषुः । अपारीत् स हतशेषान् प्लवङ्गमान्, भ १५, १०० । कर्मणि, पूर्य्यते । सन् पिपरीषति, पिपरिषति, पुपूर्षति । यङ् पोपूर्य्यते, पापर्त्ति । पृ, चु, प । पूरणम् । पारयति । अपीपरत् । पूर्त्वा । ॰पूर्य्य । पूर्त्तः, पा ८, २, ५७ । पूर्त्तिः ।

पेण् (पैण्) ।

पेल्—पेलृ, भ्वा, प । गतिकम्पयोः ।

पेव्—पेवृ, भ्वा, आ । सेवा ।

पेवते । अयं वर्य्यान्तोऽपि ।

पेष्—पेषृ, भ्वा, आ । प्रयत्नः ।

पेस्—पेसृ (पिसृ) भ्वा, प । गतिः ।

पै—भ्वा, प । शोषणम् ।

पायति । पपौ । पाता । पायात् । अपासीत् । णिच् पाययति, पा ७, ३, ३७ ।

पैण्—पैणृ, भ्वा, प । १गतिः ।

२प्रेरणम् । ३श्लेषणम् । ४पेषणम्, वो । पेणृ प्रैणृ लैणृ इत्येके । पैणति । संग्रामे शत्रुसेनां द्रविणवितरणैः पेणयत्यर्थिदौस्थ्यम्, कवि १८ ।

प्याय्—ओप्यायी, भ्वा, आ । वृद्धिः ।

स्फीतिः । लट् प्यायते । लिट् पिप्ये, पा ६, १, २८ । पिप्यिषे । लुट् प्यायिता । लृट् प्यायिष्यते । लुङ् अप्यायि । अप्यायिष्ट, पा ३, १, ६१ । अप्यास्त, वो । अप्यायिषाताम् । अप्यायिषत । समस्त्वप्यायि, भ ६, ३३ । भावे, प्याय्यते । अप्यायि । सन् पिप्यायिषते । यङ् पेपीयते, पा ६, १, २८ । णिच् प्याययति । अपिप्ययत् । प्यायित्वा । ॰प्याय्य । पीनः, पा ६, १, २८ । स्त्राङ्गे, पीनं मुखम् । अन्यत्र, प्यानः पीनः स्वेदः । सोपसर्गस्य प्रप्यानः, कौ ३५८ । आ—स्फौतिः । प्रीतिः । आपीनोऽन्धुः आपीनसुधः, कौ ३५८ । आप्यानस्कन्धकण्ठांसं रामम्, भ ५, ५६ । आप्यायन्ते यतः प्राप्य यज्ञभागान् दिवौकसः । प्रभूतधनसम्पत्तेराप्यायन्ते च यत्प्रजाः ॥ कवि १३५ । णिच्, (प्रीणनम्) आप्यायितोऽहं भवतामनेन वचनामृतेन, हितो । सम्—वृद्धिः । मन्युरस्य समापिप्ये, भ १४, ३२ । प्रप्यायनीयः, पा ८, ४, ३४ ।

प्युष्—प्युषिर्, दि, प, वो ।

१दाहः । २भागः । सान्तोऽपि । चु, प, वो । उत्सर्गः ।

प्यै—प्यैङ्, भ्वा, आ । वृद्धिः ।

प्यायते । पप्ये । प्याता । अप्यास्त ।

प्रच्छ्—तु, प । ज्ञीप्सा । जिज्ञासा ।

प्रश्नः । अनुयोगः । पृच्छति । अपृच्छज्जन्मनां सीताम्, भ ६, ८ । ब्राह्मणं कुशलं पृच्छेत्, मनु २, १२७ । लिट् पप्रच्छ । पप्रच्छतुः । पप्रच्छिथ, पप्रष्ठ । लुट् प्रष्टा । लृट् प्रक्ष्यति । आशिषि, पृच्छ्यात् । लुङ् अप्राक्षीत् । अप्राष्टाम् । अप्राक्षुः । कर्मणि, पृच्छ्यते । अपप्रक्षि । पृच्छ्यते पुनरसौ क्षितिपालः, महाना ३, १३ । सन् पिपृच्छिषति, पा १, २, ८ । ७, २, ७५ । यङ् परीपृच्छ्यते । पापृष्टि । णिच् प्रच्छयति । अपप्रच्छत् ।

पृष्ट्वा । ०पृच्छ्य । पृष्टः । पृष्टिः । प्रच्छनम् । प्रश्नः । प्रष्टुम् । प्रष्टव्यम् । शब्दप्राट् । आ—आमन्त्रणम् । प्रस्थानकाले सम्भाषणम् । आपृच्छते, की २४३ । व्रजापृच्छस्व सुहृज्जनम्, रामा । सर्वा मातृरापृच्छ्य प्रययुः, भारत ।

प्रथ्—भ्वा, आ । प्रख्यानम् ।

विख्यातिः । प्रसिद्धिः । प्रथते, प्रथते पृथुवद् यस्य पृथिव्यामुज्ज्वलं यशः । प्रथयन्ति प्रथीयांसो गुणाः, कवि १८९ । पप्रथे, तदाख्यया तीर्थं भुवि पप्रथे, र १५, १०१ । प्रथिता । प्रथिष्यते । अप्रथिष्ट । अप्रथिषाताम् । णिच् प्रथयति, घटादिः । अपप्रथद् गुणान् भ्रातुः, भ १५, ७२ । प्रथ्, चु, प । विख्यातिः । प्रक्षेपः, वो । प्राथयति । प्रथितम् । प्रथनम् । प्रथा । पृथिवी ।

प्रस्—भ्वा, आ । १विस्तारः ।

२ प्रसवः, वो । प्रसते । प्रसयति, घटादिः ।

प्रा—अदा, प । पूरणम् ।

प्राति । पप्रौ । प्राता । प्रेयात्, प्रायात् । अप्रासीत्, अप्रासीदिषुभिर्मुखम्, भ १५, ६८ । कर्मणि, पप्रे दोनैश्च मेदिनी, भ ४, ४२ । णिच् प्रापयति । क्त प्राणः । प्रातः । प्रायः ।

प्री—प्रीञ्, भ्वा, उ, वो । तर्पणम् ।

प्रीङ्, दि, आ । १प्रीतिः । २प्रीणनम् । ३कान्तिः, वो । प्रीञ्, क्रया, उ । १प्रीणनम् । २ प्रीतिः । ३ कामना । इच्छा । लट् प्रयति । ०ते । प्रीयते, यः प्रीयते प्रणयिषु प्रकृते न कृत्यात्, कवि ७ । प्रकामसमप्रीयत यज्वनां प्रियः, मा १, १७ । प्रीणाति । प्रीणीते । लिङ् प्रीणीयात् । प्रीणीत । लङ् अप्रीणात् । अप्रीणीत । लिट् पिप्राय । पिप्रिये । सुरान् पिप्राय पश्यतः, भ ५, १०४ । पितॄन् पिप्रियुः, भ ३, ३८ । नदीं पश्यन् पिप्रिये, र १५, ३० । लुट् प्रेता । लृट् प्रेष्यति । ०ते । लुङ् अप्रैषीत् । अप्रेष्ट । सन् पिप्रीषति । ०ते । यङ् पेप्रीयते । पेप्रयीति । पेप्रेति । णिच्—प्रीञ्, प्रीणयति, पा ७, ३, ३७ । अपिप्रीणत् । प्रीङ् प्राययति । प्रीञ्, चु, प । प्रीणनम् । प्रीणयति । केचित्तु, प्राययति । प्रयति । ०ते । यं प्राययन्ति कविसूक्तिरसायनानि, कवि ७ । प्रीत्वा । प्रीतः । प्रीतिः । प्रयणम् । प्रीणयित्वा । प्रीणितः । प्रीणनम् । प्रियः ।

प्लु—प्लुङ् (च्लुङ्) भ्वा, आ । गतिः ।

प्लवते । पुप्लुवे । प्लोता । अप्लोष्ट । मा न प्लोढ्वं द्रुतं वियत्, भ ९, ७७ । णिच् प्लावयति । अपुप्लवत्, अपिप्लवत् । पुप्लावयिषति, पिप्लावयिषति, पा ७, ४, ८१ । प्लावयन्ती वनैरशोकवनिका (आप्लुवाना), भ ८, ५९ ।

प्लुष्—(प्लुष्) प्रैष् (पैष्) ।

प्लेङ्खोल—अदन्तः । चु, प । चापल्लम् ।

प्लेष्—प्लेषृ (एषृ) भ्वा, आ । गतिः ।

प्रोथ्—प्रोथृ, भ्वा, उ । १पर्य्याप्तिः ।

परिपूर्णता । २ सामर्थ्यम्, दुर्गा । प्रोथति । ०ते । पुप्रोथ । पुप्रोथे । पुप्रोथास्मै न कश्चन, भ १४, ८४ । प्रोथिता । अप्रोथीत् । अप्रोथिष्ट । नाप्रोथीदस्य कश्चन, भ १५, ४० ।

प्लुच्—(भक्ष) भ्वा, उ। भक्षणम्।

प्लुव्—भ्वा, आ, वो। गतिः। प्लुतिः।

प्लुह्—भ्वा, आ। गतिः। प्लुहते।

प्लीह दीप्ताविति प्रदीपः। प्लीहा, प्लीहानौ।

प्ली—क्रया, प। गतिः। प्लिनाति।

प्लु—प्लुङ्, (च्युङ्), भ्वा, आ।

१गतिः। लम्फः। २उत्तरणम्। ३सन्तरणम्। प्लवते। अम्बुनि मज्जन्त्यलाबूनि ग्रावाणः प्लवन्ते, वीर १३। पुप्लुवे, मृगः पुप्लुवे, भ ५, ४८। पुप्लुवे सागरं नौकया, भारत। प्लौता। प्लोष्यते। अप्लोष्ट। अप्लोषाताम्। अप्लोष्ट च निरङ्कुशः, भ १५, ४६। सन् पुप्लूषते। यङ् पोप्लूयते। पोप्लोति। णिच् प्लावयति। अपुप्लवत्, अपिप्लवत्। पुप्लावयिषति, पिप्लावयिषति, पा ७, ४, ८१। (प्लावनम्) गङ्गा दक्षिणां दिशं प्लावयन्ती, भारत। अव—अधःपतनम्। आ—अवगाहनम्। स्नानम्। समासा जल आप्लुत्य, मनु ५, ७७। उद्—उल्लम्फः। तदन्नमुत्प्लुत्य भक्षयामि, हितो। उप—उत्पीड़नम्। पौलस्त्योपप्लुता देवाः, र १०, ५। परि—व्याप्तिः। चलनम्। वि—विप्लवः। विपत्तिः। ध्वंसः। अर्थं विप्लावयन्ति ये, मा २, ५६। सम्—वृद्धिः। दुःखानि संप्लवन्ते, उत्तर १४२।

प्लुष्-प्रुष्—प्लुषु, प्रुषु, भ्वा, प।

प्लुष्, दि, प। दाहः। भस्मीकरणम्। प्लुषु, प्रुषु, क्रया, प। १स्नेहनम्। २पूरणम्। ३सेवनम्। ४सेचनम्, वो। ५मोचनमिति भट्टमल्लः। ६दाहः। प्लोषति। प्रोषति। प्लुष्यति। प्लुष्णाति। प्रुष्णाति। पापान् प्लुष्णातुः वानलः (दहतु, धातूनामनेकार्थत्वात्), भ २०, ३४। मां प्लुषाण वह्ने, भ २०, ३७। पुप्लोष। पुप्लुषतुः। प्लोषिता। प्लोषिष्यति। अप्लोषीत्। दि, अप्लुषत्। अप्लोषीत्। व्युष दाहे प्लुष च इत्यत्र पाठः सिजर्थः, कौ १४३। (ड) प्लोषित्वा, प्लुष्ट्वा। °प्लुष्य। भ्वा प्लुष्टः, प्लुषितः। प्लोषणम्। प्लोषः।

प्लुस्—दि, प। १दाहः।

२भागः, वो। प्लुस्यति। अप्लुसत्, अप्लोसीत्, वो।

प्लेव्—प्लेङ्, भ्वा, आ, वो। सेवा।

प्सा—अदा, प। भक्षणम्।

प्सातिः। पप्सौ। प्साता। प्सास्यति। प्सायात्, प्सेयात्। अप्सासीत्, मांसमप्सासीत्, भ १५, ६। पिप्सासति। पाप्सायते। पाप्साति। प्सापयति। अपिप्सपत्। प्सातः। प्सानम्। प्रणिप्साति।

## (फ)

फक्क्—भ्वा, प। १मन्दगतिः।

२असद्व्यवहारः। फक्कति। पफक्क।

फण्—भ्वा, प। १गतिः। २निःस्नेहः।

अनायासोत्पत्तिः, दुर्गा। फणति। पफाण। फेणतुः, पफणतुः, पा ६, ४, १२५। फेणिथ, पफणिथ। फणिता। फणिष्यति। अफाणीत्, अफणीत्। पिफणिषति। पम्फण्यते। पम्फाणिष्ट। फणयति। गत्यर्थो घटादिः। निःस्नेहे, फाणयति। फणेर्घटादित्वं नेच्छन्तीति केचित्, कौ ८७। क्त, फाणटः, पा ७, २, १८। अनायासकृतं फाणटमित्यमरः।

फल्—त्रिफला, भ्वा, प । भेदः ।

फल्, भ्वा, प । १निष्पत्तिः । परिणामः । २निष्पादनम् । ३गमनम्, वो । लट् फलति, हृदयं मे फलति सहस्रधा, रामा । वाल्मीकिः फलति स्म दिव्या गिरः, अनर्घ ४ । मणीनांरविकरसंवलिताः फलन्ति भासः (वर्द्धन्ते), भा ५, ३८ । लिट् पफाल । फेलतुः, पा ३,४,१२२ । कल्पद्रुमा योगबलेन फेलुः, भ ३, ४२ । लुट् फलिता । लृट् फलिष्यति । लुङ् अफालीत् । अफालिष्टाम् । अफालिषुः । सन् पिफलिषति । पम्फुल्यते । पम्फुल्लति, पा ७, ४, ८७, ८९ । णिच् फालयति । अपीफलत् । फलित्वा । फलितः । त्रिफला, फुल्लः । फुल्लवान्, पा ८, २, ५५ । प्रफुल्लत । प्रफुल्ल इति फुल्लधातोरच् । संफुल्ल उत्फुल्ल इति पद्मनाभः । फुल्लमस्य फलितमस्य । पफुल्लतः प्रफलित इति प्रदीपः । प्रति—प्रतिविम्बनम् । सुखं प्रतिफलत्, नै ४, १३ । ज्योतिषि रौप्यभित्तिषु प्रतिफलति (सम्मूर्च्छति), मा ४, ६४ ।

फुल्ल—भ्वा, प । विकासः ।

फुल्लति । पुफुल्ल । अफुल्लीत् । प्रफुल्लम् । प्रफुल्लितः ।

फेल्—फेल्ल (पेल्ल) भ्वा, प । गतिः ।

## (ब)

बट् (वट्) बण् (वण्) बन् (वन्) ।

बठ्—भ्वा, प । १स्थौल्यम् ।

२सामर्थ्यम्, वो । बठति । बेठतुः ।

बद्—"बन्द्" भ्वा, प । स्थैर्य्यम् ।

बदति, बन्दति । बबाद । बेदतुः । बेदिथ । बद्यात् । अबदीत्, अबादीत् । बदरी ।

बध्—भ्वा, आ । १बन्धनम् ।

२चित्तविकारः । ३निन्दा, वो । (चित्तविकारे सन्) बीभत्सते, पा ३, १, ६ । बीभत्सते परक्षोभ्यः, कवि ५४ । बीभत्साञ्चक्रे । बीभत्सिता । अबीभत्सिष्ट । बीभत्सितः । बीभत्सा । बन्धनादौ, बधते । मा बधिष्ठा जटायुं माम् (मा बधीः), भ ६, ४१ । बध्, चु, प । बन्धनम् । बधः । बाधयति । बधति । बाधयन्ति न दुःखार्त्ताः केशान् यदरियोषितः, कवि ५४ ।

बन्ध्—क्रया, प । बन्धनम् ।

लट् बध्नाति । बध्नीतः । बध्नन्ति । यो बध्नाति रिपुं रणे, कवि ५४ । फलं बध्नन्ति नीतयः (जनयन्ति), र १२, ६९ । मतिं बधान सुग्रीवे, भ २०, २२ । लिङ् बध्नीयात् । लङ् अबध्नात् । अबध्नीताम् । अबध्नन् । तमबध्नाद् ब्रह्मपाशेन, भ ९, ७५ । लिट् बबन्ध । बबन्धतुः । बबन्धिथ । बबन्ध । अभिलाषे मनो बबन्ध, र ३, ४ । क्रमं बबन्ध क्रमितुम् (कृतवान्), भ २, ९ । लुट् बन्धा । लृट् भन्त्स्यति । आशिषि, बध्यात् । लुङ् अभान्त्सीत् । अबान्धाम् । अभान्त्सुः । कर्मणि, बध्यते । अबन्धि । व्रणैर्गुणत्वमापन्नैर्बध्यन्ते मत्तदन्तिनः, हितो । सन् बिभन्त्सति । यङ् बाबध्यते । बाबन्धि । बन्ध् (बध्) चु, प । बन्धनम् । बन्धयति । अबबन्धत् । बद्ध्वा । °बध्य । बद्धः । बद्धिः । बन्धनम् । बन्धः । बन्धुम् । बन्ध्वा । बन्धव्यम् । अनु—अनुबन्धः । सम्बन्धः । अपरित्यागः । अनुवर्त्तनम् । भङ्गेऽपि मृणालानामनुबध्नाति तन्तवः, हितो ।

भवतो मानसं किं स्नेहमनुबध्नाति, चण्डी। आ—बन्धनम्। करणम्। नि—निबन्धः। ग्रन्थनम्। रचना। निरोधः। मिर्—निर्बन्धः। आग्रहः। प्र—प्रबन्धः। प्रति—प्रतिबन्धः। प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः, र १, ८०। सम्—सम्बन्धः।

बभ्र् (वभ्र्) वर्ष् (वर्ष्)।

बस्ख (कस्ख्) भ्वा, प। हिंसागत्योः।

बर्ब् (कर्ब्) भ्वा, प। गतिः।

बर्ह् (बल्ह्) भ्वा, आ। १कथनम्। २हिंसा। ३आच्छादनम्। ४प्राधान्यम्। ५दानम्, वो। बर्हते। बल्हते। बर्ह्, बल्ह् (कृप) चु, प। दीप्तिः। बर्हयति। बल्हयति। बर्ह् (ब्रूष) चु, प। हिंसा। बर्हयति। दन्त्यादयोऽप्येते। निबर्हयति बुद्धारीन् तपसा यो निबर्हते, कवि २५२। निबर्हितांहसा, मा १। बर्हिणः। बर्हम्।

बल्—भ्वा, प। १जीवनम्। २धान्यावरोधनम्। ३समृद्धिप्रतिबन्धः। बल् (भल्) भ्वा, आ। १निरूपणम्। २हिंसा। ३दानम्। बलति। °ते। बबाल। बेले। बलिता। बल्, चु, प। जीवनम्। बलयति, घटादिः। अबीबलत्। चु, आ, वो। निरूपणम्। बालयते। बालः। बलम्।

बष् (वष्) बस् (वस्)।

बंह्—बहि, भ्वा, आ। वृद्धिः।

बंहते। बबंहे। दन्त्यादिश्च।

बाड्—बाडृ, भ्वा, आ। उन्मज्जनम्। स्नानम्। बाडते। दन्त्यादिश्च।

बाध्—बाधृ, भ्वा, आ। लोडनम्। प्रतिघातः। पीडनम्। प्रतिबन्धः। बाधते। दन्त्यादिश्च। मां बाधते नहि तथा विपिनेषु वासः, महाना ३, ३७। वीराणां समयः स्नेहक्रमं बाधते, उत्तर १८३। बबाधे। जनं न सत्त्वेष्वधिको बबाधे, र २, १४। भ १४, ४५। बाधिता। अबाधिष्ट। अबाधिषाताम्। बिबाधिषते। बाबाध्यते। बाबाद्धि। बाधयति। अबबाधत्। बाधित्वा। बाधितः। बाधनम्। बाधा। आ—दमनम्। आबाधन्ते मनसिजमपि कुमार्यः, शकु ३, १३९। प्र—परिपीडनम्। प्रबाधमानस्य जगन्ति, भ १२, २।

बाह् (वाह्) बिट् (विट्) बिड् (विड्)।

बिन्द्—बिदि, भ्वा, प। अवयवः।

बिन्दति। बिन्दुः।

बिल्—तु, चु, प। भेदः।

बिलति। बेलिता। बेलयति।

बिश्—बेश्, बिस्—बेस् (पिस्ट)

भ्वा, प। गतिः। बेशति। बेसतीत्येके।

बिस्—दि, प। प्रेरणम्। अबिसत्।

बीभ्—भ्वा, आ। श्लाघा। बीभते।

बुक्—भ्वा, प। भाषणम्।

भ्वादिरवः। चु, प। भाषणम्। बुक्कति। बुक्कयति। बुबुक्क। बुक्किता। अबुक्कीत्।

बुङ् (बुङ्)।

बुट्—चु, प, वो। हिंसा।

आबोटन्ति नखैरङ्गं सुखमाबोटयन्ति ये, कवि २२९।

बुड्—तु, प, वो। त्यागसंवरणयोः।

बुड़ति । बुबोड़ । बुड़िता । अबुड़ीत् ।

बुध्—भ्वा, प । १अवगमः ।

२विज्ञापनम, वो । बोधति । बुबोध । बोधिता । बोद्धा, वो । बुधिर्, भ्वा, उ । ज्ञानम् । बोधः । बोधति । ०ते । बोधते ब्रह्मविद्यां यः क्षत्रविद्याञ्च बोधति, कवि ५३ । बोधिता । (इर्) अबुधत् । अबोधीत् । अबोधिष्ट । बुध्, दि, आ । बोधः । ज्ञानम् । चेतनम् । जागरणम् । लट् बुध्यते । पटुत्वं सत्यवादित्वं कथायोगेन बुध्यते । ब्रह्मात्मानञ्च बुध्यते, कवि ५३ । लिट् बुबुधे । बुबुधिषे । अपि लङ्घितमध्वानं बुबुधे न बुधोपमः, र १, ४८ । लुट् बोद्धा । लृट् भोत्स्यति । नाभोत्स्यत भवानजम्, भ २१, १६ । आशिषि, भुत्सीष्ट, पा १, २, ११ । सीतां भुत्सीध्वम्, भ ७, १०० । लृङ् अबोधि । अबुद्ध, पा ३, १, ६१ । अभुत्साताम् । अभुत्सत । अभुद्धम् । अबोधि दुःखं त्रैलोक्यम्, भ ६, ३२ । अभूच्छीत् शनैरबोधि सः, भ १५, ५७ । कर्मणि, बुध्यते । अबोधि । सन् बुभुत्सते । यङ् बोबुध्यते । बोबोद्धि । णिच् बोधयति । अबूबुधत्, अबूबुधत् कस्मान्माम्, भ १५, ५ । (विकासः) सविता बोधयति पङ्कजान्येव, शकु ५, १५६ । बोद्धा । बुद्धः । बुद्धिः । बोधनम् । बोधः । बोद्धा । बोद्धव्यम् । बुधः । क्विप् भुत् । अनु—स्मरणम् । आर्य्ये सम्यगनुबोधितोऽस्मि, शकु १, १८ । अव—अवबोधः । ज्ञानम् । उद्—उद्बोधः । विकासः । जागरणम् । स्मरणम् । नि—ज्ञानम् । अवणम् । निबोध यज्ञाङ्गभुजामीप्सितम्, ३, १४ । निबोध वचनं मम, भारत । प्र—जागरणम् । विकासः । ज्ञानम् । तं वैतालिकाः प्राबोधयन्नुषसि वाग्भिः, र ५, ६५ । प्रबोधितः शासनहारिणा हरेः, र ३, ६८ । प्रबोधयत्यूर्ध्वमुखैर्मयूखैः, कु १, १६ । प्रति, वि—जागरणम् । सुप्ता मयैव भवती प्रतिबोधनीया, रत्ना ३, ४७ । सम्—ज्ञानम् ।

बुन्द्—(बुद्, बुन्ध्, चुन्द्)

उबुन्दिर्, भ्वा, उ । निशामनम् । अवणम् । प्रणिधानम् । बुन्दति । ०ते । बुबुन्द । ०न्दे । इति बुबुन्द सः, भ १४, ७२ । बुन्दिता । अबुदत् । अबुन्दीत् । बोदति । ०ते । बुन्धति । ०ते । बोधति । ०ते, वो । चुन्दति । ०ते । बुन्ध्, चु, प, वो । बन्धनम् । बुन्धयति ।

बुस्—दि, प । त्यागः । अबुसत् ।

बुल्—चु, प, वो । स्नानम् ।

बुस्त्—(पुस्त्) चु, प ।

आदरानादरयोः ।

बृह् (ब्रह्) ब्रंह् (ब्रंह्) ।

बृ—क्रया, प । १वरणम् ।

प्रार्थनम् । २भरणम् । बृञ् क्रया, उ । वरणम् । प्रार्थनम् । ब्रणाति । ब्रणीते, पा ७, ३, ८० । बबार । बबरे । बरिता, बरीता । बूर्य्यात् । बरिषीष्ट, बूर्षीष्ट । अबारीत् । अबारिष्टाम् । अबरिष्ट, अबूर्ष्ट । कर्मणि, बूर्य्यते । अबारि । सन् बिबरिषति । ०ते । बिबरीषति । ०ते । बुबूर्षति । ०ते । यङ् बोबूर्य्यते । बाबर्त्ति । णिच् बारयति । अबीबरत् । क्त बूर्णः । बूर्णिः ।

बेह् (वेह्) ब्युष् (व्युष्) ब्युस् (व्युस्) ।

ब्रण्—श्वा, प, वो । शब्दः । ब्रणति ।

ब्रू—ब्रूञ्, अदा, उ । कथनम् ।

लट् ब्रवीति, आह । ब्रूतः, आहतुः । ब्रुवन्ति, आहुः । ब्रवीषि, आत्थ । ब्रूथः, आहथुः, पा ८, २, ३५ । ब्रूथ । ब्रूते । ब्रूवते । लिङ् ब्रूयात् । ब्रवीत । लङ् अब्रवीत् । अब्रूत । लिङादौ वचादेशः, पा २, ४, ५३ । वच्धातुवत् रूपम् । उवाच । ऊचे । अबीचत् । ०त । इत्यादि ।

## (भ)

भच्, (भच्छ्) श्वा, उ । भच्, चु, प ।

भच्छणम् । भच्चति । ०ते । बभच्च । ०च्चे । भच्चिता । भच्चिष्यति । ०ते । अभच्चीत् । अभच्चिष्ट । भच्चयति । कथमेतन्मांसं सुलालितं भच्चयामि, हितो । भच्चयन्त्यस्थि भच्चन्ते मांसं भच्चन्ति शोणितम्, कवि १०२ । भच्चयामास । भच्चयिता । भच्चयिष्यति । अबभच्चत् । भच्चयित्वा । ०भच्च्य । भच्चितः । भच्छणम् । भच्चयितव्यम् ।

भज्—श्वा, उ । भक्तिः । सेवा ।

अनुरागः । आश्रयः । प्राप्तिः । विभागः । लट् भजति । ०ते । हरिम्भज । अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते, र ८, ४४ । भ्रातरं समं भजेरन् पैतृकं रिक्थम्, मनु ९, १०४ । लिट् बभाज । भेजतुः । भेजिथ, बभक्थ । भेजिव । भेजे । वनानि भेजतू राघवौ, भ ६, ७२ । भेजुः ककुभो दश, भ ६, १२३ । पुनरेव दोर्भ्यां भेजे, र २, २३ । लुट् भक्ता । लृट् भक्ष्यति । ०ते । आशिषि, भज्यात् । भक्षीष्ट । लुङ् अभाक्षीत् । अभाक्ताम् । अभाक्षुः । अभक्त । अभक्षाताम् । अभक्षत । कर्मणि, भज्यते । अभाजि । सन् बिभक्षति । ०ते । यङ् बाभज्यते । बाभक्ति । णिच् भाजयति । अबीभजत् । दिशोऽरीनभाजयत्, भ १७, ८० । भज्, चु, प । दानम् । भाजयति । भक्ता । ०भज्य । भक्तः । भक्तिः । भजनम् । भागः । भागी । भाजकः । भजनीयम् । भक्तव्यम् । वि—विभागः । अहोरात्रे विभजते सूर्यः, मनु १, ६५ । विभजन् दायं पित्र्यम्, मनु ९, १६४ ।

भञ्ज्—भन्जो, रु, प । व्यामर्दनम् ।

भङ्क्तः । लट् भनक्ति । भङ्क्तः । भञ्जन्ति । भनक्ति कामिनीनाञ्च दृष्ट्या मानमनङ्गवत्, कवि १३३ । भनक्त्यु पवनं कपिः, भ ९, २ । भनज्मि सर्वमर्य्यादाः, भ ६, ३८ । हि भङ्ग्धि । लिङ् भञ्ज्यात् । लुङ् अभनक् । स कन्याशुल्कं धनुरभनक्, भ ५, ३६ । लिट् बभञ्ज । बभञ्जतुः । बभञ्जिथ, बभङ्क्थ । बभञ्जिवलयानि, भ ३, २२ । लुट् भङ्क्ता । लृट् भङ्क्ष्यति । आशिषि, भज्यात् । लुङ् अभाङ्क्षीत् । अभाङ्क्ताम् । अभाङ्क्षुः । परिघमभाङ्क्षीत्, भ १०, १२१ । अस्य मा भाङ्क्षं प्रतिज्ञाम्, भारत । कर्मणि, भज्यते । अभाजि । अभञ्जि, पा ६, ४, ३३ । धनुरभाजि त्वया, र ११, ७६ । सन् बिभङ्क्षति । यङ् बभज्यते । बभङ्क्ति । णिच् भञ्जयति । अबभञ्जत् । भञ्जि, चु, प । दीप्तिः । भञ्जयति । दोर्भ्यां यो द्विषतां दर्पं भञ्जयत्यञ्जनेयवत्, कवि १३३ । भङ्क्ता, भक्ता, पा ६, ४, ३२ । ०भज्य । भग्नः । भञ्जनम् । भङ्गः । भङ्गुरम् ।

भट्—भ्वा, प । भृतिः । भरणम् ।

भटति । बभाट । बभटतुः । भटिता । भाटयति । भटयति । परिभाषणे घटादिः ।

भण्—(भण्) भ्वा, प । शब्दः ।

कथनम् । भणति । बभाण । बभणतुः । क्वीणा च हृष्टा च बभाण भैमी, नै ३, ६७ । भणिता । अभणीत्, अभाणीत् । अभाणीद् युक्तम्, भ १५, १५ । कर्मणि, भण्यते । अभाणि । बिभणिषति । बभण्यते । बभणिष्ट । भाणयति । अबीभणत्, अबभाणत् । भणितः । भणितिः । भाणः ।

भण्ड्—भड़ि, भ्वा, आ । १परिहासः ।

२सनिन्दोपालभनम् । निन्दायुक्तभर्त्सनम् । भड़ि, चु, प । १कल्याणम् । २प्रतारणम्, वो । भण्डते । भण्डयति । भण्डति । भण्डः । भाण्डम् ।

भन्द्—भदि, भ्वा, आ । १कल्याणम् ।

२सुखम् । ३प्रीणनम्, वो । भदि, चु, प, वो । कल्याणम् । भन्दते । भन्दयति । भन्दति ।

भर्त्स्—(तर्ज्) चु, आ । भर्त्सनम् ।

भर्त्सयते । ०ति, वो । न भर्त्सयति कर्मस्थान् न च भर्त्सयते परान्, कवि २४८ ।

भर्भ्—भर्व्—भ्वा, प । हिंसा ।

भल—भल्ल—भ्वा, आ । १कथनम् ।

२हिंसा । ३दानम् । ४निरूपणम्, वो । भल्, चु, आ । आभण्डनम् । निरूपणम् । भलते । बभल्ले । भल्लते । बभल्ले । भालयते । भालूकः । भल्लूकः ।

भष्—भ्वा, प । १भषणम् । स्वरजः । श्वादिरवः, दुर्गा । २खलोक्तिः, वो । ३भर्त्सनमिति प्राञ्चः । भषति श्वा । भषत्यन्यदोषं खलः । भषति श्वा पान्थम्, दुर्गा ।

भा—अदा, प । दीप्तिः । शोभा ।

भाति । अभात् । अभान् । अभुः । बभौ । बभतुः । बभिथ, बभाथ । बभिव । भाता । भास्यति । भायात् । अभासीत् । अभासिष्टाम् । अभासिषुः । बिभासति । बाभायते । बाभेति । भापयति । अबीभपत् । भातः । भातिः । भानम् । व्यति—व्यतिभावः । परस्परशोभाः । लोकयुगं दृशौ रमणीगुणा अपि व्यतिभाते, नै २, २२ । आ—आभा । ताः स्त्रियो दत्तसुता इवाबभुः, र ३, ३३ । प्र—प्रभा । क्ल, प्रभातम् । प्रभाता शर्वरी, रामा । प्रति—प्रतिभा । प्रतिभानम् । धर्मस्त्रिवर्गसारः प्रतिभाति, कु ५, ३८ । विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम्, र २, ४७ ।

भाज—अदन्तः । चु, प । पृथक्करणम् ।

भाम्—भ्वा, आ । क्रोधः । भाम—

अदन्तः । चु, प । क्रोधः । भामते । बाभाम्यते । बभाम्यते इति न्यासकारः ।

भाष्—भ्वा, आ । कथनम् ।

भाषते । बभाषे । तं वाक्यमिदं बभाषे । भाषिता । भाषिष्यते । भाषिषीष्ट । अभाषिष्ट । अभाषिषाताम् । अभाषिषत । कर्मणि, भाष्यते । अभाषि । तपोधनैरित्यमभाषिषातां तौ, भ २, २७ । बिभाषिषते । बाभाष्यते । बाभाष्टि । भाषयति । अबीभषत् । अबभाषत्, पा ७, ४, ३ । भाषित्वा ।

०भाष्य । भाषितः । भाषणम् । भाषा । भाष्यम् । अप—निन्दा । यो महतोऽपभाषते, कु ५, ४३ । अभि—सम्भाषणम् । नोदक्यया अभिभाषेत, मनु ४, ५७ । आ—आभाषणम् । आलापः । कथनम् । परि परिभाषा । सङ्केतः । परिभाषणम् । यः सनिन्द उपालम्भस्तत्र स्यात् परिभाषणमित्यमरः । प्रति—प्रत्युक्तिः । वि—विभाषा । विकल्पः । सम्—सम्भाषणम् । तान् दृष्ट्वा न सम्भाषसे, अमराष्टकम् २ ।

भास्—भास, श्वा, आ । दीप्तिः ।

भासते । बभासे, बभासे रूपं शरैः, भ १४, ८३ । भासिता । अभासिष्ट । भासयति । अबीभसत्, अबभासत्, पा ७, ४, ३ । अवभासन् स्वकाः शक्तीः, भ १५, ४२ । भाः । भासः । भास्वरः । भास्वरः ।

भिक्ष्—भ्वा, आ । १भिक्षा ।

याच्ञा । २लाभः । ३लोभोक्तिः । ४क्लेशः, दुर्गा । भिक्षते । गुरोः कुले न भिक्षेत, मनु २, १८४ । भिक्षमाणो वनं प्रियाम्, भ ६, ९ । भिक्षितः । भिक्षा । भिक्षुः ।

भिद्—भिदिर्, रु, च । भेदः ।

विदारणम् । भङ्गः । विच्छेदः । त्यागः । लट् भिनत्ति । भिन्तः । भिन्दन्ति । भिन्ते । भिन्दाते । भिन्दते । भिनद्मि कुलपर्वतान्, भ ६, ३५ । सुभग त्वत्कथारम्भे भिनत्त्यङ्गानि साङ्गना, दर्पणः । दूत एव हि सन्धत्ते भिनत्त्येव च संहतान्, मनु ७, ६६ । हि भिन्धि । लिङ् भिन्द्यात् । भिन्दीत । लङ् अभिनत् । अभिन्ताम् । अभिन्दन् । अभिनः । अभिनत् । अभिन्त । समयमभिनत्, र ४५, ९४ । लिट् बिभेद । बिभेदिथ । बिभिदिव । बिभिदे, न कारणात् स्वाद् बिभिदे कुमारः, र ५, ३७ । लुट् भेत्ता । लृट् भेत्स्यति । ०ते । भेत्स्यत्यजः कुम्भमयोमुखेन, र ५, ५५ । आशिषि, भिद्यात् । भित्सीष्ट । लुङ् (इर्) अभिदत्, अभैत्सीत् । अभिदताम्, अभैत्ताम् । अभिदन्, अभैत्सुः । अभित्त । अभित्साताम् । अभित्सत । अभैत्सीत्तं शरैः, भ १५, ११७ । कर्मणि, भिद्यते । अभेदि । भिद्यते हृदयग्रन्थिः, भागवतम् । शुष्ककाष्ठञ्च मूर्खश्च भिद्यते न तु नम्यते । सन् बिभित्सति । ०ते । यङ् बेभिद्यते । बेभित्ति । णिच् भेदयति । अबीभिदत् । कृशलैर्विप्रैः कुन्तीपुत्रान् भेदयामः, भारत । भित्त्वा । ०भिद्य । भिन्नः । भित्तिः । भेदनम् । भेदः । भिदा । भेत्तुम् । भेत्ता । भिदुरः । भेद्यः । भिद्यो नदः । भेत्तव्यः । उद्—ऊर्ध्वभेदः । प्रकाशः । उद्भिन्नया रत्नशलाकया, कु १, २४ । यावन्नोद्भिद्यते स्तनौ, स्मृतिः । निर्—भेदः । प्रकाशः । आयूंषि त्वत्तु निर्भिद्य, भ ८, ६७ । रहस्यं निर्भिन्नम् । प्र—प्रभेदः । प्रति—भेदनम् । निराकरणम् । प्रत्यभेत्सुरवदन्त्य एव तमश्रुबिन्दुभिः, र १८, २२ । प्रतिभिद्य कान्तम्, मा ९, ५८ । सम्—मिश्रणम् । संश्लेषः । कदम्बसञ्जिन्नः पवनः, भ ७, ५ ।

भिन्द्—भिदि (विदि) श्वा, प । अवयवः ।

भिल्—(विल्) चु, प । भेदनम् ।

भी—जिभी, ह्वा, प । भयम् ।

लट् बिभेति । बिभीतः । बिभितः

पा ६, ४, ११५। बिभ्यति। न बिभेति नरेन्द्रेभ्यः, कवि १२१। लिङ् बिभीयात्, बिभियात्। लङ् अबिभेत्। अबिभीताम्, अबिभिताम्। अबिभयुः। बिभेतु स्त्रीभ्योऽपि, कु ३, ९। दैवाद् बिभीहि, भ २०, २७। लिट् बिभाय। बिभयाञ्चकार, पा ३, १, ३९। आमभावपक्षे बिभ्यतुः। बिभयिथ, बिभेथ। न बिभाय न जिह्राय, भ ५, १२। प्रबिभयाञ्चकार काकुत्स्थात्, भ ६, २। लुट् भेता। लट् बिभेति। लुङ् अभैषीत्। अभेष्टाम्। अभैषुः। मा भैषीः। मा भैः, इति पद्मनाभः। मा स्म भैषीः, भ ५, ५८। सन् बिभीषति। यङ् बेभीयते। बेभयीति, बेभेति। णिच् भाययति। शरैर्भीरुमभाययत्, भ ५, ५१। प्रयोजकाद् भये तु, भाषयते, भीषयते, पा ७, ३, ४०। १, ३, ६८। शत्रून् भीषयमाणः, भ ५, ५८। भीत्वा। भीतः। भीतिः। भयम्। भेतव्यम्। भीरुः। भीलुकः। भीमः। भीष्मः। भीषणः। भयानकः। भी, क्रया, प, वे। १भयम्। २भरणम्। भीनाति, भिनाति। भी, चु, प। भयम्। भाययति, भयति। दृभी भये इत्यत्र दृभीति धातुद्वयमिति रमानाथः।

भुज्—भुजो, तु, प। वक्रीकरणम्।

भुज्, रु, प (आ, अपालने, पा १, ३, ६६)। १पालनम्। रक्षणम्। २अभ्यवहारः। भोजनम्। उपभोगः। अनुभवः। लट् भुजति। भुनक्ति। भुङ्क्तः। भुञ्जन्ति। भुङ्क्ते। भुञ्जाते भुञ्जते। यो भुङ्क्ते भुवनं धर्मं यस्य धौर्न भुज्यलम्, कवि २५८। भुनक्ति पृथिवीं राजा। दृष्टो जनो दुःखशतानि भुङ्क्ते, दुर्गा। अर्धं स केवलं भुङ्क्ते यः पचत्यात्मकारणात्, मनु ३, ११८। रामां भुनक्ति बुभुजे न च भोक्ष्यतीशः, महाना २, ४९। लोट् भुनक्तु। भुङ्ग्धि। भुनजानि। भुङ्क्ष्व। लिङ् भुञ्जयात्। भुञ्जीत। लङ् अभुनक्। अभुङ्क्ताम्। अभुञ्जन्। अभुनजम्। अभुङ्क्त। अभुञ्जाताम्। अभुञ्जत। राज्यमभुनक्, र १२, १८। लिट् बुभोज। बुभोजिथ। बुभुजे। बुभुजे मेदिनीं बधूमिव, र ८, ७। लुट् भोक्ता। लट् भोक्ष्यति। °ते। आशिषि, भुज्यात्। भुक्षीष्ट। लुङ् अभौक्षीत्। अभौक्ताम्। अभौक्षुः। अभुक्त। अभुक्षाताम्। अभुक्षत। कर्मणि, भुज्यते। अभोजि। सन् बुभुक्षति। °ते। यङ् बोभुज्यते। बोभोक्ति। णिच् भोजयति। °ते, पा १, ३, ८७। अवभुजत्। °त। भुक्त्वा। °भुज्य। (ओ) भुग्नः, पा ८, २, ४५। भुक्तः। भुक्तिः। भोजनम्। भोगः। भोक्तुम्। भोक्ता। भोग्या पृथिवी। भोज्यमन्नम्। आ—आभोगः। परिपूर्णता। उप—उपभोगः। पय उपभुज्यते, र १, ६८। परि, सम्—सम्भोगः।

भुण्ड्—भुड़ि, भ्वा, आ। तोड़नम्। दारणम्। भेदः। भुण्डते। बुभुण्डे। भुण्डा इति प्रदीपकारः।

भू—भ्वा, प। १सत्ता। विद्यमानता। २उत्पत्तिः। सम्पन्नता। भावः। भू, भ्वा, ड, वो। प्राप्तिः। (प्राप्तिसम्पन्नजन्मस्विति भट्टमल्लः)। लट् भवति। °ते। भवते दुरितक्षयं यथोक्तैः क्रतुभिर्भावयते च नाकलोकम्। भवति चिदशैश्च पूजितो यस्तृणवद् भावयति

द्विषश्च सर्वान्। कवि ५०। यागात् सर्गो भवति, कौ २२। लोट् भवतु। ०ताम्। लिङ् भवेत्। भवेत। लङ् अभवत्। ०त। गर्भोऽभवद् भूधरराजपत्न्याः, कु १, १९। लिट् बभूव। बभूवतुः। बभूविथ। बभूविव। बभूवे, पा ६, ४, ८८। ७, ४, ७२। लुट् भविता। लृट् भविष्यति। ०ते। यस्मिन् क्षेप्स्यसि स न भविष्यति, भारत। आशिषि भूयात्। भविषीष्ट। लुङ् अभूत्। अभूताम्, पा २, ४, ७७। ७, ३, ८८। अभूवन्। अभूवम। अभून्नृपः, भ १,१। केकयीतो भरतोऽभूत्, भ १, २४। ब्राह्मणानां चरणक्षालने क्षणोऽभूत्, भारत। भावकर्मणोः, भूयते। बभूवे। भाविता, भविता। भाविष्यते, भविष्यते। भाविषीष्ट, भविषीष्ट। अभावि। अभाविषाताम। सन् बुभूषति। ०ते, पा १,२,९। यङ् बोभूयते, पा ३, १, २२। बोभवीति, बोभौति। णिच् भावयति। अबीभवत्, पा ७, ४, ८०। बिभावयिषति। भू, च्, प। १चिन्ता। २भिमश्रणम्। ३शुद्धिः। भावयति। भू, चु, आ। प्राप्तिः। भावयते। भवते। भवतीत्येके। भूत्वा। ०भूय। भूतः। भूतिः। भवनम्। भवः। भावः। भवितुम्। भविता। आद्यभविष्णुः। भूष्णुः। प्रभावुकः। अद्यश्वीनभावुकः। परिभवो। भव्यम्। ब्रह्मभूयम्। भवनीयम्। भवितव्यम्। भूः। अधिभूः। प्रतिभूः। स्वयम्भूः। विभुः। प्रभुः। शम्भुः। भुवनम्। अन्तर्—अन्तर्भावः। कर्मयोगे सर्वाण्यन्तर्भवन्ति, मनुः १२, ८७। आविस्—आविर्भावः। तिरस्—तिरोभावः। तूष्णीम्—तूष्णीम्भावः। न्यक्—न्यग्भावः। पुनर्—पुनर्भावः। प्रादुर्—प्रादुर्भावः। अधि—ऐश्वर्यम्। अनु—अनुभावः। न त्वं तेनान्वभाविष्टा नान्वभावि त्वयाऽप्यसौ। अनुभूतो मया चासौ तेन चान्वभविष्यहम्, अ ५, ३५। अभि—अभिभवः। जयः। न्यूनीकरणम्। अत्र भिर्नाभिभूयते, मनु ७, १७९। अभिभवति सर्वभूतानि तेजसा (अतिशेते), मनु ७, ५। कुलमधर्मोऽभिभविष्यति (प्राप्नोति), गौ १, ४०। अभ्यभूद्विलयं भ्रातुः, भ ६, ११७। उद्—उद्भवः। णिच्—कल्पना। मायां मयोद्भाव्य परीक्षितोऽसि, र २, ६२। परा—पराभवः। न्यूनीभावः। न्यूनीकरणम्। परि—अनादरः। मा मां महात्मन् परिभूः, भ १, २२। प्र—उत्पत्तिः। ऐश्वर्यम्। हिमवतो गङ्गा प्रभवति, पा १, ४, ३१। प्रभवाणि, पा ७, ४, १६। प्रभवति नहि दोषो भूरिभावे गुणानाम्, ज्योतिषम्। प्रति—प्रतिरूपत्वम्। प्रतिभूत्वम्। वि—ऐश्वर्यम्। णिच्—चिन्ता। सम्—सम्भवः। घटनम्। उत्पत्तिः। मिलनम्। भाग्यैतत् सम्भवति, हितो। सम्भूयाम्भोधिमभ्येति महानद्या नगापगा, मा २, १००। णिच् सम्भावनम्। अभिनन्दनम्। अवबोधः। चिन्ता। मानः। सत्कारः। समाश्वासनम्। बन्धुं न सम्भावित एव कैश्चपाशः (चिन्तितः), र ६, ७। धारां शितां रामपरश्वधस्य सम्भावयत्युत्पलपत्रसाराम् (मन्यते), र ६, ४२। सम्भावय चिरप्रसूढौ तातौ, वीर ६२। विशेन जायां सम्भावयामास, कु ३, ३७।

भृष्—भ्वा, (तसि) चु, प।
भूषणम्। भूषति। भूषयति। भृषयाङ्गम्, भ २०, १५। बुभूष। बभूषते कन्या स्वयमेव। भूषा। भूषणम्।

भृ—भृञ्, भ्वा, उ। भरणम्।

पारणम्। ग्रहणम्। प्राप्तिः। पूरणम्। २पोषणम्, वो। प्रतिपालनम्। ड,भृञ्, ह्वा, उ। १धारणम्। २पोषणम्। ३दानम्। लट् भरति। °ते। भरति कुम्भमङ्गिजनः, दुर्गा। यो भुजाभ्यां भुवो भारं भरते भरतोपमः। बिभर्त्ति च यशोराशिं भूयांसं यस्य भूरपि॥ कवि १२७। दरिद्रान् भर कौन्तेय, हितो। बिभर्त्ति। बिभृतः। बिभ्रति। बिभृते। बिभ्राते। बिभ्रते। हि, बिभृहि। आनिप्, बिभराणि। लिङ् बिभृयात्। बिभ्रीत। साध्वीं भार्य्यां बिभृयात्, मनु ९, ९५। लङ् अबिभः। अबिभृताम्। अबिभरुः। अबिभृत। सन्त्रासमबिभः, भ १७, १८। अबिभरुः शान्त्यै वारि मूर्द्धभिः, भ १७, ५३। लिट् बिभराञ्चकार। बभार। बभ्रुव, पा ७, २, १३। बिभराञ्चक्रे। बभ्रे। बभृषे। धुरं धरित्र्या बिभराम्बभूव, र १८, ४५। बलित्रयं बभार बाला, कु १, ३९। लुट् भर्त्ता। लट् भरिष्यति। °ते। आशिषि, भ्रियात्। भृषीष्ट। लुङ् अभार्षीत्। अभार्ष्टाम्। अभार्षुः। अभृत। अभृषाताम्। अभृषत। अभृढ्वम्। अभार्षीद् ध्वनिना लोकान्, भ १५, २४। कर्म्मणि, भ्रियते। अभारि। सन् भ्वा, बुभूर्षति। °ते। बिभरिषति। °ते, पा ७, २, ४९। ह्वा, बुभूर्षति। °ते। यङ् वेभ्रीयते। बर्भर्त्ति। णिच् भारयति। अबीभरत्। भृत्वा। °भृत्य। भृतः। भृतिः। भर्त्ता। भृत्यः। भार्य्या। भृत्या। भरणम्। भरः। भारः। भृत्। (ड) भृत्रिमम् (ट् वो) भरण्युः। अभृत्रिमपरिवारो, भ ४, ३७। सम्—सङ्कल्पः। सञ्चयः। वृद्धिः। परिपूरणम्। परिपोषणम्।

भृञ्—(भ्रञ्च्) भ्वा, उ। भञ्जनम्।

भृज्—भृजी, (ऋजि) भ्वा, आ।

भर्जनम्। पाकविशेषः। भर्जते, तपसा भर्जते पापम्, कवि ९७। बभृजे। भर्जिता। अभर्जिष्ट। (ई) भृक्तम्। भर्जनम्।

भृड्—(क्रुड), तु, कु, प। मज्जनम्।

भृश्—भृशु, दि, चु, प। भ्रंशः।

भृंश्—भृशि (अजि) चु, प। दीप्तिः।

भृ—क्रया, प। १भर्त्सना।

२पोषणम्। ३धारणम्। ४भर्जनम्, वो। भृणाति, कर्म्मबीजानि सर्व्वाणि योगाभ्यासाद् भृणाति यः, कवि ९७। बभार। बभरतुः। भरिता, भरीता।

भेष्—भेषृ, भ्वा, उ। भयगत्योः।

भेषति। °ते। देवेभ्योऽपि न भेषते।

भ्यस्—भ्वा, आ। भयम्। भ्यसते।

भ्रञ्च्—भ्रञ्च्, भ्वा, उ। भञ्जनम्।

भ्रण्—(अण्) भ्वा, प। शब्दः।

भ्रम्—भ्रमु, भ्वा, दि, प। १चलनम्।

पादविहरणम्। अनवस्थानम्। भ्रमणम्। पर्य्यटनम्। अस्मिन्नर्थे सकर्म्मकोऽकर्म्मकश्च। २भ्रान्तिः। लट् भ्रमति। भ्राम्यति, पा ३, १, ७०। कीर्त्तिर्भाम्यति यस्योर्व्यां गुणाः स्वर्गे भ्रमन्ति च, कवि २६२। भाम्यन्त्यभीताः परितः पुरं नः, भ १२, ७२। न जाने को हेतुर्भ्रमति विषमे भिक्षुक इव, दुर्गा। भ्रमतीव मे मनः, गी १, ३०। लिट् बभ्राम। बभ्रमतुः। भ्रेमतुः, पा ६, ४, १२४। चौरस्वामी स्वयं

सेडिति बभ्राम, कौ ५५। भ्रेमुः शिलोच्चयांस्तुङ्गान्, भ ७, ५५। लुट् भ्रमिता। लृट् भ्रमिष्यति। लुङ् अभ्रमीत्। अभ्रमिष्टाम्। दि, अभ्रमत। अभ्रमीत्, वो। सन् बिभ्रमिषति। यङ् बभ्रम्यते। बभ्रन्ति। णिच् भ्रमयति। अबिभ्रमत्। शक्तिमबिभ्रमत्, भ ११, ५३। भ्रमित्वा, भ्रान्त्वा। भ्रान्तः। भ्रान्तिः। भ्रमणम्। भ्रमः। भ्रामः। भ्रमिः। भ्रमी। भ्रमरः। उद्—उपरि भ्रमणम्। परिभ्रमणम्। मारीचोद्भ्रान्तहारीतान्, र ४, ४९। वि—विभ्रमः। सम्—सभ्रमः। भयम्।

भ्रंश्—भ्रंस्—भ्रन्श्, भ्रन्स् (ध्वन्स्)

भ्वा, आ। भ्रन्श्, भ्रश्, वो। दि, प। अवभ्रंसनम्। अधःपतनम्। भ्रंश्यते। भ्रंसते। भ्रश्यति, पा ६, ४, २४। भ्रंश्यते दुरितं राष्ट्रे प्रजाभ्यो यत्प्रभावतः। भ्रश्यत्परिपताकिनी, कवि १७६। भ्रश्यन्ति कर्णोत्पलयन्त्रयः, महाना १, ३९। बभ्रंश। ०शे। बभ्रंशेऽमी धृतेः, भ १४, ७१। संग्रामाद् बभ्रंशुः (पलायिताः), भ १४, १०५। भ्रंशिता। भ्रंशिष्यति। ०ते। भ्वा, अभ्रंशत्। ऊभ्रंशिष्ट। दि, अभ्रश्यत्। सुग्रीवोऽस्याभ्रश्यद् हस्तात्, भ १५, ५९। भावि, भ्रश्यते। अभ्रंशि। बिभ्रंशिषति। ०ते। बाभ्रश्यते। बाभ्रंष्टि। भ्रन्सु, बनीभ्रस्यते। बनीभ्रंसीति, पा ७, ४, ८४। भ्वा, बनीभ्रश्यते इति क्वचित्। भ्रंशयति। अबभ्रंशत्। भ्रंशित्वा। भ्रष्टा। भ्रष्टः। भ्रंशनम्। भ्रंशः। परि, प्र—च्युतिः। हानिः।

भस्ज्—तु, उ। पाकः। भर्जनम्। लट् भृज्जति। ०ते, पा ६, १, १६। तेजसारींश्च भृज्जति, कवि ८७। लिट् बभ्रज्ज, बभर्ज, पा ६, ४, ४७। बभ्रज्जिथ, बभ्रष्ट। बभर्जिथ, बभर्ष्ठ। बभ्रज्जिव, बभर्जिव। बभ्रज्जे, बभर्जे। बभ्रज्ज शोको रावणमग्निवत्, भ १४, ८६। लुट् भ्रष्टा, भर्ष्टा। लृट् भ्रक्ष्यति। ०ते। भर्क्ष्यति। ०ते। आशिषि, भृज्यात्। भ्रक्षीष्ट, भर्क्षीष्ट। लुङ् अभ्राक्षीत्, अभार्क्षीत्। अभ्राष्टाम्, अभार्ष्टाम्। अभ्राक्षुः, अभार्क्षुः। अभ्रष्ट, अभर्ष्ट। सन् बिभ्रक्षति। ०ते। बिभ्रज्जिषति। ०ते। बिभर्जिषति। ०ते, पा ७, २, ४९। यङ् बरीभृज्यते। बाभ्रष्टि, बाभर्ष्टि। चिच् भ्रज्जयति। अबभ्रज्जत्, अबभर्जत्। देहं बिभ्रक्षुरस्त्राग्नी, भ ५, ५७। लोकान् बिभ्रक्षुरिव तेजसा, भ ९, ३४। भृष्ट्वा। ०भृज्य। भृष्टः। भृष्टिः। भ्रज्जनम्, भर्जनम्। भ्रष्टुम्, भर्ष्टुम्।

भ्राज्—भ्राजृ (एजृ) टुभ्राजृ,

भ्वा, आ। दीप्तिः। शोभा। भ्राजते। बभ्राजे, भ्रेजे, पा ६, ४, १२५। भ्राजिता। भ्राजिष्यते। अभ्राजिष्ट। अभ्राजिषाताम्। अभ्राजिषत। अभ्राजिष्ट चयाग्निवत्, भ १५, २४। बिभ्राजिषते। बाभ्राज्यते। बाभ्राष्टि। भ्राजयति। अबिभ्रजत्, अबभ्राजत्, पा ७, ४, ३। अबभ्राजच्छक्तिं तस्मिन्, भ १५, ८३। अबभ्राजच्छस्त्रं रणे, भ १५, ८३। (टु) भ्राजथुः। भ्राजिष्णुः। टु भ्राजृ विभ्राट्। भ्राजृ विभ्राक्, कौ ८७, १३५।

भ्राश्—टुभ्राशृ, टुभ्रासृ।

टुभ्राशृ, टुभ्रासृ, भ्वा, आ। दीप्तिः। शोभा। भ्राश्यते, भ्राशते, भ्रास्यते,

भ्रासते । भ्लाश्यते, भ्लाशते । भ्लास्यते, भ्लासते, पा ३, १३, ७० । बभ्राशे । भ्रेशे, पा ६, ४, १२५ । उद्भ्राश्यन्ते परं लोके ये भिक्षाव्रतचारिणः । न दीना दुःखिताः केचिद् भ्रश्यन्ति यस्य मण्डले ॥ कवि १६३ ।

भ्री—क्रया, प । १भयम् । २भरणम् ।

भ्रिणाति 'भ्रीणाति', बिभ्राय । अभ्रैषीत् ।

भ्रुण्—चु, आ । १आशा । २विशङ्का ।

भ्रेज्—भ्रेजृ (एजृ) भ्वा, आ । दीप्तिः ।

भ्रेष्—भ्रेषृ, भ्लेषृ, भ्वा, उ । भयगत्योः ।

## (म)

'मङ्क्' (मस्क्) मच् (म्वच्) ।

मख्, मङ्ख्, मखि (ङखि) भ्वा, प ।

गतिः । मखति, मङ्खति ।

मङ्क्—मकि, भ्वा, आ । भूषणम् ।

गतिः, वो । ममङ्किरेऽस्राः, भ १४, १० ।

मङ्ग्—मगि (अगि) भ्वा, प । गतिः ।

मङ्घ्—मघि, भ्वा, प । भूषणम् ।

मघि (अघि) भ्वा, आ । १ गतिः । २आक्षेपः । निन्दा । ३आरम्भः । गत्वारम्भः । ४जवः । ५कैतवम् । ६अक्षक्रीड़ा, दुर्गा । मङ्घति । ०ते ।

मच्—भ्वा, आ । १दम्भः ।

२शाठ्यम् । ३उक्तिः । मचते । "मच्च मुच्च मुच ।"

मज्ज्—टु मस्जो, तु, प । शुद्धिः ।

स्नानम् । अवगाहनम् । मज्जनम् । मज्जति । ममज्ज । ममज्जतुः । ममज्जिथ, ममङ्क्थ । ममज्जिव । मङ्क्ता, पा ७, १, ६० । मङ्क्ष्यति । अमाङ्क्षीत् । अमाङ्क्ताम् । अमाङ्क्षुः । भावे मज्ज्यते । अमज्जि । मिमङ्क्षति । मामज्ज्यते । मामङ्क्ति । मज्जयति । अममज्जत् । उद्—उन्मज्जनम् । सरित्तो गज उन्ममज्ज, र ५, ४३ । नि—निमज्जनम् । एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जति, कु १, ३ । शोके न्यमाङ्क्षीत्, भ ३, २० । शाखिनो न्यमाङ्क्षुरम्बुधौ, भ १५, ३१ । मङ्क्ता, मङ्क्ता, पा ६, ४, ३२ । मग्नः । मज्जनम् । (टु) मज्जथुः । मङ्क्तम् । मङ्क्तव्यम् । मज्जनीयम् । साधुमक् । मज्जा । मद्गुः । मद्गुरः ।

मञ्च्—मचि, भ्वा, आ । १धारणम् ।

२ उच्छ्रायः । ३ पूजनम् । ४ दीप्तिः, वो । मञ्चते । निर्—नीराजनम् । तं निर्मञ्चय, नै ७, ४३ । मञ्चः ।

मञ्ज्—मिञ्ज्—मजि, मिजि (क्रुप) चु, प । दीप्तिः । मञ्जयति । मिञ्जयति । मजि, चु, प । शुद्धिः । मार्जनम्, वो ।

मठ्—भ्वा, प । मदनिवासमर्दनेषु ।

मठति । मठः । माठः ।

मण्—(अण्) भ्वा, प । शब्दः ।

मण्ठ्—मठि (कठि) भ्वा, आ ।

शोकः । मण्ठते । ममण्ठे ।

मण्ड्—मड़ि, भ्वा, प । भूषणम् ।

मड़ि (वड़ि) भ्वा, आ । १विभाजनम् ।

२वेष्टनम्, वो। मडि, चु, प। १भूषा। २हर्षः। मण्डति। °ते। मण्डयति। मण्डयन्ति गुणाः सर्वं यो गुणानेव मण्डति, कवि २५०। अममण्डत्। कपिसैन्यैरमण्डयत्, भ १०, १३। मण्डयित्वा। मण्डितः। मण्डनम्। वधूं मण्डयितारः, पा ३, २, १३५। मण्डकः। मण्डनः। मण्डलः। मण्डूकः।

मथ्—मथे, भ्वा, प। विलोड़नम्।

मथति। मनो मथति नारीणां, कवि ६२।

मद्—मदी, दि, प। १हर्षः।

२मत्तीभावः, वो। माद्यति, पा ७, ३, ७०। सर्वलोकातिशायिन्या विभूत्या नच माद्यति, कवि २४३। ममाद। मेदतुः। इतरा तु ममाद, भा १०, २७। मदिता। मदिष्यति। अमदत् (अमादीत् अमदीत्, वो)। मिमदिषति। मामद्यते। मामत्ति। (हर्षदैन्ययोः) मदयति। अन्यत्र, मादयति (चित्तविकारमुत्पादयति)। अमीमदत्। अमदयत् सहकारलता मनः, र ९, २९। मद्, चु, आ। तृप्तियोगः। तृप्तीकरणम्। मादयते, मनो मादयते यस्य योगाभ्यासरसायनम्, कवि २४३। मदित्वा। (ई) मत्तः, पा ८, २, ५७। मदनम्। मदः। मदनः। मादकः। मद्यम्। उद्—उन्मादः। चित्तविकारः। प्र—प्रमादः। अनवधानता। धर्मात् प्रमाद्यति स्वहितात् प्रलाद्यति, भ १८, ८। प्रमाद्यन्ति प्रमदासु विपश्चितः, मनु २, २१३।

मन्—भ्वा, प, वो। पूजा। गर्वः।

मनु, त, आ। ज्ञानम्। अवबोधः। मनति। मनुते, मनुते मनुतुल्योऽसौ प्रजामात्मजवत् प्रभुः। पितृवन्मन्यते तच्च मान्यं जनपदः सदा॥ कवि १५६। ममान। मेने। मनिता। मनिष्यति। °ते। अमनीत्, अमानीत्। अमत। अमनिष्ट। अमथाः। अमनिष्ठाः, पा २, ४, ७९। मन्, दि, आ। ज्ञानम्। अवबोधनम्। सम्भावनम्। मन्यते। आत्मानं मन्यते बलिनं बली, भ १, २५। को बहु मन्येत राघवम् (श्लाघेत), भ ५, ८४। न त्वा तृणाय मन्ये, पा २, ३, १७। मन्ये स विज्ञः, नै ३, ३२। मेने। मन्ता। मंस्यते। मंसीष्ट। अमंस्त। अमंसाताम्। अमंसत। अमंस्त स्थितिमन्तमन्वयम्, र २,२७। मिमंसते। मन्मन्यते। मन्मन्ति। मानयति। अमीमनत्। मन्, चु, आ। १स्तम्भः। २गर्वः। मानयते। मन, अदन्तः। चु, प, वो। धारणम्। मनयति। मत्वा। °मत्य। °मन्य इत्येके। मतः। मतिः। मननम्। मानः। मन्तुम्। मन्ता। मन्तव्यः। दर्शनीयमानी भार्य्यायाः। शूरमानी। शूरमन्यः। अनु—अनुमतिः। देवराय प्रदातव्या यदि कन्यानुमन्यते, मनु ९, ९७। राजन्यान् स्वपुरनिवृत्तयेऽनुमेने, र ४, ८७। अभि—अभिमानः। सम्मतिः। अव—अवमानः। अवज्ञा। अवामंस्त म तान् दर्पात्, भ १५, ६६। चतुर्दिगीशानवमन्य मानिनी, कु ५, ५३। सन्—सम्मतिः। पूजा। काले समन्यसेऽतिथिम्, भ ६, ६५। सममंस्त बन्धून्, भ १, २।

मन्त्र्—मन्त्रि, चु, आ। मन्त्रणा।

गुप्तपरिभाषणम्। मन्त्र्यते कृत्तस्य यां मन्त्र्यते, नै ३, १०७। अममन्त्रत। अनु, अभि—अभिमन्त्रणम्। मन्त्रकर-

णकसंस्करणम्। उपाक्रंतः पशुरसौ योऽभिमन्त्र्य व्रते हत इत्यमरः। आ—आमन्त्रणम्। कथनम्। प्रस्थानानुमतिप्रार्थनम्। सम्बोधनम्। निमन्त्रणम्। तमामन्त्र्य जगाम, भारत। आमन्त्र्यत संक्रुद्धः समितिम्, भ ९, ९८ आमन्त्रयेत तान् प्रह्वान्, भ १९, ७। नि—निमन्त्रणम्। तं न्यमन्त्रयत सम्भृतक्रतुः, र ११, ३२।

मन्थ्—भ्वा, क्रया, प। विलोड़नम्।

मन्थनम्। गाहः। संक्षोभः। मथि, माथि (कुथि) भ्वा, प। १हिंसा। २पीड़नम्। मन्थति, मान्थति। मथ्नाति। मथ्नीतः। मथ्नन्ति। दधि मथ्नाति घृतम्। मथ्नाति वादिनः शास्त्रे रणे मन्थति वैरिणः, कवि ६२। मां मथ्नातीव मन्मथः, भारत। लिङ् मथ्नीयात्। लङ् अमथ्नात्। तस्यामथ्नाच्चतुरो हयान्, भ १७, ४१। लिट् ममन्थ। ममन्थतुः। रथं ममन्थ सहयम्, भ १४, ३६। लुट् मन्थिता। लृट् मन्थिष्यति। मथ्यात्। मथि, मन्थ्यात्। लुङ् अमन्थीत्। अमन्थिष्टाम्। अमन्थीत् परानीकम्, भ १५, ४६। कर्मणि, मथ्यते। मथि, मन्थ्यते। अमन्थि। देवासुरैरमृतमब्धिनिधिर्ममन्थे। सन् मिमन्थिषति। यङ् मामथ्यते। ममन्थ्यते। णिच् मन्थयति। अममन्थत्। मथित्वा। मन्थित्वा। मथितः। मथि, मन्थितः। मन्थनम्। मन्थः।

मन्द्—मदि, भ्वा, आ। १स्तुतिः।

२मोदः। ३मदः। गर्वः। ४स्वप्नः। निद्रा। ५कान्तिः। ६गतिः। जड़ीभावः, वो। मन्दते, मन्दते यो न सुन्दरः, कवि १७६। ममन्दे। मन्दिता। अमन्दिष्ट। मन्दः। मन्दुरा। मन्दिरम्।

मभ्र्—(अभ्र्) भ्वा, प। गतिः। मब्ब्-(पब्ब्) भ्वा, प। हिंसा। मय्—(अय) भ्वा, आ। गतिः। मर्च्—(गर्ज) चु, प। शब्दः। मर्व्—भ्वा, प, वो। गतिः। मर्व्—(पर्व्) भ्वा, प। पूरणगत्योः। मल्—मल्ल्, भ्वा, आ। धारणम्। मलते। मल्लते। मलम्। मलिनम्। माला। आमलकी। परिमलः। मल्लिका। मल्लः।

मव्—मव्य्-भ्वा, प। बन्धनम्।

मवति। मव्यति। ममाव। मेवुः शृङ्खलादिभिः, भ ९, ९०। मविता। अमवीत्, अमावीत्। क्ष्विप् मूः, सुवौ।

मश्—मिश्—भ्वा, प। १शब्दः।

२रोषकृतशब्दः। ३रोषः, वो। मशति। मेशति। ममाश। मशकः। मिमेश। मेशिता।

मष्क्, मस्क् (ककि) भ्वा, आ। गतिः।

मस्—मसी, दि, प। १परिणामः।

२परिमाणम्। मस्यति। ममास। मेमतुः। मसिता। अमसत्, अमासीत्, वो। (ई) मस्तः। मासः। समौ, सम्यतीत्येके।

मह्—भ्वा, प। मह, अदन्तः।

चु, प। पूजा। महति। अमहीत्। महयति। नित्यं महति माहियों भक्त्या महयति द्विजान्, कवि ३४। मही। महः।

मंह्—महि (वहि) भ्वा, आ। वृद्धिः।

(अञ्जि) चु, प। दीप्तिः। मंहते। मंहयति। लक्ष्मीश्च मंहते, कवि ३४।

मा—अदा, प । दि, आ । मानम् ।

ह्वा, व्या । १परिमाणम् । २शब्दः । लट् माति । मायते । मिमीते । मिमाते । मिमते, पा ६, ४, ११३ । श्रुत्वा धर्मं मिमीते यः क्वचित् स्मृत्वा च मायते, कवि ७९ । यो मिमीते च मीमांसाम्, कवि १८१ । लङ् अमात् । अमुः, अमान् । अमिमीत । अमिमाताम् । अमिमत । पुरः सखीनामभिमीत लोचने, कु ५, १५ । लिट् ममौ । ममिथ, ममाथ । मम्से । तनौ ममुस्तत्र न कैटभद्विषो मुदः, मा १, २३ । लुट् माता । लृट् मास्यति । ०ते । आशिषि, मेयात् । मामीष्ट । लुङ् अमासीत् । अमासिष्टाम् । अमासिषुः । अमास्त । अमासाताम् । अमासत । कर्मणि, मीयते । अमायि । अमायिषाताम् । अमासाताम् । सन् मित्सति । ०ते, पा ७, ४, ५४, ५८ । यङ् मेमीयते, पा ६, ४, ६६ । मामेति । मामाति । णिच् मापयति । अमीमपत् । मित्वा, पा ७, ४, ४० । ०माय । मितः । मितिः । मानम् । अनु—अनुमानम् । मरुतां वेगभङ्गोऽनुमीयते, कु २, २५ । उद्—उन्मानम् । तोलनम् । उप—उपमानम् । वाक्यार्थेन वाक्यार्थ उपमीयते, दण्डी २, ४३ । निर्—निर्माणम् । निर्माति यः पर्वणि पूर्णमिन्दुम्, नै ३,३२ । सृष्टिस्थितिविलयमजः स्वेच्छया निर्मिमीते, मह्ना १, १ । ताभ्यां दिवं भूमिञ्च निर्ममे, मनु १, १३ । परि—परिमाणम् । उदरं परिमाति सुष्ठिना, नै २, ३५ । भूवनरचनामन्वथा निर्मिमाणे, अनर्घ १३ । प्र—प्रमाणम् । निश्चयज्ञानम् । न प्रमिमीतेऽनुभवाद्दृतेऽल्पधीः, मा १६, ४० ।

माङ्—माचि, काचि, भ्वा, आ । आकाङ्क्षा ।

'मात्'—माह, भ्वा, उ । मानम् ।

मान्—भ्वा, आ । १पूजा ।

२मीमांसा । विचारः, वो । पूजायां णिच् । पूजायां तिवादयो न स्युरिति रमानाथः । लट् मीमांसते शास्त्रार्थम्, पा ३, १, ६ । यश्च मीमांसते धर्मं मानयत्यर्थिनो द्विजान् । मानति स्वजनं सर्वं शास्त्रं मानयते परम् ॥ कवि ३२ । लिट् मीमांसाञ्चक्रे । लुट् मीमांसिता । लुङ् अमीमांसिष्ट । मान् चु, प । पूजा । प्रशंसा । मानयति । मानति । मानिनो मानयेः, भ १९, २४ । न मानयसि मामार्य्य कदतोम्, भारत । मानयित्वा । मानितः । माननम् । मानः । माननीयम् । मीमांसितः । मीमांसा ।

मार्ग्—चु, प । अन्वेषणम् ।

प्रतिसन्धानम् । मार्गयति । मार्गति । यो मार्गयति सन्मार्गं मार्गति क्षेममात्मनः । नृपतेः सुतसम्पदे वरममार्गीत्, भ १, १३ । मार्ग्, चु, प, वो । १संस्कारः । २सर्पणम् ।

मार्ज्—(गज) चु, प । १शब्दः । २शुद्धिः । मार्जनम्, वो । मार्जयति ।

माह्—माह्, भ्वा, उ । मानम् ।

माहति । ०ते । माह इत्येके । माहिता, माढा ।

मि—डुमिञ्, स्वा, उ । प्रक्षेपणम् ।

मीञ्, क्रया । हिंसा । बधः । लट् मिनोति । मिनुते । मीनाति । मीनीते । मिनोति मार्गणान् युद्धे मीनाति द्विषतां बलम् । यो मायां मीयते मान्यो

धर्मेण मयतेऽधमम् ॥ कवि ३६ । लङ् अमिनोत् । अमिनुत । अमीनात् । अमीनीत । लिट् ममौ, पा ६, १, ५० । मिम्यतुः । ममिथ, ममाथ । मिम्यिव । मिम्ये । लृट् माता । लृट् मास्यति । ०ते । आशिषि, मीयात् । मासीष्ट । लुङ् अमासीत् । अमासिष्टाम् । अमासिषुः । अमास्त । अमासाताम् । अमासत । कर्मणि, मीयते । अमायि । सन् मित्सति । ०ते, पा ७, ४, ५४ । यङ् मेमीयते । मेमयीति । मेमेति । णिच् मापयति । अमीमपत् । मित्वा, मीत्वा । ०माय । मितः । मितिः । मानम् । मातव्यम् । (ङु) मित्रिमम् । अनु—अनुमितिः । उप—उपमितिः । प्र—प्रमितिः । प्रमाणम् । प्रमीणाति, पा ८, ४, १५ ।

मिक्—तु, प । उत्पीड़ा । मिच्छति ।

मिज्ज—मिजि (क्रुप) चु, प । दीप्तिः ।

मिद्—मेद्, मिथ्, मेथ्, मिध्, मेध् ।

मिद्, मेद्, मिथृ, मेथृ, मिधृ, मेधृ, भ्वा, उ । १मेधा । २हिंसा । मेथृ, मेधृ । सङ्गमे, वो । मेदति । ०ते । मेथति । ०ते । मेधति । ०ते । प्रज्ञायै गृहमेधिनाम्, र १, ७ । मेदः । मेदकः । मेधा । मेधः ।

मिद्—जिमिदा, भ्वा, आ । दि, प ।

स्नेहनम् । स्निग्धीभावः । मेदते । मेद्यति, पा ७, ३, ८२ । किञ्चित् किल न मेदते । इति व्यायामशीलोऽसौ महाकायो न मेद्यति, कवि १३६ । मिमेद । मिमिदे । मेदिता । मेदिष्यति । ०ते । अमिदत् । अमेदिष्ट । दि, अमिदत् । अमेदीत्, वो । मिद्, मिदि, तु, प, वो । स्नेहः । मेदयति । मिन्दति । मिदित्वा, मेदित्वा । मिन्नः । प्रमिन्नः । प्रमेदितः पा ७, २, १७ । प्रमेदिताः सपुलाके (स्निग्धीभवितुमारब्धाः), भ ६, १७ । मेदः ।

मिल्—तु, प । संश्लेषणम् ।

मिल, तु, उ । सङ्गमः । मिलनम् । मिलति । ०ते । मिलति अङ्गमाकुञ्चयन्ती, महाना २, ४४ । मिलन्ति प्रत्यहं यस्य वाजिवारणसम्पदः, कवि १४५ । मिमेल । मिमिल्ले । मेलिता । मेलिष्यति । मिलिष्यतीति संचिन्तसारः । अयं कुटादिरिति क्रमदीश्वरः, दुर्गा । अमेलीत् । अमेलिष्ट । मेलयति । अमीमिलत् । मिलित्वा । मिलितः । मेलनम् । मिलनमिति पद्मनाभः । व्यालनिलयमिलनेन, गीतगो ४, २ ।

मिन्व्_(पिन्व्) मिश्, मश् ।

मिश्र—चु, प । अदन्तः । मिश्रणम् । सम्पर्कः । मिश्रयति । मिस्रयति, वो ।

मिष्—मिषु (जिषु) भ्वा, प । उ, वो ।

सेचनम् । मिष्, तु, प । स्पर्द्धा । मेषति । ०ते । मिषति । मिमेष । मिमिषे । मेषिता । अमेषीत् । अमेषिष्ट । मिषतामाच्छिनत्ति नः (पश्यताम्), कु २, ४६ । उद्—उन्मेषः । नि—निमेषः । उन्मिषन्निमिषन्नपि, गी ५, ६ । मत्स्यः सुप्तो न निर्मिषति, भारत ।

मिह्—भ्वा, प । सेचनम् । चरणम् ।

मेहति । मिमेह । मिमेहिथ । मिमेह रक्तम्, भ १४, १०० । मेढा । मेक्ष्यति । अमिक्षत् । मिमिक्षति । मेहयति । मीढः । मेहनम् । मेढ्रः ।

मी—मीङ्, दि, आ । हिंसा ।

मीयते । मिम्ये । मेता । मेष्यते ।

अमेष्ट। निक्षते। क्त, मीनः। मी, चु, प। गतिः। मायययति। मयति। मेता। न चानुमाययत्यन्यस्त्रस्य यच्चेतसि स्थितम्, कवि १४३। मी, क्रया (मि)।

मीम्—(द्रम) श्वा, प। गतिशब्दयोः।

पशवोऽपि न मीमन्ति यद्दृशे दुःखपीड़िताः। कवि १८१।

मील्—श्वा, प। निमेषः। सङ्कोचः।

मीलति। मीलन्ति रिपुनारीणां मुखपङ्कजवनानि च, कवि। मिमील। तस्या मिमीलतुर्नेत्रे, भ १४, ५१। मीलिता। मीलिष्यति। अमीलीत्। मिमीलिषति। मेमील्यते। मेमील्यति। मीलयति। अमिमीलत्, अमीमिलत्, पा ७, ४, ३। मीलित्वा। ०मील्य। मीलितः। मीलनम्। उद्—उन्मीलनम्। उदयः। उदमीलीच्च लोचने, भ १५, १०२। चन्द्रोऽयमन्मीलति, महाना ४, २२। नि—निमीलनम्। मुद्रणम्। निमील्य नेत्रे महसा व्यबुध्यत, कु, ५, ५६। निमिमील नरोत्तमप्रिया (मसार), र ८, ३७। प्र—प्रमीला। तन्द्रा।

मीव्—(पीव्) श्वा, प। स्थौल्यम्।

मुच्—मुच्लृ, तु, उ। मोचणम्।

त्यागः। वियोगः। क्षेपणम्। वर्षणम्। विस्रंसनम्। बन्धनरहितीभावः, दुर्गा। लट् मुञ्चति, ०ते। सागरिकाया हस्तं मुञ्चति, रत्ना २, २०, १। लिट् मुमोच। मुमुचतुः। मुमुचिव्य। मुमुचे। धेनुस्तेषुमुमोच, र २। मुमुचुः खधपान्, भ ३, ५। (परिधाने) उष्णीषं मुमुचे, भ १४, ८५। लुट् मोक्ता। लृट् मोक्ष्यति। ०ते। मोक्ष्यते सुरवन्दीनां वेणीः, कु २, ६१। आशिषि, मुच्यात्। मुक्षीष्ट। लुङ् अमुचत्। अमुक्त। अमुक्षाताम्। अमुचत। शक्तिं तस्यामुचत्, भ १५, ५३। कर्मणि, मुच्यते। अमोचि। मुच्यन्तामभोषवः, शक्र १, २८। कर्मकर्त्तरि, महापातकिनस्तपसैव मुच्यन्ते किल्बिषात्ततः, मनु ११, २४०। तस्मान्मुच्ये, र १, ७३। सन् मुमुक्षति। ०ते। मोचते। मुमुक्षति वत्सं हाणः। मोचते मुमुक्षते वा वत्सः स्वयमेव, पा ७, ४, ७। यङ् मोमुच्यते। मोमोक्ति। णिच् मोचयति। अमूमुचत्। सुच्, चु, प। प्रमोचनम्। सर्वायसं करिणि मुञ्चति कक्षपत्रं यच्च प्रमोचयति पाप्रचयञ्च कार्ये, कवि ४८। मुक्ता। ०मुच्य। मुक्तः। मुक्तिः। मोचनम्। मोक्षा। मुक्। अव—उन्मोचनम्। आ—परिधानम्। आमुञ्चद्वर्म, भ १७, ६। आमुञ्चतीवाभरणम्, र १३, २१। उद्—उन्मोचनम्। विभूषणान्यमुमुचुः, भ ३, २२। निर्—उत्कर्त्तनम्। मुक्तिः। चर्मनिर्मोचनेऽपि वा, स्मृतिः। सेयं रामभद्रतेजसा एनसो निरमुच्यत, वीर ६। प्र—मुक्तिः। पापात् प्रमुच्यते, मनु ११, २३०। प्रति—परिधानम्। प्रत्यर्पणम्। तरङ्गं प्रतिमोक्तुमर्हसि, र ३, ४७। वि—विमुक्तिः। त्यागः। पुण्या वाचो विमुञ्चथ। नादान् विमुञ्चति, भारत।

मुच्—मुञ्ज् (मच) मुक्ष् (वृक्ष)।

मुज्—मुज्, मुजि (गुज) श्वा, प।

चु, प, वो। १शब्दः। २मार्जनम्, वा। मोजति। मुञ्जति। मोजयति। मुञ्जयति।

मुट्—श्वा, प। मर्दनम्।

मुट्, तु, प। १आक्षेपः। २प्रमर्दनम्।

मोटति । मुटति । मुटति द्विषतां दर्पं तेषां खड्गञ्च मोटति । यो मोटयति राष्ट्रेषु तत्कौर्त्याऽमरमण्डपान् ॥ कवि १०४ । मुमोट । मोटिता । अमोटीत् । तु, मुटिता । अमुटीत् । मोटयति । मोटति, वो । स मे संसारारिपुं परिमोटयतु, छन्दो । मुटि, मुण्टति, वो । मुड्, मोडति इति कश्चित् ।

मुण्—तु, प । प्रतिज्ञा । मोणिता ।

मुण्ठ्—मुठि, भ्वा, आ ।

पालनापस्तयोः । मुण्ठते ।

मुण्ड्—मुडि, भ्वा, प । खण्डनम् ।

केशमुण्डनम् । मुण्ड्, भ्वा, प । मर्दनम् । पीड़नम् । मुड़ि, भ्वा, आ । मार्जनम् । शुद्धिः । मज्जनम् । मुण्डति । °ते । मुण्डितः । मुण्डनम् । मुण्डी । मुण्डः ।

मुद्—भ्वा, आ । हर्षः । चित्तोत्साहः ।

मोदते, अत्यन्तं गन्धमाघ्राय मोदन्ते तत्पुरस्त्रियः, कवि २१७ । मुमुदे । स्वभावान् गोपाङ्गनानां मुमुदे विलोक्य, भ २, १५ । मोदिता । मोदिष्यते । मोदिष्ये कस्य सौख्यैः, भ १६, २४ । अमोदिष्ट । अमोदिषाताम् । मुमोदिषते । मुमुदिषते । मोमुद्यते । मोमोत्ति । मोदयति । अमूमुदत् । मोदयध्वं रघूत्तमम्, भ ७, १०१ । मुद्, चु, प । संसर्गः । मिश्रणम् । मोदयति शत्रून् घृतेन । मोदयन्ति यदुद्याने मारुतं पुष्परेणवः, कवि १०७ । मोदित्वा, मुदित्वा । °मुद्य । मुदितः । मोदितः, पा १, २, २१ । मोदनम् । मोदः । मुद्, मुद्रा । मुदिरः । अनु—अनुमोदनम् । पाकशासनो रामभद्रस्याभिषेकमनुमोदते, वीर ११७ । के द्यूतमन्वमोदन्त के चैतत् प्रत्यषेधयन्, भारत । प्र—हर्षः । प्रमुदितवरपद्मम्, र ६, ८६ ।

मुर्—तु, प । वेष्टनम् । मोरिता ।

मुर्छ् (मूर्छ्) मुर्व् (मूर्व्) मुल् (मूल्) ।

मुष्—क्र्या, प । स्तेयम् । चौर्य्यम् ।

लुण्ठनम् । वञ्चनम् । लट् मुष्णाति । मुष्णीतः । मुष्णन्ति । तस्य मुष्णाति यः शिरः, कवि ११५ । दैवं प्रज्ञां मुष्णाति, भारत । विषयबाहुल्यं कालविप्रकर्षञ्च नः स्मृतिं मुष्णाति, वीर ६६ । हि, मुषाण । मुषाण रत्नानि, मा १, ५१ । लिङ् मुष्णीयात् । लङ् अमुष्णात् । लिट् मुमोष । मुमुषतुः । लुट् मोषिता । लृट् मोषिष्यति । लुङ् अमोषीत् । सन् मुमुषिषति, पा १, २, ८, । यङ् मोमुष्यते । मोमोष्टि । णिच् मोषयति । अमूमुषत् । मुषित्वा, पा १, २, ८ । °मुष्य । मुषितः । मोषणम् । मोषः । मोषिता । मुट् । सैन्यरेणुमुषितार्कदीधितिः, र ११, ५१ । मुषित्वा धनदम् (वञ्चित्वा), भ ७, ६७ । शीघ्रं न यात यदि तन्मुषिताः स्थ, रत्ना ४, ४१ । परात्मीयविवेकञ्च प्रामुषात्, भ १७, ६० ।

मुस्—मुष्—दि, प । खण्डनम् ।

मुस्यति । मुष्यति, वो । मुष्यति दुःखं यः, कवि ११५ । अमुसत् । °षत् । राघवस्यामुषत् कान्ताम्, भ १५, १६ । मुष् (मूष्) ।

मुस्त्—चु, प । राशीकरणम् ।

मुह्—दि, प । वैचित्तम् ।

अविवेकः । मोहः । ज्ञानरहितीभावः । मुह्यति । धीरस्तत्र न मह्यति, गी २, १३ । मुमोह । मुमुहतुः । मुमोहिथ,

सुमोग्ध, सुमोढ। स शुशुवांस्तद्वचनं सुमोह्ह, भ १, २०। मोहिता, मोग्धा, मोढ़ा। मोहिष्यति, मोक्ष्यति। अमुहत्। मा मुहो मा रुषोऽधुना, भ १५, २६। सुमोहिषति, सुमुक्षति, सुमुक्षति। मोमुह्यते। मोमोग्धि, मोमोढि। मोहयति। असूमुहत्। मोहित्वा, मुहित्वा, मुग्ध्वा। मूढ्वा। मुग्धः। मूढ़ः। मोहः। मोहनम्।

मू—मूङ्, भ्वा, आ। बन्धनम्।

मूत्र—अदन्तः। चु, प। प्रस्रावः।

मूत्रयति। यङ् मोमूत्र्यते, कौ १०६।

मूर्च्छ्—मुर्च्छा, भ्वा, प। १मोहः।

२उच्छ्रायः। वृद्धिः। व्याप्तिः। मूर्च्छति। ज्योत्स्नाक्लेन मूर्च्छन्ति यन्नुणाः प्रपन्नाक्लने, कवि २३९। शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य न रंहः, र २, ३१। मूर्च्छन्त्यमी विकाराः प्रायेणैश्वर्यमत्तानाम्, शकु ५, ९५। मुमूर्च्छ। मूर्च्छिता। मूर्च्छिष्यति। अमूर्च्छीत्। तेनामूर्च्छीदसौ क्षतः, भ १५, ५५। मुमूर्च्छिषति। मोमूर्च्छ्यते। मूर्च्छयति। अमुमूर्च्छत् वीणावादनम्। वीणां मूर्च्छयित्वा, भगवतम्। मूर्त्तः। मूर्त्तवान्। मूर्त्त्वा। भावे, मूर्तं मूर्च्छितमनेन। आरम्भे, प्रमूर्त्तः। प्रमूर्च्छितः। मूर्च्छित इति तारकादित्वात्। मूर्च्छा। मूः। मुरौ।

मूर्व्—मुर्वी, भ्वा, प। बन्धनम्।

मूल्—भ्वा, प। उ, वो। प्रतिष्ठा।

स्थितिः। मूलति। ते। मुमूल। ले। मूलिता। मूल, मूल्, च, प। रोपणम्। मूलयति। मोलयति, वो। उद्—उत्पाटनम्। निर्—विनाशनम्। तृणानि नोन्मूलयति प्रभञ्जनः, हितो। उन्मूलितारः कपिकेतनेन, भा ३, १४। उन्मूलयति यः शत्रूनुन्मूलति तमांसि च, कवि २५१।

मूष्—मुष्, भ्वा, प। स्तेयम्।

मूषति। मोषति, यो मोषति परद्रव्यम्, कवि ११५। मूषिता। मोषिता। मूषकः। मूषिका।

मृ—मृङ्, तु, आ। प्राणत्यागः।

मरणम्। म्रियते, पा १, ३, ६१। नैकोऽपि म्रियते नरः, कवि १०५। ममार। मम्रतुः। ममर्थ। मम्रिव। मर्त्तासि। मरिष्यति। मृषीष्ट। अमृत। अमृषाताम्। अमृषत। अमृढ्वम्। मुमूर्षति। मेम्रीयते। मर्मर्त्ति। मारयति। अमीमरत्। अनु—अनुमरणम्।

मृक्ष् (म्रक्ष्)।

मृग—अदन्तः। चु, आ। मृग्—

दि, प। अन्वेषणम्। मृगयते, मृग्यति। यस्मिन् मृगयते नित्यं जनो धनम्, कवि ९०। रामो मृगं मृगयते वनवीथिकासु, महाना ३, ५६। मृग्यतीति कण्ड्वादिः, कौ १८४। मृग्यन्तः पदवीं तथात्वकरुणा व्याधा न मुञ्चन्ति माम्, दुर्गा।

मृज्—मृजू, अदा, प। शुद्धीभावः।

शुद्धीकरणम्। मार्जनम्। लट् मार्ष्टि, पा ७, २, ११४। मृष्टः। मृजन्ति, मार्जन्ति। मार्ष्टि तीर्थोदकैर्नित्यम्, कवि ५५। हि, मृड्ढि। लिङ् मृज्यात्। लङ् अमार्ट्। अमृष्टाम्। अमृजन्, अमार्जन्। लिट् ममार्ज। ममृजतुः, ममार्जतुः। ममा-

जिय, ममार्ष्ट । खड्गान् ममार्जुश्च मसृजुश्च परश्वधान्, भ १४, ८२ । लुट् मार्जिता, मार्ष्टा । लृट् मार्जिष्यति, मार्क्ष्यति । लुङ् अमार्जीत्, अमार्क्षीत् । अमार्जिष्टाम्, अमार्ष्टाम् । अमार्जिषुः, अमार्क्षुः । अमार्जीद् भल्लतोमरम् । अमार्क्षीच्चासिपत्त्रादीन्, भ १५, १११ । कर्मणि, मृज्यते । अमार्जि । सन् मिमार्जिषति, मिमृक्षति, मिमार्क्षतीत्येके । यङ् मरीमृज्यते । मर्मार्ष्टि । णिच् मार्जयति । अमीमृजत्, अममार्जत् । मृजू, चु, प । १शौचम् । २भूषणम् । मार्जयति । मार्जति, मार्ज त्यालेपनेर्हिजान् । यो मार्जयति मास्राज्यं श्रियश्चापत्यवाच्यताम्, कवि ५५ । मार्जिता, मार्ष्टा । मार्जित्वा, मृष्ट्वा । ०मृज्य । मृष्टः । मार्ष्टिः । मार्जनम् । मृज्या । मार्जितुम्, मार्ष्टुम् । मृज्यः, मार्ग्यः । मन्युस्तस्य त्वया मार्ग्यो मृज्यः शोकश्च तेन ते, भ ६, ५६ । परि, वि, सम्—शोधनम् । मलापनयनम् । वाचं त्यागेन पत्त्रगाः परिमार्ष्टुम्, र १४, ३५ । जलेन लोचने प्रमृज्य, र ३, ४१ । अयशः प्रमृष्टम्, र ६, ४१ । आवासे सिक्तसंमृष्टे, भ ५, ८० ।

मृज्—मृज्, भ्वा, प । शब्द इत्येके ।

मृड्—(मृड्) तु, प । १सुखनः । मधुरध्वनिः । २हर्षः, वो । मृड् (मृद्) क्रया, प । १क्षोदः । मर्दनम् । २हर्षः । मृडति । मृड्णाति । श्रिया मृड़ति मृड्णाति सरस्वत्या च यः सदा, कवि २७१ । ममर्ड । ममृडतुः । मर्डिता । अमर्डीत् । मृडित्वा, पा १, २, ७ । मृडितम् । अमृडित्वा सहस्राक्षम्, भ ७, ८६ । मृड़ः ।

मृण्—तु, प । हिंसा । मर्णिता ।

मृणति वारणान्, कवि १०५ । मृणालम् ।

मृद्—क्रया, प । क्षोदः । मर्दनम् । चूर्णीकरणम् । मृद्नाति, मृद्नानि द्विषतां दर्पं यो भुजाभ्यां भवः पतिः, कवि १४४ । हि, मृदान । मृद्नीयात् । अमृद्नात् । बलान्यमृद्नात्, र १, ८५ । ममर्द । ममृदतुः । मर्दिता । मर्दिष्यति । अमर्दीत् । अमर्दिष्टाम् । अमर्दिषुः । तानमर्दीत्, भ १५, ३५ । मिमर्दिषति । मरीमृद्यते । मरीमर्त्ति । मर्दयति । अममर्दत्, अमीमृदत् । मृदित्वा, पा १, २, ७ । मृदितः । मर्दनम् । मर्दः । अभि, अव—आक्रमणम् । भङ्गः । दलनम् । वि—घर्षणम् । सम्—पीड़नम् । सच्चूर्णनम् ।

मृध्—मृधु, ध्वा, उ । आर्द्रभावः ।

मृश्—तु, प । आमर्दनम् ।

स्पर्शः । प्रणिधानम् । परामर्शः । चिन्ता । मृशति । ममर्श । ममृशतुः । ममर्शिथ । मर्ष्टा, स्रष्टा, पा ६, ५८ । मर्क्ष्यति, स्रक्ष्यति । अमार्क्षीत्, अस्राक्षीत्, अमृक्षत् । अमार्ष्टाम्, अस्राष्टाम् । अमृक्षताम्, कौ १०४ । कर्मणि, मृश्यते । अमर्शि । मिमृक्षति । मरीमृश्यते । मरीमर्ष्टि । मर्शयति । अमीमृशत् । मृष्ट्वा । ०मृश्य । मृष्टः । मर्शनम् । मर्शः । आ—स्पर्शः । आक्रमणम् । आमृष्टं नः परैः पदम्, कु २, ३१ । स गौरवं दशरथस्य बाहुमामृश्यन्, अनर्घ १२ । परा—परामर्शः । ज्ञानम् । वितर्कः । विवेकः । स्पर्शः । अभीष्टदेव-

तां ग्रन्थकृत् परामृशति, काव्यप्रकाशः। परामृशन् हर्षजडेन पाणिना, र ३, ६८। पूर्वोक्तं परामृशति। वि—परामर्शः। वितर्कः। प्रणिधानम्। रामप्रवासे व्यमृशन् न दोषम्, भ ३।

मृष्—मृषु, भ्वा, प। उ, वो।

१सेचनम्। २क्षमा। सहनम्। मृष्, दि, उ। क्षमा। मर्षति। °ते। मृष्यति। °ते। ममर्ष। ममृषे। मर्षिता। मर्षिष्यति। °ते। आर्षिषि, मृष्यात्। मर्षिषीष्ट। अमर्षीत्। दि, अमृषत्। अमर्षिष्ट। मिमर्षिषति। °ते। मरीमृष्यते। मरीमर्ष्टि। मृष्, चु, उ। क्षमा। तितिक्षा। मर्षयति। °ते। मृष, अदन्तः। चु, प। भ्वा, उ, वो। क्षमा। मृषयति। मृषति। °ते। मृषाबभूव। मृषिता। मृषिष्यति। °ते। अमृषीत्। अमृषिष्ट। मृषयति न नृपाणां मृष्यते चोद्धतानाम् अनुचितमनुमात्रं न द्विषां मर्षते यः। अपि शतमपराधान् मर्षति ब्राह्मणानां सितवसनभृतां यो मर्षयत्यागमज्ञः॥ कवि १५। (उ) मृषित्वा, मर्षित्वा, मृष्ट्वा, पा १, २, २५। पा १, २, २०। मृष्टम्। मर्षितः, पा २, २। °मर्षणम्। मर्षः। अप—निन्दा। अपमृषितं वाक्यम् (अविस्रष्टम्), कौ ३५४। परि—क्षान्तिः। परिमृष्यति, पा १, ३, ८२। मद्योने परिमृष्यन्तम् (असूयन्तम्), भ ८, ५२।

मृ—क्रया, प। हननम्।

मृणाति, युद्धे मृणाति शत्रूणामश्वान्, कवि १०५। ममार। ममरतुः। मूर्णः।

मे—मेङ्, भ्वा, आ। १विनिमयः।

२ प्रत्यर्पणम्। मयते। ममे। माता। माष्यते। अमास्त। मित्सते, पा ७, ४, ५४। मेमीयते। मामाति। मामेति। मापयति। अपमित्य। अपमाय, पा ६, ४, ७०। ३, ४, १९। यो लिङ्गेनानुमयते कृत्स्नमप्यविचेष्टितम्, कवि।

मेट्—मेत्—भ्वा, प, वो। उन्मादः।

मेथ्, मेदृ, मेध् (मिद्)।

मेप्—मेषृ, भ्वा, आ। गतिः।

मेव्—मेव्—(गेहृ) भ्वा, आ। सेवा।

मोक्ष्—चु, प। क्षेपः। मोचनम्।

मोक्षयति। मोक्षति, वो। सङ्गरेषु मोक्षयति यश्च शरं मनुष्ये, कवि ४८। त्वां शापान् मोक्षयिष्यति, भारत।

म्ना—भ्वा, प। आवृत्तिः। अभ्यासः।

पौनःपुण्येनानुशीलनम्। मनति, पा ७, ३, ७८। मनन्ति मानिनो यस्य यशः, कवि ७९। मम्नौ। मम्नतुः। म्नाता। म्नास्यति। म्नायात्, म्नेयात्, अम्नासीत्। अम्नासिष्टाम्। अम्नासिषुः। मिम्नासति। माम्नायते। माम्नाति। माम्नेति। म्नापयति। अमिम्नपत्। आ—आवृत्तिः। उक्तिः। आमनन् मन्त्रमुत्तमम्, भ १७, ३०। अपथ्यमायतौ लोभादामनन्त्यनुजीविनः, भ १८, ५। त्वामामनन्ति प्रकृतिम्, कु २, १३।

म्रक्ष्—मृक्ष्—भ्वा, प। म्रक्षणम्।

सङ्घातः। चु, प। १म्लेक्षनम्। अपशब्दः। २ म्रक्षणम्, वो। ३म्लेहनम्,

वो। स्रच्चति। स्रृच्चति। स्रच्चयति। स्रृच्चयति। स्रच्चितः। स्रच्चणम्। स्रच्च इत्येके। स्रच्चिका इति प्रदीपः।

स्रद्—भ्वा, आ। मर्दनम्।

स्रदते। स्रदन्ते चरणौ यस्य, कवि १४४। स्रदयति, घटादिः। असस्रदत्, पा ७, ४, ९५। स्रदा।

स्रु च्—स्रु च्—स्रुचु, स्रुन्चु, भ्वा, प।

गतिः। स्रोचति। अस्रुचत्। अस्रोचीत्, पा ३, १, ५८। स्रु च्चति। अस्रु च्चीत्। स्रु चित्वा, स्रोचित्वा, भुक्त्वा। स्रु क्तः।

स्रेट्—स्रेड्—स्रेटृ, स्रेडृ, भ्वा, प।

उन्मादः। स्रेटति। स्रेडति। आ—णिच्, आस्रेडनम्। पुनः पुनः कथनम्। एतदेव यदा वाक्यमास्रेडयति देवराट्, भारत।

स्लच्—चु, प। छेदनमित्येके।

स्लु च्—स्लु च्—स्लुचु, स्लुन्चु, भ्वा, प।

गतिः। स्लोचति। अस्लुचत्। अस्लोचीत्। स्लु च्चति। अस्लु च्चीत्।

स्लेक्—भ्वा, प। १अव्यक्तशब्दः।

अस्फुटशब्दः। २अपशब्दः। देश्योक्तिः, वो। असंस्कृतकथनम्, दुर्गा। स्लेक्ष्यति, विद्वान् न स्लेक्ष्यति धृतव्रतः, कवि १९७। मिस्लेक्ष। स्लेक्षिता। स्लेक्षयति। स्लेक्षितः। (अस्फुटशब्दे) म्लिष्टः, पा ७, २, १८।

स्लेट्—स्लेड्—भ्वा, प। उन्मादः।

स्लेव्—स्लेव (गेव) भ्वा, प। सेवा।

स्लै—(स्लै) भ्वा, प। हर्षक्षयः। कान्तिसंक्षयः। ग्लानिः। ग्लायति। मस्लौ। तौ पथि न मस्लतुः, र ११, ९। ग्लाता। ग्लास्यति। ग्लेयात्, ग्लायात्। अग्लासीत्। अग्लासिष्टाम्। ग्लानः। ग्लानिः। ग्लानम्।

## (य)

यच्—चु, आ। पूजा। यच्चयते।

शिवं यच्चयते भक्त्या, कवि २६७।

यज्—भ्वा, ड। १पूजा। यागः।

२सङ्गमः। ३दानम्। लट् यजति। ०ते। पशुना रुद्रं यजते। लिट् इयाज। ईजतुः, पा ६, १, १७। इयजिथ, इयष्ठ। ईजिव। ईजे। ईजुर्देवान् पुरोहिताः, भ १४, ९०। लुट् यष्टा। लृट् यक्ष्यति। ०ते। आशिषि, इज्यात्, पा ३, ४, १०४। यक्षीष्ट। लुङ् अयाक्षीत्। अयाष्टाम्। अयाक्षुः। अयष्ट। अयक्षाताम्। अयक्षत। अङ्गान्ययाक्षीदभितः प्रधानम्, भ १, १२। त्रिदशानयष्ट, भ १, २। कर्मणि, इज्यते। अयाजि। सन् यियक्षति। ०ते। यङ् यायज्यते। यायजीति। यायष्टि। णिच् याजयति। अयीयजत्। इष्ट्वा। ०इज्य। इष्टः। इष्टिः। यजनम्। यागः। इज्या। याजकः। यष्टा। यज्वा। यायजूकः। यियक्षुः। अक्षौषीत् क्षणवर्त्मानम्। समयष्टाक्षमण्डलम्, भ १५, ९६।

यत्—यती, भ्वा, आ। प्रयत्नः।

चेष्टा। यतते, यतते धर्म एवासौ, कवि ७५। द्रुतं यतस्व, भ १२, ४। येते। यतिता। यतिष्यते। यतिष्ये तद्विनिग्रहे, भ ५, २९। अयतिष्ट। अयतिषाताम्। अयतिषत। प्रनष्टुमयतिष्ट च, भ १५, ५८। यियतिषते। यायत्यते। यायत्ति। यत्, चु,

प । १निकारः । परिभवः । तिरस्कारः । ताड़नम्, वो । २उपस्कारः । अलङ्करणम् । यातयति, यातयत्यनिशं द्विषः, कवि ७५ । यतित्वा । (ई) यत्तम् । यतितमपि दृश्यते, इति संक्षिप्तसारम् । यत्नः । आ—वशीभावः । वयं त्वय्यायतामहे, वीर १५ । निर्—प्रत्यर्पणम् । धान्यधनयोः प्रतिदानम् । परिवर्त्तः । वैरनिर्यातनम् । निर्यातयति वैरच्च, कवि ७५ । प्र—प्रयत्नः । विजेतुं प्रयतेतारीन्, मनु ७, १०८ ।

यन्त्र्—यन्त्रि, च्, प । सङ्कोचः ।

बन्धनम् । यन्त्रयति । यन्त्रति । यन्त्रितः । यन्त्रणम् । यन्त्रणा । स्नेहकारुण्ययन्त्रितः, भारत । नि—बन्धनम् । नियमनम् । मेखलया नियन्त्रितमधोवासः, महाना २, ३ । क्रीयन्त्रणामानशिरे, र ७, २३ ।

यभ्—भ्वा, प । रमणम् ।

विपरीतरमणम् । यभति । ययाभ । येभतुः । येभिथ, ययब्ध । यब्धा । यप्स्यति । अयाप्सीत् । अयाब्धाम् । अयाप्सुः । यियप्सति । यायभ्यते । यायब्धि । याभयति । अयीयभत् ।

यम्—भ्वा, प । १उपरमः ।

विरतिः । निवृत्तिः । २बन्धनम् । यच्छति, पा ७, ३, ७७ । ययाम । येमतुः । येमिथ, ययन्थ । यन्ता । यंस्यति । अयंसीत् । अयंसिष्टाम् । अयंसिषुः, पा ७, २, ७३ । भावे, यम्यते । अयमि, अयामि । यियंसति । यंयम्यते । यंयन्ति । यम्, च्, प । १परिवेषणम् । अन्नादेरर्पणम् । २अपरिवेषणम्, वो । ३वेष्टनम् । यमयति (ब्राह्मणान् भोजयति) अन्नाद्युपसमर्पणे वेष्टने च घटादित्वम्, कौ ८६ । यमयति चन्द्रम् (परिवेष्टते), कौ १७४ । अन्यत्र, आयामयति (द्राघयति) यमयति, यामयति अन्नं द्विजाय गृह्णाति, दुर्गा । यमयति विमार्गात् प्रजा राजेति कश्चित् । नियमयसि विमार्गप्रस्थितानात्तदण्डः, शकु ५, १८ । एकहस्तयमिता मूर्द्धजाः, शकु १ । यत्वा । ०यत्य । ०यस्य, पा ६, ४, ३७, ३८ । यतः । यतिः । यमनम् । यमः । यामः । आ—आयामः । दीर्घीकरणम् । आयच्छते पादम्, पा १, ३, २८ । बाणमुद्यतमायंसीत् (उपसंहृतवान्), भ ६, ११६ । आयच्छति रणे मौर्वीमसौ यावद्विभित्सया, कवि २१३ । आयामयति, ०ते । पा १, ३, ८६ । व्या—व्यायामः । व्यायच्छमानयोस्तयोः, भ ६, ११८ । उद्—उद्यमः । अवगुरणम् । शक्तिमुदयच्छत्, भ १७, ६२ । प्रियपरशुरयं मे बाहुरुदयच्छमानः, अनर्घ १०२ । नित्यमुदयच्छमानाः स्मरसभोगकर्मसु नार्यः, भ ८, ४७ । उप—विवाहः । स्वीकारः । उपयच्छते कन्याम्, पा १, ३, ५६ । सीतां हित्वा दशमखरिपुर्नोपयेमे यदन्याम्, र १४, ८७ । लुङ् उपायत । उपायंस्त, पा १, २, १६ । शस्त्राण्युपायंसत जिघ्वराणि, भ १, १६ । नि—नियमः । शासनम् । मत्तद्विषस्त्वया नियम्याः, र ३, ४५ । सम्—बन्धनम् । संयमः । योगः । केशान् संयम्य, भारत । वानरं मा न संयसीः, भ ६, ५० । दास्या मालां संयच्छते कामुकः (दास्यै ददाति), पा २, ५५, ७५ ।

यस्—यसु, दि, प । प्रयत्नः ।

चेष्टा । यस्यति । यसति । संयस्यति ।

संयसति। अन्यत्र, प्रयस्यति। पा। ययास। येसतुः। यसिता। अयसत्। (अयसत्, अयसीत्, अयासीत्, वो)। यियसिषति। यायस्यते। यायस्ति। यासयति। अयीयसत्। (ङ) यसित्वा। यस्त्वा। यस्तः। आ—आयासः। खेदः। आयस्यसि तपस्यन्ती, भ ६, ६८। (णिच्) पीडनम्। आयासयति। ०ते, पा १, ३, ८९। प्र—प्रयासः। पुनः पुनः प्रायसदुत्पुवाय सः, नै १, १२५।

या—अदा, प। गमनम्। प्राप्तिः।

याति। अयात्। अयुः। अयान्, पा ३, ४, १११। ययौ। ययतुः। ययिथ, ययाथ। ययिव। याता। यास्यति। अयासीत्। अयासिष्टाम्। अयासिषुः। यियासति। यायायते। यायाति। यायेति। यापयति। अयीयपत्। यात्वा। ०याय। यातः। यानम्। यातव्यः। यायावरः। अति—अतिक्रमः। धनुः सबाणं कुरु मातियासीः, भ २, ५१। अनु—सहगमनम्। निधनेऽप्यनुयाति यः, मनु ८, १७। अपपलायनम्। अभि—आक्रमणम्। कुवेरादभियास्यमानात्, र ५, ३०। आ—आगमनम्। प्राप्तिः। उद्—उद्गयः। उद्गतिः। इति मतिरुदयासीत्, नै २, १०९। प्रत्युद्—प्रत्युद्गमनम्। प्र—प्रयाणम्। प्रायादरण्यम्, भ ३, ३६।

याच्—टुयाचृ, भ्वा, ङ। याच्ञा। प्रार्थना। भिक्षा। याचति। ०ते। याचतेमान् वरान् पितॄन्, मनु ३, २५८। यायाच। ०चे। ययाचुरभयम्, भ १४, १०५। याचिता। याचिष्यति। ०ते। अयाचीत्। अयाचिष्ट। कर्मणि, याच्यते वरं देवः। अयाचि। यियाचिषति। ०ते। यायाच्यते। यायाक्ति। याचयति। अययाचत्। याचित्वा। ०याच्य। याचितः। याचनम्। याच्ञा। (टु) याचयुः। याचित्रिमम्, वो। याचमानः शिवं सुरान्, भ ६, ८।

यु—अदा, प। १मिश्रणम्।

२अमिश्रणम्। युज्, क्रया, ङ। बन्धनम्। यौति। युतः। युनाति। युनीते। यौति काले कुलस्त्रीभिः क्षेत्रसन्तानहेतवे। युनाति यौवनस्थोऽपि न वेश्याबन्धकीजनैः॥ क्वि १८५। युयाव। युयुवे। यविता। यविष्यति। यूयात्। अयावीत्। क्रयादिरनिट्। योता। योष्यति। ०ते। अयौषीत्। अयोष्ट। कर्मणि, यूयते। अयावि। सन् यियविषति, पा ७, ४, ८०। युयूषति, पा ७, २, ४९। क्रया, युयूषति। ०ते। योयूयते। योयवीति। योयोति। यावयति। अयीयवत्। यु, चु, आ, वो। निन्दा। यावयते। युतः। युतिः। यवनम्। यवः। यवितुम्। अदा, याव्यम्, पा ३, १, १२६। योत्रम्।

युज्—युगि (जुगि) भ्वा, प। वर्जनम्।

युक् 'पुक्ष् मुक्ष्' भ्वा, प। प्रमादः।

युज्—दि, आ। समाधिः।

समाधानम्। चित्तवृत्तिनिरोधः। योग्यभावः, दुर्गा। युजिर्, रु, ङ। योगः। सङ्गतिः। युज्यते योगी। यद् येन युज्यते लोके बुधस्तत् तेन योजयेत्, हितो। त्रैलोक्यस्यापि प्रभुत्वं त्वयि युज्यते, हितो। न पादैः प्रष्टुं जगत्पूज्यमयुज्यतार्कः (नार्हत), मा

३, २। युनक्ति। युङ्क्तः। युञ्जन्ति। युङ्क्ते। युञ्जते। यमं युनज्मि कालेन, भ ६, ३७। हि, युङ्ग्धि। स्व, युङ्क्ष्व। लिङ् युञ्जात्। युञ्जीत। लङ् अयुनक्। अयुङ्क्त। लिट् युयोज। युयुजे। युयुजुः स्यन्दनानस्मै, भ १४, ८०। शब्दो महाराज इति तस्मिन् युयुजे, र १८, ४२। लुट् योक्ता। लृट् योक्ष्यति। ०ते। आशिषि, युज्यात्। युक्षीष्ट। लुङ् अयुजत्। अयौक्षीत्। अयुजताम्। अयौक्ताम्। अयुक्त। अयुक्षाताम्। कर्मणि, युज्यते। अयोजि। स मद्गुरुः क्रतोरस्यैवेष्ट फलेन युज्यताम्, र ३, ६७। अजिताधिगमाय स मन्त्रिभिर्युजे (सङ्गतः), र ८, १७। सन् युयुक्षति। ते। यङ् योयुज्यते। योयोक्ति। युज, चु, प। संयमनम्। बन्धनम्। चु आ, वो। निन्दा। योजयति। योजति। अयौचीत्। योजयते। युक्ता। ०युज्य। युक्तः। युक्तिः। योजनम्। योगः। योक्तव्यः। योज्यः। योग्यः। युनक्तीति युङ्। युज्यत इति युक्। की १६५। अनु—अनुयोगः। प्रश्नः। साक्षिणोऽनुयुञ्जीत, मनु ८, ७९। अभि—अभियोगः। विवादः। अभियुङ्क्ते, की २५५। आ—संयमनम्। क्त, प्रशंसा। तुरगानायुञ्जन्, भारत। आयुक्तो दूतकर्मणि, भ ८, ११५। उद्—उद्योगः। उद्युक्ते, की २५५। उप—उपयोगः। भोगः। सेवा। उपयुङ्क्ते, पा १, ३, ६४। षाड्गुण्यमुपयुञ्जीत, मा २, ८३। नि, प्र—नियोगः। प्रेरणम्। प्रयुङ्क्ते, पा १, ३, ६४। कार्य्ये गुरुण्यात्मसमं नियोक्ष्ये, कु ३, १३। अरण्ययाने पिता मां प्रायुङ्क्त, भ ३, ५१। नियुङ्क्ते गुल्मपाषाणौ नियोजयति रक्षकान्। यो नियोजयति सामन्तान् स्वयमात्मनि युज्यते॥ कवि ४२। वि—वियोगः। अन्यः प्राणैर्वियुज्यते, हितो। सम्—संयोगः।

युत्—(जुत्) भ्वा, आ। दीप्तिः।

युध्—दि, आ। सम्प्रहारः।

युधम्। अभिभवेच्छा। युध्यते। तुरङ्गघातमयुध्यत, भ ५, १०१। युध्यते चौरं राजा (हन्ति), दुर्गा। को हि दण्डेन युध्यति, इत्यादौ युधमिच्छतीति क्यच्, की १३७। युयुधे। योद्धा। योत्स्यते। युत्सीष्ट। अयुद्ध। अयुत्साताम्। अयुत्सत। तेऽयुत्सताहवे, भ १५, ३५। युयुत्सते। योयुध्यते। योयोद्धि। योधयति। अययुधत्। एकः शतं योधयेत् प्राकारस्थः, मनु ७, ७४। योधयिष्यति संग्रामे राजानम्, भ १६, २८। युद्ध्वा। ०युध्य। युद्धम्। योधनम्। योधः। युध्। योद्धा। योद्धव्यम्। नि—नियुद्धम्। बाहुयुद्धम्। प्रति—प्रतियुद्धम्। कथं भीष्ममिषुभिः प्रतियोत्स्यामि, गी २, ४। को दुर्योधनं शक्तः प्रतियोधयितुं रणे, भारत।

युप्य्—(पुष्य्)।

युप्—युपु, दि, प। विमोहनम्।

यूष् 'जूष् भूष्' भ्वा, प। बधः।

येष् (येषृ) भ्वा, आ, वो। यत्नः।

यौट्—'यौड्' भ्वा, प। योगः।

## (र)

रक्—चु, प। स्वादः। राकयति।

रच्—भ्वा, प। १पालनम्।

रक्षणम् । अविनाशनम् । २ रोषः । ३संघातः । रक्षति । आत्मानं रक्षेद्दारै रपि धनैरपि, मनु ७, २१३ । स रक्ष तात मन्त्रज्ञ सपत्नांश्च ममोद्धर, भारत । ररक्ष । रक्षिता । रक्षिष्यति । अरक्षीत् । अरक्षिष्टाम् । अरक्षिषुः । रणेऽरक्षोद्राक्षसान्, भ १५, ८७ । कर्मणि, रक्ष्यते । अरक्षि । काकेभ्यो रक्ष्यतामन्नम् । रिरक्षिषति । । रारक्ष्यते । रारक्षि । रक्षयति । अररक्षत् । रक्षित्वा । ०रक्ष्य । रक्षितः । रक्षणम् । रक्षा । रक्षणः ।

रख्—रङ्ख्—(इखि) भ्वा, प । गतिः ।

रग्—रगे, भ्वा, प । शङ्का ।

रगति । ररागं । रगिता । (ए) अरगीत् । रगयति, घटादिः । रग्, रघ् (रक्) चु, प । स्वादः । प्राप्तिः, वो । रागयति, राघयति, वो ।

रङ्ग्, रगि (अगि) भ्वा प । गतिः ।

रङ्घ्—रघि, भ्वा, आ । गतिः ।

रङ्घते । ररङ्घे । द्वारं ररङ्घतुर्याम्यम् (परस्मैपदं चिन्त्यम्), भ १४, १५ । रघि (अजि) चु, प । दीप्तिः । रङ्घयति ।

रच—अदन्तः । चु, प । रचना ।

प्रणयनम् । करणम् । रचयति । अररचत् । रचयति शयनम्, गीतगो ७, २३ । मया रचितोऽञ्जलिः, रामा । तेन स रचितो राजा, भ १२, ३७ । विरचितानुरूपवेशः, र ५, ७६ ।

रञ्ज्—रन्ज्, भ्वा, दि, उ । १रागः ।

अनुरागः । आसक्तिः । २वर्णान्तरोत्पादनम् । रजति । ०ते, पा ६, ४, २६ । रज्यति । ०ते । चित्तं रजति नारीणां स्वयं ता अनुरज्यन्ते, कवि २६० । ररञ्ज । ररञ्जिथ, ररङ्क्थ । ररञ्जे । रङ्क्ता । रङ्क्ष्यति । ०ते । रज्यात् । रङ्क्षीष्ट । अराङ्क्षीत् । अराङ्क्ताम् । अराङ्क्षुः । अरङ्क्त । अरङ्क्षाताम् । अरङ्क्षत । कर्मणि, रज्यते । अरञ्जि । कर्मकर्त्तरि, रज्यति । ०ते, पा ३, १, ८० । रिरङ्क्षति । ०ते । रारज्यते । रारङ्क्ति । रञ्जयति । (मृगरमणे आखेटके) रजयति मृगम् (मारयति), घटादिः । अन्यत्र, रञ्जयति पक्षिणः । रञ्जयति मृगान् तृणदानेन, कौ १८६ । रङ्क्ता, रक्ता, पा ६, ४, ३२ । ०रज्य । रक्तः । रक्तिः । रञ्जनम् । रागः । रङ्क्तव्यम् । रजकः । रजनी । अनु—अनुरागः । भ्रातृभार्य्यायां योऽनुरज्येत कामतः, मनु ३, १७३ । भृशमन्वरज्यदतुषारकरः, मा ६, ७ । अप—विरागः । उप—उपरागः । राहुग्रासः । वि—विरागः ।

रट्—रठ्, भ्वा, प । कथनम् ।

रटति । रठति । माघे मासि रटन्त्यपः, स्मृतिः । रराट । रेटतुः । करभा रेटुः, भ १३, ५ । रटिता । अरटीत्, अराटीत् । घोराश्चाराटिषुः शिवाः, भ १५, २७ ।

रण्—(अण्) भ्वा, प । शब्दः ।

रणति । रराण । रेणतुः । रणिता । अरणीत्, अराणीत् । रिरणिषति । रंरण्यते । रंरण्टि । राणयति । अरीरणत्, अरराणत् । रण् (क्रण्) भ्वा, प । गतिः । रणति । रणयति, घटादिः ।

रद्—भ्वा, प । विलेखनम् । भेदः ।

रदति । रदिता । रदः । रदनः ।

रध्—दि, प। १हिंसा।

२निष्पत्तिः। ३पाकः, वो। लट् रध्यति। लिट् ररन्ध, पा ७, १, ६१। ररन्धतुः। ररन्धिथ। ररद्ध। ररन्धिव, रेध्व। ररन्धिम, रेध्म। लुट् रधिता, रद्धा, पा ७, २, ४५। लृट् रधिष्यति, रत्स्यति। लुङ् अरधत। अङि नुम्। अनिदितामिति नलोपः, क्ङि १४०। अरन्धत्, वो। कर्मणि, रध्यते। अरन्धि। सन् रिरधिषति, रिरत्सति। यङ् रारध्यते। रारद्धि। णिच् रन्धयति। अररन्धत्। रधित्वा, रद्ध्वा। ०रध्य। रद्धः। रन्धनम्। रन्धः। रधितुम्, रद्धुम्। अन्नं रधितुमारेभे, भ ९, २९।

रप्—भ्वा, प। उक्तिः। रपति।

रफ्—रम्फ्, रफि, भ्वा, प। गतिः।

बधः, वो। रफति। रम्फति। 'रर्फति'।

रभ्—भ्वा, आ। राभस्यम्।

उत्सुकीभावः, दुर्गा। निर्विचारप्रवृत्तिः, गोविन्दभट्टः। रभते। रेभे। रब्धा। रप्स्यते। रब्धोष्ट। अरब्ध। अरप्साताम्। अरप्सत। कर्मणि, रभ्यते। अरम्भि, पा ७, १, ६३। सन् रिप्सते, पा ७, ४, ५४। यङ् रारभ्यते। रारभीति, रारब्धि, पा ७, १, ६२। णिच् रम्भयति। अररम्भत्, पा ७, १, १३। रब्ध्वा। ०रभ्य। रब्धः। रम्भणम्। रम्भः। रम्भौ। रब्धुम्। रब्धव्यम्। आ—आरम्भः। मारब्धा बलिविग्रहम्, भ ५, ३८। पेष्टुमारब्धि चित्तौ, भ १५, ५८। परि—परिरम्भः। आलिङ्गनम्। इमां लतां त्वत्प्राप्तिबुद्ध्या परिरभमानः, र १३, ३२। सम्—संरम्भः। कोपः।

रम्—रमु, भ्वा, आ। क्रीड़ा।

रमणम्। आसक्तिः। रमते। रेमे। सखीनां मध्यगता रेमे, कु १, २९। रन्ता। रंस्यते। रंसीष्ट। अरंस्त। अरंसाताम्। अरंसत। व्यरंसीत्। व्यरंसिष्टाम्। व्यरंसिषुः, पा ७, २, ७३। अरंस्त नीतौ, भ १, २। मा रंस्था जीवितेन नः, भ ६, १५। रिरंसते। रंरम्यते। रंरन्ति। रमयति। अरीरमत्। कामपि रमयति रामाम्, गीतगो १, ४६। सम्भोगस्नेहचातुर्य्यै राजानं रमयामास सा, भारत। रत्वा। रमित्वा। रान्त्वा, दुर्गा। ०रत्य। ०रम्य। रतः। रतिः, पा ६, ४, ३७, ३८। रमणम्। रामः। रमः। रन्तुम्। रन्तव्यम्। रमणीयम्। रमणः। अनु, अभि, आ—आसक्तिः। पत्नीषु राजाऽभिरेमे, भ १, ९। आरमति, पा १, ३, ८३। आरमन्तं परं स्मरे, भ ८, ५३। उप—निवृत्तिः। मरणम्। उपरमति। ०ते, पा १, ३, ८४, ८५। उपारंसीच्चिकीर्षितात्, नात्र सौतेत्युपारंस्त, भ ८, ५४, ५५। देवदत्तमुपरमति (उपरमयति), संक्षिप्त। क्षणं पश्यैरमत्तस्य दर्शनात् (तुष्टिमानभवत्), भ ८, ५३। वि—निवृत्तिः। विरतिः। विरमति। व्यरंसीत् कृताकृतेभ्यः, भ ३, २१।

रम्ब्—रम्भ्—रबि, रभि (अबि)

भ्वा, आ। शब्दः। रबि, रवि, रिबि, रिवि, भ्वा, प। गतिः। रम्बते। रम्भते। रम्बति, रखति। रिम्बति, रिखति।

रय्—भ्वा, आ। गतिः। रयते।

रस्—(तुस्) भ्वा, प। शब्दः।

रसति। रसन्ति मधुरैः कण्ठैः पतत्रिणः, कवि २०२। रसतु। रसना, गीतगो १०, ६। रराम। रेसतुः। परुषं रराम, र १६, ७८। रेसुः पदातयः, भ १४, ८। रसिता। रसिष्यति। अरसीत्, अरासीत्। गोमायुसारङ्गगणा भीममरासिषुः, भ ३, २६। रिरसिषति। रारस्यते। रारस्ति। रासयति। अरीरसत्। रसति कोकिले, मा ६, ७०। रस, अदन्तः। चु, प। १आस्वादनम्। २स्नेहनम्। रसयति। रसयन्ति सुखाद्यानि तत्करप्रतिपादिताः, कवि २०२। अररसत्। रसितवती मद्यम्, मा १०, २७। रिरसयिषति शब्दम्, मा ११, ११।

रह्—भ्वा, चु, प। रह, अदन्तः।

चु, प। त्यागः। रहति। राहयति। अरीरहत्। रहयति। अररहत्। रहयत्यापदुपेत मायतिः, भा २, १४। विरहयन् मलयाद्रिम, र ८, २६। रहत्यविदुषां सङ्गं रहयत्यप्रियं सदा, कवि २६२।

रंह्—रहि, भ्वा, प। गतिः।

रंहति। ररंह। ररंहाश्वकुञ्जरम्, भ १४, ८८। रंहिष्यति। रंह्यात्। अरंहीत्। रहि (अंजि) चु, प। दीप्तिः। रंहयति। रंह, अदन्तः। चु, प। गतिः। रंहयति, वो।

रा—अदा, प। १दानम्।

२ग्रहणम्, वो। राति। न राति रोगिणेऽपथ्यं वाञ्छतेऽपि भिषक्तमः। भागवतम्। ररौ। राता। अरासीत्।

राख्—(द्राख्) राघ् (द्राघ्)।

राज्—राजृ, भ्वा, उ। दीप्तिः।

शोभा। राजति। ०ते। तडिदिव राजसि, गीतगो ५, १२। राजते भैमी सर्वाभरणभूषिता, भारत। रराज। रराजे। रेजे, पा ६, ४, १२५। ताम्रोत्पलानि रेजुः, भ २। राजिता। राजिष्यति। ०ते। अराजत्। अराजिष्ट। रिराजिषति। ०ते। रारज्यते। रारष्टि। राजयति। अरराजत्। राजितः। राजनम्। राजा। राट्। वि—सुदीप्तिः। नभोगता देव्य इव व्यराजन्, मा ३, ४३। निर्, णिच्—निर्मञ्छनम्। नीराजना।

राध्—दि, प। संसिद्धिः।

निष्पत्तिः। राधोऽकर्मकादेव श्यन्। राध्यत्योदनः (सिध्यति)। कृष्णाय राध्यति (कृष्णस्य दैवं पर्य्यालोचयति), कौ १३८। कविरहस्ये सकर्मकादपि श्यन् दृश्यते। व्यञ्जनानि च राध्यति, कौ ११४। रराध। रराधतुः। रराधिथ। राद्धा। राध, श्ना, प। निष्पादनम्। राध्नोति ओदनम्, दुर्गा। रराध। रराधतुः। (हिंसायाम्) रेधतुः। रेधिथ, पा ६, ४, १२३। वातरा भूधरान् रेधुः, भ १४, १६। राद्धा। रात्स्यति। अरात्सीत्। अराद्धाम्। अरात्सुः। रिरात्सति। (हिंसायाम्) रित्सति, कौ २०३। रराध्यते। रराद्धि। णिच् राधयति। अरीरधत्। अयं चुरादिश्च, कौ १३८। आराधय सपत्नीकः सुरभेः सुताम्, र १, ८२। राद्धा। ०राध्य। राद्धिः। राधनम्। राद्धुम्। अप—अपराधः। द्रोहः। अनिष्टाचरणम्। हिंसा।

यन्मह्यमपराध्यति, मा २, ११। स नापराध्नोति मित्रानाम, भारत। अभि, आ—आराधना। सेवा। गुणै-राराधयामासुर्गुरुम्, र १, ८५। अत्रः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः, हितो। इत्थमाराध्यमानोऽपि क्लिश्नाति भुवनत्रयम्, कु २, ४०। वि—अपकारः। द्रोहः। विराज एवं भवता विराद्धा बहुधा च नः, मा २, ४१।

राग्—रास्—(णाङ्) भ्वा, आ।

शब्दः। राग्यते। रासते।

रि—(पि) तु, प। गमनम्।

रियति। रिराय। रिर्यतुः। रेष्यति। अरैषीत्। रिरीषति। रेरीयते।

रिख्—'रिङ्' (इख) भ्वा, प। गतिः।

रिङ्—रिगि (अगि) भ्वा, प। गतिः।

रिच्—रिचिर्, रु, उ। विरेचनम्।

शून्यीकरणम्। पौनःपुन्येन पुरीषोत्सर्गः, दुर्गा। लट् रिणक्ति। रिङ्क्तः। रिञ्चन्ति। रिणक्षि। रिङ्क्थे। रिञ्चाते। रिङ्क्षे रिपुर्यदाक्रान्तो धनैः, कवि ९८। रिणच्मि जलधेस्तोयम्, भ ६, ३६। लिङ् रिच्यात्। रिञ्चीत। लङ् अरिणक्। अरिङ्क्ताम्। अरिञ्चन्। अरिङ्क्त। लिट् रिरेच। रिरिचे। लुट् रेक्ता। लृट् रेक्ष्यति। ०ते। लृङ् अरिचत्, अरैक्षीत्। अरिचताम्, अरैक्ताम्। अरिचन्, अरैक्षुः। अरिक्त। अरिक्षाताम्। अरिक्षत। कर्मणि, रिच्यते। अरेचि। सन् रिरिक्षति। ०ते। यङ् रेरिच्यते। रेरेक्ति। णिच् रेचयति। अरीरिचत्। रिच्, चु, प। १वियोजनम्। २सम्पर्कः। रेचयति। रेचति। रेक्ता। रेक्ष्यति। मन्त्रैश्च रेचति। रेचयन्ति च यन्नारी लोचनान्यश्रुवारिभिः, कवि ९८। रिक्ता। ०रिच्य। रिक्तः। रिक्तिः। रेचनम्। रेकः। रेक्तकः। अति—अतिरेकः। अतिशयः। स्वभाव एवातिरिच्यते, हितो। अति—अतिरेकः। अतिशयः। स्तुतिभ्यो व्यतिरिच्यन्ते दूरेण चरितानि ते, र १०, ३१। उद्—उद्रेकः। वि—विरेकः।

रिज्—भ्वा, आ। भर्जनम्।

रेजते, वो।

रिफ्—तु, प। १कत्थनम्।

श्लाघा। २युद्धम्। ३निन्दा। ४हिंसा। ५दानम्। रिफति। रेफिता। रिह्, रिहति। शिशुं न विप्रा मतिभी रिहन्ति, की १५१।

रिभ्—भ्वा, प। रवः। रेभति, वो।

रिफ् (ऋफ्) रिम्ब्, रिख् (रम्ब्)।

रिश्—(रुश्) तु, प। हिंसा।

रिशति। रिरेश। रिरिशतुः। रेष्टा। रेक्ष्यति। अरिक्षत्। रिरिक्षति। रेरिश्यते। रेरेष्टि। रेशयति। अरीरिशत्।

रिष्—(ऋष्, रुष्) भ्वा, दि, प।

हिंसा। रेषति। रिष्यति। रिरेष। रिरिषतुः। रेषता, रेष्टा, पा ७, २, ४८। रेषिष्यति। अरेषीत्। दि, अरिषत्। रिरिषिषति। रिरेः। रेरिष्यते। रेरेष्टि। रेषयति। अरीरिषत्।

रिह्—(रिफ्) भ्वा, प। लघः, वो।

री—रीङ्, दि, आ। १श्रवणम्।

२त्वरणम्, वो। री, क्रया, प। १ गतिः। २ हुक्रशब्दः। ३ वधः, वो। रीयते। रिणाति। रिराय। रिर्य्ये रेता। रेष्यति। ०ते। रीयात्। रेषीष्ट। अरेषीत्। अरेष्ट। णिच् रेपयति, पा ७, ३, ३६। क्त, रीणः।

रीव्—रीट्, श्वा, उ। ग्रहणसंवृत्योः।

रु—रुङ्, श्वा, आ। १गतिः।

२हिंसा। रु, अदा, प। रवः। लट् रवते। रौति। रवीति। रुतः। रुवीतः। रुवन्ति, पा ७, ३, ८८, ८५। लिङ् रुयात्, रुवीयात्। लङ् अरौत्। अरवीत्। लिट् रुराव। रुरविथ। रुरुवे। रुरुवुश्चाग्निवं शिवाः, भ १४, २१। लुट् रविता। लट् रविष्यति। ०ते। आशिषि, रूयात्। रविषीष्ट। लुङ् अरावीत्। अराविष्टाम्। अराविषुः। अरविष्ट। (रोता, रोष्यति, अरौषीत, वो)। सन् रुरूषति। ०ते। यङ् रोरूयते। रोरवीति। रोरोति। णिच् रावयति। अरीरवत्, पा ७, ४, ८०। रावयामास लोकान् यत् तस्माद्रावण उच्यते, भारत। रुत्वा। ०रुत्य। रुतम्। रुतिः। रवः। रवणः। रावः। संरावः। रविः। आ, वि—उच्चैःशब्दः। रोदनम्। भ्राता विरौति ते, भ ५, ५४। विरौमि शून्ये, भ १८, २६।

रुच्—श्वा, आ। १दीप्तिः।

२अभिप्रीतिः। अन्यकर्तृकोऽभिलाषो रुचिः। देवदत्ताय रोचते मोदकः, पा १,४,३३। रुरुचे। रोचिता। अरुचत्। अरोचिष्ट, पा १, ३, ६१। रुरुचिषते। रुरोचिषते। यङ्निषेधः। णिच् रोचयति। ०ते। अरूरुचत्। ०त। नारोचयतात्मानम्, भ ८, ६४। यदि वासं रोचयेत गुरोः कैले, मनु २, २४३। रोचित्वा, रुचित्वा। रुचितः। रोचनम्। रुचिः। रोचना। रोकः। वि—दीप्तिः। विरुरुचे रुरुचेष्टितभूमिषु, र ६, ५१। व्यरुचन् कुमुदाकराः, भ ८, ६६।

रुज्—रुजो, तु, प। भङ्गः।

रोगः। रुजति रोगश्चौरस्य। नदीकूलानि रुजति, पा २. ३, ५४। तस्य धर्मरते रोगा न रुजन्ति प्रजामपि, कवि १८६। रुरोज। रुरुजुर्हरिराक्षसाः, भ १४, ४८। रोक्ता। रोक्ष्यति। रावणस्येह रोक्ष्यन्ति कपयो भीमविक्रमाः, भ ८, १२०। अरौक्षीत्। अरौक्ताम्। अरौक्षुः। रुरुक्षति। रोरुज्यते। रोरोक्ति। रोजयति। अरूरुजत्। रुज्, च, प। हिंसा। रोजयति, न रोजयति यः कश्चित्, कवि १८६। रुक्षा। रुग्नः। रोगः। रुजा। रोगी। धर्मारण्यं विरुजति गजः, शुक १, २१७। विरुग्नोद्यधाराग्रः कुलिशः, भ ५, २५।

रुट्—रुठ्, श्वा, आ। १प्रतिघातः।

शोकादिना पतनम्। पुनर्हननम्, दुर्गा। २दीप्तिः, वो। रुट् (रुष्) चु, प। १रोषः। २दीप्तिः, वो। रोटते। रोठते, वो। अरुटत्। अरोटिष्ट, पा १, ३, ६१। रोटयति। रुठ, श्वा, प। परिभाषणम्। रुठ् (उठ्) श्वा, प। उपघातः। रोठति।

रुण्ट्—'रुण्ड्' श्वा, प। स्तेयम्।

रुण्ट्—(लुण्ठ्) रुण्ठ् (गुण्ठ्)।

रुद्—रुदिर्, अदा, प । रोदनम् ।

अश्रुविमोचनम् । अश्रुविमोचनमात्रेऽकर्मकः । आक्रोशविशिष्टरोदने तु सकर्मकः । रोदिति, पा ७, २, ७६ । रुदितः । रुदन्ति । हि, रुदिहि । रुद्यात् । अरोदत्, अरोदीत्, पा ७, ३, ९८, ९९ । अरुदिताम् । अरुदन् । अरोदः । अरोदोः । अरोदीद्राक्षसानीकमरोदन्नृभुजां पतिः, भ १७, ४८ । रुरोद । रुरुदतुः । रुरोदिथ । रोदिता । रोदिष्यति । अरुदत्, अरोदीत् । अरुदताम् । अरोदिष्टाम् । अरुदन्, अरोदिषुः । नामग्राहमरोदीत् सा भ्रातरौ, भ ५, ५ । व्रजाश्वसिहि मा रुदः, भ ४, ३८ । भावे, रुद्यते । अरोदि । रुरुदिषति, पा १, २, ८ । यङ् रोरुद्यते । रोरोत्ति । णिच् रोदयति । अरूरुदत् । रुदित्वा । ०रुद्य । रुदितः । रोदनम् । रुद्रः । अनु—शोकः । अखिलपङ्क्तिगुरुशोकामनुरोदितीव माम्, कु ४, १५ । उपा—विलापः । शोकः । कुमुद्वतीमुपारुरोदेव तीरतरुः, भ २, ४ । प्र—उच्चैरोदनम् । राक्षस्यः प्रारुदन्नुच्चैः, भ १७, ७१ ।

रुध्—दि, आ । अभिलाषः ।

अयमनुपूर्वः प्रयुज्यते । रुधिर्, रु, ड । आवरणम् । रोधः । लट् अनुरुध्यते । अनुरुध्यस्व मा अनुगच्छन्तम्, वीर ६३ । रुणद्धि, पा ३, १, ७८ । रुन्धः । रुन्धन्ति । रुणत्सि । रुन्धे । रुन्धाते । रुन्धते । रुणद्धि रोदसी कौर्त्या स्वधर्ममनुरुध्यते, कवि २५३ । रुणद्धि सवितुर्मार्गम्, भ ६, ३५ । यादवाभो निधीन् रुन्धे वेलेव भवतः क्षमा, मा १, ५८ । लिङ् रुन्ध्यात् । लोट् रुणद्धु । रुन्धि । रुणधानि । लङ् अरुणत् । अरुन्धाम् । अरुन्धन् । अरुणः । अरुणत् । अरुणधम् । अरुन्ध । अरुन्धाताम् । अरुन्धत । अरुन्ध किल स्त्री बलभस्य करमात्मकराभ्याम्, मा १, ६० । लिट् रुरोध । रुरोधिथ । रुरुधे । तमुद्दण्डं पथि भोजकन्यां रुरोध राजन्यगणः, र ७, ३५ । लुट् रोद्धा । लृट् रोत्स्यति । ०ते । नानुरोत्स्ये जगल्लक्ष्मीम् (कामयिष्ये), भ १६, २३ । आशिषि, रुध्यात् । लुङ् अरुधत् । अरौत्सीत् । अरौद्धाम् । अरौत्सुः । अरुद्ध । अरुत्साताम् । अरुत्सत । अरौत्सीत् स पुरीमिमाम्, मा २, ३९ । पुरं नः परितोऽरुधत्, भ १५, १० । कर्मणि, रुध्यते । अरोधि । सन् रुरुत्सति । ०ते । यङ् रोरुध्यते । रोरोद्धि । णिच् रोधयति । अरूरुधत् । रुद्धा । ०रुध्य । रुद्धः । रोधनम् । रोधः । रोद्धा । रोद्धव्यम् । अनु—अनुवर्त्तनम् । अनुरोधोऽनुवर्त्तनमित्यमरः । यमनुरुध्यन्ते भवन्तोऽपि, अनर्घ ९ । अव—अवरोधः । अवरुणद्धि गां व्रजम्, पा १, ४, ५१ । शोकं चित्तमवारुधत्, भ ६, ९ । आ—आवरणम् । बन्धुता शुचमारुणत्, भ १७, ४९ । उप—निर्बन्धः । निवारणम् । निषेधः । आच्छादनम् । नागैरन्यानुपरुरोध, र ४, ८३ । रेणुरुपरुरोध सूर्य्यम्, र ७, ३९ । त्वामुपरोद्धुं नाभ्युत्सहे, र ५, २२ । नि—निरोधः । नियमनम् । न्यरुन्धन्नस्य पन्थानम्, भ १७, ४९ । प्रति—प्रतिरोधः । वि—विरोधः । अनैक्यम् । श्रुतिस्मृतिविरोधे तु श्रुतिरेव गरीयसी, स्मृतिः । सम्—प्रतिबन्धः । नियमनम् ।

रुप्—(युपु) दि, प । विमोहनम् ।

रुश्—तु, प । हिंसनम् ।

रुशति । रुरोश । रोष्टा । रोक्ष्यति । अरुक्षत् । रुरुक्षति । रोरुश्यते । रोरोष्टि ।

रुंश्—रुशि (अजि) चु, प । दीप्तिः ।

रुंशयति । रुंशति ।

रुष्—(क्रुष) भ्वा, प । हिंसा ।

रुष्, दि, चु, प । रोषः । क्रोधः । रोषति । रुष्यति, यस्मै रुष्यति तस्यासौ कुलमेवाभिरोषति, कवि ८६ । ततो ऽरुष्यदनर्दच्च रावणिः, भ १७, ४० । रुरोष । रुरुषतुः । रोषिता, रोष्टा, पा ७, २, ४८ । रोषिष्यति । अरोषीत् । दि, अरुषत् । मा रुषोऽधुना, भ १५, १६ । योद्धुं सोऽप्यरुषच्छत्रोः, भ १५, ५२ । रुरुषिषति । रुरो० । रोरुष्यते । रोरोष्टि । रोषयति । अरूरुषत् । रोषित्वा, रुषित्वा । ०रुष्य । रुषितः । रुष्टः, पा ७, २, २८ । रोषणम् । रोषः । रुट् ।

रुह्—भ्वा, प । १बीजजन्म ।

उत्पत्तिः । २प्रादुर्भावः । स्फूर्तिः । रोहति । यादृशमुप्यते बीजं तादृग् रोहति, मनु ६, ३६ । ररोह । रुरुहतुः । ररोहिथ । रोढा । रोक्ष्यति । अरुक्षत् । भावे, रुह्यते । अरोहि । रुरुक्षति । रोरुह्यते । रोरोढि । रोहयति । रोपयति, पा ७, ३, ४३ । अक्षेषु देशेषु ब्रह्मानरोपयन्, रामा । रूढ्वा । ०रुह्य । रूढः । रूढिः । रोहणम् । रोहः । रोढ्यम् । रोहणीयम् । अधि, आ—आरोहणम् । रथवरमधिरुह्य, भ ५, १०८ । शैलमारुरोहाश्वसाधनः, र ४, ७४ । (णिच्) आरोपणम् । आसञ्जनम् । धनूंष्यारोपयाञ्चक्रुरारुरुह्य रथादिषु, भ १४,८ । अव—अवतरणम् । तामवारोहयत् पत्नीम्, र १, ५५ । प्र—उत्पत्तिः । न पर्वताग्रे नलिनी प्ररोहति, मृच्छ १२३ । प्रति—णिच् प्रतिरोपणम् । शचूनुद्धृत्य प्रतिरोपयन्, र १७, ४२ । उत्खातान् प्रतिरापयन्, नवरत्नम् ६ । वि, सम्—जननम् । विरूढशष्पं गङ्गरम्, र २, २६ । प्रेमद्रुमाः संररुहुः, भ ११, ५ ।

रूक्ष्—अदन्तः । चु, प । पारुष्यम् ।

अस्निग्धीभावः । रूक्षयति केशः, दुर्गा ।

रूप—अदन्तः । चु, प । रूपकरणम् ।

रूपदर्शनम् । रूपयति । अनु—अनुकरणम् । नि—निरूपणम् । स्वरूपकथनम् । निर्णयः । निश्चयः । दर्शनम् । अथ दायभागो निरूप्यते, दायभा २ । न च रामं न्यरूपयत्, भ १७, ६५ । इतस्ततो निरूपयद्भिः शावकास्थीनि प्राप्तानि, हितो । वि—विरूपकरणम् ।

रूष्—भ्वा, प । भूषणम् ।

रूषति । रूष, अदन्तः । चु, प, वो । विस्फुरणम् । रूषयति । अरूरूषत् । रेणुरूषितः ।

रेक्—रेक्क, भ्वा, आ । शङ्का ।

रेज्—रेजृ (एजृ) भ्वा, आ । दीप्तिः ।

रेट्—रेटृ, भ्वा, उ । कथनयाचनयोः ।

रेप्—(मेप्) भ्वा, आ । गतिशब्दयोः ।

रेभ्—रेभृ, भ्वा, आ । शब्दः ।

रेव्—'रेवृ' भ्वा, आ । प्लुतगतिः ।

रेष्—रेषृ । भ्वा, आ, वो ।

हकशब्दः । अश्वशब्दः, वो । रेषते ।

रै—भ्वा, प । शब्दः ।

रायति । ररौ । ररतुः । राता ।

रोड्—रोड्—रौट्—रोडृ,

भ्वा, प । १उन्मादः । २अनादरः, वो । रोडति । रोडृ, रौटृ, वो । भ्वा, प । अनादरः । रौडति । रौटति ।

## (ल)

लक्—चु, प । आस्वादनम् ।

लक्ष्—चु, उ, वो । १दर्शनम् ।

ज्ञानम् । २अङ्कनम् । चिह्नीकरणम् । लक्ष् (श्रम) चु, आ । आलोचनम् । लक्षयति । ०ते । चरितान्यस्य लक्षय, भारत । अङ्कैर्लक्षैश्चता गा लक्षयामास, भारत । न चोभावप्यलक्ष्येताम, भ १७, १०६ । लक्षयित्वा । ०लक्ष्य । लक्षितः । लक्षणम् । लक्षणा । लक्षः । लक्ष्यः । आ—आलोकनम् । ज्ञानम् । मदनग्लानियमालक्ष्यते, शकु ३, ४९ । उप—ज्ञानम् । अनुभवः । सम्यगुपलक्षितं भवत्या, शकु, १, १८३ । (विशेषणम्) केशैरुपलक्षितः । (लक्षणया बोधः) काकेभ्यो रक्ष्यतामन्नमित्यादौ दध्युपघातकर्तृत्वेन ध्वादिरुपलक्ष्यते । वि—विस्मयः । विलक्षितस्मितसुधामुग्धाननः, गौतगो २, १९ । सम्—सम्यगदृष्टिः । परीक्षा । हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकापि वा, र १, १० ।

लख्—लङ्ख्, लखि, भ्वा, प । गतिः ।

लग्—लगे, भ्वा, प । सङ्गः ।

मेलनम् । लगति । हंसस्य पश्चाल्लगति स्म, नै ३, ८ । ललाग । लेगतुः । लगिता । (ए) अलगीत् । लगयति, घटादिः । लग्, चु, प, वो । १स्वादः, । २प्राप्तिः । क्त, लग्नः संसक्तौ । अन्यत्र लगितः ।

लङ्—लगि, (अगि) भ्वा, प ।

१गतिः । २खञ्जः, वो । लङ्गति । ललङ्ग । लङ्गिता ।

लङ्घ्—लघि, भ्वा, प । १शोषणम् ।

अल्पीकरणम् । २गतिः, दुर्गा । लघि, भ्वा, आ । १गतिः । लङ्घनम् । २भोजननिवृत्तिः । उपवासः । लङ्घति । ०ते । न लङ्घति गुरोराज्ञां न लङ्घयति यः स्थितिम् । यं व्याधिरतिदीप्ताग्निं कदाचिच्च न लङ्घति ॥ कवि ६७ । ललङ्घ । ०ङ्घे । लङ्घिता । अलङ्घीत् । अलङ्घिष्ट । अन्ये त्वलङ्घिषुः शैलान्, भ १५, ३२ । लिलङ्घिषति । ०ते । लालङ्घ्यते । लालङ्घ्यधि । लघि (कुप) चु, प । १लङ्घनम् । २दीप्तिः । लङ्घयति । अललङ्घत् । गिरिमलङ्घयत्, र ४, ५२ । यशो भवद्गुरुर्लङ्घयितुं समोद्यतः, र ३, ४८ । उद् वि—उल्लङ्घनम् । हैलोक्यलङ्घितवाहिनीपतिः । व्यलङ्घयद्गां गगनं ददत् खुरैः, रघु ४, ६९, ७३ ।

लङ्क् (लङ्क्) ।

लज्—लज्ज्, ओलजी, ओलस्जी ।

तु, (भ्वा, वो), आ । लज्जा । व्रीड़ा । लज्जते । लज्जते, लज्जते न रक्षनीव,

नै ५, ११७। लेजे। ललज्जे। लेजिरेऽन्ये पराजिताः, भ १४, १०५। लज्जिता। लज्जिता। अलज्जिष्ट। अलज्जिष्ट। लाजयति। लज्जयति। लज (जल) चु, प। अपवारणम्। लाजयति। लज्जित्वा। ०लज्जा। लग्नः। लज्जितमिति लज्जाशब्दात्तारकादित्वादितच्। विगलितलज्जितेति जयदेवकविप्रयोगस्तु दुःसाध्यः, गीतगो १, ३२। जीविताम्मोति लज्जितेति रघौ १२, ७५। कर्त्तरिक्त इति मल्लिनाथोक्तमपि चिन्त्यम्। सा क्षीरकण्ठं तं वत्सं लज्जयन्ती न लज्जिता, वीर ६६। लज्जा।

लज्—लज्ज्, लजि, भ्वा, प।

१भर्जनम्। २भर्त्सनम्, वो। लजति। लज्जति। लजि (क्षुप) चु, प। दीप्तिः। लज्जयति। लज, लज्ज, अदन्तौ। चु, प। दीप्तिः। लजयति। लज्जयति।

लट्—भ्वा, प। १बाल्यम्।

व्यामोहः। २कथनम्। लटति। लाटः।

लड्—भ्वा, प। विलासः।

लडति। डलयोरैक्यस्मरणात् ललति इति स्वाम्यादयः, कौ ५५। विललम्बिधनैस्तृषाः, कवि १८५। ललाड। लडिता। अलडीत्, अलाडीत्। णिच् लडयति जिह्वाम्। जिह्वालन्यने घटादिः। उल्लन्यनं ज्ञापनम्। जिह्वाशब्देन षष्ठीतत्पुरुषः, ततीयातत्पुरुषो वा, लडयति जिह्वया, कौ ८५। बोपदेवमते, लड, भ्वा, प। १पीडितौभावः। २उत्क्षिप्तीभावः। ३जिह्वाव्यापारः। लडति लता वायुना। लडति जिह्वा। लडति जिह्वां सर्पः, दुर्गा। णिच् लडयति। लडयति त्वचमुल्लडत्यत्यत्नून् (पीड़यति)। कपाटघ्नीमिन्दुः किरणलहरीमुल्लडयति (उत्क्षिपति), अनर्घ ५१। कैलासगिरिमुल्लडयति (चालयति), अनर्घ १७०। तावत् खरः प्रखरमुल्लडयाञ्चकार (उत्पपात), मा ५, ७। लड्, चु, प। १उपसेवा। अत्यन्तपालनम्। लालनम्। २कथनम्। लाड़यति। लालयति, लालयत्यखिलाः प्रजाः, कवि १०३। लालयेत् पञ्चवर्षाणि पुत्रम्। बालकमुपलालयन्, शकु ७, ८९। लड्, चु, आ। १ईप्सा। २लाभः। लाडयते। लड, लाड, अदन्तौ। चु, प। आक्षेपः। लडयति। लाड़यति।

लण्ड्—लडि (ओलडि) चु, प।

उत्क्षेपणम्। लण्डयति। लण्डति। (ओ) लण्डितः। लण्ड्णः, दुर्गा। लडि, चु, प, वो। कथनम्। लण्डयति। लण्डति।

लप्—(रप) भ्वा, प। कथनम्।

लपति, लपति स्निग्धया वाचा, कवि १९४। लप रे, शकु ५, ८। ललाप। लेपतुः। लेपिथ। लपिता। लपिष्यति। अलपीत्, अलापीत्। अलापिष्टाम्। अलापिषुः। लिलपिषति। लालप्यते। लालप्ति। लापयति। अलीलपत्, अललापत्, दुर्गा। लपित्वा। ०लप्य। लपितः। लपनम्। अनु—मृदुभाषणम्। अप—अपलापः। अपह्नवः। अपललाप पाण्डुताम्, नै १, १५। अभि—अभिलापः। मनसा सङ्कल्पयति वाचाऽभिलपति, स्मृतिः।

आ—आलापः। प्र—प्रलापः। प्रलपत्येष वैधेयः, शकु २,३८। वि—विलापः। परिदेवनम्। पत्नी विलपति करुणम्, रत्ना १, ७। बह्वेवं विललाप सः, भ ६, ११। १४, १०१। सम्—मिथोभाषणम्।

लभ्—ङुलभष्, भ्वा, आ। प्राप्तिः।

लाभः। लभते, लभतेऽर्थं ततो भूमिम् कवि २०८। पुत्रं लभस्वात्मगुणानुरूपम्, र ५, ३४। लेभे। लब्धा। लप्स्यते। लप्सीष्ट। अलब्ध। अलप्साताम्। अलप्सत। सोऽलब्ध ब्रह्मणः शस्त्रम् भ १५, ९६। कर्मणि, लभ्यते। अलम्भि, अलाभि, पा ७, १, ६८। मन् लिप्सते, पा ७, ४, ५४। हृतां लिप्सामहे, भ ७, ८८। यङ् लालभ्यते। लालभ्मीति, पा ७, १, ६४। लालब्धि। लम्भयति। अललम्भत्। कर्मणि, अलम्भि, अलाभि, पा ७,१,६८। लब्ध्वा। ०लभ्य। लब्धः। लब्धिः। लम्भनम्। लाभः। आलम्भः। विप्रलम्भः। सुलभः। लभ्यः। आलभ्यः। (ङु) लब्भ्रमः। (ष्) लभा। णिच्, लम्भयित्वा। लम्भितः। लम्भनम्। आ—स्पर्शः। हिंसा। गामालभ्य विशुध्यति, मनु ११, २०२। गावश्चालेभिरे भटैः, भ १४, ९१। गामालभेत आलभ्या गौः, पा ७, १, ६५। उपा—भर्त्सनम्। उच्चैरुपालब्ध स केकयीम्, भ ३, ३०। समा—स्पर्शः। अनुलेपनम्। समालेभे (अनुलेपनं कृतम्), भ १४, ९२। उप—लाभः। उपलब्धिः। अनुभवः। न चोपलेभे वणिजां पणाया, भ ३, २७। उपलभ्या विद्या, पा ७, १, ६६। विप्र—विप्रलम्भः। प्रतारणा।

लम्ब्—लबि (अबि) भ्वा, आ। १शब्दः। २अवस्रंसनम्। लम्बनम्। लम्बते। ललम्बे। लम्बिता। लम्बिष्यते। अलम्बिष्ट। अलम्बिषाताम्। अलम्बिषत। लिलम्बिषते। लालम्ब्यते। लालम्भ्यति। लम्बयति। अललम्बत्। को लम्बयेदाहरणाय हस्तम्, र ६, ७५। लम्बित्वा। ०लम्ब्य। लम्बितः। लम्बनम्। अव—अवलम्बनम्। आश्रयः। ययौ तदीयामवलम्ब्य चाङ्गुलिम्, र ३, २५। जनस्त्वामवलम्बते, भ १८, ४१। आ—आलम्बनम्। आश्रयः। आदानम्। आललम्बे महास्त्राणि, भ १४, ९५। नालम्बते दैष्टिकताम्, मा २, ८६। वि—विलम्बः। विलम्बते, विडम्बते। प्रभातकल्पां रजनीं व्यडम्बयत् (अनुचकार), इति प्रदीपः। विडम्बयन्तं क्षितिवाससस्तनुम्, मा १, ६।

लभ्—लभि, भ्वा, आ, वो। शब्दः।

लय्—(रय) भ्वा, आ। गतिः।

लर्ब् (अर्ब्) भ्वा, प। गतिः।

लल्—चु, आ। लल, अदन्तः।

चु, प, वो। ईप्सा। प्राप्तुमिच्छा। लालयते। ललयति। लल् (लड्)।

लष्, लष् (लस्)।

लष्—भ्वा, उ। १कान्तिः। २इच्छा। स्पृहा। लषति। ०ते। लष्यति। ०ते, पा ३, १, ७। ललाष। लेषे। लषिता। लषिष्यति। ०ते। अलाषीत्, अलषीत्। अलषिष्ट। लिलषिषति। ०ते। लालष्यते। लालष्टि। लाषयति। अलीलषत्। लषित्वा। लषितः। अभि—

अभिलाषः । कामना । अभिलष्यति साधूनामुदयं सर्वतोदयः । साधुलोकोऽपि निःसीमं तस्याभिलषते प्रियम् ॥ कवि २२५ । तेन दत्तमभिलेषुरङ्गना-मुखासवम्, र १९, १२ । भा ९, ५१ ।

लस्- भ्वा, प । १श्लेषणम् ।

२क्रीड़ा । लसति । ललास । लेसतुः । लसिष्यति । अलसीत्, अलासीत् । लस्, लश् लष्, चु, प । शिल्पयोगः । लास्यम् । लासयति । लासयन्ति रसाभिज्ञा यस्याग्रे भरतोपमाः, कवि १८५ । लाशयति, लाषयति, (वो) । लसित्वा । लसितः । उद्—उल्लासः । हर्षः । स्फूर्त्तिः । णिच्—उल्लोलनम् । उल्लास्य कालकरवालम् । परस्परोल्लासितशस्त्र-पल्लवे, नै १, ६८ । वि—विलासः । क्रीड़ा । स्फूर्त्तिः । विलसति हंसी, छन्दो २२, १ । इतस्ततो विलसन्ति मणिसानुरागाः (प्रसरन्ति), मा ४, २७ । प्रेम विलसति, मा १५, १४ । विलासः । विलासी ।

ला— अदा, प । १दानम् ।

२ग्रहणम् । लाति । लली । ललुः खड्गान्, भ १४,२२ । लाता । लास्यति । अलासीत् । अलासिष्टाम् । वियद्गतां शक्तिमलासीत्, भ ११, ५३ ।

लाख्—(द्राख्) लाघ् (द्राघ्) ।

लाज्—लाञ्ज्, लाजि, भ्वा, प ।

१भर्त्सनम् । २भर्जनम् । पाकविशेषः । लाजति । लाञ्जति । लाजाः ।

लाञ्छ्—लाञ्छि (लक्ष) भ्वा, प ।

लक्षणम् । चिह्नीकरणम् । लाञ्छति । ललाञ्छ । ललाञ्छतुः । लाञ्छितम् । लाञ्छनम् ।

लाड् (लड्) ।

लाभ—अदन्तः । चु, प । प्रेरणम् ।

लिख्—तु, प । अक्षरविन्यासः ।

लेखनम् । चित्रीकरणम् । लट् लिखति । लिखति यदि शारदा सर्वकालमिति पुष्पदन्तः । लिखाधिलीलाग्रहभित्ति कावपि, नै १, ३८ । लिट् लिलेख । लिलिखतुः । लिलेखिथ । लिलिखिव । लिलेख भैमी नखलेखनीभिः, नै ६, ६३ । लुट् लेखिता । लृट् लेखिष्यति । लिखिष्यतीति संचिन्तसारे । लुङ् अलेखीत् । अलेखिष्टाम् । अलेखिषुः । मूर्ध्ना दिवमिवालेखीत्, भ १५, २२ । कर्मणि, लिख्यते । अलेखि । सन् लिलिखिषति, लिलेखिषति, पा १, २, २६ । यङ् लेलिख्यते । णिच् लेखयति । अलीलिखत् । लिखित्वा, लेखित्वा । ०लिख्य । लिखितः । लेखनम्, लिखनम् । लेखः । लेखकः । लिखितव्यम् । लिखनीयम्, लेखनीयम् । लिख्यम्, लेख्यम् । अयं विभाषया कुटादिः, दुर्गा । टनादौ बहुलमिति पद्मनाभः । अभि, आ—कर्षणम् । चित्रीकरणम् । हृदयवल्लभोऽभिलिख्य रतिपतिव्यपदेशेनापङ्क्तः, रत्ना २, ८८ । रतिव्यपदेशेन सागरिकामालिखति, रत्ना २, २६ । उद्—उल्लेखः । कर्षणम् । भेदः । अभिलापः । शिलाः खुराग्रैः समुल्लिखन्, कु १, ५७ । मासपक्षतिथीनामुल्लेखनमकुर्वाणो न फलभाग् भवेत्, स्मृतिः । वि—विलेखनम् । कर्षणम् । चित्रीकरणम् । पादेन विलिलेख पीठम्, र ६,१५ । काक-

स्तस्योपरि स्थित्वा चञ्चा किमपि विलिखतु, हितो।

लिङ्—लिखि, भ्वा, प, वो। गतिः।

लिङ्—लिगि (अगि) भ्वा, प।

गतिः। लिगि, चु, प। चित्रीकरणम्। लिङ्गयति। लिङ्गति। लिङ्गयति शब्दं स्त्रीपुंनपुंसकैः शाब्दिकः, दुर्गा। आ—आलिङ्गनम्। लक्ष्मीमालिङ्गति स्नेहाद् यः। आलिङ्गयति रत्नांशुजालैश्च मणिकुट्टिमम्, कवि २४१। आलिलिङ्गुर्योषितः, भ १४, १२।

लिप्-तु, उ। उपदेहः। वृद्धिः।

लेपनम्। लिम्पति। ०ते, पा ७,१६८। लिम्पतीव तमोऽङ्गानि, मृच्छ २७। रम्यैर्लिम्पेत वर्णकैस्तम्, भ १८, ११। न मां कर्माणि लिम्पन्ति, गी ४, ४। लिलेप। लिलिपतुः। लिलिपे। चन्दनेन लिलेप सः, भ १४, ८४। लेप्ता। लेप्स्यति। ०ते। लिप्यात्। लिप्सीष्ट। अलिपत्। अलिपत। अलिप्त, पा ३, १, ५३, ५४। अलिपेताम्। अलिप्साताम्। अलिपन्त। अलिप्सत। तस्यालिपत शोकाग्निः स्वान्तं काष्ठमिव ज्वलन्। अलिप्तेवानिलः शीतः, भ ६, २२। कर्मणि, लिप्यते। अलेपि। लिप्यते न स पापेन, गी ५, ८। लिलिप्सति। ०ते। लेलिप्यते। लेलेप्ति। लेपयति। अलीलिपत्। लिप्ता। ०लिप्य। लिप्तः। लेपनम्। लेपः। लेप्तुम्। अव—अवलेपः। गर्वः। भार्गव अति हि नामावलिप्यते, वीर ४१। आ, उप, वि—लेपनम्। ओषधीभिः शरीरमालिपन्, भ १५, १०६। शुचिं देशं गोमयेनोपलेपयेत्, मनु ३, २०६। व्यलिपन्न गन्धैः, भ ३, २०।

लिश्—दि, आ। अल्पीभावः।

लिश्, तु, प। गतिः। लिश्यते। लिश्यति। लिलेश। लिलिशे। लेष्टा। लेक्ष्यति। ०ते। लिश्यात्। लिक्षीष्ट। अलिक्षत्। अलिक्षत। अलिक्षाताम्। लिलिक्षति। ०ते। लेलिश्यते। लेलेष्टि। लेशयति। अलीलिशत्। लेशः।

लिह्—अदा, उ। आस्वादनम्।

लेहनम्। लट् लेढि। लीढः। लिहन्ति। लीढे। लिक्षे। लीढ्वे। लेढि भेषजवन्नित्यं यः पथ्यानि, भ १८, ७। लोट् लेढु। लीढि। लेहानि। लीढाम्। लिङ् लिह्यात्। लिहीत। श्वा लिह्याद्धविः, मनु ७, २१। लङ् अलेट्। अलीढ। लिट् लिलेह। लिलिहे। लुट् लेढा। लृट् लेक्ष्यति। ०ते। आशिष, लिह्यात्। लिक्षीष्ट। लुङ् अलिक्षत्। अलिक्षत। अमीढ। अलिक्षाताम्। अलिक्षन्त। अलिक्षावहि। सन् लिलिक्षति। ०ते। यङ् लेलिह्यते। लेलेढि। णिच् लेहयति। अलीलिहत्। लीढ्वा। ०लिह्य। लीढः। लेहनम्। लेहः। लेह्यः। लेढव्यः। लिट्। अव—अवलेहनम्। आ—वेधनम्। सेनान्यमालीढमिवासुरास्त्रैः, र २, ३७।

ली—लीङ्, दि, आ। ली, क्रया, प।

श्लेषणम्। लीनभावः। लट् लीयते। लिनाति। लिनाति धर्म एवासौ नेन्द्रियार्थेषु लीयते, कवि २६०। उत्थाय

हृदि लीयन्ते दरिद्राणां मनोरथाः, हतौ। लिट् ललौ। लिलाय, पा ६, १, ५१। लिल्यतुः। लिल्ये। लुट् लेता, लाता। लृट् लेष्यति। ०ते। लास्यति। ०ते। आशिषि, लीयात्। लेषीष्ट, लासीष्ट। लुङ् अलैषीत्। अलासीत्। अलैष्टाम्। अलासिष्टाम्। अलैषुः। अलासिषुः। अलेष्ट। अलास्त। अलेषाताम्, अलासाताम्। अलेषत, अलासत। भावे, लीयते। अलायि। ध्वाङ्क्षैः शिरसि लीयते, भ १८, १३। सन् लिलीषति। ०ते। यङ् लेलीयते। लेलयीति। लेलेति। णिच् (स्नेहद्रवे) विलीनयति विलाययति विलालयति विलापयति वा घृतम्। लीहं विलापयति। जतु विलाययति, कौ १८४। पा ७, ३, ३९। पूजाभिभववञ्चनेषु आत्मनेपदम्, पा १, ३, ७। जटाभिर्लापयते (पूजामधिगच्छति) श्येनो वर्त्तिकामुल्लापयते (अभिभवति)। बालकमुल्लापयते (वञ्चयति)। ली, चु, प। द्रवीकरणम्। लाययति। लयति। विलयत्यबलानाञ्च हृदयं मदनव्यथा, कवि १८६। लेता। लेष्यति। लीत्वा। ०लाय, ०लीय। लीनः। लयनम्, लानम्। लयः, लायः। लेतुम्, लातुम्। लेता, लाता। लेतव्यम्, लातव्यम्। अप—न्यग्भावनम्। न्यक्करणम्। अपलापयमानः शत्रून्, भ ८, ४४। उद् (णिच् श्रा) प्रतारणम्। अभिभवः। पूजा। नि—पतनम्। निलिल्ये मूर्ध्नि गर्भोऽस्य, भ १४, ७६। प्र—अदर्शनम्। सह मेघेन ताड़ित् प्रलीयते, कु ४, ३३। वि—प्रणाशः। श्लेषणम्। न भुवि व्यलीयत (नातिष्ठत्), मा १, १२। (णिच्) द्रवीकरणम्।

लुञ्च्—लुन्च्, लुन्चु, भ्वा, प।

अपनयनम्। अपसारणम्। उत्पाटनम्। लुञ्चति। लुलुञ्च। केशान् लुलुञ्चुः, भ ३, २२। लुञ्चिता। लुञ्चिष्यति। अलुञ्चीत्। अलुञ्चिष्टाम्। अलुञ्चीत् कर्णनासिकम्, भ १५, ५७। लुञ्चित्वा, लुञ्चित्वा, पा १, २, २। लुञ्चितः। लुक्।

लुञ्ज्—लुजि (कुप) चु, प। दीप्तिः।

लुञ्जयति। लुजि, चु, प। (तुजि)।

लुट्—भ्वा, दि, प। १विलोड़नम्।

लोटनम्। सम्बन्धीभावः, वो। लुट् (रुट) भ्वा, आ। २प्रतिघातः। २दीप्तिः, वो। लोटति। ०ते। लुठ्यति। लुठ्यन्ति भूमौ, भ १८, ११। लुठ्यन् सगोकोभुवि, भ ३, ३२। लुलोट। लुलुटे। लोटिता। लोटिष्यति। ०ते। अलोटीत्। अलुटत्। अलोटिष्ट। दि, अलुटत्। लुट् (कुप) चु, प। दीप्तिः। लुट्, च, प। सञ्चूर्णनम्। लोटयति। अलूलुटत। लुठ्यत्यट्टालकान् दुर्गान् कवचानि च लोटति। रिपूणां लोटयत्याजौ कुञ्जराणां घटाञ्च यः॥ कवि १०७।

लुठ्—(उठ्) भ्वा, प। उपघातः।

लुठ् (रुठ) भ्वा, आ। प्रतिघातः। पतनम्। विचेष्टनम्। लोठति। ०ते। क्वचित् कार्य्ये न लोठति, कवि ४६। लुलोठ। लुलुठे, लुलुठे पुष्पकोदरे, भ १४, ५४, ३। लोठिता। लोठिष्यति। ०ते। लुठ्यात्। लोठिषीष्ट। अलोठीत्। अलुठत्। अलोठिष्ट, अलोठिष्ट भूपृष्ठे, भ १५, ५६। अस्य रंहसा शाखिनोऽलुठन्, भ १५, २५।

लुठ्, तु, प । संश्लेषणम् । सम्बन्धीभावः, दुर्गा । लुठति । मणि र्लुठति पादेषु, स्थितो । हारोऽयं हरिणाक्षीणां लुठति स्तनमण्डले, दर्पणः । लुलोठ । लुलुठिथ । लुठिता । लुठिष्यति । अलुठीत् । अलुठिष्टाम् । अलुठिषुः । लुठ्, चु, प, वो । चौर्य्यम् । लोठयति ।

लुड्—भ्वा, प । विलोड़नम् ।

मन्थनम् । लोडति । लुड्, तु, प, वो । १संवरणम् । २श्लेषः । लुडति । लुडिता ।

लुण्ट्-लुटि (रुटि) भ्वा, प ।

स्तेयम् । लुण्टति । लुण्ट्, चु, प, वो । १अवज्ञा । २चौर्य्यम् । लुण्टयति । लुण्टति । दन्त्यनकारप्रकृतिः । टयोर्गान्मूर्द्धन्यः । तेन भ्वादिपक्षे यमादौ तल्लोपे लुण्यते इति दुर्गादासः ।

लुण्ठ्—लुण्ड्, लुठि, लुडि (रुठ)

भ्वा, प । १स्तेयम् । २गतिः । लुठि, भ्वा, प । १आलस्यम् । २प्रतिघातः । लुण्ठति । लुण्डति । लुण्ठ्, लुण्ड्, चु, प । स्तेयम् । यो लुण्ठति परद्रव्यं तच्छिरो लुण्ठयत्यसौ, कवि ४६ । लुण्ठयति, कौ १७२ । लुण्डयति ।

लुन्थ्—लुथि (कुथि) भ्वा, प ।

१हिंसा । २संक्लेशनम् । लुन्थति । लुन्थिता ।

लुप्—लुपु (युपु) दि, प ।

विमोहनम् । व्याकुलीकरणम् । आलोभावः, दुर्गा । लुप्यति । पातुं लुप्यति लावण्यं नेत्राञ्जनपुटेन यः, कवि १७३ । लुलोप । लोपिता । लोपिष्यति । अलुपत् । अलोपीत्, वो । लुप्ल्, तु, उ । छेदनम् । उच्छेदनम् । लोपः । लुम्पति । ०ते, पा ७, ४, ५९ । यो न लुम्पति पूर्वेषां स्थितिम्, कवि १७१ । लुलोप । लुलुपे । लोप्ता । लोप्स्यति । ०ते । लुप्यात् । लुप्सीष्ट । अलुपत् । अलुप्त । अलुप्साताम् । अलुप्सत । कर्मणि, लुप्यते । अलोपि । तस्य भागो न लुप्यते, मनु ९, २, ११ । तेषामेकः शिष्यते अन्ये लुप्यन्ते, पा १, २, ६१ । लुलुप्सति । ०ते । यङ् (भावगर्हायाम्) लोलुप्यते, पा ३, १, ३४ । लोलोप्ति । लोपयति । अलूलुपत्, अलुलोपत् । लुप्त्वा । ०लुप्य । लुप्तः । लोपः । लोप्तव्यम् । लोप्तुम् । मांसान्योष्ठावलोप्यानि, भ ५, १४ । युवधैर्य्यं लोपिनं गुणोत्कर मशृणोत्, नै १, ४२ ।

लुभ्—भ्वा, दि, प । गार्ध्यम् ।

आकाङ्क्षा । लोभः । लुभ्, तु, प । विमोहनम् । आकुलीकरणम् । भ्वादेराकृतिगणत्वात् । लोभति इत्यप्याहुः, कौ १४३ । लोभति । लुभ्यति । लुभति । लुभत्यर्थे च कामे च धर्मे लुभ्यति यः सदा, कवि २६५ । लुलोभ । लुलुभतुः । लुलोभिथ । लुलुभिव । तथापि रामो लुलुभे मृगाय, मह्नाना । लोब्धा, लोभिता, पा ७, २, ४८ । लोभिष्यति । अलोभीत् । अलोभिष्टाम् । अलोभिषुः । दि, अलुभत् । लुलुभिषति, लुलो० । लोलुभ्यते । लोलोब्धि । लोभयति । अलूलुभत् । (विमोहने) लुभित्वा, लोभित्वा । लुभितः । विलुभिताः केशाः, अन्यत्र लुब्धा, लुभित्वा, लोभित्वा । लुब्धः । लुब्धवान्, पा, ७, २, ५४ । लोभनम् । लोभः । लोब्धव्यम्, लोभितव्यम् । लोब्धा, लोभिता । लोब्धुम्,

लोभितुम्। लोभी। लोचनलोभनीया शस्यषड्क्तिः, भ २, १३।

लुम्ब्—लुबि (तुबि) भ्वा, प।

अदंनम्। लुबि (तुबि) चु, प। १अदर्शनम्। २अदंनम्, वो। लुम्बति। लुम्बयति।

लुल्—(लुड्) भ्वा, प। विलोडनम्।

चलनम्। लोलति। रोषो लोलति स्म वचनेषु बधूनाम्, मा १०, ३६। क्त, लुलितम्। वनं लुलितपल्लवम्, भ ६, ५६। लुलिताङ्गरागः, र १६, ५८।

लुष्—भ्वा, प, वो। स्तेयम्।

लुह्—भ्वा, प, वो। लिप्सा।

लोहति। लुलोह। लोढा। अलुचत्।

लू—लूञ्, क्रया, उ। छेदनम्।

लट् लुनाति, पा। लुनीतः। लुनन्ति। लुनीते। लुनाते। लुनते। लुनीहि चन्दनम्, मा १, ५। लिङ् लुनीयात्। लुनीत। लङ् अलुनात्। अलुनीत। शरासनज्या मलुनाद् विडौजसः, र ३, ५६। लिट् लुलाव। लुलविथ। लुलुवे। नासां तस्या लुलाव, भ ६, ८०। लुट् लविता। लट् लविष्यति। °ते। आशिषि, लूयात्। लविषीष्ट। लुङ् अलावीत्। अलाविष्टाम्। अलाविषुः। अलविष्ट। अलविषाताम्। अलविषत। लोकानलावीत्, भ २, ५३। कर्मणि, लूयते। अलावि। कर्मकर्त्तरि, अलावि। अलविष्ट केदारः स्वयमेव। सन् लुलूषति। °ते। यङ् लोलूयते। लोलोति। णिच् लावयति। अलीलवत्, पा ७, ४, ८०। लिलावयिषति। लवित्वा। °लूय। लूनः। लूनिः। लवनम्।

लूष्—(रूष्) भ्वा, प। भूषणम्।

लूषति। लूष्, चु, प। १हिंसा। २स्तेयम्।

लेप्—लेपृ (मेपृ) भ्वा, आ। गतिः।

लैण् (पैण)।

लोक्—लोक, भ्वा, आ। दर्शनम्।

लोकते। लुलोके। लोकिता। अलोकिष्ट। ओक, चु, प। दीप्तिः। लोकयति। अलुलोकत्। अव, आ—आलोकनम्। आलोकन्ते य मबला नालोकयन्ति यश्च ताः, कवि २४८। अथालुलोके तपोवनम्, भ २, २४। आलोकयाञ्चक्रुरिवादरेण, भ २। वि—विलोकनम्। विलोकयन्त्यो वपुः (स्वार्थे णिच्), र २, ११।

लोच्—लोचृ, (लोक) भ्वा, आ।

दर्शनम्। पर्य्यालोचनम्। प्रणिधानम्। लोचते। लुलोचे। लोचिता। अलोचिष्ट। लोचृ (लोक) चु, प। दीप्तिः। कथनमिति रमानाथः। लोचयति। अलुलोचत्, पा ७, ४, २। आ—आलोचनम्। आलोचते सदा नीति मालोचयति सत्क्रियाम्, कवि २४८। इत्यालोच्य हिरण्यकविवरसमीपं गताः, हितो। आलोचयन्ती विस्तार मम्भसाम्, भ ७, ४०। नृपः पूर्वं मवालुलोचे, भ १, २३। क्षेमङ्कराणि कार्य्याणि पर्य्यालोचयताम्, भ ६, १०५। समा—समालोचनम्।

लोड्—लोट्—लौड्—(रोड्) भ्वा, प।

उन्मादः। लोडति। लोटति। लौडति, वो।

लोष्ट्—(गोष्ट) भ्वा, आ। सङ्घातः।

राशीकरणम्। लोष्टते। लुलोष्टे। लोष्ट्रम्।

ख्वी—ख्वी—क्रया, प, वो । श्लेषणम् । ख्वीनाति । ख्विनाति ।

ख्वी, क्रया, प, वो ।

गतिः । ख्विनाति । ख्वीनातीत्यपि ।

## (व)

वच्—भ्वा, प । १कोपः । २सङ्घातः ।

वख्—वङ्ग्—वखि (उख) भ्वा, प ।

गतिः । वखति । ववखतुः । वङ्गति ।

वङ्ग्—वकि, भ्वा, आ । १कौटिल्यम् । वक्रीभावः । वक्रीकरणम्, दुर्गा । २गतिः, वो । वङ्गते । ववङ्गे । अवङ्गिष्ट ।

वङ्ग्—वगि (अगि) भ्वा, प । गतिः ।

खञ्जः, वो । वङ्गति । ववङ्ग । वङ्गिता ।

वङ्ग्—वघि (अघि) भ्वा, आ ।

१गतिः । २गत्यारम्भः । जवः, वो । ३आक्षेपः । निन्दा । ४आरम्भः । वङ्घते ।

वच्—अदा, प । परिभाषणम् ।

कथनम् । लट् वक्ति । वक्तः * * अयमन्तिपरो न प्रयुज्यते बहुवचनपर इत्यन्ये । भिपर इत्यपरे, कौ १२० । वक्ति अन्यवचनस्थानभिधानमाचष्टे इति प्रदीपः । वक्षि । वक्थः । वच्मि । हितं मितञ्च यो वक्ति, कवि ९४ । लोट् वक्तु । वक्ताम् । * * वग्धि । लिङ् वच्यात् । लङ् अवक् । अवक्ताम् । लिट् उवाच, पा ६,१,१७ । ऊचतुः । ऊचुः । उवक्षिथ, उवक्थ । ऊचिव । उवाच दशमूर्द्धानं वचः, भ ५, ७६ । लुट् वक्ता । लृट् वक्ष्यति । आशिषि, उच्यात् । लुङ् अवोचत्, पा ७, ४, २० । अवोचत्तम्, र ३, ४३ । लिङादौ ब्रूधातोरात्मनेपदे, ऊचे । वक्ष्यते । वचीष्ट । कर्मणि, उच्यते । अवाचि । एतद्देवानां युग मुच्यते, मनु १, ७१ । अङ्गयुनाऽथ क्षितिपः शुभंयु रूचे वचः, १, २० । सन् विवक्षति । यङ् वावच्यते । वावक्ति । णिच् वाचयति । अवीवचत् । वच्, चु, प । परिभाषणम् । वाचनम् । पाठः । सन्देशः । स्वस्तिवाचनम् । वाचयति । वचति । न वचत्यनृतं वचः । नानादेशसमुद्भूतां वाचयत्यखिलां लिपिम्, कवि ९४ । ववाच । ववचतुः । वक्ता । अवाक्षीत् । अयं सेट् इति भट्टमल्लः । विप्रानवाचयन् (स्वस्तिवाचनं कारितवन्तः), भ १७, १ । कथनीयमवोवचत्, भ ६,४६ । उक्ता । ०उच्य । उक्तः । उक्तिः । वचनम् । वाकः । वक्तुम् । वक्तव्यम् । वचनीयम् । वाच्यम् । वक्ता । वाक् । वचः । ऊचिवान् । अनूचानः । णिच्, वाचयित्वा । ०वाच्य । वाचितः । वाचनम् । वाचकः । वाचयिता । अनु—अनुवादः । निर्—निरुक्तिः । व्याख्या । प्र—कथनम् । वर्णनम् । प्रति—प्रतिवचनम् ।

वज्—भ्वा, प । गमनम् ।

वजति । ववाज । ववजतुः । वेजतुरिति चान्द्राः । वजिता । अवजीत्, अवाजीत् । वज्, चु, म । १संस्करणम् । २गतिः । पक्षादिना बाणसंस्कार इति प्राञ्चः । मार्गणसंस्कारयोरिति केचित् । वाजयति पक्षैर्बाणं काण्डकारः, दुर्गा ।

वञ्च्—वन्चु (चन्चु) भ्वा, प ।

गतिः । वञ्चति । वञ्चन्ति च शरच्चन्द्रं शुचयो दिक्षु तद्गुणाः, कवि १७८ । ववञ्च ववञ्चु राङ्कवक्षितम्, भ १४, ७४ । वाञ्चिता । वाञ्चिष्यति । अवञ्चीत् ।

अनौश्वरः अवच्छिष्टम्। विच्छिद्यति वनौकस्यां, पा ७, ४, ८५। अनौवह्-श्चि वनौयकः वच्चयति। आर्द्रं वच्चयति पर्यवस्यति वतुः, भ्वा, आ। विप्रलम्भः प्रलारणम् वच्चना वच्चयते मूर्खान्मामवच्चयन्ति, भ १४,१५ वच्चित्वा, वञ्चित्वा, पा १, २, २५। णिच् वच्चयित्वा। वञ्चितः। वञ्चनम् वच्चना वच्चयितव्यम्। वच्चनीयम्। न वच्चनीया प्रभवोऽनुजीविभिः, भा १, ४ (२) वञ्चित्वा, वञ्चा। वञ्चः।

वट्—भ्वा, प। वेष्टनम्।

वटति। ववाट ववटतुः वटिष्यति। अवटीत्, अवाटीत् अय वर्ग्यादिरपि वटति। वटतुः वाटयति। परिभाषणे घटादिः, वटयति। वट अटनः (वष्ट)। वटः। वाटकः। वाटः। वटुः। वटिका।

वठ्—भ्वा, प। स्थौल्यम। सामर्थ्यम्।

वण्—(वण भ्वा, प। शब्दः।

वणति। ववाण ववणतुः। अयं वर्ग्यादिरपि। वेणतुः वणिता अवणीत्, अवाणीत्। वाणयति। अवीवणत्, अववाणत्।

वण्ट—वटि, भ्वा, चु, प।

विभाजनम। वण्टनम। वण्टति। वण्टन्ति हाटकं विप्राः, कवि ७८ वण्टयति वो। वट, वटि वण्ट अदनो। चु, प। विभाजनम। वण्टनम। वट वेष्टनेऽपि, वो। वटयति। वण्टयति। वण्टापयति। वण्टयन्ति च वस्त्राणि भूमिं वण्टापयन्ति च, कवि ७८। वटि, वठि, भ्वा, आ। ऐकचर्य्या। सहायं विना आचरणम्। असहाय गमनम्। वण्टते, को ५२। वण्टते।

वण्ड—वडि, भ्वा, आ। १वण्टनम्।

२वेष्टनम् वण्डते। ववण्डे। वण्डिता। वडि, चु, प, वो। विभागः। वण्डयति।

वद्—भ्वा, प। कथनम्।

लट् वदति। सत्यं वदति सर्वत्र, कवि ८८। दीक्षिसाल्वनज्ञानोत्साहविवादप्रार्थनासु आत्मनेपदम्, पा १, ३, ४७। शास्त्रे वदते (भासमानो ब्रवीति। (सम्यग्बोधपूर्वकं वदति)। लीले वदते (उत्साह माविस्करोति)। लिट् उवाद। उवदिथ, ऊदिव। ऊदे। लुट् वदिष्यति। ०ते। आशिषि, उद्यात्। वदिषीष्ट। लुङ् अवादीत्। अवादिष्टाम्। अवादिषुः, पा ७, २, ३ अवादिष्ट। अवदिषाताम्। अवदिषत। कर्मणि, उद्यते। अवादि। सन् विवादिषति। ०ते। यङ् वावद्यते। वावत्ति। णिच् वादयति। ०ते। अवीवदत्। ०त। (वादनम्) अवादयन् वेणुमृदङ्गकांस्यम्, भ ३, ३४। भेरीश्चावीवदन् शुभाः, भ १४, ४। वादयते मृदुवेणुम्, गीतगो। वद्, चु, उ। आत्मनेपदीति कश्चित्। १शब्दे शब्दनम्। कथनम्, वो। वादयति। ०ते। वदति ०ते। सर्वस्य वदते हितम्। यत्र सत्यं न च हितं न वादयति तद्वचः, कवि ८८। ववाद। वयदे। वदिता। वद्यात्। वदिषीष्ट। उदित्वा। ०उद्य। उदितः। उक्तिः। वदनम्। वादः। वदः। वदितुम्। वदिता। वादी। वादकः। वाद्यम्। अवद्यम्। अच्छोद्यम्। मृद्योद्यम्। प्रियंवदः। वावदूकः। अनु—अनुवादः। गिर अनुव-

दति शुक्र स्ते, र ५, ७४। अनुवदते कठः कालापस्य, पा १, ३, ४८। उक्तमनुवदति। घोषस्यान्यवदिष्टेव लङ्का पूतक्रतोः पुरः, भ ८, २८। अप—अपवादः। निन्दा। अपवदति। ०ते। अपवदते धनकामो न्यायम्, पा १, ३, ७३। नार्त्तोऽप्यपवदेत् विप्रान्, मनु ४, २७६। नृभ्योऽपवदमानस्य (कुर्यतः), भ ८, ४५। अभि—णिच् अभिवादनम्। पादग्रहणम्। प्रणामः। सर्वानभिवादये वः, शकु १, ७२। उप—सान्त्वना। प्रार्थना। प्रलोभनम्। भृत्यानुपवदते [सान्त्वयति]। परदारानुपवदते [प्रार्थयते प्रलोभयति वा], पा १, ३, ४७। काश्चिन्नोपावदिष्ट, भ ८, २८। परि—परिवादः। निन्दा। परिवदन्त्यां स्तुष्टो भवति दुर्जनः, भारत। प्र—कथनम्। कीर्त्तनम्। प्रवादः। विप्र—विरोधोक्तिः। विप्रवदति। ०ते, पा १, ३, ५०। प्रवदमानैस्तां संयुक्तां राक्षसैः, भ ८, ३०। सम्प्रसहोच्चारणम्। सम्प्रवदन्ते ब्राह्मणाः। सम्प्रवदन्ति खगाः, पा १, ३, ४८। प्रति—प्रतिवचनम्। तान् प्रत्यवादीदथ राघवोऽपि, भ २, २८। वि—विवादः। क्षेत्रे विवदन्ते, पा १, ३ ४७। उभौ विवदेयातां स्त्रिया धने, मनु ८, १८१। केनचिद् व्यवदिष्ट न, भ ८, २८। सम्—संवादः। सादृश्यम्। षड्जसंवादिनौ केकाः, र १, ४०। वार्त्तिकषड्जिकौ न संवदेते इति भाष्यम्। विसम्—विसंवादः।

वध् (हन्)।

वन्—भ्वा, प। सम्भक्तिः। सेवा।

वन् (ष्टन) भ्वा, प। शब्दः। वनु, भ्वा, प। १व्याप्तिः। २हिंसा। अयन्तु कगवत् क्रियामात्रे इत्यन्ये। वनु, त, आ। चान्द्रमते परस्मैपदी। याचनम्। वनति। वनोति। वनुते। ववान। ववनतुः। ववने। वर्ग्यादिरपि। वेनतुः। वेने। वेनिषे इति चान्द्राः। वनिता। वनिष्यति। ०ते। अवनीत्, अवानीत्। अवनिष्ट। णिच् वानयति। भौवादिको वनु घटादिः। वनयति, वानयति। प्रवनयति। वन्, चु, प, वो। १उपकारः। २श्रद्धा। ३घातः। ४शब्दः। ५उपतापः। वानयति। वनति। अयं कैश्चिन्न मन्यते, दुर्गा। (उ) वनित्वा, वत्वा। ०वत्य। वतः। वतिः।

वन्द्—वदि, भ्वा, आ।

१अभिवादनम्। नमस्कारः। २स्तुतिः। वन्दते। ववन्दे। वन्दिता। वन्दिष्यते। वन्दिषीष्ट। वन्दिषीष्ठा दिवौकसः, भ १८, २७। अवन्दिष्ट। अवन्दिषाताम्। अवन्दिषत। विवन्दिषते। वावन्द्यते। वावन्ति। णिच् वन्दयति। अवन्दत्। वन्दित्वा। ०वन्द्य। वन्दितः। वन्दनम्। वन्दारुः। वन्दी।

वप्—ड्वप्, भ्वा, उ। १वपनम्।

क्षेत्रे बीजप्रक्षेपणम्। २गर्भाधानम्। निषेकः। ३छेदनम्। मुण्डनम्। वपति। ०ते। केशान् वपति। यदि वपति क्षुराणः क्षेत्रं मासाद्य बीजम्, स्मृतिः। उवाप। ऊपतुः। उपथ, उवप्थ। ऊपे। वप्स्यति। ०ते। उप्यात्। वप्सीष्ट। अवाप्सीत्। अवाप्साम्। अवाप्सुः। अवप्त। अवप्साताम्। अवप्सत। कर्मणि, उप्यते। अवापि। यादृशं मुप्यते बीजम्, मनु ९, ३९। विवप्सति। ०ते। वावप्यते।

वावप्ति । वापयति । अवीवपत् । उप्ता । उप्य । उप्तः । उप्तिः । वपनम् । वापः । (ड्) उप्त्रिमः । अनुप्त्रिमफलाशिनो, भ ४, ३७ । वप्तुम् । वप्ता । वापौ । वप्तव्यम् । बीजं न वप्तव्यम् परपत्नियोनौ, मनु ९, ४२ । नि, निर्—उत्सर्गः । दानम् । पिण्डदानं निवापः स्यादित्यमरः । निवपेः सहकारमञ्जरीः, कु ४, ३८ । यमाय तं निरवापं, भ १४, ८६ । वत्सतरीं निर्वपन्ति, उत्तर १३४ । आतिथ्यमेभ्यः परिनिर्विवपसोः, भ ३, ४२ । प्र—प्रक्षेपः । प्रणिवपति । प्रवपाणि वपुर्वङ्क्षौ, भ २०, ३६ । प्रति—विन्यासः । मौलिं प्रत्यूपुः पद्मरागैण, र १७, २७ । प्रत्युप्तः ।

वभ्र्—वभ्र् (भ्रभ्र) भ्वा, प । गतिः ।

वम्—टुवम्, भ्वा, प । उद्गिरणम् ।

वमनम् । वमति । फणी पीत्वा क्षीरं वमति गरलम् । ववाम । ववमतुः, पा ६, ४, १२६ । भागवृत्तौ तु वेमतुरित्याद्युदाहृतम् । तद् भाष्यादौ न दृष्टम्, कौ ८८ । ववमतुः, वेमतुः, वो । वेमू रुधिरमिति चण्डो, दुर्गा । वमिता । वमिष्यति । अवमीत् । अवमिष्टाम् । अवमिषुः, रक्तमवमिषुर्मुखैः, भ १५, ६२ । विवमिषति । वंवम्यते । वंवन्ति । वमयति । वामयति । उद्वमयति, घटादिः । (ड, वो) वमित्वा, वान्त्वा । वान्तः । वान्तिः । भावारम्भयोः वान्तम्, वमितम् । वमनम् । वमः । वामः । वमिः । (टु) वमथुः । वमितव्यम् । उद्—उद्वमनम् । कथनम् । सा वरावुद्ववाम, र १२, ५ ।

वय्—(अय) भ्वा, आ । गतिः ।

वयते । ववये । वयितासे ।

वर—अदन्तः । चु, प । ईप्सा ।

वरयति । कन्या वरयते रूपम् ।

वर्च्—भ्वा, आ । दीप्तिः । वर्चते ।

वर्ण—अदन्तः । चु, प । १वर्णक्रिया ।

रञ्जनम् । २ विस्तारः । वर्णनम् । ३ स्तुतिः । ४उद्योगः, वो । ५ दीपनम्, वो । सुवर्णं वर्णयति । प्रतिमां वर्णयति । कथां वर्णयति । तन्तुं वर्णयति (विस्तारयति) । हरिं वर्णयति (स्तौति) । वर्णयति (उद्युङ्क्ते दीप्यते वा), दुर्गा । वर्ण (चूर्ण) चु, प । १वर्णनम् । २प्रेरणम् । ३रागः, वो । वर्णयति । निर्—दर्शनम् । निर्वर्णनन्तु निध्यानं दर्शनालोकनेक्षणमित्यमरः । शकुन्तलां निर्वर्ण्य, शकु १, १८३ ।

वर्ह्—चु, प । १छेदनम् ।

२पूरणम् । वर्हयति । वर्हयत्यरिवीराणां क्रान्त्वा मूर्द्धानमाहवे, कवि ८० । वर्हनं छेदने इत्यमरः ।

वर्ष्—भ्वा, प, वो । गतिः । वधः ।

वर्ष्—वर्ष्—भ्वा, आ । स्नेहनम् ।

वर्ह् (बर्ह्) ।

वल्—वल्—भ्वा, आ । १संवरणम् ।

२सञ्चरणम् । वलते । वल्लते । वलतेऽभिमुखं तव, मा ६, ११ । वलद्बाधां राधाम् । त्वदभिसरणरभसेन वलन्ती, गीतगो १, २६, ६, ३ । इत्यादौ परस्मैपदमपि । ववले । ववलिरे (अरिष्टताः), मा ६, ३८ । वलिता । अवलिष्ट । अवलिषाताम् । अवलिषत ।

णिच् वलयति, वालयति, घटादिः। कुवलयं वलयन् मरुदाववौ, मा ६, ३। सम्—संवलनम्। मिश्रणम्। ऋषिविषः संवलिता विरेजिरे, मा २, २१। तिमिरसंवलितेव दीप्तिः, भा ५, ४८। वलिः। वल्लिः। वालः।

वल्क्—चु, प। उक्तिः। वल्कयति।

वल्ग्—(अगि) भ्वा, प। गतिः।

प्लुतगति रिति भट्टमल्लः। वल्गति। ववल्ग। ववल्गुश्च पदातयः, भ १४, ६। वल्गिता। अवल्गीत्।

वल्ग्—'वल्ग्' भ्वा, आ। भोजनम्।

वल्गुल, वल्गूल, अदन्तौ। चु, प।

१छेदः। २पवित्रीकरणम्। वल्गुलयति। वल्गूलयति। पल्गुलयति, पल्गूलयति, वो।

वल्ह् (वल्ह्) वल्ह (वल्ह)।

वल्ह्—भ्वा, आ, वो।

वश्—अदा, प। १कान्तिः।

२इच्छा। स्पृहा। अयं छान्दसः, कौ १२६। लट् वष्टि। उष्टः। उशन्ति। जयाय सेनान्य मुशन्ति देवाः, कु ३, १५। हि, उड्ढि। वशानि। लिङ् उश्यात्। लङ् अवट्। औष्टाम्। औशन्। अवशम्। लिट् उवाश। ऊशतुः। उवशिथ। ऊशिव। लुट् वशिता। लृट् वशिष्यति। आशिषि, उश्यात्। लुङ् अवशीत्, अवाशीत्। सन् विवक्षिषति। यङ् वावश्यते, पा ६, १, २। वावष्टि। णिच् वाशयति। अवीवशत्। उशित्वा। °उश्य। उशितः। उष्टिः। वशनम्। वाशः। वशितुम्। वशः। वश्यः। उशीरम्।

वष्—(क्वष) भ्वा, प। हिंसा।

वस्—भ्वा, प। निवासः।

लट् वसति। वसति वने वनमाली, गीतगो ५, ८। लिट् उवास। ऊषतुः, पा ८, ३, ६०। उवसिथ, उवस्थ। उवास पर्णशालायाम्, भ ४, ७। लुट् वस्ता। लृट् वत्स्यति, पा ७, ४, ४९। लुङ् अवत्स्यत्। आशिषि, उष्यात्। लुङ् अवात्सीत्। अवात्ताम्। अवात्सुः। भावे, उष्यते। अवासि। सन् विवत्सति। यङ् वावस्यते। वावस्ति। णिच् वासयति। °ते। अवीवसत्। °त। यस्यां वासयते सीताम, भ ८, ६४। उषित्वा, पा १, २, ७। °उष्य। राघवः प्रोष्य पापीयान्, भ ५, ९१। तत्र ता मुषित्वा रजनीं, भारत। उषितः, पा ७,२,५२। उष्टिः। वसनम्। वासः। वस्तुम्। वस्तव्यम्। वसतिः। अधि, अनु, आ—वासः। अधिष्ठानम्। ग्राममधिवसति, पा १, ४, ४८। सहासनं गोत्रभिदाध्यवात्सीत्, भ १, ३। दण्डकानध्यवत्तां यौ, भ ५, ६। सोऽध्यवात्सीच्च गां हृतः, भ १५, ६८। शून्यमन्ववसद्वनम्, भ ५, ७५। गृहस्थाश्रममावसेत्, मनु ३, २,। उप—निवासः। भोजनवृत्तिः। उपवासः। ग्राममुपवसति, पा १, ४, ४८। एकादशीमुपवसन्ति निरम्बुभक्षाः। नि—निवासः। वनेषु वासतं येषु निवसन्, भ ४, ८। निर्—णिच्—निर्वासनम्। प्रवासनम्। प्र—विदेशावस्थानम्। प्रवासः। णिच्—निर्वासनम्। भूपतेरपि तयोः प्रवत्स्यतोर्नम्रयोरुपरि वाष्पविन्दवः, र ११, ४। तान् प्रवासयेद् दण्डयित्वा, मनु ८, १२३। प्रवा-

सयति यः क्रुद्धः कुलं विद्विषाम्, कवि १४। परि—क्त, पर्युषितम्। प्रति—निवासः। तस्य कोटरे जरद्गवनामा गृध्रः प्रतिवसति, हितो। वि—वासः। णिच्—निर्वासनम्। पित्रा यौ विवासितौ, भ ४, ३५। वस्, अदा, आ। आच्छादनम्। परिधानम्। लट् वस्ते। वसाते। वसते। वस्से। वध्वे। लिट् ववसे। वसनं ववसे, मा ६, ७५। लुट् वसिता। लृट् वसिष्यते। लुङ् अवसिष्ट। सन् विवसिषते। यङ् वावस्यते। वावस्ति। वसित्वा। ०वस्य। वसितम्। वसनम्। वस्त्रम्। वासः। वासांसि वसित्वा, भ ३, ४५। नि, वि—परिधानम्। निवध्व माध्वम्, भ ३, ४४। मनोरमे न व्यवसिष्ट वस्त्रे, भ ३, २०। निवासयति यश्चित्रं चीनांशुकम्, कवि १४। वसु, दि, प। स्तम्भः। नक्षत्रतारहितौभावः, दुर्गा। दर्पः। वस्यति। यो वस्यस्यरिषु, कवि १४। ववास। ववसतुः। अयं वर्ग्यादिरित्येके। वेसतुः। वसिष्यति। अवसत्। अवसत्, अवसीत्, अवासीत् (वो)। वस्, चु, प। १स्नेहः। प्रीतिः। २छेदः। ३अपहरणम्। ४बधः, दुर्गा। वासयति। अवीवसत्। वस, अदन्तः। चु, प। निवासः। वसयति।

वस्क—वष्क्—वक्क् (क्वकि) भ्वा, चा।

गतिः। वस्कते। वष्कते। वक्कते।

वस्त्—चु, आ। अर्दनम्। वस्त्रयते।

वह्—भ्वा, उ। प्रापणम्।

वहनम्। धारणम्। वायो र्गतिः। स्यन्दनम्। लट् वहति। ०ते। नदी वहति, को २४७। तं जनमसत्यसन्धं वसुधे कथं वहसि, हितो। वहते विद्वतारातिं बहुरूपस्य यः श्रियम्, कवि २११। वीर भरं वहामुम्, भ २, ५१। लिट् उवाह। ऊढ। उवहिथ। ऊहे, पा ६, १, १७। लुट् वोढा, पा ३, ११२। लृट् वक्ष्यति। ०ते। आग्निषि, उह्यात्। वक्षीष्ट। लुङ् अवाक्षीत्। अवोढाम्। अवाक्षुः। अवोढ। अवक्षाताम्। अवक्षत। अवोढुम्। युवां भुवनस्य भारं दोर्भिरवोढम्, भ २, २७। कर्मणि, उह्यते। अवाहि। वसुधा तथोहे, भ २, ३८। ऊहिरे। मूर्ध्नि सिद्धार्थाः, भ १४, ८१। सन् विवक्षति। ०ते। यङ् वावह्यते। वावोढि। णिच् वाहयति। अवीवहत्। क्षिप्रं वाहय रथम्। वाहये तरिम्, भारत। स वाह्यते राजपथः शिवाभिः, १६, १२। ऊढ्वा। ०ऊह्य। ऊढः। ऊढिः। वहनम्। वाहः। वोढुम्। वोढा। वाही। वाहकः। ०वाट्। वोढव्यम्। वाह्यम्। वह्यम्। वहति मलयसमीरे, गीतगो ५, २। अति—णिच्—अतिवाहनम्। नरपतिं रतिवाहयाम्बभूव त्रियामाम्, र ८, ७०। अप—उत्क्षारणम्। अपोवाह वासोऽस्या मारुतः, भारत। आ—उत्पादनम्। धान्यं शाकञ्च वासांसि गुरवे (दत्त्वा) प्रीति मावहेत्, मनु २, २४६। उद्—विवाहः। धारणम्। उद्वहेत द्विजो भार्य्याम्, मनु ३, ४। उदूढलोकत्रितयेन, भा १, ३६। उद्वहन् परिघं गुरुम्, भ ८, ७। त मुद्वहन् धरणिधरेन्द्रगौरवम्, भागवतम्। निर्—निर्वाहः। भक्ति निर्वहति, र टी ८, ७५। नगाधिराजत्वं निर्वोढुम्, कु टी १, २। सर्वथा सत्यवचने देहो न निर्वहेत्, भागवतटीका ८, १९, ३२। प्र—वहनम्। प्रवाहः। गम्भीराः प्राव-

हन्नद्यः, भ १७, ६३ । वि—विवाहः । व्यूहरचना । चमूं व्यूढां द्रुपदपुत्रेण, गी १, ३ ।। सम्—णिच्, संवाहनम् । अङ्गमर्दनम् । संवाहयामि चरणौ, शकु ३, १२८ ।

वंह् (बंह्) ।

वा—अदा, प । १गतिः ।

वायोर्गतिः । २हिंसा । अयं वर्ग्यादि श्च । लट् वाति । वातः । वान्ति । न वाति वायु स्तत्पार्श्वे, कु २, ३५ । वाति वातः पुरे यस्य तावन्माचेण भीतवत्, कवि २१४ । वामि वात यतः कान्ता, महाना ४, २८ । लङ् अवात् । अवाताम् । अवान्, अवुः । वायवोऽवान् सुदुःसहाः, भ १७, ८ । लिट् ववौ । ववतुः । ववित्थ, ववाथ । वविव । लुट् वाता । लृट् वास्यति । लुङ् अवासीत् । अवासिष्टाम् । वायवोऽवासिषुर्भीमाः, भ १५, २६ । सन् विवासति । वा, चु, प । १ सुखाप्तिः । २ गतिः । ३सेवा । वापयति । अवीवपत् । वावा । ०वाय । वातः । वातिः । वानम् । वायुः । आ—समन्ततो वायुसञ्चलनम् । आववु र्वायवो घोराः, भ १४, ८७ । निर्—निर्वाणम् । शीतलत्वम् । निर्वृतिः । निर्वाणो मुनिवङ्गादौ निर्वात स्तु गतेऽनिले इत्यमरः । तस्य वपु र्जलार्द्रापवने न निर्ववौ, मा १, ६५ । निरवात् कृशानुः, राघवपा ८, ४२ । दीपनिर्वापकोऽन्धः स्यात्, स्मृतिः ।

वाङ्—वाचि (काङ्क्षि) भ्वा, प ।

आकाङ्क्षा । वाङ्क्षति ।

वाञ्छ्—वाञ्छि, भ्वा, प । वाञ्छा । इच्छा । वाञ्छति । ववाञ्छ । ववाञ्छतुः । वाञ्छिता । अवाञ्छीत् । अवाञ्छिष्टाम् । वाञ्छित्वा । ०वाञ्छ्य । वाञ्छितः । वाञ्छनम् । वाञ्छा । वाञ्छनीयम् । सप्तवाञ्छन्नाशिषः, भ १७, ५३ । न राति रोगिणेऽपथ्यं वाञ्छतेऽपि भिषक्तमः, स्मृतिः ।

वाड् (बाड्) ।

वात—अदन्तः । चु, प । १गतिः । २सेवा । ३सुखम् । वातयति । अववातत् । गतिसुख मिति रमानाथः । वातयति पान्थं वातः ।

बध् (बाध्) बाधित् (बृत्) ।

वाश्—वास्, वाशृ, वाष्ट, दि, आ ।

शब्दः । तिरश्चां शब्दः । दन्त्यान्तोऽय मपि, दुर्गा । वाश्यते । वास्यते । ववाशे । ववाशिरे शिवाः, भ १४, १४ । क्रूरा ध्वाङ्क्षा ववाशिरे, भ १४, ७६ । वाशिता । वाशिष्यते । अवाशिष्ट । विवाशिषते । वावाश्यते । वावाष्टि । वाशयति । अववाशत् । उद्—आह्वानम् । उद्वाश्यमानः पितरम्, भ ३, ३२ ।

वास—अदन्तः । चु, प । उपसेवा ।

गुणान्तराधानम् । वासयति वस्त्रं चन्दनः । शस्त्रहासयति व्रजन् दशदिशः कस्तूरिकासौरभैः, कवि १४ । छेदे चन्दनतरु र्वासयति मुखकुठारस्य, हितो ।

वाह्—वाह्ह (जेह्ह) भ्वा, आ । प्रयत्नः ।

वाहते । वर्ग्यादि श्च । बाहते । वाहते वाहिनीं हन्तुं बाहुभ्या माहवेषु यः, कवि २११ । ववाहे । वाहिता । असौन् वाहयाञ्चक्रुः (श्रापारितवन्तः), भ १४, २३ । क्त, (प्रतिज्ञाभृशयोः) वाढम् । अन्यत्र वाहितम्, पा ७, २, १८ ।

विच्—विचिर्, ह्वा, वो, रु, उ।

पृथक्करणम्। वेवेक्ति। वेविक्ते। विनक्ति। विङ्क्ते। वेवेक्ति वेदान्तं शास्त्राभ्यासेन सर्वदा। विविनक्ति च यत्नेन माजी सन्नहन च यः, कवि १३४। अवेवेक्। अवेविक्त। अविनक्। अविङ्क्त। विवेच। विविक्षे। योधान् जीवितेन विवेच, भ १४, १०३। वेक्ता। वेक्ष्यति। ०ते। अविचत्, अवैक्षीत्। अविक्त। विविक्षति। ०ते। वेविक्ष्यते। वेवेक्ति। वेचयति। अवीविचत्। वि—पृथक्करणम्। विवेचना। विविनक्ष्मि दिवः सुरान्, भ ६, ३६। धर्माधर्मौ व्यवेचयत्, मनु १, २६।

विछ्—तु, प। गमनम्।

विच्छायति। ०ते, वो, पा ३, १, ३८। विच्छति, वो। यत्र विच्छति तद्व्यूहः। यत्र विच्छायति स्वयम्, कवि १२०। विच्छायाञ्चकार। विविच्छ, पा ३, १, ३। विच्छायिता, विच्छिता। विछ्, (कुप) चु, प। दीप्तिः। विच्छर्यति।

विज्—विजिर्, ह्वा, उ। पृथग्भावः।

वेवेक्ति। वेविक्तः। वेविजति। वेविक्ते। वेविजाते। वेविजते। वेविज्यात्। वेविजीत। अवेवेक्। अवेविक्ताम्। अवेविजुः। विवेज। विवेजिथ, कौ ११३। विविजे। वेक्ता। वेक्ष्यति। ०ते। अविजत, अवैक्षीत्। विविक्षति। ०ते। विविज्यते। वेवेक्ति। वेजयति। अवीविजत्। विजौ, तु, आ। प्रायेणाय सुत्पूर्वः प्रयुज्यते। ओ विजौ, रु, प। १भयम्। उद्वेगः। २चलनम्। उद्विजते। विनक्ति। विङ्क्तः। विञ्जन्ति। विङ्क्ष्व। अविनक्। अविङ्क्ताम्। अविञ्जन्। विवेज। विविजे। विविजिथ। विजिता, पा १, २, २। विजिष्यति। ०ते। अविजीत्। अविजिष्ट। यमान्नोदविजिष्ठाः, भ ६, ६८। भावे, विज्यते। अवेजि। विविजिषति। ०ते। विजित्वा। ०विज्य। (ईश्वो) विग्नः। विक्तिः। वेजनम्। वेगः। विजितुम्। विजितव्यम्। वेजनीयम्। मनो नोद्विजते यस्य। उद्विनक्ति च संसारात्, कवि १४८।

विट्—भ्वा, प। १शब्दः। २आक्रोशः।

आक्रोशवाची ओष्ठ्यादि रिति माधवादयः। दन्त्यादि रिति वोपदेवाद्याः। वेटति। विवेट। वेटिता। अवेटीत्। वेटः। विटः। विटपः।

विड्—भ्वा, प, वो। आक्रोशः।

विडम्ब—अदन्तः। चु, प।

अनुकरणम्। विडम्बयति (वि—डम्ब)।

वित्त—अदन्तः। चु, प, वो। त्यागः।

विथ्—वेथ्, विथृ, वेथृ, भ्वा, आ।

याचनम्। वेथते। वेथते। 'विथ्' वेधते।

विद्—अदा, प। ज्ञानम्। बोधः।

लट् वेत्ति। वित्तः। विदन्ति। वेत्सि। वित्थः। वित्थ। वेद्मि। विद्वः। विद्मः। पक्षे, वेद। विदतुः। विदुः। वेत्थ। विदथुः। विद। वेद। विद्व। विद्म, पा ३, ४, ८३। तस्य ताड़का वेत्ति विक्रमम्, भ ५, ३४। सर्वं भवान् वेद, र २, ४३। लोट् वेत्तु। वित्ताम्। विदन्तु। पक्षे विदाङ्करोतु। विदाङ्कुरुताम्। विदाङ्कुर्वन्तु, पा ३, १, ४१। विदाङ्कुर्वन्तु रामस्य वृत्तम्, भ ६, ४। लिङ् विद्यात्। लङ् अवेत्।

अवित्ताम्। अविदुः। अविदन्, पा ३, ४, १०९। अवेः। अवेत्, पा ८, २, ७५। लिट् विदाञ्चकार। विदाञ्चक्रतुः, पा ३, १, ३८। पक्षे, विवेद। विविदतुः। विदाञ्चकार वैदेहीं रामादन्यनिरुत्सुकाम्, भ ६, १। विविदुर्नेन्द्रजिन्मार्गम्, भ १४, ४९। लुट् वेदिता। लृट् वेदिष्यति। लुङ् अवेदीत्। अवेदिष्टाम्। अवेदिषुः। कर्मणि, विद्यते। अवेदि। सन् विविदिषति, पा १, २, ८। यङ् वेविद्यते। वेवेत्ति। णिच्, वेदयति। अवीविदत्। विदित्वा। ०विद्य। विदितः। वित्तिः। वेदनम्। वेदः। वेदितुम्। आ—णिच्, आवेदनम्। ज्ञापनम्। आवेदितो द्विजेन, र ५, २३। नि—णिच्, निवेदनम्। सम्—ज्ञानम्। संवित्ते, कौ २४६। संविदते। संविद्रते, पा ७, १, ७। के ब संविद्रते वायो मैनाकाद्रि यथा सखा, भ ८, १७। संवित्तः सहयुध्वानौ तच्छक्तिं खरदूषणौ (सकर्मकत्वान्नात्मनेपदम्), भ ५, ३७।

विद्, दि, आ। विद्यमानता। सत्ता। विद्यते। स्वर्गे विद्यस्व, भ २०, ३३। विविदे। वेत्ता। वेत्स्यते। वित्सीष्ट। अवित्त। अवित्साताम्। अवित्सत। विवित्सते। क्त, वित्तम्। विद्लृ लु, उ। लाभः। प्राप्तिः। ज्ञानम्। विन्दति। ०ते, पा ७, १, ५९। सीता संस्कर्त्तारं न विन्दति, उत्तर २३७। विन्देम देवतां वाचम्, उत्तर १। नक्षत्रे विन्दते दिग्नः, भारत। विवेद। विविदे। व्याघ्रभूत्यादिमतेऽयं सेट्, चान्द्रादिमतेऽनिट्, कौ ३१। वेदिता, वेत्ता। वेदिष्यति। ०ते। वेत्स्यति। ०ते। विद्यात्। वेदिषीष्ट। वित्सीष्ट। अविदत्। अवेदिष्ट। अवित्त। विविदिषति। ०ते। विवित्सति। ०ते। विदित्वा, वित्त्वा। वित्तं धनप्रतीतयोः। अन्यत्र विन्नः, पा ८, २, ५८। विविदिवान्, विविदान्, पा ७, २, ६८। अधि—अधिवेदनम्। अधिकविवाहः। नि—णिच्, निवेदनम्। उत्सर्गः। देहं राज्यं च तस्मै न्यवेदयत, र १५, ७०। निर्—निर्वेदः। आत्मावज्ञा। निर्विद्य, नै ३, १२४। परि—परिवेदनम्। ज्येष्ठवर्जं दाराग्निलाभः। दाराग्निहोत्रसंयोगं कुरुते योऽग्रजे स्थिते। परिवेत्ता स विज्ञेयः परिवित्ति स्तु पूर्वजः॥ मनु ३, १७१।

विद्, रु, आ। विचारणम्। मीमांसा। विन्ते। विन्दाते। विन्दते। विल्लसे। मां विन्ते निष्पराक्रमम्, भ ६, ३९। विन्दीत। अविन्त। अविन्दाताम्। अविन्दत। विविदे। वेत्ता। क्त, विन्नः, वित्तः, पा ८, २, ५६। विद्, चु, आ। उ, वो। १चेतनम्। ज्ञानम्। २आख्यानम्। ३वासः। ४स्थैर्य्यम्, वो। ५व्यथा, दुर्गा। वेदयति। ०ते। वेत्ति सर्वाणि शास्त्राणि गर्वो यस्य न विद्यते। विन्ते धर्मं सदा सद्भि स्तेषां पूजा च विन्दति॥ कवि २५।

विध्—तु, प। १विधानम्।

२छिद्रीकरणम्। विधितच्छिद्रितौ विद्धे इत्यमरः। कर्णवेधः, दुर्गा। विधति। विवेध। वेधिता। वेधिष्यति। अवेधीत्। विधित्वा, वेधित्वा। विधितः। वेधनम्। वेधः। विधिः। वेधाः। विध् (विथ्)।

विष्—चु, प, वो। क्षेपः।

विस्—तु, प, वो। आच्छादनम्। परिधानम्। भेदन मिति प्रदीपः। विलति। विवेल। वेलिता। अवेलीत्।

विल्, चु, प। भेदनम्। वेलयति। विलम्। विलः।

विश्—तु, प। प्रवेशः।

अन्तर्गमनम्। विशति। विवेश। विविशतुः। विवेशिथ। विवेश कश्चित्पोवनम्, कु १, ३०। वेष्टा। वेक्ष्यति। अविक्षत्। अविक्षत सटः, भ ११, ४५। विविक्षति। वेविश्यते। वेवेष्टि। वेशयति। अवीविशत्। विष्टा। विश्य। विष्टः। विष्टिः। वेशनम्। वेष्टम्। वेष्टव्यम्। आ—प्रवेशः। गौरीगुरो गह्वरमाविवेश, र २, ६। उप—उपवेशनम्। उपाविक्षदथान्तिके, भ १५, ८। नि—प्रवेशः। अवस्थानम्। णिच्—मन्निवेशनम्। स्थापनम्। निविशते, पा १, ३, १७। रामशालां व्यविक्षत, भ ५, २८। निवेशयामास सैन्यं नर्मदारोधसि, र ५, ४२। निवेशयामास मधु द्विरेफान् नामाक्षरावलीव, कु ३, २७। अभि नि—अभिनिवेशः। मनोनिवेशः। निर्—निर्वेशः। उपभोगः। क्रीड़ारसं निर्विशतीव बाल्ये, कु १, २९। परि—णिच्, परिवेशनम्। अन्नाद्युपसमर्पणम्। वेष्टनम्। प्र—प्रवेशः। स ह्रदभुजान्तरं प्रविश्य, र ३, ५६। सम्—संवेशः। निद्रा। संविष्टः कुशशयने निशां निनाय, र २, ९५। क्रमेण सुप्ता मनु संविवेश, र १, २४।

विष्—विषु (जिषु) भ्वा, प।

सेचनम्। वर्षणम्। वेषति। विवेष। विवेषिथ। विविषिव। वेष्टा। वेक्ष्यति। अविक्षत्। विविक्षति। वेविष्यते। वेवेष्टि। वेषयति। अवीविषत्। वेषित्वा, विष्ट्वा। विष्टः। वेषणम्। विषल्—ह्रा, उ। आ, वो। व्याप्तिः। वेवेष्टि। वेविष्टः। वेविषति। वेविष्टे। वेवेष्टि विष्टपं सर्वं कीर्त्तिर्यस्य, कवि १९१। वेविष्यात्। वेविषीत। हि, वेविड्ढि। अवेवेट्। अवेविष्टाम्। अवेविषुः। अवेविषम्। अवेविष्ट। विवेष। वेष्टा। अविषत्। (अविक्षत्, वो)। अविक्षत। अविक्षाताम्, पा ७, ३, ७२। अविक्षन्त। विषः। वेषः। परिवेषः। वेष्टो नटः। विष्णुः। परि—णिच्, परिवेषणम्। अन्नाद्युपसमर्पणम्। वेष्टनम्। उपनीय सांसानि परिवेषयेत्, मनु ३, २२८। विष्—क्रया, प। विप्रयोगः। विश्लेषः। विष्णाति। विष्णीयात्। विष्णाति विषवत् प्राणानसौ, कवि १९९। हि, विष्णाहि। अविष्णात्।

विष्क्—चु, आ। हिंसा। विष्कयते।

विष्क, अदन्तः। चु, प। दर्शनम्। विष्कयति। वेच्च वेच्च विष्क इत्यपि केचित्।

वी—अदा, प। १गमनम्।

२व्याप्तिः। ३इच्छा। ४क्षेपणम्। ५खादनम्। ६गर्भग्रहणम्। वेति। वीतः। वियन्ति। वियन्ति वीरसन्तानं ह्रदो यस्य कलाङ्कना, कवि १८८। हि, वीहि। वीयात्। अवेत्। अवीताम्। अवियन्। अव्यन् इत्येके। विवाय। विव्यतुः। वेता। वेष्यति। अवैषीत्। अवैष्टाम्। अवैषुः। विवीषति। वेवीयते। वेवयीति। वेवेति। वाययति वापयति वा गां पुरोवातः (गर्भं ग्राहयति), पा ६, १, ५५।

वीज्—भ्वा, आ। १गतिः।

२क्लमनम्। वीजते। नायं बहुसम्मतः।

वीज, अदन्तः । च्, प । वीजनम् । वायुसञ्चालनम् । वीजयति । तं वीजयाम पद्मैः, नै ३, २२ । वीज्यते स संसुप्त श्यामरैः, कु २, ४२ । सख्यौ शकुन्तलां वीजयतः ।

वीर—अदन्तः । चु, आ, वो ।

शौर्यम् । उद्यमः । वीरयते । अविवीरत ।

वुङ्—वुगि (जुगि) भ्वा, प । त्यागः ।

वुरट् (विरट्) ।

वृ—वृञ्, भ्वा, स्वा, क्रया, वो, उ ।

वरणम् । प्रार्थना । वृञ्, स्वा, उ । आवरणम् । रोधः । वृङ्, क्रया, आ । सम्भक्तिः । सेवा । लट् वरति । °ते । वृणोति । वृणुते । वृणाति, वो । वृणीते । वृणुते विसृष्यकारिणं सम्पदः, भा २, ३० । हि, वृणु, वृणीहि । वृणयाष्टत्विजम्, मनु ७, ७८ । लङ् अवृणोत् । अवृणुत । अवृणात् । अवृणीत । वृणीतेऽध्वरे । तेजोभि र्जगदावृणोति वरति भ्रातॄन् यथार्हं धनैः । सत्कीर्त्तिं च वृणाति यो वरयति क्षेमं यशो व्रीयते । युद्धे वारयति द्विषो निवरते नित्यं प्रियोपद्रवम् ॥ कवि ११ । लिट् ववार । वव्रतुः । ववरिथ, कौ १४६ । वव्रुव । वव्रे । वव्रृषे । वव्रुवहे, पा ७, २, १३ । ववार रामस्य वनप्रयाणम्, भ ३, ६ । यदेव वव्रे तदपश्यदाहृतम्, र ३, ६ । लुट् वरीता, वरिता । लट् वरीष्यति । °ते । वरिष्यति । °ते, पा ७, २, ३८ । आशिषि, व्रियात् । वरिषीष्ट, वृषीष्ट, पा ७, २, ३६ । लुङ् अवारीत् । अवारिष्टाम् । अवारिषुः । अवरिष्टः अवरीष्ट, अवृत, पा ७, २, ४२ । कर्मणि, व्रियते । अवारि । अवारिषाताम् । अवरीषाताम्, अवरिषाताम्, अवृषाताम् । सन् विवरीषति । °ते । विवरिषति । °ते । वुवूर्षति । °ते, पा ७, २, ४१ । ७, १, १०२ । यङ् वेव्रीयते । वोवूर्य्यते । वर्वर्त्ति । णिच् वारयति । अवीवरत् । वृञ्, चु, उ । प, वो । १ आवरणम् । २वारणम् । वारयति । °ते । यवेभ्यो गां वारयति, पा १, ४, २७ । प्रविशन्तं न कश्चिदवारयत्, भारत । वृत्वा । °वृत्य । वृतः । वृतिः । वरणम् । वारः । वरः । वरीतुम्, वरितुम् । णिच् वारयित्वा । °वार्य्य । वारितः । वारणम् । वारयितुम् । वृतस्त्वं पाचेसमितैः (वेष्टितः), भ ५, १० । अप—गोपनम् । विट्—अपवार्य्य, रत्ना २, १७३ । आ—आवरणम् । गोपनम् । रोधः । आवरीतु मिवाकाशं वरितुं वीनिबोत्थितम्, भ ६, २४ । प्रा—परिधानम् । प्रावुवूर्षु र्मृगाजिनम्, भ ५, ४६ । नि—णिच्, निवारणम् । निर्—निर्हृतिः । वि—विवरणम् । व्याख्यानम् । प्रकाशनम् । विवृखती शैलसुतापि भावम्, कु ३, ६८ । अमू स्तं विवृखते, नै १, २७ । परि—वेष्टनम् । प्रति—निवारणम् । निषेधः । सम्—संवरणम् । गोपनम् । निरोधः । संवरिषीष्ठा स्वं शत्रोः पराक्रमम्, भ ६, २७ । संवुवूर्षुः स्व माकूतम्, भ ६, २६ ।

वृक्—(कृक) भ्वा, आ । आदानम् । वर्कते । वृकः । वर्करः ।

वृच्—भ्वा, आ । वरणम् । वृच्यते ।

वृच्—वृचौ, रु, प, वो । १वृतिः । २वर्जनम्, दुर्गा । वृणक्ति । वर्चिता ।

वृज्—वृजी, अदा, आ । रु, प ।

१वर्जनम्। २वृत्तिः, वो। वृक्ते। वृजाते। वृजते। वृणक्ति। वृङ्क्तः। वृञ्जन्ति। वृणक्ति वृजिनैः सङ्गं वृक्ते च वृषलैः सह। वर्जयत्यनार्जवोपेते यो वर्जयति दुर्जनैः॥ क्वि २७। लङ् अवृक्त। अवृजाताम्। अवृजत। अवृणक्। अवृङ्क्ताम्। अवृञ्जन्। लिट् ववर्ज। वव्रजे। वर्जिता। वर्जिष्यति। ०ते। अवर्जीत्। अवर्जिष्ट। विवर्जिषति। ०ते। वरीवृज्यते। ववर्क्ति। वृजी, चु, प। वर्जनम्। वर्जयति। वर्जति। वर्जित्वा। (ई) वृक्तः। वर्जनम्। वर्गः। णिच् वर्जयित्वा। ०वर्ज्य। वर्जितः। वर्जयितव्यः। अप—अपवर्जनम्। दानम्। आ—आवर्जनम्। आनमनम्। दानम्। आवर्ज्य शाखाः, र १६, १८। हविरावर्जित मग्निषु, र १, ६३। परि, वि—परित्यागः।

वृञ्—वृजि (व्रजी) अदा, आ।

वर्जनम्। वृङ्क्ते। वव्रञ्जे। वृञ्जिता।

वृण्—वृणु, त, उ, वो। भक्षणम्।

वृणोति। वृणुते। वर्णोति। वर्णुते। वृण् (वृण) तु, प। प्रीणनम्। वृणति। ववर्ण। वव्रणे। वर्णिता। (ङ) वर्णित्वा, वृत्वा।

वृत्—वृतु, भ्वा, आ। वर्त्तनम्।

स्थितिः। विद्यमानता। वर्त्तते। वर्तते। वर्तितुम्। वर्तितव्यम्। वर्तितव्यता। वर्तितव्यः। वर्तितव्यवान्। वर्तितव्यवान्। वर्तितव्यवान्

लज्जाम्, र २, ४० । निर्—निष्पत्तिः समाप्तिः । प्र—प्रवर्त्तनम् । प्रवर्त्तां प्रकृतिहिताय पार्थिवः, शकु ७, २१ । वि—विवर्त्तनम् । परिवर्त्तनम् । घूर्णनम् । भ्रमणम् । वाग्देवीं ववीवृतत्, उत्तर २१२ । सम्—सत्ता । भावः । उत्पत्तिः । खिन्नाङ्गुलिः संववृते कुमारी, र ७, २२ । वृतु, वावृतु, दि, आ । १वरणम् । २सेवा, वो । वृत्यते । वर्त्तते । वर्त्तिष्यते । अवर्त्तिष्ट । वावृत्यते । वावृताञ्चक्रे । वावर्त्तिष्यते । अवावर्त्तिष्ट । वावृत्यमाना सा रामशालां न्यविक्षत, भ ४, २८ । वृत—वृतौ, तु, प । हिंसा । ग्रन्थः । इति प्रदीपः ।

वृध्—वृधु, भ्वा, आ । वृद्धिः ।

वर्द्धते । यस्य श्री र्वर्द्धते नित्यं योऽर्थैं वर्द्धयति द्विजान्, कवि ८० । वर्द्धते ते तपः, भ ६, ६८ । ववृधे । ववृधिषे । वर्धिता । वर्धिष्यते । वर्त्स्यति, पा ७, २, ५६ । अवर्द्धिष्यत । अवर्त्स्यत्, पा १, ३, ६२ । आशिषि, वर्द्धिषीष्ट । अवर्द्धिष्ट । अवृधत् । क्षुदस्यावृधत्, भ १५, १६ । विवर्द्धिषते । विवृत्सति । वरीवृध्यते । वरीवर्द्धि । वर्द्धयति । अवीवृधत्, अववर्द्धत् । वृधु, (कुप) चु, प । दीप्तिः । वर्द्धयति । वर्द्धते । (ङ) वर्द्धित्वा, वृद्ध्वा । वृद्धः । (णिच् वर्द्धितः) । वृद्धिः । वर्द्धनम् । वर्द्धितुम् । वर्द्धिष्णुः । सम्—णिच्, संवर्द्धना । प्रतिपालनम् ।

वृश्—दि, प । वरणम् ।

वृश्यति । ववर्श । वर्शिता । अवृशत् ।

वृष्—वृषु (घृषु) भ्वा, प ।

१सेचनम् । वर्षणम् । २ हिंसा । ३क्लेशः । ४गर्भग्रहणम् । ५ऐश्वर्य्यम्, ६ दीप्तिः । ७ज्ञानम् । ८ज्ञानेच्छा । ९ज्ञानेच्छाप्रयत्नः । १०धर्म्मः । ११संस्कारः । १२वेगः । १३भावना । १४स्थितिस्थापकः । १५शब्दः । १६संख्या । १७परिमाणम् । १८पृथक्त्वम् । १९संयोगः । २०विभागः । २१परत्वम् । २२अपरत्वम् । २३गुरुत्वम् । २४द्रवत्वम् । २५स्नेहः । २६शब्दः । २७बुद्धिः । २८सुखम् । २९दुःखम् । ३०इच्छा । ३१द्वेषः । ३२प्रयत्नः । ३३धर्म्मः । ३४अधर्म्मः । ३५संस्कारः । ३६नित्यत्वम् । ३७अनित्यत्वम् । ३८प्रसङ्गः । ३९शक्तिः । ४०अशक्तिः । ४१सादृश्यम् । ४२वैसादृश्यम् । ४३सामान्यम् । ४४विशेषः । ४५समवायः । ४६अवयवी । ४७अवयवः । ४८कारणम् । ४९कार्य्यम् । ५०कारणाकारणम् । ५१कार्य्याकार्य्यम् । ५२समवायिकारणम् । ५३असमवायिकारणम् । ५४निमित्तकारणम् । ५५सामान्यविशेषः । ५६उभयम् । ५७भेदः । ५८अभेदः । ५९अनुगमः । ६०व्यावृत्तिः । ६१ज्ञानम् । ६२अज्ञानम् । ६३सुखी । ६४दुःखी । ६५इच्छावान् । ६६द्वेषवान् । ६७प्रयत्नवान् । ६८धर्म्मी । ६९अधर्म्मी । ७०संस्कारवान् । ७१अनित्यः । ७२नित्यः । ७३प्रसङ्गी । ७४शक्तिमान् । ७५अशक्तिमान् । ७६सदृशः । ७७विसदृशः । ७८सामान्यवान् । ७९विशेषवान् । ८०समवायी । ८१अवयवी । ८२कारणवान् । ८३कार्य्यवान् । ८४कारणाकारणवान् । ८५कार्य्याकार्य्यवान् । ८६समवायिकारणवान् । ८७असमवायिकारणवान् । ८८निमित्तकारणवान् । ८९सामान्यविशेषवान् । ९०उभयवान् । ९१भेदवान् । ९२अभेदवान् । ९३अनुगतः । ९४व्यावृत्तः । ९५ज्ञानी । ९६अज्ञानी । वर्षति । गर्जति वारिदपटली वर्षति नयनारविन्दमदलायाः । ववर्ष । वर्षतुः । ववर्षिथ । वर्षिता । वर्षिष्यति । अवर्षीत् । अवर्षिष्टाम् । विवर्षिषति । वरीवृष्यते । वरीवर्षि । वृष्, चु, आ । १ क्लिबन्धः । २गर्भाधानम् । ३ऐश्वर्य्यम्, वो । वर्षयति । ०ते । अवीवृषत् । ०त । (ङ) वर्षित्वा, वृष्ट्वा । ०वृष्य । वृष्टः । वृष्टिः । वर्षणम् । वर्षम् । वर्षा । वर्षुकः । द्वौ वर्षुकौ पुष्पचयम्, भ २, ३७ । वृषः । वृषा ।

वृह्—वृंह्—वृहिर्, वृति, (वृह्)

भ्वा, प । १वृद्धिः । २शब्दः । वृहि, भ्वा, आ, वो । वृद्धिः । वर्हति । वृंहति । ०ते । यस्य वर्हति नित्यं श्रीर्दानं शक्तिश्च वृंहति । वृंहन्ति सिंहवद् यस्य द्विषा दृष्ट्वारिवारणम् ॥ कवि ९ । ववर्ह । वर्हिंह । वर्हिंहे । वर्हिंहिरे गजपतयः (आत्मनेपदं चिन्त्यम् टी), मा १७, ३१ । वर्हिष्यति । वृंहिष्यति । ०ते । अवृहत् । अवर्हीत् । अवृंहीत् । अवृंहिष्ट । वृहि (कुप) चु, प । दीप्तिः । वृंहयति । वृंहति, वो । वृंहितं करिगर्जितमित्यमरः । वृह्, भ्वा, प, वो । वृद्धिः । वर्हति । वर्हिता । अवर्हीत् । वृह्, तु, प । उद्यमः । वृहति । ववर्ह । ववृहतुः । ववर्हिथ । ववर्ढ । ववृहिव, ववृह्व । वर्हिता, वर्ढा । वर्हिष्यति, वक्ष्यति । अवर्हीत्, अवृक्षत् । अयं वर्ग्यादि रपि । शक्ति मुदवृहद् गुरुम्, भ १७, ९० । वर्हिणः । वर्ही ।

वृ—वृञ्, क्रया, उ । वरणम् ।

प्रार्थना । स्वीकारः । वृ, क्रया, प । १ वरणम् । २भरणम् । लट् वृणाति ।

वृणीतः। वृण्वन्ति। वृणीते। वृणाते। वृण्वते। पुत्र वरं वृणीष्व, र २, ६३। लङ् अवृणात्। अवृणीत। लिट् ववार। ववरिथ। ववरे। लुट् वरिता, वरीता। लृट् वरिष्यति। ०ते। वरीष्यति। ०ते। आशिषि, वूर्य्यात्। दन्त्योष्ठपूर्वोऽपि ओष्ठ्यपूर्वो भवति। वरिषीष्ट, वूर्षीष्ट, पा ७, २, ११। लुङ् अवारीत्। अवारिष्टाम्। अवारिषुः। अवरिष्ट, अवूर्ष्ट। कर्मणि, वूर्य्यते। अवारि। सन् विवरिषति। ०ते। विवरीषति। ०ते। वुवूर्षति। ०ते। यङ् वोवूर्य्यते। वावर्ति णिच् वारयति। अवीवरत्। वूर्वा। ०वूर्य्य। वूर्णः। वूर्णिः। वरणम्। वरः। वारः। वरितुम्, वरीतुम्।

वे—वेञ्, भ्वा, उ। सन्तुसन्तानः।

वस्त्रनिर्माणम्। वयति। ०ते। यशः-पटं वयति स्म तद्गुणैः, नै १, १२। लिट् ववौ। ववतुः। ववियथ, ववाथ। ववे। पक्षे, उवाय, पा २, ४, ४१। ऊयतुः, ऊवतुः, पा ६, १, ३८, ३९। उवायिथ। ऊये, ऊवे। स्व सूयु र्वसुधा सूवुः सायका रज्जुवत्तताः, भ १४, ४८। लुट् वाता। लृट् वास्यति। ०ते। आशिषि, ऊयात्। वासीष्ट। लुङ् अवासौत्। अवासिष्टाम्। अवास्त। अवासाताम्। कर्मणि, ऊयते। अवायि। सन् विवासति। ते। यङ् वावायते। वावेति, वावाति। णिच् वाययति, पा ७, ३, ३७। अवीवयत्। उक्ता। ०वाय, पा ६, १, ४१। उतः। उतिः। (ऊतमिति तु ऊयौ इत्यस्य रूपम्), पा ६, ४, २। वानम्। वायः। वातुम्। वाता। वायकः। वायौ। तन्तुवायः। वातव्यम्। वानीयम्। प्र—वेधनम्। ग्रन्थनम्। एकार्थतन्तुग्रथिता माला, मा २, ९२ ग्रथ्यग्रोतं मुनिपुत्रम्, र ९, ७५। वेच्च—वी चौ अदन्तौ, दर्शने इति कैश्चित्।

वेण्—वेन्, वेणृ, वेनृ, भ्वा, उ।

१गतिः। २ज्ञानम्। ३चिन्ता। ४निशामनम्। चाक्षुषज्ञानम्। ५वाद्यभाण्डस्य वादनार्थग्रहणम्। वादनम्, दुर्गा। वेणति। ०ते। वेनति। ०ते। वेणिः।

वेथ् (विथ्)।

वेप्—टुवेपृ, भ्वा, आ। कम्पनम्।

वेपते। हिमार्त्त इव वेपते, शकु ५, १२८। विवेपे। वेपिता। वेपिष्यते। अवेपिष्ट। अवेपिषाताम्। णिच् वेपयति। अविवेपत्। वेपितः। (टु) वेपथुः। प्रवेपनम्। प्रवेपनीयम्। भूतजातं प्रवेपते, उत्तर १९९।

वेल्—वेल्ल्, वेल्ल्, भ्वा, प।

वेल्ल वेल्लृ वेल्लृ (केलृ)। कम्पनम्। वेल्लति। वेल्लति। वेल्लात। उद्वेल्लन्ति कुच्चीनराः, उत्तर ७७। वेल्लद्बलाकाघनाः, काव्यप्र।

वेल—अदन्तः। चु, प। कालोपदेशः। समयक्षयनम्। वेलयति। अविवेलत्

वेवी - वेवीङ्, छान्दसः। अदा, आ।

१गतिः। २व्याप्तिः। ३इच्छा। ४क्षेपणम्। ५खादनम्। ६गर्भग्रहणम्। वेवीते। वेव्यते। ऐप्, वेव्ये, पा १, १। वेव्याञ्चक्रे। वेविता। वेविष्यते। अवेविष्ट। वेविल्वा। आवेव्य। वेवितः। वेव्यनम्। वेव्यकः।

वेष्ट्—भ्वा, आ। वेष्टनम्।

वेष्टते। विवेष्टे। वेष्टिता। अवेष्टिष्ट।

विवेष्टिषते। वेवेष्ट्यते। वेवेष्टि। वेष्टयति। अविवेष्टत्, अववेष्टत्, पा ७, ४, ६६। वेष्टयित्वा। ०वेष्ट्य। वेष्टितः। वेष्टनम्।

वेस्—वेस्ट, भ्वा, प, वो। गतिः।

वेह्—वेह्ट (जेह्ट) भ्वा, आ। प्रयत्नः।

वर्ग्यादि रपि। वेहते। विवेहे। वेहिता।

वै—ओ वै (पै) भ्वा, प। शोषणम्।

वायति। उद्वायति यथा स्त्रीणां स्वेदार्द्रं वपुः, कवि २१४। ववौ। वाता। अवासीत्। णिच् धूनने। वाययति, पा ७, ३, ६८। अन्यत्र, वापयति। (ओ) वानः।

व्यच्—तु, प। प्रतारणम्।

विचति, पा ६, १६, १। विव्याच। विविचतुः, पा ६, १, १७। विव्यचिथ, विविचिथ, वो। व्यचिता, कौ १५०। (विचिता, विचिष्यति, अविचीत्, वो)। व्यचिष्यति। आशिषि, विच्यात्। अव्यचीत्। विव्यचिषति। वेविच्यते। वाव्यचीति। वाव्यक्ति। व्याचयति। विचित्वा। ०विच्य। विचितः। विचनम्। व्याकः। विचितुम्। विचिता। विचितव्यम्। व्याचकः। उरुव्यचाः।

व्यथ्—भ्वा, आ। १भयम्। २चलनम्।

कम्पनम्। ३व्यथा। दुःखानुभवः, वो। दुःखेन चलनम्। भयेन चलनम्, दुर्गा। व्यथते। विव्यथे, पा ७, ४, ६८। न विव्यथे तस्य मनः, भा १, २। व्यथिता। व्यथिष्यते। अव्यथिष्ट। अव्यथिषाताम्। मा व्यथिष्ठाः, र १४, ७२। भावे, व्यथ्यते, अव्यथि, अव्याथि। विव्यथिषते। वाव्यथ्यते। वाव्यक्ति। व्यथयति, घटादिः। अविव्यथत्। रथेनाविव्यथदरीन्, भ १५, ८६। व्यथित्वा। ०व्यथ्य। व्यथितः। व्यथनम्। व्यथा। व्यथितुम्।

व्यध्—दि, प। ताड़नम्। पीड़नम्।

वेधनम्। विध्यति, पा ६, १, १६। विव्याध। विविधतुः। विव्यद्ध, विव्यधिथ। विविधु स्तोमरैः, भ १४, २४। व्यद्धा। व्यत्स्यति। आशिषि, विध्यात्। अव्यात्सीत्। अव्याद्धाम्। अव्यात्सुः। त मैन्द्रेण हृदयेऽव्यात्सीत्, भ १४, ६८। कर्मणि, विध्यते। अव्याधि। सन् विव्यत्सति। यङ् वेविध्यते। वाव्यद्धि। णिच् व्याधयति। अविव्यधत्। विद्ध्वा। ०विध्य। विद्धः। विद्धिः। व्यधनम्। व्याधः। व्यद्धुम्। व्याद्धा। क्विप्, मृगाविद्। अनु—सम्यर्कः। व्यापनम्। अन्यतम्। इन्द्रनीलै र्मुक्तामयी यष्टि रनुविद्धा, र १३, ५४। सरमिज मनुविद्धं शैवलेन, शकु १, ८३। अप—प्रत्याख्यानम्। निरासः। क्षेपः। प्रेरणम्। क्रुशानुः प्रभाकरश्च अपविद्धशुचाविव, र १०, ७४। आ—क्षेपः। धारणम्। आविध्य च स्रजम्, भ २०, ११।

व्यय्—चु, प, वो। क्षयः। व्ययः।

व्यय्—भ्वा, उ। गतिः।

व्ययति। ०ते। यस्य न व्ययते पदम्। व्ययति स्वर्गलोकाय न कीर्त्तिः सुकृतात्मनः, कवि २२१। वव्याय। वव्यये। व्यायिता। व्यायिष्यति। ०ते। अव्ययीत्। अव्यायिष्ट। कोषांस्त्व मव्ययीः (त्यक्तवान्), भ १५, १७। व्यय्, चु, प। क्षेपणम्। व्याययति। व्यय, अदन्तः। चु, प। वित्तसमुत्सर्गः। धनव्ययः।

व्ययति । अवव्ययत् । बहु व्ययति द्रव्यं तदर्थं यो व्ययत्यरीन् । व्ययते यदयशोविम्बं त्रैलोक्यादर्शतां गतम् ॥ कवि ११७ ।

व्युष्—वुष्, दि, प, । १दाहः ।

२विभागः । व्युष्यति । वुष्यति । वुष्योष । व्योषिता । दाहार्थे, अव्योषीत् । विभागे तु, अव्युषत्, कौ १४२ । अय मोष्ठ्यादिः । व्युस् वुस् पुष् पुस् इत्येके । व्युस्यति । व्युष्, प्युष्, पुस्, चु, प । उत्सर्गः । व्योषयति इत्यप्यन्ये ।

व्ये—व्येञ्, भ्वा, उ । आच्छादनम् ।

परिधानम् । लट् व्ययति । ०ते । लिट् विव्याय, पा ६, १, ४६ । विव्यतुः । विव्ययिथ, पा ७, २, ६२ । विव्याय । विव्यय । विव्यिव । विव्ये । लुट् व्याता । लृट् व्यास्यति । ०ते । आशिषि, वीयात् । व्यासीष्ट । लुङ् अव्यासीत् । अव्यासिष्टाम् । अव्यास्त । अव्यासाताम् । कर्मणि, वीयते । अव्यायि । सन् विव्यासति । ०ते । यङ् वेवीयते, पा ६, १, १८ । वेवेति । वेवयीति । णिच् व्याययति, पा ७, ३, ३७ । वीत्वा । ०व्याय । परिवीय, परिव्याय, पा ६, १, ४३, ४४ । वीतः । वीतिः । व्यानम् । व्यायः । व्यातुम् । सम्—आच्छादनम् । आशाः संविव्युरम्बरविकाशि रजः, भ ५, ३ ।

व्रज्—(बज्) भ्वा, प । गतिः ।

व्रजति । व्रजि इत्येके । व्रज्जति । वव्राज । व्रजिता । व्रजिष्यति । अव्राजीत्, पा ७, २, ३ । विव्रजिषति । वाव्रज्यते । वाव्रज्ञि । व्राजयति । व्रज्, चु, प, वो । १संस्कारः । २गतिः । व्राजज्यति । अज्, वाजयति इत्येके । परि—तीर्थभ्रमणम् । प्र—प्रव्रज्या । वनप्रस्थानम् । चतुर्दश समा रामं प्राव्राजयत्, र १२, ६ । परिव्राट् । व्रजः । व्राजः । व्रज्या । प्रव्रजितः ।

व्रण्—(अण) भ्वा, प । शब्दः ।

व्रणति । वव्राण । व्रणिता । व्रण, अदन्तः । चु, प । गात्रविचूर्णनम् । अङ्गभेदः । व्रतम् । व्रणयति ।

व्रश्च्—ओव्रस्चू, तु, प । छेदनम् ।

व्रश्चति, पा ६, १, १६ । वव्रश्च । वव्रश्चतुः । वव्रश्चिथ, वव्रष्ठ । वव्रश्चुः, भ १४, ७७ । व्रश्चिता, व्रष्टा । व्रश्चिष्यति, व्रक्ष्यति । आशिषि, व्रश्च्यात् । अव्रश्चीत्, अव्राक्षीत् । अव्रश्चिष्टाम्, अव्राष्टाम् । अव्रश्चिषुः, अव्राक्षुः । विव्रश्चिषति, विव्रक्षति । वरीव्रश्च्यते । वाव्रष्टि । वरीव्रश्चीति । व्रश्चयति । अविव्रश्चत् । व्रश्चित्वा, पा ७, २, ५५ । व्रश्चित्वा तरून्, भ ९, ४१ । ०व्रश्च्य । व्रक्णः, भ १२, ७५ । व्रश्चनम् । व्रश्चनः । क्विप्, सुव्रट् ।

व्री—क्रया, प । व्रीङ्, दि, आ ।

प्रार्थनम् । याचनम् । व्रिणाति । व्रीणाति, वो । व्रीयते । अयं गत्यर्थोऽपि । विव्राय । विव्रिये । व्रेता । व्रेष्यति । ०ते । अव्रैषीत् । अव्रेष्ट ।

व्रीड्—दि, प । १प्रेरणम् । क्षेपणम् ।

२लज्जा । व्रीड्यति । विव्रीड । व्रीडिता । अव्रीडीत् । व्रीडित्वा । व्रीडितः । व्रीडा ।

व्रीस्—व्रूस्, चु, प, वो । वधः ।

व्रीसयति, व्रीसति । व्रूसयति, व्रूसति । व्रूषयति, व्रूषतीति कश्चित् ।

व्रुड्—(चुड) तु, प । १संवरणम् । २संहतिः, वो । ३निमज्जनम्, वो । व्रुडति । वुव्रोड । व्रुडिता । अव्रुडीत् ।

व्ली—क्रया, प । गमनम् ।

व्लिनाति । विव्लाय । व्लेता । अव्लैषीत् । णिच् व्लेपयति, पा ७, ३, ३६ । क्त, व्लीनः ।

## (श)

शक्—दि, ऊ । मर्षणम् । क्षमा ।

शक्तिः । शक्ल्, स्वा, प । शक्तिः । सामर्थ्यम् । शक्यति ०ते हरिं द्रष्टुं भक्तः, कौ १३८ । शक्यति ०ते दुःखं दीनः, दुर्गा । शक्नोति । शक्नुतः । शक्नुवन्ति । सर्वेषां शक्यते वचः । शक्नोत्यशक्य मप्याजौ विजेतुं शक्नुतेऽप्यरीन्, कवि ६३ । एतन्मते उभयपदौ । शक्नुयात् । अशक्नोत् । शशाक । शेकिथ, शशक्थ । शेकें । शशक्थ देवान् जेतुम्, भ ८, ४७ । तां धर्तुं न शशाक, नै ६, ५२ । न शेकतुः केलिरसाद्विरन्तुम्, नै ६, ५४ । शक्ता । शक्ष्यति । ०ते । आशिषि, शक्यात् । अचौष्ट । दिवादि स्तु सेट् इति कश्चित् । तन्मते शकिता, शकिष्यति, ०ते, कौ १३८ । स्वादि र्नेट् इति क्रमदीश्वरः । स्वादि र्वेट् इति वोपदेवः । तन्मते, शकिता, शक्ता । अशकत् । अशक्त । न योद्धु मशकन् केचित्, भ १५, ४८ । शिक्षति, ते, पा ७, ४, ५४ । धनुषि, शिक्षते, कौ २४२ । शाशक्यते । शाशकीति । शाशक्ति । णिच् शाकयति । अशीशकत् । शक्ता । ०शक्य । शक्तः । शक्तः शकितः घटः कर्त्तुमिति काशि का । शक्तिः । शक्तनम् । शाकः । शक्तुम् । शक्यम् । तत् कैकयी सोढु मशक्नुवाना, भ ३, ६ । शक्योऽस्य मन्थु र्भवता विनेतुम्, र २, ४८ । शक्या मखेनापि मुदोऽमराणाम्, नै ६, ८८ ।

शङ्क्—शङ्कि, भ्वा, आ । १त्रासः । भयम् । शङ्का । २संशयारोपः, वो । संशयः । शङ्कते । कुतोऽपि शङ्कते नासौ, कवि ६२ । शशङ्के । शशङ्किषे । शङ्किता । शङ्किष्यते । अशङ्किष्ट । अशङ्किषाताम् । अशङ्किषत । नाशङ्किष्ट विवस्वतः, भ १५, ३८ । बन्धूनशङ्किष्टासेदुषोऽपायम्, भ ३, २६ । कर्मभावयोः, शङ्क्यते । अशङ्कि । शिशङ्किषते । शाशङ्क्यते । शाशङ्क्ति । शङ्कयति । शङ्कित्वा । ०शङ्क्य । शङ्कितः । शङ्कनम् । शङ्का । शङ्कितुम् । शङ्कितव्यः । आ—आशङ्का । सन्देहः । आशङ्कमानो वैदेहीं खादिताम्, भ ६, ६ ।

शच्—स्वा, आ । कथनम् । शचते ।

शञ्—शंचि, भ्वा, आ, वो । गतिः ।

शट्—भ्वा, प । १रोगः । २भेदः । ३गतिः । ४अवसादः । शटति । शट्, चु, आ, वो । श्लाघा । शाटयते । शाटी । शाटकः ।

शठ्—भ्वा, प । १कैतवम् । शाठ्यम् । मिथ्यावचनम् । २हिंसा । ३संक्लेशनम् । दुःखानुभवः । शठति । शशाठ । शेठतुः । शठिता । अशठीत्, अशाठीत् । शठः । शठ, श्वठ्, ष्ठठि, चु, प । १असंस्करणम् । २संस्करणम्, वो । ३गतिः । ४आलस्यम्, वो । शठ् चु, आ । श्लाघा । शाठयति । ०ते । श्वाठयति । ष्वण्ठयति । सठ् स्वठ् इत्येके । शठ

ख्ठ अदन्तौ। चु, प। सम्यग्भाषणम्। दुर्वचनम्, वो। सम्यग्भाव इत्यत्ये। शठयति। ख्ठयति।

शँण्—(चण) भ्वा, प। १दानम्।

२गतिः। शणति। शणयति। दाने घटादिः।

शण्ड्—शडि, भ्वा, आ।

रोगसङ्घातयोः। शण्डते। शण्डः। पद्मशण्डः।

शद्—शद्ल्ट, भ्वा, तु, प। १गतिः।

२शातनम्। छेदनम्। ३विशीर्णता। पतनम्। पातनम्, दुर्गा। शीयते, पा ७, ३, ५८। १, ३, ६०। शीयते इङ्गिमानपि, भ १८, ८। अशीयत नृमांसादां बलं सुशीववाधितम्, भ १७, ७७। शशाद। शेदतुः। शेदिथ, शशत्थ। शत्ता। शत्स्यति। अशदत्। शिशत्सति। शाशद्यते। शाशत्ति। शातयति। अशीशतत्। जङ्घेऽशीशतद्वाणैः, १५, ६८। गतौ तु, गाः शादयति गोपालः, पा ७, ३, ४२। आ—शद्, भ्वा, प, वो। गतिः। आशीयते। आशत्ता। आशात्सीत्। शत्रुः। शदः। शादः। शाद्वलः।

शप्—भ्वा, दि, उ। १आक्रोशः।

विरुद्धानुध्यानम्। शापः। २उपालम्भनम्। भर्त्सना। ३ शपथकरणम्। शपति। °ते। शप्यति। °ते। क्षणाय शपते, कौ २४३। शरीरस्पर्शपूर्वकशपथे आत्मनेपदम्, तेन सख्यः शपामि यदि किञ्चिदपि स्मरामि इति सिद्धम्। देवाग्निगुरुभ्यः शपते न यः। दासो मामपि न शप्यति, कवि १७७। मैथिल्यै चाशपत्, भ १७, ४८। सहस्रशोऽसौ शपथानशप्यत् (कृतवान्), भ ३, ३२। शशाप। शेपिथ। शेपे। त्वां शशाप सा, र १, ७७। शप्ता। शप्स्यति। °ते। अशाप्सीत्। अशाप्साम्। अशाप्सुः। अशप्त। अशप्साताम्। अशप्सत। अशप्त। निङ्कुवानोऽसौ सीतायै स्मरमोहितः, भ ८, ७४। ताभ्योऽशप्सत कामिनः, भ ८, ३३। शिशप्सति। °ते। शाशप्यते। शाशप्ति। शापयति। अशीशपत्। शप्ता। °शप्य। शप्तः। शप्तिः। शपनम्। शापः। शप्तुम्। शप्तव्यम्। अभि—अभिशापः। परि—आक्रोशः। पर्य्याप्सीद्विष्टासौ, भ ४, ३३।

शब्द्—चु, प। १आविष्कारः।

२भाषणम्। ३शब्दः, वो। शब्दयति। सोपसर्गस्यैवाविष्कारोऽर्थः। प्रतिशब्दयति (प्रतिश्रुत माविष्करोति) प्रशब्दयति (गभीरमर्थं शिष्यः स्फुटीकरोति), दुर्गा। परं शब्दयति हाःस्थः, कवि १८४।

शम्—शमु, दि, प। उपशमः।

शान्तभावः। निवृत्तिः। शान्तीकरणम्, दुर्गा। शाम्यति, पा ७, ३, ७४। शाम्येत् प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः, कु २, ४०। हृद्यं रजोऽशाम्यत्, भ १७, ६३। शशाम। शेमतुः। शेमिथ। शशाम हव्यापि विना हवाग्निः, र २, १४। समत्सरोऽपि शशाम क्षितिपाललोकः, र ७, ३। शमिता। शमिष्यति। अशमत्। (अशमत्, अशमीत्, वो)। शिशमिषति। शंशम्यते। शंशन्ति। तेजांसि शंशमाञ्चक्रुः, भ १४, ६७। शमयति। अशीशमत्। शमयेदपि संग्रामे यो रविम्, भ ६, ८८।

शम्, चु, आ, वो । आलोचनम् । प्रणिधानम्, दुर्गा । शामयते । (अ) शमित्वा, शान्त्वा । ०शम्य । शान्तः । शान्तिः । णिच् शान्तः, शमितः, पा ७, २, २७ । वरेण शमितं तत्तपः, कु २, ५६ । शमी, पा ३, २, १४१ । शमनम् । शमः । शमितुम् । उप—निवृत्तिः । विनाशः । नि—अवणम् । दर्शनम् । राज्ये तं निशम्य प्रतिष्ठितम्, र ४, २ । प्रतिध्वनीनात्मकृतान् निशम्य, भ २, ६ । अदर्शने घटादिः । प्रणयिनो निशमय्य स्वरम्, मा ६, १६ । दर्शने तु, रूपं निशामयति । प्र—प्रशमः । निवृत्तिः ।

शम्ब्—(कम्ब) भ्वा, प । १हिंसा ।

२गतिः, वो । शम्ब् (षम्ब) चु, प । सम्बन्धः ।

शर्व्—(अर्व्) भ्वा, प । १हिंसा ।

२गतिः, वो । शर्व् (अर्व) भ्वा, प । हिंसा । शर्वति । गर्वति ।

शल्—भ्वा, प । १गतिः ।

२वेगः, वो । शल्, भ्वा, आ । १चलनम् । २संवरणम् । आच्छादनम् । शलति । ०ते । शलन्ते सद्गुणा नित्यं शलन्ति च सुरालयम्, कवि १०१ । शशाल । शेले । अशालीत् । अशलिष्ट । शल्, चु, आ, वो । श्लाघा । शालयते । उद्—उच्छलनम् । प्रोच्छलच्छोणित—, मा ३, ६६ । शलः । शलभः । शललुः । शलाका ।

शल्भ्—भ्वा, आ । श्लाघा । शल्भते ।

शव्—भ्वा, प । १गतिः । २विकारः ।

शश्—भ्वा, प । प्लुतगतिः । शशति । शेशतुः । शेशिथ । शशः ।

शष्—(कष) भ्वा, प । वधः । शषति ।

शस्—शसु, भ्वा, प । हिंसा ।

शसति । शशास । शशसतुः, पा ६, ४, १२६ । शशास बह्वन् योधान्, भ १४, १०३ । शसिता । अशसीत्, अशासीत् । शश् (सस्) विशसत्यृत्पथस्थितान्, कवि २२ । शस्यम् । शस्त्रम् ।

शंस्—शंसि, भ्वा, आ । १इच्छा ।

२आशीः । इष्टार्थशंसनम्, वो । नित्यमाङ्योगः । आशंसते । आशंसन्ते समितिषु सुरा जयम्, शकु २, ६८ । आशशंसे । आशिष आशशंसिरे, भ १४, ६० । आशंसिता । आशंसिष्ट । आङ्रहितोऽपि दृश्यते । यः शंसते सतां वृत्तिम्, कवि २२ ।

शन्सु, भ्वा, प । १स्तुतिः । प्रशंसा । २हिंसा । शंसति । न मे क्रिया शंसति कश्चिदीप्सितम्, र ३, ५ । शशंस । शशंसतुः । शशंस वाचा पुनरुक्तयेव, र २, ६८ । शंसिता । शंसिष्यति । शस्यात् । अशंसीत् । अशंसिष्टाम् । अशंसिषुः । कर्मणि, शस्यते । अशंसि । शिशंसिषति । शाशस्यते । शाशंस्ति । शंसयति । अशशंसत् । शंसित्वा, शस्त्वा । ०शस्य । शस्तः । शस्तिः । शंसनम् । शंसः । नृशंसः । अभि—अभिशापः । अपवादः । आ—कथनम् । आशंसता बाणगतिं वृषाङ्के, कु ३, १४ । प्र—प्रशंसा । प्राशंसीत्तं निशाचरः, भ १५, ६५ ।

शंस् शंस्त्, (संस् संस्त्) ।

शाख्—शाखृ, भ्वा, प । व्याप्तिः ।

शाखति । (ऋ) अशशाखत् । शाखा ।

शाड्—शाडृ, भ्वा, आ । श्लाघा ।

शान्—भ्वा, उ । तेजनम् ।

तीक्ष्णीकरणम्। शीशांसति ०ते शस्त्रम्, पा ३, १, ६। अन्यत्र शानयति। शीशांसते खड्गलतां शानयत्याशुगान् नित्यम्, कवि ७६।

शान्त्व्_(सान्त्व्_)।

शार—अदन्तः। चु, प, वो।

दौर्बल्यम्।

शाल्—शालृ, श्वा, आ, वो। श्लाघा।

शालते। शशाले। धनशाली। यस्य संग्रामशौण्डत्वं शालन्ते बाहुशालिनः, कवि १०१।

शास्—शासु, अदा, प।

अनुशासनम्। उपदेशः। शासनम्। आज्ञा। लट् शास्ति। शिष्टः, पा ६, ४, ३४। शासति। शास्ति य शास्त्रया राज्ञः स सम्राट् इत्यमरः। स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपम्, भा १, ५। शास्त्यरीन् धर्म माशास्ते, कवि २२। हि, शाधि, पा ६, ४, ३५। लिङ् शिष्यात्। लङ् अशात्। अशिष्टाम्। अशासुः। अशात्। अशाः। कुरु निःसंशयं लोक मित्यशात्, र १५, ७६। लिट् शशास। शशासतुः। उर्वीं शशासैकपुरी मिव, र १, ७०। लुट् शासिता। लृट् शासिष्यति। आशिषि, शिष्यात्। लुङ् अशिषत्। राज्ञो राज्य मशिषत्, र १६, ५६। कर्मणि, शिष्यते। अशासि। सन् शिशासिषति। यङ् शेशिष्यते। शाशास्ति। णिच् शासयति। अशशासत्, पा ७, ४, २। (ड) शासित्वा, शिष्ट्वा। ०शिष्य। शिष्टः। शिष्टिः। शास्त रित्यौणादिकः। शासनम्। पौरवे वसुमतीं शासितरि, शकु १, १४०। द्वौ शास्तारौ त्रिलोकेऽस्मिन् धर्माधर्मौ प्रकीर्त्तितौ। इत्यादौ तु औणादिकतृच् सिद्धिः। शासु, श्वा, अदा, आ। १इच्छा। २आशीः। इष्टार्थाशंसनम्, वो। नित्य माङ्योगः। आशासते, वो। आशास्ते। आशासाते। आशासते। श्रिय माशासते लोलाम्, भ ५, १६। आशासत ततः शान्तिम्, भ १७, १। आशशासे। आशासिता। आशासिष्यते। आशासिषीष्ट। आशासिष्ट। (ड) आशासित्वा, आशास्त्वा। पञ्चमस्वरानुबन्धसामर्थ्यात् न ल्यप् इति गोविन्दभट्टः। उदनुबन्धफलं कृन्दस्येव इति धातुप्रदीपः। आशास्तः। आशासनम्। क्विप्, आशीः। अनु—अनुशासनम्। आ—आदेशः। कथनम्। रक्षांसि रक्षितुं सीता माशिषत्, भ ६, ४। इक्ष्वं लक्ष्मणायाशिषत्, भ ६, २७। प्र—प्रकृष्टशासनम्। वेणे राज्यं प्रशासति, मनु ८, ६६।

शि—शिञ्, स्वा, उ। तनूकरणम्।

तीक्ष्णीकरणम्। अस्त्रादे स्तेजनम्। शिनोति। शिनुतः। शिन्वन्ति। शिनुते। शिशाय। शिशयिथ, शिशेथ। शिश्ये। शेता। शेष्यति। ०ते। अशैषीत्। अशेष्ट। शिशीषति। शेशीयते। शेशेति। शाययति। अशीशयत्। शित्वा। ०शित्य। शितः। निशितः। सम्—संशितः। संशितव्रतः। नि—निशिनोत्यसिपुत्रिकाम्, कवि ७६।

शिच्—भ्वा, आ। शिक्षा।

विद्याग्रहणम्। शिक्षते। मरुत् किमप्यापि शिक्षते, नै १, ७३। अशिक्षतास्त्रं पितुरेव मन्त्रवत्, र ३, २१। शिक्षा। शैक्षः।

शिङ्ग्—शिघि, भ्वा, प । आघ्राणम् ।

शिङ्गति । शिशिङ्ग । शिङ्गिता । अशिङ्गत् । शिरस्युपशिशिङ्ग तम्, भ १४, ५२ । तं मूर्ध्नुपाशिङ्गत्, भ १७, ९५ ।

शिञ्ज्—शिजि, अदा, चु, वो, आ ।

अव्यक्तध्वनिः । शिङ्क्ते । अशिङ्क्त । शिशिञ्जे । शिञ्जिता । अशिञ्जिष्ट । शिञ्जयते । शिञ्जते । घण्टां दीर्घं शिशिञ्जिरे, भ १४, ४ । शिञ्जानपतत्रिसंघः, भ ३, ४६ । स्वनिते वस्त्रपर्णानां भूषणानाञ्च शिञ्जितम् इत्यमरः । तालैः शिञ्जद्वलयसुभगै रित्यादौ परस्मैपद मपि । शिञ्जितम् । शिञ्जा ।

शिट्—(सिट्) भ्वा, प । अनादरः ।

तं शेटति निरीक्ष्य यः, कवि २७० ।

शिल्—सिल्—षिल्, तु, प ।

उञ्छम् । कणश आदानम् । कनिशाद्यर्जनम् । उद्धृतशस्यशेषाहरणम् । शिलति । सिलति । षिलति । शिला ।

शिष्—(कष) भ्वा, प । हिंसा ।

शिष्लृ, रु, प । विशेषणम् । विशेषकरणम् । उपरञ्जनम्, दुर्गा । लट् शेषति । निःशेषं शेषति क्रोधात् प्रतिपक्षक्षमापतीन् । एकः शेषति योऽशेषभूतानां भरणे ध्रुवम् ॥ कवि १९२ । शिनष्टि । शिंष्टः । शिंषन्ति । हि, शिंढि । शिनषाणि । लिङ् शिंष्यात् । लङ् अशिनट् । अशिंष्टाम् । अशिंषन् । लिट् शिशेष । शिशिषतुः । शिशिषिम । लुट् शेष्टा । लृट् शेक्ष्यति । लुङ् अशिक्षत् । रु, अशिषत् । कर्मणि, शिष्यते । अशेषि । तेषा मेकः शिष्यते अन्ये लुप्यन्ते, पा १, २, ६१ । शिशिक्षति । शेशिष्यते । शेशेष्टि । शेषयति । अशीशिषत् । शिष्, चु, प । असर्वोपयोगः । परिशेषीकरणम् । शेषयति । शेषति । शेष्टा । अशिक्षत् । शिष्टा । ॰शिष्य । शिष्टः । शिष्टिः । शेषणम् । शेषः । शेष्टुम् । शेष्टव्यम् । अव—अवशेषः । उद्—उच्छिष्टम् । वि—विशेषः । विधि रहो विशिनष्टि मनोरुजम्, उत्तर १४८ । अन्धात् काणो विशिष्यते । णिच्—अतिशायनम् । विशेषयति विशेषति सम्यक्त्या भूपं विधिः, दुर्गा । विशिनष्टि स्मरं मूर्त्या श्रिया शक्रं विशेषति । विशेषयति यो वाग्मी वाचा वाचस्पतेर्वचः ॥ कवि ९१ । मदन मपि गुणै र्विशेषयन्ती, मृच्छ ११७ । निर्—निःशेषयति यः शत्रून् । निःशेषयति दानेन भाण्डागारं दिने दिने, कवि, १६१ ।

शी—शीङ्, अदा, आ । शयनम् ।

स्वप्नः । शेते, पा ७, ४, २१ । शयाते । शेरते, पा ७, १, ६ । शेषे । शयीत । अशेत । अशयाताम् । अशेत सा बाहुलतोपधायिनी, ५, १२ । शिश्ये । शिश्यिषे । शयिता । शयिष्यते । शयिषीष्ट । अशयिष्ट । अशयिषाताम् । अशयिषत । भावे, शय्यते । अशायि । शय्यन्ते शयानकाः (शयितुं याचन्ते), संचिक्षसारम् । शिशयिषति । शाशय्यते, ७, ४, २२ । शेशय्यीति । शेशेति । शाययति । अशीशयत् । शयित्वा । ॰शय्य । शयितः । शयनम् । शयितुम् । शयनीयम् । शयितव्यम् । शय्या । शयानः । शयालुः । शयुः । अति—अतिक्रमः । अतिवर्त्तनम् । पूर्वान् महाभाग तयातिशेषे, र ५, १४ । वचो वाचा-

तिशय्यते, मा २०, २३। अधि—अधिष्ठानम्। ग्राम मधिशेते, पा १, ४, ४६। वनं सिंहोऽधिशेते, भ १०, ३५। वाहनान्यधिशिश्यिरे (आरूढवन्तः), भ १४, ७४। अनु—अनुशयः। द्वेषः। सम्—संशयः। संशय्य कर्णादिषु तिष्ठते यः, भा ३, १४।

शोक्—शोक, भ्वा, आ। १सेचनत्।

२गतिः, वो। शोकते। शिशोकै। शिशोकै शोणितं व्योम, भ १४, ७६। शौकिता। अशौकिष्ट। सौक्त, सौकते। शौक्, सौक्, चु, प। १दौप्तिः। २आमर्शनम्। स्पर्शः। ३चमेति भट्टमल्लः। ४सेकः, वो। शौकयति। सौकयति। चन्द्रावतीतरङ्गार्द्राः शौकयन्ति च यद्वपुः (वायवः स्पृशन्ति), कवि १८३। शौकरः।

शोभ्—शोभृ, भ्वा, आ। कत्थनम्।

शोल्—भ्वा, प। समाधिः। प्रवृत्तिः। सेवानुभावनम्। शीलति। यः शीलति सदा धर्मम्, कवि २४५। शील—अदन्तः। चु, प। १उपधारणम्। अभ्यासः। २अतिशायनम्। अतिशयकरणम्। शीलयति। अभिशीलत्। शीलय नीलनिचोलम्, गीतगो ५, ११। दलशीलितशयनम् (क्लृप्तम्), गीतगो ८, ६। निशि गहनं शीलितम्, गीतगो ७, ४। अनुशीलनम्। परिशीलनम्। शीलम्। शीले भवा प्रवृत्तिः शैली।

शु—भ्वा, प। गति रित्येके।

शुक्—भ्वा, प, वो। गतिः।

शोकति। शुकः। शुक्रः।

शुच्—भ्वा, प। शोकः।

पुत्रादे रदर्शनाद् दुःखानुभवः, दुर्गा। शुचिर् ईशुचिर्, वो। दि, ड। १पूतीभावः। २शुद्धिः। ३क्लेदः। आर्द्रीभावः। ४भेदः, वो। शोचति। शुच्यति। ०ते। वह्नि राचमनस्नानप्रायश्चित्तै श्च शुच्यति, कवि २१८। न शोचति सदाचारो यो मृतानपि बान्धवान्, कवि कवि १०६। किं शोचतेहाभ्युदये वतास्मान्, भ ३, १२। पापगोचर मात्मान मशोचन्, भ ७, ८०। शुशोच। शुशुचे। एन मद्रे स्तनया शुशोच, र २, ३७। शोचिता। शोचिष्यति। ०ते। अशोचीत्। अशोचिष्टाम्। अशोचिषुः। रावणोऽशोचीत्, भ १५, ७१। (इर्) अशुचत्, अशोचीत्। अशोचिष्ट। कर्मणि, शुच्यते। अशोचि। शुशुचिषति। ०ते। शुशोचिषति। ०ते। शोशुच्यते। शोशोक्ति। शोचयति। अशूशुचत्। शोचित्वा, शुचित्वा। ०शुच्य। शुचितः। (ई) शुक्तः। शोचनम्। शोकः। शोचितुम्। शोचितव्यम्। शोचनीयम्। शुक्। शुचिः। अनु—अनुशोचनम्। गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः, गो २, ११।

शुच्—चुच्, भ्वा, प। १अभिषवः।

अवयवशिथिलीकरणम्। २क्षुरासन्धानम्। ३स्नानम्। (पीडनम्, मन्थनम्, दुर्गा)। शुच्यति। चुच्यति। शुशुच्य। शुचिता। अशुच्यौत्। शुच्यौ, चुच्यौ, वो। क्त, शुक्तः, चुक्तः।

शुठ्—शुण्ठ्—शुठि, भ्वा, प।

प्रतिघातः। गत्याघातः। शुठि, भ्वा, प। शोषणम्। शुष्कीभावः। शोठति। शु-

ण्ठति। शुठ्, चु, प। आलस्यम्। शुठि, चु, प। शोषणम्। शुष्ककरण मिति रमानाथः। शुष्कीभावः, दुर्गा। शोठयति। शुण्ठयति, शुण्ठति। शुण्ठः। शुण्ठी।

शुण्ड्—शुड़ि, भ्वा, प। १खण्डनम्। २प्रमर्दनम्। शुण्डति। शुशुण्ड। शुण्डिता।

शुध्—दि, प। शौचम्। शुद्धिः।

शुध्यति। ध्यानाच्छुध्यति यन्मनः, कवि ३०। रजसा शुध्यते नारी नदी वेगेन शुध्यति, मनु ५, १०८। शुशोध। शुशुधतुः। शोद्धा। शोत्स्यति। अशुधत्। शुशुत्सति। शोशुध्यते। शोशोद्धि। शोधयति। अशूशुधत्। (उन्मूलनम्) राजा गौड़ेन्द्रः कण्टकं शोधयति, दर्पणः १४। (ऋणोद्धारः। अशुद्धिसंशोधनम्)। परि—णिच्, ऋणोद्धारः। कण्टकाद्यपसारणम्। भ्रमादिसंशोधनम्। राज्ञे देयं भागं परिशोधयति, पा १, ३, ३६। तत् सर्वं परिशोधयन्तु गौतगोविन्दतः, गौतगो १२, २८। वि—शुद्धिः। परिसंस्करणम्।

शुन्—तु, प। गतिः। शोनिता।

शुन्ध्—भ्वा, प। उ, वो। शुद्धिः।

शुन्धति। ०ते। यो मां शुन्धति सत्येन शुन्धते तपसा तनुम्, कवि ३०। शुशुन्ध। ०न्धे। शुन्धिता। शुध्यात्। शुन्धिषीष्ट। शुन्ध्, चु, प। अय मात्मनेपदीति केचित्, दुर्गा। शौचकर्म। शोधनम्। शुन्धयति। शुन्धति। शुन्धिता। अशुन्धीत्। शुङ्, शुङ्धयतीति केचित्।

शुभ्—भ्वा, आ। दीप्तिः। शोभा। शोभते। शोभते रूपसम्पत्त्योः, कवि ४१। शुशुभे। शोभिता। शोभिष्यते। अशुभत्। अशोभिष्ट, पा १, ३, ८१। शुशुभिषते, शुशोभिषते। भृशार्थे यङ्निषेधः। पौनःपुन्ये तु, शोशुभ्यते, कौ २०६। शोभयति। अशूशुभत्। शुभ् शुन्भ्, सुभ् सुन्भ्, भ्वा, प। १भाषणम्। कथनम्। २भासनम्। दीप्तिः। ३हिंसा। शोभति, शुम्भति। सोभति, सुम्भतीति कश्चित्। शोभनम्। शोभा। शुभम्। शुम्भम्। शुम्भः। निशुम्भः। शुभ् शुन्भ्, तु, प। शोभा। शुभति, शुम्भति। नलोपेऽपि तुम्, कौ १५१। शुभति स्फोतया श्रिया, कवि ४१।

शुल्क्—चु, प। १अतिस्पर्शनम्। वर्जनम्। २कथनम्। ३सृष्टिः, वो। शुल्कयति।

शुल्ब्—चु, प। १मानम्। २सृष्टिः, वो।

शुष्—दि, प। शोषणम्।

स्नेहरहितीभावः। शुष्यति। शुशोष। शुशुषतुः। शोष्टा। शोक्ष्यति। अशुषत्। शुशुक्षति। शोशुष्यते। शोशोष्टि। शोषयति। अशूशुषत्। शोषय मनसिजतापम्, गौतगो १२, ५। शुष्ट्वा। ०शुष्य। शुष्कः, पा ८, २, ५१। शोषणम्। शोषः। शोष्टुम्। शोष्टव्यम्। परि, वि, सम्—अतिशोषणम्। परिशुष्यन् महाह्रदः, भ १०, ४१। ऊर्ध्वशोषं तृणवद्विशुष्कः, भ ३, १४। प्रतापसंशोषितशत्रुपङ्कः, र ६, ३६। शूर—सूर—शूरौ, सूरौ, दि, आ। १हिंसा। २स्तम्भनम्। जड़ीभावः। शूर्यते। सूर्यते, वो। शुशूरे। शूरिता। (ई) शूर्णः। शूर, अदन्तः। चु, आ। विक्रमः। उद्यमः। शूरयते। अशुशूरत।

शूर्प् (शूर्ख) चु, प । मानम् ।

शूल्—श्वा, प । १रोगः । २शब्दः । ३सङ्घातः । शूलति । शुशूल । शूलिता ।

शूष्—श्वा, प । प्रसवः । शूषति ।

शृध्—शृधु (शृधु) श्वा, उ ।

उन्दनम् । क्लेदनम् । आर्द्रीभावः । शर्धति । °ते । शशर्ध । शशृधे । शर्धिता । अशर्धीत् । शृधु, श्वा, आ । कुत्सितशब्दः । अपानशब्दः । शर्धते । शशृधे । शर्धिता । शर्त्स्यति । शर्धिष्यते । शर्धिष्यते । अशर्त्स्यत् । अशर्धिष्यत, पा ७, २, ५९ । अशृधत् । अशर्धिष्ट । शिशृत्स्यति । शिशर्धिषते, पा १,३,९२ । शरीशृध्यते । शरीशर्धि । शृधु, चु, प । १प्रसहनम् । २प्रहसनम् । शर्धयति । शर्धति । अशशर्धत् । अशीशृधत् । शर्धित्वा । शृद्ध्वा । शृद्धः ।

शॄ, क्रया, प । हननम् । छेदनम् ।

शृणाति । शृणीतः । शृण्न्ति । शृणाति य स्तान्, भा १४, १३ । परशुः सर्वशस्त्रारं शृणातु, वीर ४,३ । शशार । शशरतुः, पा ७, ४, ११ । शशरुः, पा ७, ४, १२ । शशरिव, शश्रिव । शरिता, शरीता । शरिष्यति, शरीष्यति । शीर्य्यात् । अशारीत् । कर्मणि, शीर्य्यते । अशारि । शिशरिषति, शिशरीषति, शिशीर्षति । शेशीर्य्यते । शाशर्त्ति । शारयति । अशीशरत् । शीर्णः । शीर्णिः ।

शेल्—शेल्ल (पेल्ल) भ्वा, प । १गतिः । २कम्पः, वो । शेलति । शेलृ । सेलति ।

शेव् (सेव्) ।

शै—शॅ—स्नै, भ्वा, प । पाकः । शायति । शायति । स्नायति, वो । शशौ । शाता । शास्यति । अशासीत् । श्नै, अपयति । पाके घटादि रिति प्रदीपः ।

शो—दि, प । तनूकरणम् ।

अल्पीकरणम् । श्यति, पा ७,३,७१ । शशौ । शश्यतुः । शाता । शास्यति । अशासीत्, अशात्, पा २, ४, ७८ । अशासिष्टाम्, अशाताम् । शिशासति । शाशायते । शाययति, पा ७, ३, ३७ । शात्वा । °शाय । शितः, शितवान् । शातः, शातवान्, पा ७, ४, ४१ । व्रते नित्यं संशितं व्रतम् (सम्यक् सम्पादितम्) । संशितो ब्राह्मणः (व्रतविषयकयत्नवान्), कौ ३५९ । नि—निशानम् । तेजनम् । न्यश्यन् शस्त्राणि, भ १७, ४ । तमुद्यतनिशातासिम्, भ ५, ४६ । मा १, ४५ ।

शोण्—शोणृ, भ्वा, प । १वर्णः । रागः । रक्तीभावः । २गतिः । शोणति । शुशोण । शोणिता । अशोणीत् । शोणा ।

शौट्—शौड्—श्वा, प । गर्वः ।

यः शौटति सभामध्ये, कवि २७० ।

श्रुत्—श्रुत्—श्रुतिर्, स्रुतिर्, श्वा, प । क्षरणम् । आसेचनम्, वो । श्रोतति । स्रोतति । धाराः श्रोतन्ति, उत्तर ११३ । लिट् चुश्रोत । चुश्रुततुः । चुश्रोत व्रणिनां रक्तम्, भ १४, ४० । श्रोतिता । श्रोतिष्यति । (इर्) अश्रुतत्, अश्रोतीत् । रक्तं मश्रोतिषुः चुक्षाः, भ १५, ५१ । चुश्रोतिषति, चुश्रुतिषति । चोश्रुत्यते । चोश्रोत्ति । श्रोतयति । अचुश्रुतत् ।

ग्रथ्—भ्वा, प । बध इति कश्चित् ।

ग्रथति । ग्रथयति, घटादिः ।

ग्लील्—ग्लील् (मील) भ्वा, प ।

निमेषः ।

ग्लै—ग्लै ङ्, भ्वा, आ । गतिः ।

ग्लायते । ग्लास्ये । ग्लास्त । क्तः, ग्लानः ग्लीतः स्वर्गः । ग्लीनं घृतम्, पा ८, २, ४७ । आ—ग्लेषणम् । पथ ग्लाग्लानकर्दमान्, र ४, २५ ।

ग्लङ्—ग्लङ्—ग्लङ्, ग्लकि, ग्लकि,

ग्लकि (सेक) भ्वा, आ । गतिः । ग्लङ्ते । ग्लङ्ते ।

ग्लङ्, ग्लगि (ग्लगि) भ्वा, प । गतिः ।

ग्लण्—भ्वा, प । दानम् ।

ग्लणति । ग्लणयति, घटादिः । ग्लग्नि-ग्लणत्, ग्लग्लाणत् । ग्लण्, चु, प । दानम् । ग्लाणयति । विग्लाणनं वितरण मित्यमरः । विग्लाणयति यः श्रीमान् विप्रेभ्यो विपुलं वसु । विग्लणन्ति च तेऽप्यस्मै सत्यवाचः सदाग्निषः ॥ कवि १७० ।

ग्रथ्—(क्रथ) भ्वा, प । हिंसा ।

ग्रथति । ग्रथयति, घटादिः । ग्रथ्, चु, प । १प्रयत्नः । २मोचणम् । ३प्रतिहर्षः । अतिहर्षः । ग्राथयति शिशुं (पुनः पुन र्हर्षयति, दुर्गा) । ग्रथ्, चु, प । १मोचणम् । २हिंसा । ३बन्धः । वो । ग्राथयति । ग्रथति । ग्रथ (सार) ग्रदन्तः । चु, प । दौर्बल्यम् । ग्रथयति । श्लाघ्यं ग्राथयति स्फुटार्थमधुरं गद्यञ्च पद्यं सदा भावालङ्कृतिपेशलं ग्रथयति स्पष्टाक्षरं नाटकम् । ग्रथ्नाति प्रथितावदातचरितः ग्राह्मं विचित्रञ्च यः इति हलायुधः ।

ग्रन्थ्—ग्रति, भ्वा, ग्रा । शैथिल्यम् ।

ग्रन्थ् (ग्रन्थ्) क्रया, प । सन्दर्भः । ग्रन्थनम् । रचना । ग्रन्थ्, क्रया, प । १विमोचनम् । २प्रतिहर्षः । ग्रन्थते । ग्रग्रन्थे । ग्रन्थिता । ग्रग्रन्थिष्ट । ग्रन्थ्नाति । ग्रन्थ्नीतः । ग्रन्थ्नन्ति । ग्रन्थ्नीयात् । ग्रग्रन्थ्नात् । लिट् ग्रग्रन्थ । ग्रग्रन्थतुः । हरदत्तादीनां मते, ग्रग्रान्थ । ग्रेथतुः । ग्रेथिथ । उत्तमे तु ग्रग्रान्थ, ग्रग्रन्थ, इति माधवः । तत्र मूलं मृग्यम्, कौ १६७ । ग्रन्थिता । ग्रन्थिष्यति । ग्रग्रन्थीत् । ग्रग्रन्थिष्टाम् । ग्रग्रन्थिषुः । ग्रन्थ्, चु, प । सन्दर्भः । रचना । बधः, वो । ग्रन्थयति । ग्रन्थति । ग्रथित्वा, ग्रन्थित्वा, पा १, २ २३ । सन्दर्भो रचना गुम्फः ग्रन्थनं ग्रन्थनं समा इति हेमचन्द्रः ।

ग्रम्—ग्रमु, दि, प । १तपस्या ।

२खेदः । ग्रमः । क्लान्तिः । ग्राम्यति, पा ७, ३, ७४ । ग्रग्राम । ग्रग्रमतुः । वीरौ ग्रग्रमतु र्नच, भ १४, ११० । ग्रमिता । ग्रमिष्यति । ग्रग्रमत् । नाग्रमद् घ्नन् ध्रुवङ्गमान्, भ १५, ४८ । ग्रिग्रमिषति । ग्रंग्रम्यते । ग्रंग्रन्ति । ग्रमयति । वृत्तिकारमते, विग्रामयति । धूर्य्यान् विग्रामय, र १, ५४ । रजो विग्रामयन् राज्ञां क्षतशून्येषु मौलिषु, र ४, ८५ । (ड) ग्रमित्वा, ग्रान्त्वा । ०ग्रम्य । ग्रान्तः । ग्रान्तिः । ग्रमः । ग्रमणः । ग्रमी, पा ३, २, १४१ । ग्राग्रमः । विग्रमः । विग्राम इति चान्द्रः । परि—परिग्रमः । व्यर्थं परिग्राम्यसि वा कि मित्यम्, नै ३, १३ । वि—विग्रामः । किं विग्राम्यसि क्षणभोगिभवने, गीतगो ६, १२ । विग्रान्तविग्रहकथः, १, ३३ ।

अभ्र् (स्रभ्र्)।

आ—अदा, प। १पाकः। २स्वेदः।

घर्मार्त्तिभावः, वो। आति। आति श्रेष्ठं हविः, कवि १६। शश्रौ। आता। आस्यति। आयात्, श्रेयात्। अश्रासीत्। शिश्रासति। शाश्रायते। शाश्राति, शाश्रेति। पाके घटादिः। अपयति चरुम् (विक्लेदयति)। पाकादन्यत्र, आपयति (स्वेदयति)। क्त, श्राणः। क्षीरहविषोः पाके, श्रृतम्, पा ६, १, २७।

आम—अदन्तः। चु, प, वो। मन्त्रः।

गुप्तोक्तिः। अभिमुखीकरणम्। आमयति। रजो विश्रामयन् इति दुर्गा।

श्रि—श्रिञ्, भ्वा, उ। सेवा।

आश्रयः। श्रयति। ०ते। शिश्राय। शिश्रयिथ। शिश्रिये। तरुच्छायां शिश्रिये, र ३, ७०। श्रयिता। श्रयिष्यति। ०ते। आश्रिषि, श्रीयात्। अश्रयिषीष्ट। अशिश्रियत्। ०त, पा ३, १, ४८। शैलं न्वशिश्रियद्वामा, भ ६, १७। कर्मणि, श्रीयते। अश्रायि। शिश्रयिषति। ०ते। शिश्रीषति। ०ते, पा ७, २, ४६। शेश्रीयते। शेश्रयीति, शेश्रेति। आश्रयति। अशिश्रियत्। श्रित्वा, पा ७, २, ११। ०श्रित्य। श्रितः। श्रितवान्। श्रयणम्। श्रयः। श्रयितुम्। श्रयिता। श्रयितव्यम्। श्रयणीयम्। श्रीः। आ—आश्रयः। अवलम्बनम्। त्वतो भूतल माश्रिताय, भ १४, १११। कल्पतरुच्छाया माश्रिता, र १, ७६। उद्—उच्छ्रायः। उन्नमनम्। प्र—प्रश्रयः। प्रणयः। सम्—आश्रयः।

श्रिष्—श्रिषु, (प्रुषु) भ्वा, प।

दाहः। श्रेषति। श्रेषित्वा, श्रिषित्वा, श्रिष्ट्वा।

श्री—श्रीञ्, क्रया, उ। पाकः।

श्रीणाति। श्रीणीते। शिश्राय। शिश्रिये। श्रेता। अश्रैषीत्। अश्रेष्ट। श्रेयः।

श्रु—भ्वा, प। १श्रवणम्। २गतिः।

शृणोति, पा ३, १, ७४। शृणुतः। शृण्वन्ति। शृण्वः, शृण्वः। श्रु, गतौ अवति। रेफरहितोऽप्ययमिति केचित्। शवति, दुर्गा। हि, शृणु। शृणुयात्। लङ् अशृणोत्। अशृणुताम्। अशृण्वन्। शुश्राव। शुश्रुवतुः। शुश्रोथ। शुश्रुव, पा ७, २ १३। शुश्राव घोषं न जनीघजन्यम्, भ ३, २७। लुट् श्रोता। लृट् श्रोष्यति। श्रूयात्। लुङ् अश्रौषीत्। अश्रौष्टाम्। अश्रौषुः। कर्मणि, श्रूयते। अश्रावि। नवीन मश्रावि तवाननादिदम्, नै ६, ४१। श्रुतानि चाश्रोषत षट्पदानाम्, भ २, १०। सन् (सेवा) गुरुं शुश्रूषते, पा १, ३, ५७। शुश्रूषस्व गुरुम्, शक्र ४, १५८। शोश्रूयते। शोश्रवीति। शोश्रोति। आवयति। अशुश्रवत्, अशिश्रवत् पा ७, ४, ८१। शुश्रावयिषति, शिश्रावयिषति। तं वृत्तान्त मशिश्रवत्, भ ५, ५१। श्रुत्वा ०श्रुत्य। श्रुतः। श्रुतिः। श्रवणम्। श्रवः। श्रोतुम्। श्रोतव्यम्। आ, प्रति—प्रतिज्ञा। विप्राय गा माशृणोति, पा १, ४, ४०। आशुश्रूषन् वार्त्ताम्, भ ८, ३६। कामं राज्ञे प्रतिश्रुत्य, र २, ६५। वि—विख्यातिः।

तम्—(अकर्मकादात्मनेपदम्) संशृणुते, कौ २४७। हितान्न यः संशृणुते स किंप्रभुः, भा १, ५। संशृणोति न चोक्तानि, भ ५, १८। क्रोष्टून् समशृणोत् रसतः, भ ६, ५। रक्षांस्यौति पुरापि संशृणमहे इति मुरारिप्रयोगः १६३ प्रामादिकः, कौ २४७।

श्वैक् (मैक्) श्वै (श्वै)।

श्रोण—श्रोणृ, भ्वा, प। संघातः।

श्रोणति। श्रोणिः।

श्लङ्क्—श्लकि (मेक्) भ्वा, आ। गतिः।

श्लङ्ग्—श्लगि (अगि) भ्वा, प। गतिः।

श्लथ—(अथ) अदन्तः। चु, प। कार्श्यम्।

श्लथते दीर्घसंसारग्रन्थिः, कवि १६८।

श्लाख्—श्लाखृ, (शाखृ) भ्वा, प।

व्याप्तिः।

श्लाघ—श्लाघृ, भ्वा, आ। कत्थनम्।

श्लाघा। प्रशंसा। श्लाघते देवदत्ताय, पा १, ४, ३४। अश्लाघे। श्लाघिता। श्लाघिष्ये केन, भ १८, ४। अश्लाघिष्ट। अश्लाघिषाताम्। श्लाघयति। अशश्लाघत्। श्लाघमानः परस्त्रीभ्यः, ८, ३७। श्लाघा।

श्लिष्—श्लिषु (प्रीषु) भ्वा, प। दाहः।

श्लेषति। शिश्लेष। श्लेषिता। अयं सेट्। श्लिष्, दि, प। आलिङ्गनम्। प्रत्यासत्तिः। योगः। श्लिष्यति। यः श्लिष्यति प्रियां प्रेम्णा श्लेषति द्विषतां पुरम्, कवि ६१। श्लिष्यति का मपि, गीतगो १, ४६। श्लिष्यति वृक्षं लता, दुर्गा। शिश्लेष। शिश्लिषतुः। श्लेष्टा। श्लेक्ष्यति। अश्लिषत्, पुषादिः। आलिङ्गने तु, अश्लिक्षत्, पा ३, १, ४६। मा न श्लिक्षः प्रियं प्रिये, भ ६, १६। कर्मणि, श्लिष्यते। अश्लेषि। अश्लिक्षाताम्। अश्लिष्टाः। अश्लिड्ढम्। शिश्लिक्षति। शेश्लिष्यते। शेश्लेष्टि। श्लेषयति। अशिश्लिषत्। श्लिष्, चु, प। श्लेषणम्। योगः। श्लेषयति। दुःश्लेषाण्यपि कार्य्याणि धिया श्लेषयति क्षणात्, कवि ६१। श्लिष्टा। °श्लिष्य। श्लिष्टः। श्लेषणम्। श्लेषः। श्लेष्टृम। आ—आलिङ्गनम्। योगः। वि—विश्लेषः। वियोगः। शिरो विशिश्लेष, भ १४, ३४। प्र—प्रश्लेषः। वियोगः। सम्—संयोगः। समश्लिषत् जतुकाष्ठम्।

श्लोक्—श्लोकृ, भ्वा, आ। संघातः।

श्रथनम्। ग्रथ्यमानस्य व्यापारः। अस्मिन्नकर्मकः, कौ ४७। ग्रन्थयिष्टव्यापारः। छन्दोबद्धवाक्यरचनम्, दुर्गा। श्लोकते। शुश्लोके। श्लोकिता। अश्लोकिष्ट। श्लोकयति। अशुश्लोकत्। श्लोकः।

श्लोण्, श्लोणृ (श्रोणृ) भ्वा, प।

संहतिः।

श्वङ्क्, श्वकि (कंकि) भ्वा, आ। गतिः।

श्वच्—श्वच्—श्वचि, भ्वा, आ।

गतिः। श्वज् श्वजि श्वचि इत्येके। श्वचते। श्वच्चते। श्वजते। श्वज्जते। श्वच्चते।

श्वठ—अदन्तः। चु, प, वो।

दुर्वाक्यम्। सम्यग्भाषणमिति रमानाथः। सम्यग्भाग इत्यप्येके। श्वठ, श्वण्ठ (ग्रठ)।

श्वभ्र्—च, प, वो। १रन्ध्रकरणम्।

२गतिः। ३दीप्तम्। तङ्कः। श्वभ्रयति।

श्वर्त्—(स्वर्त्)।

श्वल्—श्वल्, भ्वा, प। शीघ्रगतिः।

श्वल्क्—(वल्क्) चु, प। कथनम्।

श्वस्—अदा, प। प्राणनम्।

श्वासः। जीवनम्। श्वसिति, पा ७, २, ७६। श्वसितः। श्वसन्ति। पुंसि विश्वसिति कुत्र कुमारी, नै ५, ११०। श्वस्यात्। हि, श्वसिहि। अश्वसत्, अश्वसीत्, पा ७, ३, ९८, ९९। अश्वसिताम्। अश्वसन्। शश्वास। शश्वसतुः। श्वसिता। श्वसिष्यति। अश्वसीत्। अश्वसिष्टाम्। अश्वसिषुः, पा ७, २, ५। शिश्वसिषति। शाश्वस्यते। शाश्वस्ति। श्वासयति। अशिश्वसत्। श्वसित्वा। ०श्वस्य। श्वस्तः। विश्वस्तः विश्वसितः आश्वस्तः आश्वसित इति कलापमुग्धबोधे। श्वस्तः श्वसित इति प्रदीपः। भावे, श्वस्तम् श्वसित मिति पद्मनाभः। श्वसनम्। श्वासः। श्वसितुम्। श्वसन् कटुष्णम्, भ ३, १८। आ, समा—आश्वासः। सान्त्वना। व्रजाश्वसिहि मा रुदः, भ ४, ३८। ततोऽक्रन्दीद् दशग्रीव स्त माशिश्वसदिन्द्रजित्, भ १५, ९५। समाश्वसिहि समाश्वसिहि, शुक ६, २०३। उद्—उच्छ्वासः। अन्तर्मुखश्वासः। उच्छ्वास दीना, भ १४, ५५। नि, निर्—निःश्वासः। बहिर्मुखश्वासः। दीर्घं निःश्वस्य, शुक ६, १८७। वि—विश्वासः। विश्वसे पक्षिगणैः समन्तात्, भ २, २५। न विश्वसेदविश्वस्त मिति न पो लुक्, कौ १२१। आश्वसेयु र्निशाचरः, इति भट्टिः। गणकार्य्ये मनित्य मिति सिद्धम्, प्रदीपः। दीप्तिमतोऽपि विश्वसनीयताऽस्य वपुषः, शुक २, ९३।

श्वि—टुओश्वि, भ्वा, प। १गतिः।

२वृद्धिः। स्फीतिः। श्वयति। लिट् शुशाव, पा ६, १, ३०। शुशुवतुः। शुशविथ। पक्षे, शिश्वाय। शिश्वियतुः। शिश्वयिथ। शुशुवु र्भुजाः, भ १४, ७९। श्वयिता। श्वयिष्यति। आशिषि, शूयात्। अशिश्वियत्, पा ३, १, ५८। अश्वत्, पा ७, ४, १८। अश्वयीत्, पा ७, ४, ५। रुदतोऽशिश्वियच्चक्षु रास्य स्वार्थे तवाश्वयीत्, भ ६, १९। शुभ्रश्वेहाश्वतां पक्षौ कृत्तौ, भ ६, ३१। कर्मणि, शूयते। अश्वायि। शिश्वयिषति। शेश्वीयते। शोशूयते, पा ६, १, ३०। शेश्वयीति, शेश्वेति। श्वाययति। अशिश्वयत्, अशूशवत्, पा ६, १, ३१। शुशावयिषति, शिश्वाययिषति। श्वयित्वा। ०शूय। (ओ) शूनः। शूतिः। श्वयनम्। (ट्) श्वयथुः। श्वयः। श्वा। उद्, सम्—स्फीतिः। सततरुदितोच्छूननयना। मांसोपभोगसंशूनः, भ ९, १६।

श्वित्—श्विन्द्—श्विता, श्विदि, भ्वा, आ। वर्णः। शुक्लीभावः। श्वेतते। यद् यशः श्वेतते दिक्षु श्विन्दते च सुरालये, कवि २३६। श्विन्दते। शिश्विते। श्वेतिता। श्वेतिष्यते। अश्वितत्। अश्वेतिष्ट, पा १, ३, ९१। सद स्तदश्वेति हंसे, उत्तरत्रे १२, २२। (आ) श्वितितम्। श्वित्तम्।

## ( ष )

षुक्—ष्वक्—ष्वष्क्—(कक्कि) भ्वा, आ। गमनम्। षुक्कते। ष्वक्कते।

ष्वष्कते। षुषुक्के। षष्वक्के। षष्वष्के। षस्क—ष्कक्क इत्यपि केचित्।

ष्टभ्—ष्टभि (स्कभि) भ्वा, आ।

प्रतिबन्धः। ष्टभ्नते। टष्टभ्के। ष्टभ्नित।

ष्ठै—भ्वा, प, वो। १सङ्घातः।

२शब्दः। ष्ठायति। टष्ठौ। ष्ठाता। ष्ठिव्—ष्ठिव्, भ्वा, दि, प। निरसनम्। निष्ठीवनम्। श्लेष्मादिवमनम्। फुत्कार इति भट्टमल्लः। ष्ठीवति, पा ७, ३, ७५। ष्ठीव्यति, पा ८, २, ७७। पीतमिन्दुं ष्ठीवामः, भ १२, १८। टिष्ठेव, तिष्ठेव, कौ ६९। टिष्ठिवतुः, तिष्ठिवतुः। राज्ञसाय नितिष्ठिवुः, भ १४, १००। ष्ठेविता। ष्ठेविष्यति। आशिषि, ष्ठीव्यात्। अष्ठेवीत्। अष्ठेविष्टाम्। अष्ठेविषुः। टिष्ठेविषति, तिष्ठेविषति। टुष्ठूषति, तुष्ठूषति। टेष्ठीव्यते, तेष्ठीव्यते। ष्ठेवयति। (ङ) ष्ठेवित्वा, ष्ठूत्वा। °ष्ठिव्य। ष्यूतः। ष्ठूतिः। ष्ठेवनम्। ष्ठेवः। ष्ठेवितुम्। नि—निष्ठीवनम्। निष्ठेवनम्। रक्तं न्यष्ठीवत्, भ १७, १०। निष्ठूतः, मा ३, १०।

ष्ठौव्—ष्ठौवु, भ्वा, प, वो।

निरसनम्। ष्ठौवति। टिष्ठौव। ष्ठौविता। ष्ठौवित्वा, ष्ठूत्वा। ष्ठूतः। निष्ठीवनम्।

## (स)

सग्—षगे, भ्वा, प। संवरणम्।

सगति। सगिता। असगीत्। सगयति।

सघ्—षघ्, स्वा, प। हिंसा।

सघ्नोति। सेघतुः। असघीत्, असाघीत्।

सङ्केत—अदन्तः। च्। आमन्त्रणम्। सङ्केतयति। सङ्केतितः।

सङ्ग्राम—अदन्तः। चु, आ। युद्धम्। सङ्ग्रामयते। असस्ग्रामत।

सच्—षच्, भ्वा, आ। १सेचनम्।

२सेवनम्। षच, भ्वा, उ। समवायः। राशीकरणम्। सचति। °ते। सक्तुः।

सज्ज्—सञ्च्—सञ्ज्,

षस्ज् षन्च्, षनज्, भ्वा, प। गतिः। सज्जति। अय मात्मनेपदीति केचित्। सज्जते। आसज्जमानेक्षणः, शकु ३, २१२।

सञ्ज्—षन्ज्, भ्वा, प। सङ्गः।

संश्लेषः। योगः। सजति, पा ६, ४, २५। ससञ्ज। ससञ्जतुः। ससञ्जुः फलरेणवो मत्तेभकटेषु, र ४, ४७। सङ्क्ता। सङ्क्ष्यति। सज्यात्। असाङ्क्षीत्। असाङ्क्ताम्। असाङ्क्षुः। भावे, सज्यते। असञ्जि। सिसङ्क्षति। अभिषिषङ्क्षति। सासज्यते। सासङ्क्ति। सञ्जयति। असस्रजत्। सक्ता। °सज्य। सक्तः। सक्तिः। सञ्जनम्। सङ्गः। सङ्क्तुम्। सङ्गी। अनु—अनुषङ्गः। अन्वितस्य पुनरन्वयः। अभि—अभिषङ्गः। पराभवः। अव—योजनम्। अवसक्तः। पितु स्तोऽद्य मृतः स्कन्धे भुजङ्गमः, भारत। आ—आसक्तिः। योगः। आसस्रुश्च भयं तेषाम्, भ १४, १०४। भुजे स भूमेर्धुर मासस्रुज, र २, ७४। चाप मासज्य कण्ठे, कु २, ६४। प्र—प्रसङ्गः। आसक्तिः। प्रसजन्निन्द्रियार्थेषु नरः पतन मृच्छति, स्मृतिः। पितृमरणादावपि मांसभोजनं प्रसज्येत, स्मृतिः।

सट्—षट्, भ्वा, प। अवयवः।

सट्—षट्ट्, चु, प। हिंसा।

सठ्. स्वठ् (शठ्)।

सच—अदन्तः। चु, आ।

सन्तानक्रिया।

सद्—षद्ल्, भ्वा, तु, प।

१भेदः। २गमनम्। ३अवसादनम्। विषादः। सीदति, पा ७, ३, ७८। न सीदति क्वचित् कार्य्ये, कवि ७७। तुदादौ सदे पाठः। शतरि नुम् विकल्पार्थः। सीदतौ, सीदन्ती। न च वीरावसीदताम्, भ १७, ८४। ससाद सेदतुः। सेदिथ, ससत्थ। अमदाः सेदुरेकस्मिन्नितम्बे निखिलागिरेः (उपविष्टाः), भ ७,५८। सत्ता। सत्स्यति। असदत्। सिषत्सति। (भावगर्हायां यङ्) सासद्यते, पा ३, १, ३४। सासत्ति। सादयति। असीषदत्। (हिंसा) यैः सादिताः, र ७, ४४। सत्त्वा। ०सद्य। सन्नः। सत्तिः। सदनम्। सादः। सत्तम्। अव—अवसादः। सहतां क्रिया नित्या क्षिद्रे नैवावसीदति, भ ६, २४। आ—षद्, चु, प। प्राप्तिः। गमनम्। सन्निकर्षः। आसादयति। सर्वत्रासदति श्रियम्। आसादयति विद्यानां पारम्, कवि ७७। आससाद। आसत्ता। आसात्सीत्। आसादितौ कथं न गजैः, भ ६, ८५। सुखीवान्तिक मासेदुः, भ ७, ३१। उद्—णिच्, उन्मूलनम्। उद्वर्त्तनम्। उद्वर्त्तनोत्सादने हे इत्यमरः। उप—आसत्तिः। प्राप्तिः। उपसेदुर्दशग्रीवम्, भ ६, ८२। नि—उपवेशनम्। विषण्णायां निषीद, र २, ८९। न निषीदति पौरुषे, मा २, ८६। प्र—प्रसादः। निर्मलीभावः। दिशः प्रसेदुः, र ३, १४। प्रसीद विश्राम्यतु वीरवज्रम्, कु ३, ९। प्रति—प्रतिसीदति, पा ८, ३, ६६। वि—विषादः। अक्तार्था विषीदन्तः, भ ७, ८९। विषसाद, पा ८, ३, ११८।

सन्—षण् (वन) भ्वा, प। सम्भक्तिः।

सेवा। षण्, त, ङ। दानम्। सनति। सनोति। सनुते। ससान। सेने। सनिता। सनिष्यति। ०ते। सायात्, सन्यात्, पा ६, ४, ४३। सनिषीष्ट। असनीत्, असानीत्। असनिष्ट, असात, पा ६, ४, ४२। असनिष्ठाः, असाथाः। कर्मणि, सायते, सन्यते। सिसनिषति, सिषासति, पा ७, २, ४९। संसन्यते, सासायते, पा ६, ४, ४३। संसन्ति। सानयति। असीषणत्। (ङ) सनित्वा, सात्वा। सातः। सातिः। सतिः। सन्तिः, पा ६, ४, ४५।

सप्—षप्, भ्वा, प। १समवायः।

सम्बन्धः। २सम्यगवबोधः। सपति।

सभाज—अदन्तः। चु, प। १प्रीतिः।

२दर्शनम्। ३सेवनम्। सभाजयति। पुण्यश्लोकः सभाजयन्, उत्तर।

सम्—स्तम्—षम्, ष्टम्, भ्वा, प।

१अवैक्लव्यम्। अविह्वलता। २वैक्लव्यम्, वो। समति। स्तमति। समन्ति यद्वियोगेन सीमन्तिन्यः स्मरातुराः, कवि २२३। षम—अदन्तः। चु, प। वैक्लव्यम्। समयति।

सम्ब्—षम्ब्, भ्वा, प, वो। गतिः।

षम्ब्, चु, प। सम्बन्धः। साम्ब, शम्ब इत्येके। सम्बति। सम्बयति।

सय्—षय् (अय) भ्वा, आ। गतिः।

सर्ज्—षर्ज् (अर्ज) भ्वा, प ।

अर्जनम् । सर्जति । ससर्ज ।

सर्ब्—षर्ब् (कर्ब) भ्वा, प । गतिः ।

षर्ब् (अर्ब) भ्वा, प । हिंसा । सर्बति । सर्वति ।

सल्—षल् भ्वा, प । गतिः ।

सस्—संस्त्—षस्, षस्ति, अदा, प ।

स्वप्नः । सस्ति । सस्तः । सस्ति । ससास । सेसतुः । सस्मिता । असस्सीत्, असासीत् । सन्ति, पा ८, २, २९ । सन्तः । संस्सन्ति । संस्ति संस्तः इत्येके, कौ १२७ । संस्सि, पा ८, ४, ६५ । ससंस्त । ससंस्ततुः । संस्तिता । असंस्तीत् । इमौ वैदिकौ । तालव्यादी इति कश्चित् ।

सह्—षह्, भ्वा, आ । मर्षणम् ।

सहनम् । क्षमा । शक्तिः । सहते सेहे । यवनीमुखपद्मानां सेहे मधुमदं न सः, र ४, ६१ । सहिता, सोढा, पा ७, ४, ८ । सहिष्यते । कथं सहिष्यते तत् प्रथमावलम्बनम्, कु ५, ६६ । अपराधमिमं ततः सहिष्ये, शकु ३, ११९ । सहिषीष्ट । असहिष्ट । असहिषाताम् । असहिषत । सिषहिषते । सासह्यते । सासहीति, सासोढि । साहयति । असीषहत् । पर्य्यसीषहत्, पा ८, ३, ११३ । सिसाहयिषति, पा ८, ३, ६२ । षह्, चु, प । मर्षणम् । सहनम् । साहयति । सहति । स एवायं नागः सहति कलभेभ्यः परिभवम् । साहयत्याहवे क्षोभं सहति द्रविणव्ययम् । अन्यायं सहते नासौ सह्यति क्षितिरक्षणे ॥ कवि ३१ । सहित्वा, सोढ्वा । साढ्वा इति केचित् । ॰सह्य । सोढः । सोढि । सहनम् । साहः । सोढुम्, सहितुम् । सोढा । सहिता । सहिष्णुः । सोढव्यम् । सहितव्यम् । सहनीयः । दुःषहः । तुराषाट् । उद्—उत्साहः । राज्यधुरां प्रवोढुं कथं कनीयानह मुत्सहेय, भ ३, ५४ । क्षण मप्युत्सहते न मां विना, कु ४, ३६ । परिषहते । निषहते । विषहते । पर्य्यषहत, पर्य्यसहत, पा ८, ७, ७१ । परिसोढा । परिसोढुम् । परिसोढः, पा ८, ३, ११५ । षह्, षुह्, दि, प । हर्षः । हृष्यति । सुह्यति । सुषोह । असुहत् । सुहितम् । सौहित्यं तर्पणं हर्षे रित्यमरः ।

साट—अदन्तः । चु, प, वो ।

प्रकाशनम् ।

साध् (राध) षाध्, वो । दि, स्वा, प ।

संसिद्धिः । निष्पत्तिः । निष्पादनेति गोविन्दभट्टः । साध्यति । साध्नोति । ससाध । ससाधतुः । ससाधिथ । साद्धा । सात्स्यति । असात्सीत् । असाद्धाम् । असात्सुः । सिसात्सति, सिषात्सति, वो । सासाध्यते । सासाद्धि । साधयति । असीसधत् । (१सम्पादनम् । २वधः । ३प्राप्तिः । ४परीक्षा । ५गमनम्) प्रायेण षष्ठ्यन्तकः साधि गमिस्थाने प्रयुज्यते, दर्पणः । साद्धा । ॰साध्य । साद्धः । साधनम् । साद्धम् । णिच्, साधयित्वा । ॰साध्य । साधितः । साधना । साधयितुम् । प्र—प्रसाधनम् । अलङ्करणम् । कण्टकशोधनम् । वैरनिर्यातनम् । प्रसाधितोऽलङ्कृतश्च भूषितश्च इत्यमरः । मेदिनीं भोक्तु मेव भुजनिर्जितद्विषा न प्रसाधयितु मस्य कल्पिता, र १९, ३ ।

सान्त्व्—षान्त्व्, चु, प। सान्त्वना।

समाश्वासनम्। सान्त्वयति। त्रस्तान् सान्त्वयेः, भ १६, २४। चन्द्रकेतो बलानि सान्त्वय, उत्तर २०६। सान्त्व इत्येके।

साम—अदन्तः, हलन्तश्च, वो।

च्, प। सान्त्वना। प्रियकरणम्। समाश्वासनम्। सामयति।

साम्ब् (सम्ब्)।

सार—क्षप—अदन्तौ। चु, प।

दौर्बल्यम्। सारयति। क्षपयति।

सि—षिञ्, स्वा, क्रया, उ।

बन्धनम्। सिनोति। सिनाति। सिनुते। सिनीते। सिनुयात्। सिनीयात्। सिन्वीत। सिनीत। असिनोत्। असिनात्। असिनुत। असिनीत। सिषाय। सिषयिथ, सिषेथ। सिष्ये। सेता। सेष्यति। ०ते। असैषीत्। असेष्ट। सिसीषति। ०ते। सेषीयते। सेषयीति। सेषेति। सायय्यति। असीषयत्। सित्वा। ०सित्य। सितः। सिनो ग्रासः स्वयमेव, पा ८, २, ४४। सयनम्। सेतुम्। निषितः। विषितः। विसिनोति। परिषितः। निषयः। परिषयः, पा ८, ३, ७०।

सिच्—षिच्, तु, उ। क्षरणम्।

सेचनम्। सिञ्चति। ०ते, पा ७, १, ५६। सिषेच। सिषेचिथ। सिषिचे। सिषिच्वनि मम्ब्वाहाः, भा १८, १७। सेक्ता। सेक्ष्यति। ०ते। सिच्यात्। सिक्षीष्ट। असिचत्। असिचत, असिक्त, पा ३, १, ५३, ५४। असिचेताम्, असिक्षाताम्। असिचन्त, असिक्षत। कर्मणि, सिच्यते। असेचि। सिसिक्षति। ०ते। परिषिषिक्षति। ०ते, कौ २०५। सेसिच्यते, पा ८, ३, ११२। अभिसेसिच्यते। सेसेक्ति। सेचयति। असीषिचत्। सिक्ता। रेतः सिक्ता स्त्रीषु, मनु ११, १७०। ०सिच्य। सिक्तः। आवासे सिक्तसंसृष्टे, भ ५, ६०। सेचनम्। सेकः। सेक्तुम्। सेक्ता। सेक्तव्यम्। सेचनीयम्। अपि—क्षरणम्। अपिसिञ्चेः क्षयानीत्वं दर्पम्, भ ८, ६२। अभि—अभिषेचनम्। तर्पणम्। अभिषिञ्चति। अभ्यषिञ्चत्, पा ८, ३, ६३, ६५। स्नानाभ्यसिचताभ्रोऽसौ तथाभ्यषिक्त वारीणि पित्रभ्यः, भ ६, २३। इह जले मां मभ्यषिचत्, भ ६, २१। १५, ३। राज्येऽभिषेक्ष्ये सुतम्, भ ३, २। सैनापत्ये मा मभिषिञ्च, भारत। उद्—उत्सेकः। गर्वः। न तस्योत्सिषिचे मनः, र १७, ३। नि—निषेकः। क्षरणम्। गर्भाधानम्। सुतं निषिञ्चन्त मिवामृतं त्वचि, र ३, २६।

सिट्—षिट्, भ्वा, प। अनादरः।

सिध्—षिधु, षिध्, वो, स्वा, प।

गतिः। सेधति। सिषेध। सेधिता। सेधिष्यति। असेधीत्। (उ) सेधित्वा, सिद्ध्वा। सिद्धः। षिध्, सिधितः, वो। गङ्गां विसेधति। अभिसेधति गाः, पा ८, ३, ११३। परि—वेष्टनम्। द्विषो घ्नन् परिषेधतः, भ ६, ८८। प्रति—प्रतिषेधः। शिष्य मकार्य्यात् प्रतिषेधति। षिधू, भ्वा, प। १शास्त्रम्। अनुशासनम्। २माङ्गल्यम्। मङ्गलक्रिया। सेधति। सिषेध। सिषिधतुः। सिषेधिथ, सिषेद्ध। सिषिधिव, सिषिध्व।

सेद्धा, सेधिता। सेत्स्यति, सेधिष्यति। असैत्सीत्। असैद्धाम्। असैत्सुः। असेधीत्। असेधिष्टाम्। असेधिषुः। कर्मणि, सिध्यते। असेधि। सिषित्सति। सिसिधिषति, सिसेधिषति। सेधिध्यते। सेधेद्धि। सेधयति। असीषिधत्। अप—खण्डनम्। पाप मपसेधति, मनु, ११, १६८। आ—अवरोधः। उद्—उत्सेधः। उच्चीभावः। नि, प्रति—निषेधः। निवारणम्। भूतगणान् न्यषेधीत्, भ १, १५। शस्त्रं न्यषेधत् पावकास्त्रेण, भ १७, ८७। तेन न्यषेधि शेषोऽप्यनुयायिवर्गः, र २, ४। अनुष्ठानं कथं प्रतिषेधतु, उत्तर १८४। षिधु, दि, प। संराद्धिः। निष्पत्तिः। ऊदित्पाठः प्रामादिकः, की ११६। सिध्यति। यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः, हितो। सिषेध। सिषेधिथ। सेद्धा। सेत्स्यति। असिधत्। सिषित्सति। सेधिध्यते। सेधेद्धि। णिच्—साधयति अन्नम्, पा ६, १, ४६। पारलौकिके तु, सेधयति तापसं तपः। सेधित्वा, सिद्ध्वा। ०सिध्य। सिद्धः। सेधनम्। सेधः। सेद्धुम्। णिच्—साधयित्वा। ०साध्य। साधितः। साधनम्। साधयितुम्। साधकः। विसिध्यति, पा ८, ३, ६५।

सिन्व्—'सिवि,' भ्वा, प। सेचनम्।

सिभ्—सिम्भ्—षिभु, षिन्भु, भ्वा, प। हिंसा। सेभति। सिम्भति। सिषिम्भ।

सिल्—(श्रिल्)।

सिव्, षिवु, दि, प। तन्तुसन्तानः। सीवनम्। तन्तुभि र्ग्रन्थनम्, दुर्गा। सीव्यति। तदग्रहूच्या मनोभवः सीव्यति दुर्यशःपटौ, नै १, ८०। स्नेहात्मक स्नन्तुरन्तर्मर्माणि सीव्यति, उत्तर १८२। सिषेव। सिषिवतुः। सेविता। सेविष्यति। सीव्यात्। असेवीत्। असेविष्टाम्। कर्मणि, सीव्यते। असेवि। सिसेविषति। सुस्यूषति, पा ७, २, ४६। सेषीव्यते। सेवयति। असीषिवत्। न्यसीषिवत्, भा ८, ११६। (ङ) सेवित्वा, स्यूत्वा। स्यूतम्। सेवनम्। सीवनं स्यूति रित्यमरः।

सीक् (शीक्)।

सु—सु, श्वा, अदा, प। १प्रसवः।

अभ्यनुज्ञा। २ ऐश्वर्य्यम्। श्वादि र्गत्यर्थोऽपि। सवति। सौति। सुतः। सुवन्ति। सुषाव। सुषुवतुः। सुषविथ, सुषोथ। सोता। सोष्यति। असौषीत्। असौष्टाम्। असौषुः। षुञ्, श्वा, उ, वो। गतिः। षुञ्, स्वा, उ। १स्नानम्। २स्नपनम्। ३पीड़नम्। ४सुरासन्धानम्। ५योगः, वो। ६मन्थनम्। सवति। ०ते। सुनोति। सुनुते। सुन्वहे, सुनुवहे। सुषाव। सुषुवे। सोता। सोष्यति। ०ते। सूयात्। सोषीष्ट। असावीत्। असाविष्टाम्। असाविषुः, पा ७, २, ७२। असोष्ट। असोषाताम्। असोषत। सुसूषति। ०ते। सोषूयते। सोषवीति। सोषोति। सावयति। असूषवत्। सुत्वा। ०सुत्य। सुतः। सवनम्। सुत्वा। सुत्वानौ। सोमसुत्। राजसूयः। अभि—स्नानम्। त्रीन् वारानभिषुन्वते, अनर्घ ३७। ०सुणोति। ०असुणोत्। ०सुषाव। ०सोष्यति। ०असोष्यत्। सुसूषति। ०सुसूः, पा ८, ३, ११७। सुतः। उत्सवः।

सुख—अदन्तः । चु, प । सुखकरणम् ।

सुखयति । एतावदवस्थापि मां सुखयति, शकु ३, ६° ।

सुट्—षुट् (अट्ट) चु, प । १अनादरः ।

२तीच्छ्यम् । अल्पीभावः । सुट्टयति ।

सुभ्, सुम्भ् (शुभ्) ।

सुर्—षुर्, तु, प । १ऐश्वर्य्यम् ।

२दीप्तिः । सुरति । सुषोर । सोरिता ।

सुह् (सह्) ।

सू—षूङ्, अदा, दि, आ । प्रसवः ।

प्राणिप्रसवः । जननम् । उत्पादनम् । लट् सूते । सुवाते । सुवते । सूयते । विरहलता पल्लवं सूते । लोट् सुवै । सुवावहै । सुवामहै, पा ७, ३, ८८ । लुङ् असूत । असुवाताम् । असुवत । असूत सद्यः कुसुमान्यशोकः, कु ३६, २० । असूत सा मैनाकम्, कु १, २० । लिट् सुषुवे । सुषुविषे । सुषुविवहे, कौ १, ३४ । लुट् सोता, सविता, पा ७, २, ४४ । लृट् सोष्यते, सविष्यते । आशिषि, सोषीष्ट, सविषीष्ट । लुङ् असोष्ट, असविष्ट । कर्मणि, सूयते । असावि । कौशल्यया ऽसावि सुखेन रामः, भ १, १४ । सन् सुसूषते, सोषूयते । सोषवीति । सोषोति । णिच् सावयति । असूषवत् । सुषावयिषति । सूत्वा । ०सूय । सूतः । दि, सूनः । सूतिः । ०षूतिः, पा ८, ३, ८८ । सवनम् । सवः । सोतुम्, सवितुम् । प्र—प्रसवः । प्रासोष्ट शत्रुघ्नम्, भ १, १४ । क्विप् प्रसूः । षू, तु, प । प्रेरणम् । सुवति । सुषाव । सुषुवतुः । सुषविथ । सविता । सविष्यति । असावीत् । असाविष्टाम् । अभिषुवति । परिषुवति, पा ८, ३, ६५ । सविता । सूतः ।

सूच—अदन्तः । चु, प । पैशुन्यम् ।

व्यक्तीकरणम् । सूचनम् । सूचयति । असुसूचत् । यङ् सोसूच्यते, कौ २०६ । मन्त्रो गुप्तद्वारो न सूच्यते, र १७, ५० ।

सूत्र—अदन्तः । चु, प । १वेष्टनम् ।

२विमोचनम् । ३ग्रन्थनम् । सूत्रयति । असुसूत्रत् । यङ् सोसूत्रयते, कौ २०६ ।

सूद्—षूद्, भ्वा, आ । १क्षरणम् ।

२निरासः, वो । निःक्षेपः । सूदते । न सूदते मति र्यस्य यः सूदयति शात्रवान्, कवि २५६ । सुषूदे । सूदिता । असूदिष्ट । सुसूदिषते । सोषूद्यते । सोषूत्ति । षूद्, चु, प । १क्षरणम् । २हननम् । ३ निरासः । ४सञ्चरणम् । ५क्लेदनम् । सूदयति । असूषुदत् । नि—निसूदनम् । हिंसनम् ।

सूर् (शूर्) ।

सूर्च्—षूर्च्, भ्वा, प । आदरः ।

अनादरः, वो । सूर्च्चति । सुषूर्च्च । सुसूर्च्च, वो । सूर्च्चिता । असूर्चीत् । अवहेल मसूर्च्चण मित्यमरः ।

सूर्ष्य—(ईर्ष्य) भ्वा, प । ईर्ष्या ।

सूर्ष्यति । सुसूर्ष्य । सुषूर्ष्य, वो ।

सूष्—षूष् (शूष्) भ्वा, प ।

प्रसवः । सूषति । सुसूष । सुषूस ।

सृ—भ्वा, प । गतिः ।

सरति (वेगे धावति), पा ७, २, ७८ । ससार । ससृतुः । ससर्थ । ससृव । सर्त्ता । सरिष्यति, पा ७, २, ७० ।

स्रियात्। असार्षीत्। असार्ष्टाम्। असार्षुः। असरत्, वो, पा ३, १, ५६। इह लुप्तशपा शासिना साहचर्य्यात् सर्ज्जतौ जौहोत्यादिकावेव गृह्येते, तेन भ्वाद्यो नाऽङ्, कौ ८७। पद्मनाभमते भ्वादे रेवाङ् ऋसृग्शास्वितिसूत्रनिर्देशात्। सिसृर्षति। सेस्रीयते। सर्सर्त्ति। सारयति। असीसरत्। सृ, चु, प। १आस्तरणम्। २गतिः, वो। सारयति। सृत्वा। ०सृत्य। सृतः। सृतिः। सरणम्। सरः। सारः। सर्त्तुम्। सर्त्तव्यम्। अनु—अनुसरणम्। अनुगमनम्। अप—अपसरणम्। पलायनम्। दूर मपसर न चेद्वन्तव्योऽसि मया, हितो। अभि—णिच्, अभिसारणम्। कान्तार्थिन्याः सङ्केतयानम्। एषा भवन्त मभिसारयितु मागता, मृच्छ २३०। उद्—णिच्, उत्सारणम्। दूरीकरणम्। उप—समीपगमनम्। निर्—निःसरणम्। निष्क्रमणम्। प्र, वि—व्याप्तिः। विसृत्वरो विसृमर इत्यमरः। सम्—संसरणम्। देहधारणम्। भूतानि संसारयति चक्रवत्, मनु १२, १२४।

सृज्—तु, प, दि, आ। १विसर्गः।

त्यागः। २निर्म्माणम्। करणम्। सृष्टिः। व्युदभ्यां परस्त्यागार्थः। अन्यत्र तु करोत्यर्थः। सृजति। सृज्यते। भूतानि कालः सृजति, भारत। उपासना मित्यपितुः स्म सृज्यते, नै १, ३४। संपूर्वोऽयं मकर्मकः। सङ्गमार्थः। संसृज्यते सरसिजै रुणांशुभिन्नै र्निशापरिणामवायुः, र ५, ६८। कौ १३७। धनुषा बाण मसृजत्, र ११, ४४। ससर्ज। सस्रजतुः। ससर्जिथ, सस्रष्ठ, पा ७,२,६८। सस्रजे। सस्रजिषे। ससर्ज गिर मात्मभूः, कु २, ५३। स्रष्टा, पा ७, ४, १६। स्रक्ष्यति। ०ते। सृज्यात्। सस्रौष्ट। असाक्षीत्, पा १, २, ११ असाष्टाम्। असाक्षुः। असृष्ट। असृक्षाताम्। असृक्षत। असाक्षु रसम्, भ ३, १७। असृष्ट योऽस्मान्, भ ३, १३। कर्म्मणि, सृज्यते। असर्जि। सिसृक्षति। ०ते। सरीसृज्यते। सर्सृष्टि। सर्जयति। असीसृजत्, असस्रर्जत्। सृष्ट्वा। ०सृज्य। सृष्टः। सृष्टिः। सर्जनम्। सर्गः। स्रष्टुम्। स्रष्टा। स्रष्टव्यम्। सर्जनीयम्। विश्वस्रक्। अति—अतिसर्जनम्। दानम्। अव—निक्षेपः। अर्पणम्। उद्—उत्सर्गः। नि—परित्यागः। न स्वामिना निसृष्टोऽपि शूद्रो दास्याद्विमुच्यते, मनु ८, ४१४। वि—विसर्जनम्। दानम्। त्यागः। मोचनम्। प्रेषणम्। विसर्जयेद् यं सुतजन्महर्षितः, र ३, २०। लोकान् व्यसर्जयत्, भ २, ४३। विसृज शूद्रमुनौ कृपाणम्, उत्तर २, १०। सम्—संसर्गः। सङ्गतिः।

सृप्—सृप्ल्, भ्वा, प। गतिः।

सर्पति। ससर्प। सस्रपतुः। ससर्पिथ। सर्प्ता, सर्प्सा, पा ६,१,५८। असस्रप्तां, सस्रप्सति। असृपत्, असार्षीत्। असाप्सीत्, वो। असृपताम्, असार्ष्टाम्, असाप्साम्। सिसृप्सति। सरीसृप्यते। सरीसर्प्ति। सर्पयति। असीसृपत्, असस्रर्पत्। सृप्त्वा। ०सृप्य। सृप्तः। सर्पणम्। सर्पः। सर्प्तुम्। स्रप्तुम्। सर्पिः। अनु—अनुगमनम्। अप—अपसरणम्। तरुगहनेनापसर्पति, उत्तर २६८। उद्—विस्तारः। उल्लङ्घनम्। उप—समीपे गमनम्। प्र, वि—अभिगमनम्। वृद्धिः। कर्म प्रसर्पत्, भ २, २८। सम्—सञ्चारः।

स्रभ्—स्रम्भ्—स्रिभ्—स्रिम्भ्—

स्रृभु, स्रृन्भु, स्रिभु, स्रिन्भु, भ्वा, प। हिंसा। सर्भति। स्रृम्भति। स्रेभति। स्रिम्भति।

सॄ (स्रॄ)।

सेक्—स्रेक्—श्रेक्—स्रेक्—

सेक्ष, श्रेक्ष, भ्वा, आ। गतिः। सेकते। अषोपदेशत्वा न्न सः। सिसेके। कौ ४३।

सेल् (स्रेल्)।

सेव्—स्रेव्—स्रेढ्, स्रेढ् (गेढ्)

भ्वा, आ। ङ, वो। सेवा। आराधना। भक्तिः। उपगोगः। आश्रयः। सेवते। स्रेवते। सेवति। ०ते, वो। नीचं सम्श्रइ मपि सेवति नीच एव। स्वाधीने विभवे ऽप्यहो नरपतिं सेवन्ति किं मानिनः, दुर्गा। सिषेवे। सिषेविषे। तं पवनः सिषेवे, र २, १३। तं यान्तं क्रव्यादः सिषेविरे, भ १४, ९७। सेविता। सेविष्यते। सेविषीष्ट। असेविष्ट। असेविषाताम्। असेविषत। कर्मणि, सेव्यते। असेवि। सिसेविषते। सेषेव्यते। सेवयति। असिषेवत्। अयं दन्त्यादिश्च। असिसेवत्, वो। सेवित्वा। ०सेव्य। सेवितः। सेवनम्। सेवा। सेवितुम्। सेविता। सेवकः। सेवितव्यः। सेव्यः। सेव्या नितम्बाः किमु भूधराणा मुत स्मरस्मेरविलासिनीनाम्, काव्यप्रकाशः। आ—उपभोगः। यद्दायुः किराते रासेव्यते, कु १, १५। नि—सेवा। आश्रयः। उपभोगः। पतित एव निषेव्य हि वारुणीम्, नै ४, ७०। निषेवते। विषेवते। परिषेवते। व्यषेवत। व्यषेवत। परिषिषेवे, पा ८, ३, ६३, ७०।

सै—षै—(च्यै) भ्वा, प। क्षयः। सायति। ससौ। साता। सायात्। असासीत्। सिषासति। सिसासति, वो।

सो—षो, दि, प। अन्तकर्म।

विनाशनम्। स्यति, पा ७, ३, ७१। अभिष्यति, पा ८, ३, ६५। ससौ। अभिससौ। साता। सास्यति। सेयात्, पा ६, ४, ६७। असात्। असासीत्, पा २, ४, ७८। असाताम्। असासिष्टाम्। कर्मणि, सीयते। असायि। सिषासति। सेषीयते, ६, ४, ६६। सासिति। सायय्यति, पा ७, ३, ३७। सित्वा। ०साय। सितः। सितिः। सातम्। सायः। अव—अवसानम्। समाप्तिः। अवसेयाः कार्य्याणि धर्मेण पुरवासिनाम्, भ १९, २८। वचस्यवसिते, कु २, ५३। अध्यव—अध्यवसायः। उत्साहः। पर्य्यव—पर्य्यवसानम्। परिणामः। लोकान्तरं पर्य्यवसितासि, उत्तर १७२। प्रत्यव—प्रत्यवसानम्। भोजनम्। व्यव—व्यवसायः। उद्यमः। चेष्टा। पातुं व्यवस्यति। अनुव्यव—अनुव्यवसायः। बुद्ध्यर्थस्य पुनर्बोधः।

स्कन्द्—स्कन्दिर्, भ्वा, प। १गतिः। २शोषणम्। स्कन्दति। चस्कन्द। चस्कन्दतुः। चस्कन्दिथ, चस्कन्थ। स्कन्ता। स्कन्त्स्यति। अस्कन्त्स्यत्। आशिषि, स्कद्यात्। (इर्) अस्कदत्, अस्कान्त्सीत्। अस्कदताम्, अस्कान्ताम्। अस्कदन्, अस्कान्त्सुः। कर्मणि, स्कद्यते। अस्कन्दि। चिस्कन्त्सति। चनीस्कद्यते, पा ७, ४, ८४।

चनौस्कन्ति। स्कन्दयति। न रेतः स्कन्दयेत् क्वचित्, मनु २, १८०। अचस्कन्दत्। स्कन्त्वा, पा ६, ४, ३१। शम्भो मूर्ध्नि स्कन्त्वा भुवं गता गङ्गा, भ २२,११०। °स्कन्द्य। स्कन्नः। स्कन्तिः। स्कन्दनम्। स्कन्दः। स्कन्तुम्। स्कन्तव्यः। अव—अवरोधः। आक्रमणम्। पुरी मवस्कन्द, मा १, ५१। दहति यदवस्कन्द्य हृदयम्, उत्तर १४७। त्व मप्यपरः प्रभविष्णु रिव मा मवस्कन्दयसि, वीर ४३। आ—अश्वगतिविशेषः। अभिगमनम्। पीड़नम्। सर्वानास्कन्दन् रिपून्, भ १७, ११। आस्कन्दन् लक्ष्मणं बाणैः, भ १७,८२। परि—परिभ्रमणम्। परिस्कन्दति, परिष्कन्दति, पा ८,३,७४। परिस्कन्नः, परिष्कण्णः। परिष्कन्न इति केचित्। मेघनादः परिस्कन्दन् परिस्कन्दन्तमरिम्, भ ९,७५। प्र—पतनम्। रथात् प्रस्कन्द्य। तस्य रेतः प्रचस्कन्द, भारत। वि—परिभ्रमणम्। विस्कन्नः। विष्कन्तुम्, विस्कन्तुम्, पा ८, ३, ७३। विष्कन्तॄन् परिघेणाहन् कपिद्विषः, भ ९, ७४। स्कन्द् (स्कुन्द्)। स्कन्द—स्कन्भ—अदन्तौ। चु, प, वो। समाहृतिः। स्कन्दयति। स्कन्भयति।

स्कभ्—स्कभि, भ्वा, आ। प्रतिबन्धः।

स्तम्भः। दृढीकरणम्। स्कन्भु, सौत्रधातुः। क्रया, प। १रोधनम्। २स्तम्भः। स्कभ्नते। स्कभ्नाति। स्कम्भ्नोति, पा ३, १, ८२। चस्कम्भ। °म्भे। स्कम्भिता। अस्कम्भीत्। अस्कम्भिष्ट। वि—प्रतिबन्धः। विष्कभ्नाति। विष्कम्भ्नोति। विस्कभ्नते, पा ८, ३, ७७। गृहीतो विस्कम्भितुं समर्थोऽपि नाचलद् ब्रह्मगौरवात्, भ ९, ७७। विष्कभ्नते प्रजारिष्टं विष्कम्भ्नाति परोदयम्। विस्कम्भ्नोति परोदृयोगं तपःशौर्य्यबलेन यः॥ कवि ८१।

स्कु—स्कुञ्, क्रया, उ। १आप्लवनम्।

२आवरणम्। ३उद्गारः। स्कुनाति। स्कुनोति, पा ३, १, ८२। स्कुनीते। स्कुनुते। राम मस्कुनादिषुवृष्टिभिः, भ १७, ८२। चुस्कावं। चुस्कुवे। स्कोता। अस्कौषीत्। अस्कोष्ट। चुस्कूषति। °ते। चोस्कूयते। चोस्कोति। स्कावयति। अचुस्कवत्। स्कुनाति च स्कुनीते च स्कुनोत्याप्लवतेऽपि च। स्कन्दते स्कुन्दते चापि षड़ाप्लवनवाचिनः॥ इति भट्टमल्लः। प्रत्यस्कुनोद्दशग्रीवम्, भ १७, ८३।

स्कुन्द्—स्कन्द्—स्कुदि, स्कदि, वो।

भ्वा, आ। आप्रवणम्। उत्प्लुत्य गमनम्। २उद्गारः। स्कुन्दते। स्कन्दते। चुस्कुन्दे। स्कुन्दिता।

स्कुभ्—स्कुनभ्, सौत्रधातुः।

क्रया, प। १रोधनम्। २धारणम्, कौ १६४। स्कुभ्नाति, स्कुभ्नोति, पा ३, १, ८२। चुस्कुभ। स्कुभिता। स्कुभ्यात्। अस्कुभीत्।

स्खद्—भ्वा, आ। १खदनम्।

विद्रावणम्। २स्थैर्य्यमिति रामः। ३पाटलमिति गोविन्दः। ४क्लेशोत्पादनमिति गोयीचन्द्रः। ५ हिंसेति रमानाथः। स्खदते। चस्खदे। स्खदिता। स्खदयति, घटादिः। अवपरिभ्यान्तु, अवस्खादयति, परिस्खादयति। न्यासकारमते, अवस्खादयति, कौ ८६। अन्यत्र, प्रस्खदयति। कातन्त्र-

मते, अवपरिभ्यामेव घटादित्वम्। अवस्खदयति, परिस्खदयति।

स्खल्—भ्वा, प। १सञ्चलनम्।

२स्खलनम्। ३सञ्चयः, वो। स्खलति। दृढः प्रेमा भग्नः ऋजसि रिव सन्धिं न लभते लभेतापि प्रायः स्खलति खलु यत्नै रपि धृतः, दुर्गा। यात्यकस्मात् स्खलन्तो, महाना ३, १६। चस्खाल। चस्खलतुः। विवाद श्चस्खाल वेलास्वपि नार्णवानाम्, र १८, ४३। रथाः प्रचस्खलुः साश्वाः, भ १४, ९८। स्खलिष्यति। अस्खालीत्। चिस्खलिषति। चास्खल्यते। चास्खलति। स्खलयति। स्खालयति। स्खलित्वा। स्खलितः।

स्खुड् (थुड्)।

स्तक्—ष्टक्, भ्वा, प। प्रतिघातः।

स्तकति। तस्ताक। स्तकिता। स्तकयति, घटादिः। अतिष्टकत्। अतिस्तकत्, वो।

स्तग् (स्थग्)।

स्तन्—ष्टन्, भ्वा, प। शब्दः।

स्तनति। तस्तान। तस्तनुः चतुः, भ १४, ३०। स्तनिता। अस्तनीत्, अस्तानीत्। तिस्तनिषति। तंस्तन्यते। तंस्तन्ति। स्तनयति, स्तानयति। अतिष्टनत्। अतिस्तनत्, वो। स्तन—अदन्तः। चु, प। मेघशब्दः। स्तनयति। अतस्तनत्। स्तनयित्नु, र्बलाहक इत्यमरः। अभिनिःस्तनति मृदङ्गः, पा ८, ३, ८६। अभिष्टानः। वि—शब्दः। जग्लौ दध्यौ वितस्तान, भ १४, ६०।

स्तम्—ष्टम् (षम्) भ्वा, प।

१अवैकल्यम्। २वैक्लव्यम्, वो। विच्छलीभावः। स्तमति। नच स्तमति शोकेन, कवि २४५। तस्ताम। स्तमिता। अस्तमीत्। ष्टम—अदन्तः। चु, प, वो। वैक्लव्यम्। स्तमयति। अतस्तमत्।

स्तभ्—ष्टभि (स्कभि) भ्वा, आ,

स्तभः। जड़ीभावः। जड़ीकरणम्। प्रतिबन्धः। क्रियानिरोध इति भीमः। दोषवृद्धि रिति गोविन्दभट्टः। स्तब्धीकरणम्, दुर्गा। स्तभ्नते। धनेन स्तभ्नते सर्वः स्तभ्नात्यन्यच्च विद्यया। धनविद्यामदेनोऽपि न स्तभ्नोति स सज्जनः॥ कवि ८२। तस्तभे। गाचं तस्तभे (काष्ठवन्निश्चल मभूत्), भ १३, ५५। स्तम्भिता। अस्तम्भिष्ट। क्त, स्तम्भितः। स्तन्भु (सौत्रधातुः) क्रया, प। उ, वो। १रोधनम्। आवरणम्। २निष्कोषणम्। स्तभ्नाति। स्तभ्नोति, पा ३, १, ८२। स्तभ्नीते। स्तभ्नुते। हि, स्तभान, स्तब्धुहि। सोऽस्तभ्नात्तत् सुदुर्जयम्, भ १७, ४५। तस्तम्भ। तस्तम्भे। स्तम्भिता। अस्तभ्नीत्। अस्तभत्, पा ३, १, ५८। अस्तम्भिष्ट। तेषां सामर्थ्यं सोऽस्तभ्नीत् विक्रम मस्य नास्तभन्, भ १५, ३१। तिस्तम्भिषति। ॰ते। यङ् तास्तभ्यते। तास्तभ्नीति। स्तम्भयति। अतस्तम्भत्। (उ) स्तम्भित्वा, स्तब्ध्वा। ॰स्तभ्य। स्तब्धः। स्तब्धिः। स्तम्भनम्। स्तम्भः। स्तम्भितुम्। स्तम्भी। स्तम्भिता। स्तम्भितव्यम्। स्तम्भनीयम्। स्तब्धा भयात्, भ १५, ३१। अव-आलम्बनम्। समीप्यम्। अवष्टभ्नाति। अवष्टभ्नोति। अवतष्टम्भ। अवातस्तम्भत्। पर्य्यतस्तम्भत्, पा ८, ३, ११६। धनु रवष्टभ्य, उत्तर ७५। यष्टि मवष्टभ्यास्ते, पा ८, २, ६८। अवष्टब्धा गौः (निरुद्धा समीपे आस्ते)। अभि—अभिभवः अभ्यष्टभ्नात्। अभि-

तष्टम्भ। उद्—उत्तम्भिता। उत्तम्भितुम्, पा ८, ४, ६१। उप—उपष्टम्भः। उपक्रमः। परि—निरोधः। परिष्टभ्नाति। पर्य्यंतस्तम्भत्, पा ८, ३, ६७, ११६। नि, प्रति—अभिभवः। प्रतिबन्धः। निस्तब्धः। प्रतिस्तब्धः, पा ८, ३, ११४। बाहुप्रतिष्टम्भविह्वलमन्युः, र २, ३२। अप्रतिस्तब्धविक्रान्त मनिस्तब्धो महाहवे, भ ६, ८८। वि—निवारणम्। अवलम्बनम्। आक्रमणम्। विष्टभ्नाति। विष्टभ्नोति। व्यष्टभत्, व्यष्टम्भीत्। तं व्यष्टभ्नात्, भ ६, ७२। विसोढवन्त मस्त्राणि व्यतस्तम्भत्, भ ६, ८१। सम्—संस्तम्भनम्। निरोधः। संस्तभ्यात्मान मात्मना, गी ३, ४६।

स्तिघ्—ष्टिघ्, स्ना, आ।

आस्कन्दनम्।

स्तिप्—स्तेप्—ष्टिप्, ष्टेप् (तिप्)

भ्वा, आ। क्षरणम्। स्तेप्, चु, प। क्षेपः।

स्तिम्—स्तीम्—ष्टिम्, ष्टीम् (तिम्)

दि, प। आर्द्रीभावः। स्तिम्यति। स्तीम्यति। तिष्टेम। स्तेमिता। क्त, स्तिमितः। किञ्चित्प्रकाशस्तिमितोग्रतारै र्नेत्रैः, कु ३, ४७। स्तिमितो निश्चलार्द्रयो रिति मेदिनी।

स्तु—ष्टुञ्, अदा, उ। स्तुतिः।

प्रशंसा। लट् स्तौति। अभिष्टौति। स्तुतः। स्तुवीतः। स्तुते। स्तुवीते। लिङ् स्तुयात्। स्तुवीत। लङ् अस्तौत्। अस्तवीत्। अभ्यष्टौत्। पर्य्यष्टौत्। पर्य्यस्तौत्। अस्तुत। अस्तुवीत्। स्तौषि यच्चैव नः सदा, भ ५, १५। लिट् तुष्टाव। तुष्टोथ। तुष्टुव, पा ७, २, १३। तुष्टुवे। लुट् स्तोता। स्तविता, वो। स्तोष्यति। ०ते। आशिषि, स्तूयात्। स्तोषीष्ट। लुङ् अस्तावीत्। अस्ताविष्टाम्, पा ७, २, ७२। अस्तोष्ट। अस्तोषाताम्। अस्ताविषुः सुरा रामम्, भ १५, ७०। कर्मणि, स्तूयते। अस्तावि। सन् तुष्टूषति। ०ते, पा ८, ३, ६१। तोष्टूयते। तोष्टोति। णिच् स्तावयति। स्तुत्वा। ०स्तुत्य। स्तुतः। स्तुतिः। स्तवनम्। स्तवः। स्तोत्रम्। स्तुत्यम्। प्रस्तावः। संस्तावः स्कन्दोगानाम्। परि—श्रेयः। परिस्तौति (चरति), भा ३, ७। प्र—प्रारम्भः। प्रस्तावः। प्रतुष्टुवुः कर्म ततः, भ २, २८। प्रास्तावौद्रामसंकथाम्, भ ८, १०३। प्रस्तूयतां भोः, उत्तर ६। सम्—संस्तवः। परिचयः। असंस्तुतेषु भयेषु जायेत सत्यो रपि पक्षपातः, भा ३, २१।

स्तुच्—ष्टुच्, भ्वा, आ। प्रसादः।

ष्णुच् इत्येके। अयं सेचनार्थः, वो।

स्तुभ्—ष्टुभ्, ष्टुभु, वो। भ्वा, आ।

स्तब्धः। जडीभावः। जडीकरणम्। क्रियानिरोध इति भौमः। दोषद्वयं स्तुभ्नाति रिति गोविन्दभट्टः। स्तोभते। तुष्टुभे। स्तोभिता। विष्टोभते।

स्तृभ्—स्तृन्भु (सौत्रधातुः)। क्रया, प।

उ, वो। १आवरणम्। रोधनम्। २निष्क्षोषणम्। स्तृभ्नाति। स्तृभ्नोति, पा ३, १, ८२। स्तृभ्नीते। स्तृभ्नुते।

स्तूप्—ष्टूपिर्, स्तूपिर्, दि, प, वो।

स्तूप्यति। तुष्टूप। स्तूपिता। अस्तूपीत्, अस्तूपत्। स्तूप्, तुस्तूप। अतुस्तूपत्।

स्तृ—स्तृञ्, स्ना, उ। आच्छादनम्।

स्तृ, स्ना, प, वो। १प्रीतिः। २रक्षा। ३प्राणनम्। स्तृणोति। स्तृणुते। स्तृणुयात्। स्तृणुवीत। अस्तृणोत्। अस्तृणुत। तस्तार। तस्तरिथ, तस्तर्थ। तस्तरे। शिरोभि मंहीं तस्तार, र ४, ६३। स्तर्त्ता। स्तरिष्यति। ०ते। स्तर्य्यात्। स्तरिषीष्ट, स्तृषीष्ट। अस्तार्षीत्। अस्ताष्टाम्। अस्तार्षुः। अस्तरिष्ट, अस्तृत, पा ७, २, ४३। कर्मणि, स्तर्य्यते। अस्तारि। तिस्तीर्षति। ०ते। तास्तर्य्यते। तास्तर्त्ति। स्तारयति। अतस्तरत्। अतिस्तरत्। भूमि मतस्तरद्व्रतैः, भ १५, ४८। स्तृत्वा। ०स्तृत्य। स्तृतः। स्तृतिः। स्तरणम्। स्तरः। आ, परि—आस्तरणम्। परितस्तरः, भ १४, ११। वि—विस्तारः। शब्दसमूहे तु विस्तरः। आसने विष्टरः।

स्तृच् (तृच्) भ्वा, प। गतिः।

स्तृह्—स्तृह (तृह) तु, प। बधः।

स्तृहति। तस्तर्ह। तस्तृहतुः। तस्तर्हिथः, तस्तर्ढ। स्तर्हिता, स्तर्ढा। स्तर्हिष्यति, स्तर्ष्यति। अस्तर्हीत्, अस्तृक्षत्। स्तृह तृह, वो। स्तृहति। अस्तृहीत्, अस्तृक्षत्।

स्तृ—स्तृञ्, क्रया, उ। आच्छादनम्।

स्तृणाति। स्तृणीते। स्तृणीयात्। स्तृणीत। अस्तृणात्। अस्तृणीत। तस्तार। तस्तरे। स्तरिता, स्तरीता। स्तरिष्यति, स्तरीष्यति। स्तीर्य्यात्। स्तरिषीष्ट, स्तीर्षीष्ट, पा ७, २, ३९। अस्तारीत्। अस्तारिष्टाम्। अस्तारिषुः। अस्तरिष्ट, अस्तरीष्ट, अस्तीर्ष्ट, कौ १६५। तिस्तरिषति। ०ते। तिस्तरीषति। ०ते। तिस्तीर्षति। ०ते। तेस्तीर्य्यते। तास्तर्त्ति। स्तारयति। अतस्तरत्, पा ७, ४, ९५। स्तीर्त्वा। ०स्तीर्य्य। स्तीर्णः। स्तीर्णिः। स्तरणम्।

स्तृह् (स्तृह) स्तेप् (स्तिप्)।

स्तेन—अदन्तः। चु, प। चौर्य्यम्।

स्तै—ष्टै, भ्वा, प। १वेष्टनम्। २शोभा। स्तायति।

स्त्यै—ष्ट्यै, भ्वा, प। १शब्दः।

२सङ्घातः। ३शब्दसङ्घातः। स्त्यायति। यत्कीर्त्तिः स्त्यायति क्षितौ, कवि ४०। क्त, स्त्यानः। प्रस्तीतः। प्रस्तीमः, पा ८, २, ५४। संस्त्यानः। स्त्री।

स्तोम—अदन्तः। चु, प। श्लाघा।

स्थग्—ष्ठगे, स्थगे, वो। (षगे) भ्वा, प। संवरणम्। गोपनम्। स्थगति। तस्थाग। स्थगिता। (ए) अस्थगीत्। णिच् स्थगयति, घटादिः। स्थगयन्ति जलदाः, मा ४, २४। (स्थग आच्छादने इति चौरादिकः) मल्लीनाथः। स्थगयति मोहः, उत्तर ११७। स्थगिता रजोभि र्दिशः, भ १२, ६९।

स्थल्—भ्वा, प। स्थितिः। स्थलति।

स्था—ष्ठा, भ्वा, प। अर्थविशेषे आ। स्थितिः। गतिनिवृत्तिः। अवस्थानम्। विद्यमानता। तिष्ठति। ०ते, पा ७, ३, ७८। चलत्येकेन पादेन तिष्ठत्येकेन बुद्धिमान्, क्षितौ। सा देवता नररूपेण तिष्ठति, मनु ७, ८। क स्थिते-

दग्रे तयोः, चण्डी । तस्थौ । परितष्ठौ। तस्थिथ, तस्थाथ । तस्थिव । तस्थे । तस्थौ सिसंग्रामयिषुः, भ ३, ४७। स्थाता । स्थास्यति । ०ते । स्थेयात्, पा ६, ४, ६७ । स्थासीष्ट । स्थेयाः पितेव धुरि पुत्रिणाम्, र १, ८२ । अस्थात्, पा २, ४, ४७। अस्थाताम् । अस्थुः । अस्थित । अस्थिषाताम् । अस्थिषत, पा १, २, १७ । भावकर्मणोः, स्थीयते, पा ६, ४, ६६ । स्थायिता । स्थायिष्यते । स्थायिषीष्ट । अस्थायि । अस्थायिषाताम् । तिष्ठासति । ०ते, पा ७, ४, ६१ । तेष्ठीयते, पा ६, ४, ६६ । तास्थाति । तास्थेति । स्थापयति । अतिष्ठिपत्, पा ७, ४, ५ । स्थित्वा । ०स्थाय । स्थितः । स्थितिः । स्थानम् । स्थायः । स्थातुम् । स्थायी । स्थाता । ०स्थः । स्थातव्यम् । स्थानीयम् । स्थेयम् । स्थास्नुः । तस्थिवान् । स्थावरः । स्थायुकम् । (आश्रयप्रकाशने) गोपी कृष्णाय तिष्ठते, पा १, ३, २३ । (सन्देहनिर्णयार्थं माश्रयणे) संशय्य कर्णादिषु तिष्ठते यः (सन्दिग्धार्थे कर्णादीन् निर्णेतृत्वेनाश्रयति), भा ३, १४। अधि—अधिष्ठानम् । प्राप्तिः । आरोहणम् । ग्राम मधितिष्ठति, पा १, ४, ४६ । जनो निकायं तेऽधितिष्ठति, भ ६, १६ । माधिष्ठा निर्जनं वनम्, भ ८, ७८ । शाखिनः केचिदध्यष्ठुः, १५, ३१ । रथोऽध्यष्ठीयत रामेण, भ १७, ८८ । अनु—अनुष्ठानम् । करणम् । यस्य शैलाधिपत्यं प्रजापतिः स्वयं मन्वतिष्ठत्, कु १, १७ । अव—अवस्थितिः । अवतिष्ठते, पा, १, ३, २२ । क्षणमवतिष्ठस्व, भ ८, ११ । न शासने ऽवास्थित यो गुरूणाम्, भ ३, १४ । व्यव—व्यवस्था । इति धर्मो व्यवस्थितः, मनु १०, ६८ । हृदि व्यवस्थाप्य समाधिवश्यं मनः, कु ३, ५० । आ—(प्रतिज्ञायाम्) शश्वं नित्य मातिष्ठते, कौ १४३ । आश्रयः करणम् अवलम्बनम् । संयमे यत्न मातिष्ठेत्, मनु २, ८८ । समाधि माश्राय, कु ५, २ । उद्—उत्थानम् । उत्पत्तिः । यत्नः । उद्योगः । मुक्तावुत्तिष्ठते, पा १, ३, २४ । पीठादुत्तिष्ठति । ग्रामाच्छत मुत्तिष्ठति । उत्तिष्ठमानं मित्रार्थे, भ ८, १२ । उदस्थादासनात्, भ १५, ७ । उत्थानम् । उत्थितः, पा ८, ४, ६१ । प्रत्युत्थानम् । एनं प्रत्युत्थायाभिवादयेत्, मनु २, १८ । उप—उपस्थितिः । भोजनकाले उपतिष्ठते, पा १, ३, २६ । (मन्त्रकरणकपूजनम्) ऐन्द्रा गार्हपत्य मुपतिष्ठते, पा १, ३, २५ । (परिचर्या) पति मुपतिष्ठति यौवनेन । विनयादुपास्थुः, भ ३, ४३ । (देवपूजा) आदित्य मुपतिष्ठते, कौ १४४ । न त्र्यम्बकादन्य मुपास्थितासौ, भ १, ३। (सङ्गमः) गङ्गा यमुना मुपतिष्ठते। (मित्रकरणम्) रथिको रथिकानुपतिष्ठते । (वर्त्म गतिः) अयं पन्थाः काशी मुपतिष्ठते । (लिप्सयोपगमनम्) भिक्षुकः प्रभु मुपतिष्ठति । ०ते, कौ २२४ । प्र—प्रस्थानम् । प्रतिष्ठते, पा १, ३, २२ । प्रास्थिषतादीन्द्रम्, भ ७, १०२ । आम्नाय मतस्थे, भ २, २४ । प्रति—प्रतिष्ठा । संस्थापनम् । अश्मापि याति देवत्वं महद्भिः सुप्रतिष्ठितम्, हितो। वि—अवस्थानम् । वितिष्ठते, पा १, ३, २२ । सम्—संस्थितिः । अवस्थानम् । सन्तिष्ठते, पा १, ३, २२ । न तस्य वाक्ये सन्तिष्ठते जनः, सृच्छ २९ ।

ष्ठुड् (थुड्) ।

स्थूल—अदन्तः । चु, आ । प, वो ।

परिस्थूलनम् । हृद्भिः । स्थूलयति ।

स्नस्—णसु, दि, प । निरस्नसनम् ।

स्ना—णा, अदा, प । शौचम् ।

स्नानम् । स्नाति । स्नाति गङ्गाजलै र्नित्यम्, कवि २१६ । स्नायात् । अस्नात् । अस्नुः । अस्नान् । सस्नौ । सस्नतुः । स्नाता । स्नास्यति । स्नेयात् । स्नायात् । असासीत् । असासिष्टाम् । असासिषुः । सिस्नासति । सास्नायते । सास्नाति । सास्नेति । स्नपयति । स्नापयति । प्रस्नापयति । असिस्नपत् । स्नपयति हृदयेशं दृष्टिः, उत्तर । स्नात्वा । ०स्नाय । स्नातः । स्नातिः । स्नानम् । स्नाता । स्नानीयम् । निष्णातः । शास्त्रेषु नदीष्णातः, पा ८, ३, ८६ ।

स्निट्—चु, प । १स्नेहः । २गतिः ।

स्निह्—ष्णिह्, दि, प । प्रीतिः ।

स्नेहः । स्निह्यति । नच स्निह्यति कस्यचित्, भ १८, ६ । सिष्णेह । सिस्निहतुः । सिस्निहिथ, सिस्निग्ध, सिस्नेढ । स्नेग्धा, स्नेढा, स्नेहिता, पा ७, २, ४५ । ८, २, ३३ । स्नेक्ष्यति, स्नेहिष्यति । असिस्नेहत् । सिस्नेहिषति, सिस्निहिषति, सिस्निक्षति । सेस्निह्यते । सेस्नेग्धि, सेस्नेढि । स्नेहयति । असिस्निहत् । ष्णिह्, चु, प । स्नेहनम् । स्निग्धीभावः । स्नेहयति वर्त्तिका तैलेन, दुर्गा । स्नेहयत्यालबन्धुषु, कवि २४४ । स्नेहित्वा, स्निहित्वा, स्निग्ध्वा, स्नीढ्वा । ०स्निह्य । स्निग्धः । स्नीढः । स्नेहनम् । स्नेहः । स्नेहितुम् । स्नेग्धुम्, स्नेढुम् । क्विप् स्निक्, स्निट्, ष्णिक् ।

स्नु—ष्णु, अदा, प । क्षरणम् ।

स्नावः । स्नौति । स्नुतः । स्नुवन्ति । सुस्नाव । सुस्नुवतुः । सुस्नुविथ । सुस्नुविव । स्नविता, पा २, ३६ । स्नविष्यति । स्नूयात् । अस्नावीत् । अस्नाविष्टाम् । अस्नाविषुः । कर्मणि, प्रस्नूयते । प्रस्नोता, पा ७, २, ३६ । प्रस्नोष्यते । प्रस्नोषीष्ट । प्रास्नावि । प्रस्नुते गौः स्वयमेव । प्रास्नोष्ट गौः स्वयमेव, पा ३, १८६ । सुस्नूषति । सोष्णूयते । सोष्णावीति । सोष्णोति । स्नावयति । असुष्णवत् । स्नुत्वा । ०स्नुत्य । स्नुतः । स्नुतिः । स्नवनम् । स्नवः । स्नवितुम् ।

स्नुच् (स्नुच्) ।

स्नुस्—ष्णुस्, दि, प । १अदनम् ।

२आदानम् । ३अदर्शनम् । स्नुस्यति ।

स्नुह्—ष्णुह्, दि, प । उद्गिरणम् ।

२वमनम् । स्नुह्यति । सुष्णोह । सुष्णोहिथ, सुष्णोग्ध, सुष्णोढ । सुष्णुहिव, सुष्णुह्व । स्नोहिता, स्नोग्धा, स्नोढा । स्नोहिष्यति, स्नोक्ष्यति । असुहत् ।

स्नै—ष्णै, भ्वा, प । वेष्टनम् ।

स्नायति । णिच् स्नपयति । स्नापयति ।

स्यन्द्—स्यदि, भ्वा, आ ।

किञ्चिच्चलनम् । ईषत्कम्पनम् । स्यन्दनम् । स्फुरणम् । स्यन्दते । स्यन्दते दक्षिणो भुजः, मृच्छ २०४ । पस्यन्दे । पस्यन्दे वामनयनं जानकीजामदग्न्ययोः, महाना १,२८ । स्यन्दिता । स्यन्दिष्यते । असस्यन्दिष्ट । असस्यन्दिषाताम् । असस्यन्दिषत । असस्यन्दिष्टाक्षि वामम्, १५, २७ ।

पिस्पन्दिषते। पास्पन्द्यते। पास्पन्ति। स्पन्दयति। अपस्पन्दत्। स्पन्दित्वा। ०स्पन्द्य। स्पन्दितः। स्पन्दनम्। स्पन्दः। स्पन्दनः। परिवि—परिस्पन्दनम्। स भीमेन परामृष्टो व्यस्पन्दत यथा प्राणं विचकर्ष च पाण्डवम्, भारत।

स्पर्ध्—भ्वा, आ। सङ्घर्षः।

पराभिभवेच्छा। स्पर्द्धा। स्पर्द्धते। पस्पर्द्धे। स्पर्द्धिता। स्पर्द्धिष्यते। अस्पर्द्धिष्ट। अस्पर्द्धिषाताम्। अस्पर्द्धिषत। अस्पर्द्धिष्ट रामेण सह सः, भ ५, ६५। पिस्पर्द्धिषते। पास्पर्द्ध्यते। पास्पर्द्धि। स्पर्द्धयति। अपस्पर्द्धत्। स्पर्द्धित्वा। ०स्पर्द्ध्य। स्पर्द्धितः। स्पर्द्धा। स्पर्द्धितुम्। आ—आस्पर्द्धा। स्पर्द्धनः।

स्पश्—स्पर्श्—चु, आ। १ग्रहणम्। २श्लेषणम्। स्पाशयते। स्पर्शयते। स्पश, भ्वा, उ। १स्पर्शनम्। २पीड़नम्। ३ग्रन्थनम्, वो। स्पशति। ०ते। स्पशः।

स्पर्ष् (पर्ष्)।

स्पृ—स्वा, प। १प्रीतिः। २पालनम्। ३चलनम्। ४जीवनम्। स्पृणोति। पस्पार। स्मृ, स्मृणोति। इमौ छान्दसा वित्याहुः, कौ १४७। प्रदीपमते स्फ।

स्पृश्—तु, प। स्पर्शः। आमर्शनम्। स्पृशति। पस्पर्श। पस्पृशतुः। पस्पर्शिथ। पस्पृशिव। हस्तेन पस्पर्श तदङ्गमिन्द्रः, कु ३, २१। स्पष्टा, स्पर्ष्टा, पा ६, २, ५६। स्पर्च्यति, स्पर्क्ष्यति। अस्पर्च्यत्, अस्पर्क्ष्यत्। अस्पार्क्षीत्, अस्पार्ष्टाम्, अस्पृक्षत्, कौ १०४। अस्पार्ष्टाम्, अस्पार्ष्टाम्, अस्पृक्षताम्। अस्पार्क्षुः, अस्पार्ष्टुः, अस्पृक्षन्। कर्मणि, स्पृश्यते। अस्पर्शि। पिस्पृक्षति। परिस्पृश्यते। परीस्पर्ष्टि। स्पर्शयति। अपस्पर्शत्। अपिस्पृशत्। (दानम्) स्पर्शनं प्रतिपादन मित्यमरः। गाः कोटिशः स्पर्शयता घटोघ्नीः, र २, ४८। स्पृष्ट्वा। ०स्पृश्य। स्पृष्टः। स्पृष्टिः। स्पर्शनम्। स्पर्शः। स्पर्ष्टुम्, स्पर्ष्टुम्। उप—उपस्पर्शः। आचमनम्। उपस्पर्श स्वाचमन मित्यमरः।

स्पृह—अदन्तः। चु, प। ईप्सा।

प्राप्तीच्छा। स्पृहा। लोभः। स्पृहयति। पुष्पेभ्यः स्पृहयति, पा १, ४, ३६। स्पृहयति च बिभेति प्रेमतो बालभावात्, महाना २, ४४। तव जनन्यै स्पृहयाम्बभूव, महाना २, १८। स्पृहा। स्पृहनीयः। स्पृहयालुः।

स्फट्—स्फाण्ट्, स्फटि, भ्वा, प, वो।

विशरणम्। भेदः। स्फटति। स्फण्टति। स्फटितम्, दुर्गा। स्फटः। स्फटा।

स्फण्ड् (स्फुण्ट्) स्फर्, स्फल् (स्फुर्)।

स्फल् (स्फुल्) तु, प। सञ्चलनम्। स्फूर्त्तिः। स्फलति। पस्फाल। स्फलिता। आ—आस्फालनम्। चालनम्। ताड़नम्। ऐरावतास्फालनकर्कशेन हस्तेन, कु ३, २२। आस्फालितवल्लकीगुणः, मा १,९। धनु रास्फालितम्, महाना १, ३२। आस्फालितं यत् प्रमदाकराग्रैः, र १६, १३।

स्फाय्—स्फायी (ओप्यायी) भ्वा, आ। वृद्धिः। स्फायते। अस्फायतास्य वीरत्वम्, भ १७, ५०। पस्फाये। तयोः पस्फाये शस्त्रलाघवम्, भ १५, १०९। स्फायिता। अस्फायिष्ट। अस्फास्त, वो। णिच् स्फावयति। अपिस्फवत्, पा

६,३,४१। अपिस्फवच्च बज्जूनां विक्रमम्, भ ४, ३३। स्फायित्वा। ०स्फाय्य। स्फीतः, स्फातः, वो। स्फीतवान्, पा ६१, २२। स्फायनम्। स्फायः। स्फायितुम्। स्फातिः। स्फातिर्वृद्धाविति अमरः। स्फीति रिति णिजन्तात् स्फीतशब्दात् इः, कौ ४४९। यन्निम्बानां परिणतफलस्फोति राखादनीया। काव्यप्रकाशः।

स्फिट्—चु, प। १हिंसा।

२आवरणम्। ३बधः। ४अनादरः। स्फेटयति।

स्फिट्—(षट्) चु, प। हिंसा।

स्फुट्—स्फुटिर्, श्वा, प।

१विशरणम्। भेदनम्। २विकसनम्, दुर्गा। स्फुट्, श्वा, आ। तु, प। विकसनम्। प्रफुल्लीभावः। स्फोटति। ०ते। स्फुटति। अस्फुटद्विमण्डलम्, भ १७, ९। यस्योद्यानतटे स्फुटन्ति सततं वल्लीषु पुष्पच्छटाः स्फोटन्ते नवकुड्मलानि कुटजाः प्रायेषु वृक्षेषु च। स्फोटन्ति द्विषतां शिरांसि सहसा यस्याप्रियं कुर्वतां य श्चास्फोटयति स्फुटन् दग्धदिशः कुर्वंश्चरैः पूरिताः॥ कवि १३। पुस्फोट। पुस्फोटिथ। तु, पुस्फुटिथ। पुस्फुटे। मनो मे न यत् पुस्फोट सहस्रधा, भ १४, ५६। तुरङ्गाः पुस्फुटु र्भीताः, भ १४, ६। स्फोटिता। तु, स्फुटिता। स्फोटिष्यति। ०ते। तु, स्फुटिष्यति। लुङ् (इर्) अस्फुटत्, अस्फोटीत्। अस्फोटिष्ट। तु, अस्फुटीत्। अस्फुटिष्टाम्। प्रासोऽस्फोटीत् तस्योरसि, भ १५, ७७। पुस्फुटिषति। ०ते। पुस्फोटिषति। ०ते। पोस्फुट्यते। पोस्फुट्टि। स्फोटयति। अपुस्फुटत्। स्फुट् (चट) चु, प। भेदनम्। स्फोटयति। स्फुट्, चु, प, वो। हिंसा। बाहुताड़नम्। आङ्पूर्वोऽयमिति दुर्गादासः। आस्फोटयति। बाङ्ग चास्फोटयच्छनैः, भारत। केचिदास्फोटयाञ्चक्रु, भ ३, २८। स्फोटित्वा, स्फुटित्वा। ०स्फुट्य। स्फुटितः। स्फुट्टिः। स्फोटनम्, स्फुटनम्। स्फोटः। स्फोटितुम्। स्फुटितुम्। स्फुटः। स्फुटताम् (पलायमानानाम्), भ १०, ८। स्फुट—अदन्तः। चु, प। विस्फुरणम्। विकसनम्। स्फुटयति। अपुस्फुटत्।

स्फुड् (चुड़)।

स्फुट्—चु, प, वो। अनादरः।

स्फुण्ट्—स्फुटि, श्वा, प। विशरणम्। भेदः। स्फुण्टति। पुस्फुण्ट। स्फुण्टिता। स्फुटि स्फुड़ि स्फाड़, चु, प, वो। नर्म। परीहासः। स्फुण्टयति। स्फुण्डयति। स्फण्डयति। स्फुड़ि, श्वा, आ, वो। विकसनम्। स्फुण्डते।

स्फुर्—स्फुल्, स्फर्, स्फल्—तु, प। १स्फुरणम्। स्फूर्त्तिः। प्रकाशः। दीप्तिः। २सञ्चलनम्। कम्पनम्। स्यन्दनम्। स्फुलतिः सञ्चारार्थः, वो। स्फुरति। स्फुलति। स्फरति। स्फलति। सप्तर्षिमण्डलं स्फुरति, मा ११, ३। सव्यं नेत्रं स्फुरति, मृच्छ २७४। स्फुरतु कुचकुम्भयो रुपरि मणिमञ्जरी, गीतगो १०, ६। पुस्फोर। पुस्फुरतुः। पुस्फरिथ। चारु पुस्फोर बाहुः, भ २,२७। पुस्फुरु र्वृषभाः परम्, भ ४, ९। स्फुरिता। स्फुरिष्यति। आशिषि, स्फूर्य्यात्। अस्फुरीत्। अस्फुरिष्टाम्। पुस्फुरिषति। पोस्फूर्य्यते। पोस्फो-

र्त्ति। स्फोरयति। स्फारयति, पा ६, १, ५४। अपुस्फरत्। अपुस्फरत् धनुरपुस्फुरद् गुरु, भ १५, ८९। निःष्फुरति, निःस्फुरति। निःष्फुलति, निःस्फुलति, पा ८, ३, ७६। वि—कम्पनम्। विस्फुरति, विष्फुरति। विस्फारयन् धनुः। क्रोधविस्फारितेक्षणः, भारत। स्फरित्वा। ०स्फूर्य्य। स्फुरितः। स्फूर्त्तिः। स्फुरणम्। स्फारः। स्फालः, पा ६, १, ४७। स्फूरितुम्। स्फुल् (स्फुर्)।

स्फूर्ज्—स्वूर्ज्—स्फुर्ज्ज, स्वुर्ज्ज, भ्वा, प। विस्तृतिः। स्फूर्च्छति, स्वूर्च्छति, वो। पुस्फूर्च्छ। स्फूर्च्छिता। (आ) स्फूर्च्छितम्, स्फूर्णम्। क्विप् स्फूः, स्फूरौ। स्फुर्च्छति प्रदीपमते स्फुरौ।

स्फूर्ज्—टुओस्फुर्जा, भ्वा, प।

वज्रनिर्घोषः। वज्रकर्त्तृकशब्दः। स्फूर्जति। पुस्फूर्ज। स्फूर्जिता। अस्फूर्जीत्। पुस्फूर्जिषति। पोस्फूर्ज्यते। पोस्फूर्क्ति। स्फूर्जयति। (आ) स्फूर्जितम्, स्फूर्णम्। स्फूर्णः। (टु) स्फूर्जथुः।

स्मि—स्मिङ, भ्वा, आ। ईषद्धसनम्।

स्मयते। सिस्मिये। स्मेता। स्मेष्यते। अस्मेष्ट। अस्मेषाताम्। अस्मेषत। सिस्मयिषते, पा ७, २, ७४। सेस्मीयते। सेस्मयीति। स्माययति। स्मि, चु, आ। अनादरः। जुगुप्सा। स्माययते। स्मित्वा। ०स्मित्य। स्मितः। स्मितिः। स्मयनम्। स्मयः। स्मेतुम्। स्मायी। स्मेता। स्मेरः। काकुत्स्थ ईषत् स्मयमानः, भ २, ११। वि—विस्मयः। व्यस्मयन्त प्लवङ्गमाः, भ १७, ७०। उद्दीच्य को भुवि न विस्मयते नगेशम्, मा ४, ९। तयोः प्राविण्येन विसिस्मिये लोकः, र ५, ६८। णिच् (प्रयोजकात् स्मये) विस्मापयते, पा १, ३, ६८। ६, १, ५७। अन्यत्र, विस्माययति। रामं विस्मापयेत कः, भ ५, ५८। मनुष्यवाचा विस्माययन् राजानम्, र २, ३३।

स्मिट्—चु, प। १ अनादरः।

२स्नेहः, वो। स्नेटयति। असिस्मिटत्।

स्मील् (श्मील्)।

स्मृ—भ्वा, प। चिन्ता। ध्यानम्।

स्मरणम्। स्मरति। मातरं स्मरति मातुः स्मरति, पा २, ३, ५२। सस्मार। सस्मरतुः, पा ७, ४, १०। सस्मर्थ। सस्मरिव। सस्मार वारणपतिः, मा ५, ५०। यानं सस्मार कौबेरम्, भ ४, १४५। स्मर्त्ता। स्मरिष्यति। स्मर्य्यात्, पा ४, २९। अस्माषीत्। अस्माष्टाम्। अस्माषुः। अस्माषीद् ब्रह्मास्त्रम्, भ १५, ९४। कर्म्मणि, स्मर्य्यते। स्मृषीष्ट। स्मरिषीष्ट, पा ७, २, ४३। सुस्मूर्षते, पा १, ३, ५७। सास्मर्य्यते। सास्मर्त्ति। स्मारयति। उत्कण्ठापूर्वकस्मरणे घटादिः। स्मारयति। असस्मरत्, पा ७, ४, ९५। गुरुः शिष्यं शास्त्रं स्मारयति, दुर्गा। तेन शस्त्रं मस्मार्य्यत सः, भ ७, १०९। स्मृत्वा। स्मृत्य। स्मृतः। स्मृतिः। स्मरणम्। स्मर्त्तुम्। स्मर्त्ता। स्मारकः। तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्, गी ७, २०। तेन नारायणः स्मृतः, मनु १, १०। वि—विस्मरणम्। अस्मिन् क्षणे खलु विस्मृतं मयैतत्, शकु १, १८। शस्त्राणां व्यस्मरन्, भ १७, १०। स्मृ (सृ)।

स्यन्द्—स्यन्दू, भ्वा, आ। स्रवणम्।

चरणम्। स्यन्दते। सस्यन्दे। सस्यन्दिषे, सस्यन्त्से। सस्यन्दे श्रोणितं व्योम, भ १४, ९८। स्यन्दिता, स्यन्ता। स्यन्दिष्यते। स्यन्त्स्यसि। ०ते, पा ३, १, ९२। ध्वान्तं रवेः स्यन्त्स्यति, भ १२, ७७। तीव्रं मेघैः स्यन्दिष्यते, भ १६, ७। अस्यन्दिष्यत। अस्यन्त्स्यत्। ०त। स्यन्दिषीष्ट, स्यन्त्सीष्ट। अस्यदत्। अस्यन्दिष्ट, अस्यन्त। अस्यन्दिषाताम्, अस्यन्त्साताम्। अस्यन्दिषत, अस्यन्त्सत। सिस्यन्दिषते। सिस्यन्त्सति। ०ते। सास्यद्यते। सास्यन्ति। स्यन्दयति। असस्यन्दत्। स्यन्दित्वा, स्यन्त्वा, पा ६, ४, ३१। ०स्यन्द्य। स्यन्नः। स्यन्तिः। स्यन्दनम्। स्यन्दः। स्यन्दितुम्। स्यन्तुम्। स्यन्दी। स्यन्दनः। अभि—द्रवीभावः। चरणम्। अभिस्यन्दते हृदयम्, उत्तर १८७। अभिस्यन्दते अभिष्यन्दते दुग्धम्। निस्यन्दते निष्यन्दते मधु। परिस्यन्दते परिष्यन्दते घृतम्। विस्यन्दते विष्यन्दते तैलम्। ०स्यन्दते मत्स्यः, पा ८, ३, ७२।

स्यम्—स्यमु, भ्वा, प। तु, प, वो। शब्दः। स्यमति। सस्याम। सस्यमतुः। स्येमतुः, पा ६, ४, १२५। सस्यमुरश्विवाः खगाः, भ १४, ८३। हरिराश्वसाः स्येमुः, भ १४, ७७। स्यमिता। स्यमिष्यति। अस्यमीत्। सिस्यमिषति। सेसिम्यते, पा ६, १, १८। स्यमयति। असिस्यमत्। स्यम्, चु, आ। वितर्कः। स्यामयते। स्यामयति, वो। स्यम, अदन्तः। चु, प, वो। शब्दः। स्यमयति।

स्रङ्ग् (अङ्ग्)।

स्रभ्, अभ्—स्रन्भु, अन्भु। भ्वा, आ। प्रमादः। अनवधानता। स्रभ्नाति। अभ्नते। सस्रम्भे। स्रम्भिता। अस्रम्भिष्ट। स्रन्भु, भ्वा, आ। विस्रासः। अङ्गारहितीभावः। प्रायेणायं विपूर्वः। विस्रभ्नाति। तालव्यादि रय मित्येके। विश्रभ्नते। लुङ् अस्रभत्। अस्रम्भिष्ट। (उ) स्रम्भित्वा, स्रब्ध्वा। स्रब्धः। स्रभ्णम्। स्रभ्नः। विस्रभ्नः।

स्रंस्—स्रन्सु (ध्वन्सु) भ्वा, आ।

अवस्रंसनम्। च्युतिः। अधःपतनम्। स्खलनम्। भ्रंशः। प्रसन्नीभावः, वो। तालव्यान्त इति कश्चित्। स्रंसते। गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्, गी १, ३०। सस्रंसे। स्रंसिता। स्रंसिष्यते। असस्रत्, पा १, ३, ९१। ३, १, ५५। असंसिष्ट (प्रमादे, असंसिष्ट, वो)। नासस्रत् करिणां ग्रैवम्, र ४, ४८। असस्रदाहतः। तेऽस्रंसिषताकुलाः, भ १५, ८। भावे स्रस्यते। असंसि। सस्रसे शरबन्धेन, भ १४, ७२। सिस्रंसिषते। सनीस्रस्यते, पा ७, ४, ८४। सनीस्रंस्ति। स्रंसयति। असस्रंसत्। वातोऽपि नास्रंसय दंशुकानि वाणिनीनाम्, र ६, ७५। (उ) स्रंसित्वा, स्रस्त्वा। ०स्रस्य। स्रस्तः। स्रस्तिः। स्रंसनम्। स्रंसः। स्रस्तां नितम्बात् काञ्चीम्, कु ३, ५५।

स्रंह्—स्रन्हु, भ्वा, आ, वो। विस्रासः। स्रंहते। सस्रंहे।

स्रिभ्, स्रिभ् (स्रभ्)।

स्रिव्—स्रिवु, दि, प। १गतिः। २शोषणम्। स्रीव्यति। सिस्रेव। स्रेविता। क्विप् स्रूः, स्रुवौ, पा ६, ४, २०।

स्रु—भ्वा, प। १गतिः। २प्रवाहः।

श्रवणम्, वो। स्रवति। सुस्राव। सुस्रुवतुः। सुस्रोथ। सुस्रुव, पा ७, २, १३। शक्रन्मूत्रं सुस्रुवु र्भयात्, भारत। स्रोता। स्रोष्यति। स्रूयात्। असुस्रुवत्, पा ३, १, ४८। श्रोणित मसुस्रुवत्, भ १५, ५६। सुस्रूषति। सोस्रूयते। सोस्रोति। स्रावयति। असुस्रवत्, असिस्रवत्। सुस्रावयिषति, सिस्रावयिषति, पा ७, ४, ८१। स्रुत्वा। ०स्रुत्य। स्रुतः। स्रुतिः। स्रवणम्। स्रावः। स्रवः। स्रोतुम्।

स्रेक् (सिक्) स्रै (ग्रै)।

स्रङ्—स्रकि (कक्कि) भ्वा, आ। गतिः।

स्रङ्—स्रगि, भ्वा, प, वो। गतिः।

स्रञ्ज्—ष्वन्ज्, भ्वा, आ। परिषङ्गः। आलिङ्गनम्। स्रजते, पा ६, ४, २५। भ्रातर मस्रजत, र १३, ७०। सस्रजे, सस्रज्जे। सस्रजिषे, सस्रज्जिषे। स्रङ्क्ता। स्रङ्क्ष्यते। स्रङ्क्षीष्ट। अस्रङ्क्त। अस्रङ्क्षाताम्। अस्रङ्क्षत। सिस्रङ्क्षते। सास्रज्यते। सास्रङ्क्ति। स्रज्जयति। नि, वि, परि—आलिङ्गनम्। परिष्वजते। पर्य्यष्वजत, पर्य्यस्रजत, पा ३, ७०, ७१। परिषस्रजे, परिषस्रज्जे, कौ १०२। अभ्यष्वजत। अभिषिष्वङ्क्षते।

स्रठ् (ग्रठ्)।

स्रद्—स्रर्द्—ष्वद्, स्रर्द्, भ्वा, आ। आस्वादनम्। अनुभवः। रुचिः। अय मनुभवे सकर्मकः। रुचावकर्मकः। प्रीतिकरणम्। रसोपादानम्, दुर्गा। स्रदते। स्रर्दते। स्रदते वारिधारा (रोचते), नै ३, ८३। स्रदस्र हव्यानि (अनुभव)। स्रदते विविधं स्वादु, कवि ११८। सस्रदे। स्रदिता। स्रदिष्यते। अस्रदिष्ट। सिस्रतेदिष। सास्रद्यते। सास्रत्ति। ष्वद्, चु, प। १आस्वादनम्। रसोपादानम्। २छेदनम्, वो। स्वादयति। असिष्वदत्। स्वादयन्तः फलरसम्, भ ७, ४०। आस्वादयति सर्वेषां विषयाणां सुखानि यः, कवि ११८।

स्रन् (ध्वन्) भ्वा, प। शब्दः।

स्रनति। सस्रान। सस्रनतुः। स्रेनतुः, पा ६, ४, १२५। वानराः स्रेनुः, भ १४, ७०। पूर्णाः पेराः सस्रनुः, भ १४, ३। स्रनिता। असस्रनीत्, अस्रानीत्। सिस्रनिषति। संस्रन्यते। संस्रन्ति। स्रनयति। स्रानयति, वो। असिस्रनत्। भूषणार्थो घटादिः। अन्यत्र, स्रानयति घण्टाम्। अव, वि—सशब्दभोजनम्। अवष्वणति। विष्वणति। अवाष्वणत्। व्यष्वणत्। शब्दार्थे तु विस्रनति मृदङ्गः, पा ८, ३, ६९। अवषष्वाण। विषष्वाण, पा ८, ३, ६९। आ—शब्दः। मृदङ्गा धीर मास्रेनुः, भ १४, ४। क्त, आस्रान्तः, आस्रनितः, पा ७, २, २८। स्रन, अदन्तः। चु, प, वो। शब्दः। स्रनयति।

स्रप्, जिस्रप्, अदा, प। शयनम्।

निद्रा। स्रपिति, पा ७, २, ७६। स्रपितः। स्रपन्ति। स्रपिषि। स्रपिति यावदयं निकटे जनः स्रपिमि तावदहं किमपैति ते, काव्यप्रकाशः। स्रपन्ति बान्धवा मे (दीर्घनिद्रां प्रविशन्ति), भ १८, ११। स्रप्यात्। असस्रपत्, असस्रपीत्, पा ७, ३, ९८, ९९। असस्रपिताम्। असस्रपन्। असस्रपः। असस्रपीः। सुष्वाप। सुषुप्वतुः। सुष्वपिथ, सुष्वप्थ। सुषुप्विव। सुषुप्मु र्हताः

(भूमौ पतिताः), भ १४, १०१। स्वप्ना। स्वप्स्यति। सुप्यात्। अस्वाप्सीत्। अस्वाप्ताम्। अस्वाप्सुः। भावे, सुप्यते। अस्वापि। सुषुप्सति, पा १, २, ८। सोषुप्यते, पा ६, १, १८। सास्वप्ति। स्वापयति। असूषुपत्, पा ६, १, १८। कोटी बाणे रसूषुपत्, भ १५, ६८। सुष्वापयिषति। सुप्वा। ॰सुप्य। सुप्तः। सुप्तिः। स्वपनम्। स्वापः। स्वप्नः। स्वप्नम्। स्वप्नक्। सु—सुषुप्तिः। सुसुष्वाप। सुषुषुपतुः, पा ८, ३, ८८। सुस्वप्ना। सुषुप्यात्। सुषुप्तः। विषुप्तः। निःषुप्तः। दुःषुप्तः।

स्वर—अदन्तः। चु, प। आक्षेपः।

स्वर्त्—चु, प। १गतिः। २तङ्कः, वो। सभयस्थितिः। स्वर्त्तयति। स्वर्त्त इत्येके।

स्वर्द् (स्वद्)।

स्वल्—भ्वल्ल (प्रेल्ल) भ्वा, प। गतिः।

स्वस्क्—भ्वा, आ, वो। गतिः।

स्वाद्—भ्वा, आ। स्वाद् (ष्वद्) चु, प। आस्वादनम्। स्वादते। सस्वादे। स्वादयति। असिस्वदत्। सिस्वादयिषति।

स्विद्—जिष्विदा, भ्वा, आ।

१स्नेहनम्। २शोचनम्। ३मोहनम्। स्वेदते। सिष्विदे। स्वेदिता। स्वेदिष्यते। अस्विदत्। अस्वेदिष्ट, पा १, ३, ६८। स्विन्नं स्वेदितं मस्य। ष्विदा, दि, प। गात्रप्रक्षरणम्। घर्मच्युतिः। स्नेहादयोऽपि, वो। स्विद्यति। न च स्विद्यति तस्याङ्गं व्यायामार्जितमेदसः, कवि २१२। सिष्वेद। सिष्विदतुः। सिष्वेदिथ। स्वेत्ता। स्वेत्स्यति। अस्विदत्। प्रपलायिषता स्विदन्, भ १५, ५०। सन् सिष्वित्सति। सिस्वेदिषते, सिस्विदिषते। सेष्विद्यते। सेष्वेत्ति। स्वेदयति। असिस्विदत्, पा ८, ३, ६२। स्वेदित्वा, स्वित्त्वा। स्विन्नं स्वेदितं तेन, पा १, २, १८। ७, २, १६। स्विन्नः। स्वेदनम्। स्वेदः। स्विन्नाङ्गुलिः संवहते कुमारी, र ७, २२। स्विन्न मन्न मुदाहृतम्, स्मृतिः। स्विद्यते स्तु स्विदितः, कौ ३५४।

स्वूर्च्छ् (स्फूर्च्छ्)।

स्वृ—भ्वा, प। १शब्दः। २उपतापः।

स्वरति। सस्वार। सस्वरतुः। सस्वरिथ, सस्वर्थ। सस्वरिव। सस्वरिम। स्वरिता, स्वर्त्ता, पा ७, २, ४४। स्वरिष्यति। स्वर्य्यात्, पा ७, ४, २८। असस्वारीत्। असस्वारिष्टाम्। असस्वारिषुः। असस्वार्षीत्। असस्वार्ष्टाम्। असस्वार्षुः। सिस्वरिषति। सुष्वूर्षति, पा ७, २, ४८। सास्वर्य्यते। सास्वर्त्ति। स्वारयति। असिस्वरत्। शत्रुं संस्वरिषीष्ठाः प्रधने, भ ८, २८।

स्वृ—क्रया, प। हननम्। स्वृणाति।

स्वेक् (सेक्)।

## ( ह )

हट्—भ्वा, प। दीप्तिः। हटति। हाटः। हाटकम्।

हठ्—भ्वा, प। १प्रसृतिः। २शाठ्यम्। ३बलात्कारः। ४कीले बन्धनम्, वो। हठति। जहाठ। हाठिता। अहठीत्, अहाठीत्। हठः।

हद्—भ्वा, आ। पुरीषोत्सर्गः।

मलत्यागः। उभयपदीति कश्चित्। हदति। ते। जहदे। हत्ता। हत्स्यते। हत्सीष्ट। अहत्त। अहत्साताम्।

अहत्सत। जिहत्सते। जाहद्यते। जाहन्ति। हादयति। अजीहदत्। हन्नः।

हन्—अदा, प। १हिंसा।

२गतिः। ३प्रहारः। ताड़नम्। गतौ न प्रयुज्यते। सुरस्रोतस्विनौ मेष हन्ति (याति) मन्मति सादरम्, इत्यादौ असमर्थत्वदोषः। हन्ति। हतः। घ्नन्ति, पा ७, ३, ५४। हंसि। हि, जहि, पा ६, ४, ३६। मा धर्मं जहि, भारत। हन्यात्। अहन्। अहताम्। अघ्नन्। अहनम्। भूयस्त महन्, भ ६, ३३। जघान। जघ्नतुः। जघनिथ, जघन्थ। तान् जघान, भ २, ३१। विशिखेन कुम्भे जघान, र ५, ५०। जघ्नुरमुं कटाक्षैः, मा ३, १६। हन्ता। हनिष्यति, पा ७, २, ७०। बध्यात्, पा २, ४, ४२। अबधीत्। अबधिष्टाम्। अबधिषुः, पा २, ४, ४३। आबधिष्ट। आबधिषाताम्। आबधिषत। आहत। आहसाताम्। आहसत, पा २, ४, ४४। कर्मणि, हन्यते। जघ्ने। हन्ता, घानिता। घानिष्यते तेन महान् विपक्षः, भ १, २२। घानिषीष्ट, बधिषीष्ट। अघानि, अबधि। अबधिषाताम्, अहसाताम्, अघानिषाताम्। अबधिषत, अहसत, अघानिषत। अघानि ताड़का तेन, भ ५, ४०। जिघांसति, पा ६, ४, १६। जङ्घन्यते। (हिंसायाम्) जेघ्नीयते, क्री २०९। जङ्घन्ति। घातयति। स्वार्थे णिच्, क्री १७७। पा ७, ३, ३२। अजीघतत्। हत्वा। °हत्य। हतः। हतिः। हननम्। घातः। बधः। हन्तुम्। हन्ता। घातौ। घातकः। घातुकः। बध्यः। घात्यः। हन्तव्यः। हननीयः। जघ्निवान्, जघन्वान्, पा ७, २, ६८। शाखिभि र्हा हता भूयो हृदयाना मुदेजयैः, भ ६, ७८। अन्तः—अन्तर्हन्यते। अन्तर्घ्नन्ति, पा ८, ४, २२४। अन्तर्घनो देशः। अप—अपघातः। ध्वंसनम्। अपहन्ति शक्तिम्, उत्तर ५५। अभि—आघातः। प्रहारः। वादनम्। अव—कण्डनम्। आ—आघातः। प्रहारः। वादनम्। आहते स्वं वक्षः। लुङ् आहत, पा १, २, १४। २, ४, ४४। गाण्डीवी कनकशिलानिभं भुजाभ्या माजघ्ने विषमविलोचनस्य वक्षः, भा ११, ६३। आत्मनेपदं चिन्त्यम्। तूर्य्यं माजघ्ने रन्ध्रे, भ १, २७। व्या—व्याघातः। प्रतिबन्धः। न क्वचिद् व्याहन्यन्ते, उत्तर २२७। उप—उपघातः। विघातः। हविर्हैयङ्गवीनञ्च नाप्युपघ्नन्ति राक्षसाः, भ ५, १२। अनुपघ्नन् पितृद्रव्यम्, मनु ९, २०८। नि—निहननम्। वादनम्। बलं तस्य निहन्ति, भ ८, २०। कोणे भैर्य्यौ निजघ्निरे, भ १४, १२। प्रणि—चौरस्य प्रणिहन्ति। चौरस्य निग्र°। चौरस्य निहन्ति, पा २, ३, ५६। राक्षसानां प्रणिहनिष्यति, भ ८, १२१। ब्रह्मद्विष स्ते प्रणिहन्मि, भ २, ३५। परा—आघातः। प्रहारः। प्र—निहननम्। प्रहणिम, प्रहन्मि, पा ८, ४, २३। प्रहण्यात्। प्राघानिषत रक्षांसि येन, भ ९, १०२। वि—विघातः। विघ्नन्ति रक्षांसि वने क्रतूंश्च, भ १, १९। नार्हसि मे प्रणयं विहन्तुम्, र २, ५८। सम्—सङ्घातः। योगः। संहृत्य हस्तौ, मनु २, ७१।

हर्म्—(ह्रम) भ्वा, प। गतिः।

हय्—भ्वा, प। १गतिः। २क्लमः। ३भक्तिः। ४शब्दः। हयति। जहाय। हर्य्, भ्वा, प। १गतिः। २कान्तिः।

हर्यति । जहर्य । हर्यिता । अहर्यीत् ।

हल्—भ्वा, प । विलेखनम् ।

कर्षणम् । हलति । जहाल । हलिता ।

हस्—हसे, भ्वा, प । हसनम् ।

अपूर्वप्रतीत्या कपोलस्य विकसितीकरणम् । उपहासः । उपहासे सकर्मकः । हसति । हसन्ति माधव सौरम, दुर्गा । जहास । जहसतुः । हसिता । हसिष्यति । (छ) अहसीत्, पा ७, २, ५ । जिहसिषति । जाहस्यते । जाहस्ति । हासयति । अजीहसत् । हसित्वा । °हस्य । हसितः । हसनम् । हासः । हसितुम् । हास्यं वच स्तद् यदहं विवक्षुः, र २, ४३ । हसन्त मन्तर्बल मर्वतां रवेः, नै १, ६१ । अव, उप—उपहासः । परि—परिहासः । प्र, वि—अतिहासः । विहसति युवतिसभा तव सकला, गीतगो ६, ५ ।

हा—ओहाक्, हा, प । त्यागः ।

जहाति । जहितः । जहीतः, पा ६, ४, ११६ । जहति । जहाति दुर्जनैः सङ्गम्, कवि २५६ । हि, जहिहि, जहीहि, जहाहि, पा ६, ४, ११७ । जह्यात्, पा ६, ४, ११८ । अजहात् । अजहितम्, अजहीतम् । अजहुः । जहौ । जहतुः । जहिथ, जहाथ । जहिव । हाता । हास्यति । हेयात् । अहासीत् । अहासिष्टाम् । अहासिषुः । कर्मणि, हीयते । अहायि । जिहासति । जेहीयते, पा ६, ४, ६६ । जाहेति । जाहाति । हापयति । अजीहपत् । हित्वा । °हाय । हीनः । हानिः । हातुम् । हातव्यम् । हेयः । ओहाङ्, हा, आ । गतिः । जिहीते । जिहाते । जिहते । जिहीते रुज्जनायम्, कवि २५६ । अजिहीत । अजिहाताम् । अजिहत । जहे । जहिषे । हाता । हास्यते । हासीष्ट । अहास्त । अहासाताम् । अहासत । कर्मणि, हायते । जिहास्यते । जाहायते । जाहेति । हात्वा । हानः । उप—आगमनम् । उपाजिहीथा न महीतलं यदि, मा १, ३७ । उद्—उदयः । उज्जिहीते हिमांशुः, महाना ४, ३५ ।

हि—स्वा, प । १गतिः । प्रेरणम् ।

२वृद्धिः । वर्धने विरलप्रयोगः, दुर्गा । हिनोति । हिनुतः । हिन्वन्ति । हिनुयात् । अहिनोत् । जिघाय, पा ७, ३, ५६ । जिघ्यतुः । हेता । हेष्यति । हीयात् । अहैषीत् । अहैष्टाम् । अहैषुः । कर्मणि, हीयते । अहायि । गदातेन जिघ्ये, भ १४, ३१ । जिघीषति । जेघीयते । जेघेति । हाययति । अजीहयत्, पा ७, ३, ५६ । हित्वा । °हित्य । हितः । हितिः । हयनम् । हेतुम् । हेतुः । प्र—प्रेरणम् । अनीकं प्रजिघाय योद्धुम्, भ १४, १ । शङ्कां कथा मा प्रहिणु स्वसॄनुम्, भ १, २१ । प्रहिणोमि, पा ८, ४, १५ । वानराय प्राहैषीत् परिघम्, भ १५, १२१ ।

हिक्क्—भ्वा, उ । अव्यक्तशब्दः ।

हिक्का । हिक्कयति । °ते । हिक्क्, चु, आ । हिंसा ।

हिट्—भ्वा, प । आक्रोशः ।

हिण्ड्—हिडि, भ्वा, आ । १गतिः ।

२अनादरः । हिण्डते । जिहिण्डे । हिण्डन्ते च यथा रात्रौ, कवि १११ ।

हिन्दोल हिल्लोल (आन्दोल) ।

हिन्व्—हिवि (जिवि) भ्वा, प ।

प्रीणनम् । हिन्वति ।

हिल्—तु, प। भावकरणम्। अभिप्रायसूचनम्। हिलति। हेलिता।

हिस्क्—(विष्क्)।

हिंस्—हिंसि (लृह) रु, प। हिंसा। हिनस्ति। हिंस्तः। हिंसन्ति। हिनस्मीन्द्रस्य विक्रमम्, भ ६, ३८। हिंस्यात्। अहिनः। अहिंस्ताम्। अहिंसन्। जिहिंस। जिहिंसतुः। मदर्थेऽरीन् जिहिंसिथ, भ १४, ५७। हिंसिता। हिंसिष्यति। अहिंसीत्। अहिंसिष्टाम्। अहिंसिषुः। जिहिंसिषति। जेहिंस्यते। जेहिंस्ति। हिंसि, चु, प। हिंसा। हिंसयति। हिंसति, वो। अजिहिंसत्। हिंसित्वा। °हिंस्य। हिंसितः। हिंसनम्। हिंसा। न हिनस्ति यथा जन्तून् तृणान्यपि न हिंसति। त मेव हिंसयत्येकं य स्तदान्नं विलक्षयेत्॥ कवि ५७।

हु—हुा, प। १दानम्। प्रक्षेपः। वैधे आधारे देवतोद्देश्यकहविस्त्यागः। होमः। २अदनम्। ३आदानम्। ४प्रीणनम्। लट् जुहोति. पा २, ४, ७५। जुहुतः। जुह्वति। हि, जुहुधि। जटाधरः सन् जुहुधीह पावकम्, भा १, ४४। लिङ् जुहुयात्। लङ् अजुहात्। अजुहुताम्। अजुहवुः। लिट् जुहवाञ्चकार, पा ३, १, ३९। जुहाव। जुहवाञ्चक्रतुः, जुहुवतुः। पुरो रामस्य जुहवाञ्चकार ज्वलने वपुः, भ। लुट् होता। लृट् होष्यति। आशिषि, हूयात्। लुङ् अहौषीत्। अहौष्टाम्। अहौषुः। यो मन्त्रपूतां तनु मप्यहौषीत्, र १३, ४५। कर्मणि, हूयते। अहावि। सन् जुहूषति। यङ् जोहूयते। जोहवीति। जोहोति। णिच् हावयति। अजूहवत्। हुत्वा। °हुत्य। हुतः। हुतिः। हवनम्। हावः। हवः। होतुम्। होता। हविः। होतव्यम्। हवनीयम्। हव्यम्। त्व मेव हव्यं होता च, कु २, १५। आ—आहुतिः।

हुड्—हुड्, होड्, हुडृ, हुडृ, होडृ, भ्वा, प। आ, वो। गतिः। होडति। °ते। हुड्, तु, प, वो। १मज्जनम्। २संहतिः। हुडति। जुहोड। हुडित्वा। अहुडीत्।

हुण्ड्—हुडि, भ्वा, आ। १सङ्घातः। राशीकरणम्। राशीभावः। २वरणम्। स्वीकारः। ३हरणम्। हुण्डते। जुहुण्डे। हुण्डिता। हुण्डा। हुण्डनम्।

हुल्—(शुल) भ्वा, प। १गतिः। २आच्छादनम्, वो। होलति। जुहोल।

हूड्—(हुड्)।

हूर्च्छ्—हुर्च्छा, भ्वा, प। कौटिल्यम्। अपसरणम्। हूर्च्छति। जुहूर्च्छ। हूर्च्छिता। (आ) हूर्च्छितं हूर्णम् तेन। हूः। हूरौ।

हृ—हृञ्, भ्वा, उ। १हरणम्। प्रापणम्। २स्वीकारः। ३स्तेयम्। ४नाशनम्। हृ, भ्वा, प। संवरणम्। हरति। °ते। जहार। जहर्थ। जह्रिव। जह्रे। हर्त्ता। हरिष्यति। °ते। ह्रियात्। हृषीढ्म्। अहार्षीत्। अहार्ष्टाम्। अहार्षुः। कर्मणि, ह्रियते। अहारि। अहारिषाताम्, अहृषाताम्। जिहीर्षति। °ते। यङ् जेह्रीयते। जहरीति, जरि°, जरी°। जहर्त्ति, जरि°, जरी°। हारयति। °ते। अजीहरत्। °त। हृत्वा। °हृत्य। हृतः। हृतिः। हरणम्। हारः। हरः। हर्त्तुम्।

हर्त्ता। हारी। हारकः। ॰हृत्। ॰हरः। हर्त्तव्यम्। हरणीयम्। हार्य्यम्। व्यति—व्यतिहारः। विपर्य्ययः। अनु—अनुहरणम्। अनुकरणम्। पैत्तक मम्ला अनुहरन्ते माल्कं गावः। अप—अपहरणम्। अभ्यव—अभ्यवहारः। भोजनम्। व्यव—व्यवहारः। आ—आहरणम्। आनयनम्। उदा—उदाहरणम्। प्रत्युदा—प्रत्युदाहरणम्। व्या—व्याहारः। उक्तिः। समा—समाहारः। संग्रहः। उद्—उद्धारः। उप—उपहारः। निर्—निर्हरणम्। परित्यागः। प्रेतवहनादि। तस्य निर्हरणादीनि सम्परेतस्य कारयित्वा, भागवतं। परि—परित्यागः। प्र—प्रहारः। आर्त्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्त्तुं मनागसि, शकु। निर्दयश्च प्रजहर्तुः, भ १४, १००। वि—विहारः। सम्—संहारः। संक्रियता मस्त्रम्, उत्तर ६। उपसम्—उपसंहारः। समापनम्। उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते। प्रहाराहारसंहारविहारपरिहारवत्॥

हृष्—हृषु, भ्वा, प। १अलीकम्।

मिथ्याकरणम्। २हर्षः। चित्तोत्साहः, वो। हृष्, दि, प। तोषः। आह्लादः। हर्षः। लोमहर्षः। हर्षति। हृष्यति। स्त्रियं दृष्ट्वापि शक्नुवां न प्रहर्षति यस्तथा। यथा प्रहृष्यति श्रुत्वा सत्कवीनां सुभाषितम्॥ कवि २०६। जहर्ष। जहृषतुः जहर्षिथ। जहृषुः, भ १४, ७। हर्षिता। हर्षिष्यति। भ्वा, अहर्षीत्। अहृषदित्यन्ये। दि, अहृषत्, अहर्षीत्, वो। अहृषतां तौ, भ १५, १०४। अनिशं शब्द मश्नौषं ततो लोमानि मे ऽहृषन्, भारत। जिहर्षिषति। जरीहृष्यते। जर्हर्षिः। हर्षयति। अजहर्षत्, अजीहृषत्। (ङ) हृषित्वा, हृष्ट्वा। ॰हृष्य। हृष्टः। प्रहृष्टमना मृगान्तिकं चलितः, हितो। (लोमसु) हृष्टाः हृषिताः केशाः। हृष्टं हृषितं केशैः। अन्यत्र हृषितः, पा ७, २, २६। हृष्टो विप्रः। विस्मितः प्रतिहतो वा। हृष्टो वृषभ इत्यत्र हृष्टिशब्दात् मत्वर्थीयोऽत् इति संक्षिप्तसारम्। णिच् हर्षितः। विसर्जयेद् यं सुतजन्महर्षितः, र ३, २०। हर्षणम्। हर्षः। हर्षितुम्। हर्षितव्यम्।

हेट्—भ्वा, प। बाधनम्। पीड़नम्।

हेठ्—भ्वा, प। हेठ् (एठ) भ्वा, आ।

विबाधा। श्राठ्यम्। हेठति। ॰ते। जिहेठ। ॰ठे। हेठिता। अहेठीत्। अहेठिष्ट। हेठयति। अजिहेठत्। हेठ्, तु, प, वो। १ भूतप्रादुर्भावः। २ पवित्रीकरणम्। हेठति। (हेठ् हेट्)।

हेड्—भ्वा, प। वेष्टनम्।

हेडति। जिहेड। हेडिता। णिच् हिड़यति। अजीहिडत्, घटादिः। कर्मणि, अहिडि, अहीडि, अहेडि। हेल इत्येके। हेलति।

हेड़—हीड़, भ्वा, आ। अनादरः।

हेडते। हीडते। अयं गत्यर्थोऽपि। हेडते शीलसम्पन्नो बान्धवानपि तान् कविः, कवि १११।

हेठ्—(हेठ्, खच) क्रया, प।

भूतप्रादुर्भावः। हेठ्नाति। हेठ्नाति। हेठ्नाति, कौ १६८।

हेष्—क्रेष्, हेषृ, क्रेषृ, (रेषृ) भ्वा, आ।

अश्वकर्त्तृकशब्दः। हेषा। हेषते। क्रेषते। जिहेषे। हया जिहेषिरे, भ १४, ५। मा १७, ३१। हेषिता। अहेषिष्ट। हेषयति। अजिहेषत्। क्रेषा।

हेषा। होड्-(हुड्, हेड्) हौड् (क्रुड्)।

क्रु—क्रुङ्, अदा, आ। अपनयनम्।

अपक्रुवः। चौर्य्यम्, वो। देवदत्ताय क्रुते, पा १, ४, ३४। क्रुवाते। क्रुवते। क्रुवीत। अक्रुत। अक्रुवाताम्। अक्रुवत। जुक्रुवे। क्रोता। क्रोष्यते। क्रोषीष्ट। अक्रोष्ट। अक्रोषाताम्। अक्रोषत। यमस्याक्रोष्ट विक्रमम्, भ १५, ८८। जुक्रूषते। जोक्रूयते। जोक्रोति। क्रावयति। क्रुत्वा। ०क्रुत्य। क्रुतः। क्रुतिः। क्रवनम्। क्रवः। क्रोतुम्। अप—अपक्रवः। अपलापः। गोपनम्। गुणानपक्रुषेऽस्माकम्, भ ५, ४४। अपक्रुवानस्य जनाय निजा मधीरताम्, नै १, ४९। नि—अपक्रवः। अपनयनम्। अग्रन्न निक्रुवानोऽसौ सीतायै, भ ८, ३४। विभवमदेन निक्रुतक्रीः, भ १०, ३९।

क्लस् (क्लस्)।

क्रग्—क्लग्, क्रगे, क्लगे (षगे)।

श्वा, प। संवरणम्। आच्छादनम्। क्रगति। क्लगति। जक्राग। क्रगिता। (ए) अक्रगीत्, अक्लगीत्। क्रगयति, क्लगयति, घटादौ।

क्रप् (क्लेप्)।

क्रस्—(तुस्) भ्वा, प। शब्दः।

२ क्रासः। अल्पीभावः। क्रसति। आयु क्रंसति पादशः, मनु १, ८३। जक्रास। जक्रसतुः। क्रसिता। अक्रसीत्, अक्रासीत्। क्रासयति। अजिक्रसत्। एकैकं क्रासयेत् पिण्डं कृष्णे शुक्ले च वर्द्धयेत्, मनु ११, २१९। क्रसितं स्मरभाषितम्, भ १०, ९। क्रस्सम्।

क्राद्—भ्वा, आ। अव्यक्तशब्दः।

वाद्यादिघोषः। क्रादते दुन्दुभिः। जक्रादे। जक्रादे पटहै र्भृशम्, भ १४, ४। क्रादिता। अक्रादिष्ट। क्रादः। क्रदः।

क्री—क्ला, प। लज्जा।

जिक्रेति। जिक्रीतः। जिक्रियति। जिक्रेष्यतिष्ठन् यदि तातवाक्ये, भ ३, ५३। जिक्रेति नीचसङ्गेभ्यः, कवि ५८। जिक्रीयात्। अजिक्रेत्। अजिक्रीताम्। अजिक्रयुः। जिक्रयाञ्चकार, पा ३, १, ३९। जिक्राय। जिक्रियतुः। जिक्रियिथ, जिक्रेथ। न विभाय न जिक्राय, भ ५, १०२। क्रेता। क्रेष्यति। क्रीयात्। अक्रैषीत्। अक्रैष्टाम्। अक्रैषुः। जिक्रीषति। जेक्रीयते। जेक्रेति। क्रेपयति, पा ७, ३, ३६। अजिक्रिपत्। क्रीत्वा। ०क्रीय। क्रीतः, क्रीणः। क्रीतिः। क्रयणम्। क्रीः। क्रेतुम्। क्रीणा च हृष्टा च बभाण भैमी, नै ३, ६७।

क्रीङ्—भ्वा, प। लज्जा। क्रीङ्कति।

क्रुड्—क्रूड्, हौड्, क्रौड्,

क्रुडृ, भ्वा, आ। गतिः। क्रोडते। क्रूडते।

क्रेप्—क्रेपृ, भ्वा, आ। गतिः।

क्रेषृ (हेषृ)।

क्रौड् (क्रुड्) क्लग् (क्रग्)।

क्लप्—'क्रप्'—चु, प। कथनम्।

क्लस्—(तुस) भ्वा, प। शब्दः।

क्लाद्—क्लादी, भ्वा, आ। १सुखम्।

अक्लादः। २अव्यक्तशब्दः। क्लादते। जक्लादे। क्लादिता। अक्लादिष्ट। णिच् क्लादयति। अजिक्लदत्। वने तं न त्व-

जिह्वदत्, भ ६, २२। ह्लादित्वा। ०ह्लाद्य। (ई) ह्लवः, पा ६, ४, ९५। ह्लादनम्। ह्लादः। अह्लादः।

ह्वल्—ह्लल्, भ्वा, प। चलनम्।

ह्वलति। ह्लालति। प्राह्वलत् क्षितिमण्डलम्, भ १७, १००। जह्वाल। जह्वलतुः। ह्वलिता। अह्वालीत्। ह्वलयति, ह्वालयति, प्रह्वलयति। ह्ललयति, ह्लालयति, प्रह्ललयति। विह्वलो ह्वलयन् भुवम्, भ ६, ४५।

ह्वृ—भ्वा, प। कौटिल्यम्।

वक्रीकरणम्। ह्वरति। जह्वार। जह्वरतुः। जह्वर्थ। ह्वर्त्ता। ह्वरिष्यति। ह्वर्य्यात्, पा ७, ४, २९। अह्वार्षीत्। अह्वार्ष्टाम्। जुह्वर्षति। जाह्वर्य्यते। जाह्वर्त्ति। ह्वारयति। अजिह्वरत्।

'ह्वृ'—क्रया, प। हूर्च्छनम्।

कौटिल्यम्। ह्वृणातीति कश्चित्।

ह्वे—ह्वेञ्, भ्वा, उ। १स्पर्द्धा।

पराभिभवेच्छा। आह्वानम्। २शब्दः। लट् ह्वयति। ०ते। लिट् जुहाव। जुहोथ, जुहविथ। जुहुवे, पा ६, ८, ३३। तां पार्वतीति नाम्ना जुहाव, कु १,२६। लुट् ह्वाता। स्रृट् ह्वास्यति। ०ते। आशिषि, हूयात्। ह्वासीष्ट। लुङ् अह्वत्, पा ३, १, ५३। अह्वत, अह्वास्त, पा ३, १, ५४। कर्मणि, हूयते। अह्वायिषाताम्, अह्वासाताम्। सन् जुहूर्षति। ०ते। यङ् जोहूयते। जोहवीति, जोहोति, पा ६, १, ३३। णिच् ह्वाययति, पा ७, ३, ३७। अजूहवत्, पा ६, १, ३२। जुहावयिषति। हूत्वा। ०हूय। हूतिः। ह्वानम्। ह्वातुम्। ह्वाता। ह्वायकः। ह्वातव्यः। आह्वः। आह्वः। आ—स्पर्द्धा। पराभिभवेच्छा। शत्रु माह्वयते, पा १, ३, ३१। (आह्वानम्) पुत्र माह्वयति। रैवतक सेनापति स्तावदाहूयताम्, शकु २, ३१। शत्रूनाह्वास्त चाहवे, भ १५, २८। उच्चैरसौ राघव माह्वत, भ २, ५१। सर्पास्त्र माजुहाव, भ १४, ४४। उप, नि, वि, सम्—कथनम्। आह्वानम्। उपह्वयते, पा १, ३, ३०। यद्वादुपाह्वये प्रीतं संह्वयस्व विवक्षितम्, भ ८, १७। प्र—विनयः। तदौद्धत्यं क्वापि व्रजति विनयः प्रह्वयति माम्, उत्तर १४६।

सम्पूर्णम्।

---

ग्रन्थारम्भे य मीशं बहुविधविपदाशङ्कया संश्रितोऽहं
मोऽयं सर्वान्तरस्थः सुकृतिपरवशः श्रद्धयाराधितो मे।
अस्य ग्रन्थस्य पारं तट मिव जलधे र्मा मनैषीद् दयावान्
ग्रन्थान्ते तं सहस्रं परिचितकरुणं लब्धकामो नमामि॥

श्राण्डिल्यगोत्रसम्भूतरामरत्नस्य धीमतः।
तृतीयेन तनूजेन हरिनाभिनिवासिना॥
रामतारणविप्रेण बालकानां हितैषिणा।
नागाङ्काभ्रमिते शाके संस्कृतो गणदर्पणः॥

---

# पाणिनीयो धातुपाठः ।

—•:•:•—

## अथ भूवादयः परस्मैपदिनः ।

(भू सत्तायाम् ।) (१)
अक अग कुटिलायां गतौ।
अक्नू व्याप्तौ ।
अगि इगि तगि त्वगि मगि रगि रिगि लगि लिगि वगि वल्ग अगि श्रगि गत्यर्थाः ।
अज गतिक्षेपणयोः ।
अट पट गतौ ।
अड उद्यमे ।
अड्ड अट्ट अभियोगे ।
अण कण क्वण धण ध्वण भण भ्वण मण रण वण व्रण शब्दार्थाः ।
अत सातत्यगमने ।
अति अदि बन्धने। (२)
अन्चु गतिपूजनयोः ।
अभ्र मभ्र वभ्र गत्यर्थाः ।
अम गतिशब्दसंभक्तिषु ।
अर्घ मूल्ये ।
अर्व अर्ब हिंसायाम् ।
अर्च पूजायाम् ।
अर्ज अर्ज अर्जने ।
अर्द गतियाचनपीड़ासु ।
अर्व गतौ ।
अर्व अर्ब अर्ब हिंसायाम् ।
अर्ह पूजायाम् ।
अल भूषणपर्याप्तिवारणेषु ।
अव रक्षण गति कान्ति प्रीति तृप्त्यवगमप्रवेश-श्रवणस्वाम्यर्थ-याचन-क्रियेच्छादीप्त्यवाप्त्यालिङ्गनहिंसादानभागवृद्धिषु ।
आङ्क्ष आयामे ।
इ गतौ । केचिदिमं दीर्घं पठन्ति ।
इख इंख ईंख उख उंख णख णंख मख मंख रख रंख लख लंख वख वंख त्रख त्रिंख गत्यर्थाः । रिख श्रिंख इति केचित् ।
इट किट कटी गतौ। (३)
इदि परमैश्वर्ये ।
इवि व्याप्तौ ।
ईर्ष्य ईर्ष्य सूर्ष्य ईर्ष्यार्थाः ।
ईष उञ्छे ।
उच्च सेचने ।
उक्ष उञ्छे । (४)
उक्षी विवासे । (५)
उठ रुठ लुठ उपघाते । ऊठ इत्येके ।
उर्वी तुर्वी थुर्वी दुर्वी धुर्वी हिंसार्थाः । जुर्वी इत्येके ।
उष दाहे ।
उहिर् तुहिर् दुहिर् अर्दने ।
ऊष रुजायाम् ।
ऋ गतिप्रापणयोः ।
एजृ काम्पने ।
ओखृ द्राखृ धाखृ राखृ लाखृ शोषणालमर्थयोः ।
ओणृ अपनयने ।

(१) भू सत्ताया मित्यस्य भूवादियोगसिद्धार्थं मादौ पाठः । एव मन्यत्रापि बोध्यम् ।

(२) अतीति तान्तं द्रविड़ाः पठन्ति । आर्य्यादय स्तु दान्त मिति धनपालः । उभय मपि मैत्रेयस्वामिकाश्यपादयः । अति अदि इदि विदि गड़ि पञ्चैते न तिङ्विषया इति काश्यपादयः । अन्ये तु तिङ मपीच्छन्ति ।

(३) ईकारः स्वोदितो निष्ठाया मिण्निषेधार्थः । केचित्तु इदितं मत्वा नुमि कृते कण्टतीत्यादि वदन्ति । को ५३ ।

(४) उञ्छः कणश आदानम् । कणिशाद्यर्जनं शिल मिति यादवः ।

(५) विवासः समाप्तिः । प्रायेणायं विपूर्वः ।

कखे हसने ।
कगी नोचते । (६)
कटे वर्षावरणयोः । चटे इत्येके ।
कठ क्रुच्छ्रजीवने ।
कड मदे । कडि इत्येके ।
कडड कट्ड कार्कश्ये ।
कण रण गतौ ।
कदि क्रदि क्लदि आह्वाने, रोदने च ।
कनि दीप्तिकान्तिगतिषु ।
कम्ब खम्ब गम्ब घम्ब चम्ब तम्ब नम्ब पम्ब बम्ब मम्ब शम्ब षम्ब सम्ब हिंसायाम् ।
कर्ज व्ययने ।
कर्द कुत्सिते शब्दे । कुत्सितकुत्सिशब्दे ।
कर्ब खर्ब गर्ब घर्ब चर्ब पर्ब बर्ब मर्ब लर्ब शर्ब षर्ब गतौ ।
कर्व खर्व गर्व दर्पे ।
कश शब्दे ।
कष खष जष झष मष रिष रुष वष शष शिष हिंसार्थाः ।
कस गतौ ।
काङ्क्षि माङ्क्षि वाङ्क्षि काङ्क्षायाम् ।
किट खिट त्रासे ।
कित निवासे, रोगापनयने च ।
कील बन्धने ।
कुच शब्दे तारे ।
कुच सम्पर्चनकौटिल्यप्रतिष्टम्भविलेखनेषु । अयं ज्वलादिः ।
कुन्च क्रुन्च कौटिल्याल्पीभावयोः ।
कुज खुज स्तेयकरणे ।
कुटि वैकल्ये । कुडि च ।
कुठि प्रतिघाते ।
कुधि पुधि मथि लुथि हिंसासंक्लेशनयोः ।
कुवि आच्छादने ।
कुल संस्त्याने, बन्धुषु च । (७)
कूज अव्यक्ते शब्दे ।
कूल आवरणे ।
कृवि हिंसाकरणगतिषु ।
कृष विलेखने ।
केल्ट क्ष्वेल्ट खेल्ट चेल्ट वेल्ट वेल्ल चलने ।
कै गै शब्दे ।
कैर हूर्च्छने । (८)
क्रथ क्लथ कथ श्रथ हिंसार्थाः । क्रथ इत्येके ।
क्रमु पादविक्षेपे ।
क्रौडृ विहारे ।
क्रुश आह्वाने, रोदने च ।
क्लिदि परिदेवने ।
क्वथे निष्पाके ।
क्षर सञ्चलने ।
क्षि क्षये । (९)
क्षीज अव्यक्तशब्दे ।
क्षीवु क्षेवु निरसने । क्षिवु इत्येके ।
क्षै जै षै क्षये ।
खज मन्थे ।
खजि गतिवैकल्ये ।
खट काङ्क्षायाम् ।
खद स्थैर्यहिंसाभक्षणेषु ।
खर्ज पूजने च ।
खर्द दन्दशूके । (१०)
खल सञ्चये ।
खाट भक्षणे ।
खे खदने । (११)
खोर्च खोल्ट गतिप्रतिघाते ।
गज मदने च । क्वात् शब्दे ।
गड सेचने ।
गडि वदनैकदेशे ।
गद व्यक्तायां वाचि ।
गर्ज शब्दे ।
गर्द नर्द शब्दे ।
गम्ल्ट गतौ ।

(६) नोचते इति अस्य अय मर्थ इति विशिष्य नोचते क्रियासामान्यार्थत्वात् । क्रियामात्रेऽनेकार्थत्वादिति केचित् ।

(७) संस्त्यानं सङ्घातः । बन्धुशब्देन तद्व्यापारः । सम्बन्धोऽभिधीयते ।

(८) हूर्च्छनं कौटिल्यम् । (९) अकर्मकः । अन्तर्भावितण्यर्थ स्तु सकर्मकः ।

(१०) दंशहिंसादिरूपायां दन्दशूकक्रियाया मित्यर्थः । दंशने एवन्तु नोक्तं ताच्छील्यार्थस्य ग्रहो न स्या दिति प्रदीपः । (११) खदनं स्थैर्यम्, हिंसनञ्च ।

गल अदने ।
गुज गजि गज गजि मुज मुजि शब्दार्थाः ।
गुजि अव्यक्ते शब्दे ।
गुपू रक्षणे ।
गुर्वी उद्यमने ।
गृ घृ सेचने ।
ग्रुचु ग्लुचु स्तेयकरणे । स्लुचु गता वपि ।
ग्लुन्चु गतौ ।
ग्लै ग्लै हर्षक्षये । (१२)
घघ हसने ।
घस्लृ अदने ।
घुषिर् विशब्दने । (१३)
घृषु सङ्घर्षे ।
घोर्ट्ट गतिचातुर्य्ये । घोर्ट्ट इत्येके ।
घ्रा गन्धोपादाने ।
चक तृप्तौ ।
चण शण अण दाने । शण गतावित्यन्ये ।
चदि आह्लादे ।
चन हिंसायाम् ।
चन्चु तन्चु लन्चु स्रुचु स्रन्चु स्लुचु स्लुन्चु वन्चु गत्यर्थाः ।
चप सान्त्वने ।
चमु क्षमु जमु झमु अदने । जिमु इत्येके ।
चर गतिभक्षणयोः ।
चर्च झर्च परिभाषण-तर्जनयोः ।
चर्व अदने ।
चल कम्पने ।
चह परिकल्कने । (१४)
चिट परप्रेष्ये ।
चिती संज्ञाने ।
चिल्ल शैथिल्ये, भावकरणे च ।
चुटी अल्पीभावे ।
चुड्ड चुड्ड भावकरणे । (१५)
चुड़ी अल्पीभावे ।
चुप मन्दायां गतौ ।
चुंब वक्त्रसंयोगे ।
चुल्ल भावकरणे । (१६)
चूष पाने ।
च्युतिर् आसेचने । (१७)
च्युतिर् इत्येके ।
जज जजि युद्धे ।
जट झट संघाते ।
जप जल्प व्यक्तायां वाचि ।
जप मानसे च । (१८)
जर्ज जर्त्स झर्भ परिभाषणतर्जनयोः ।
जल घातने । (१९)
जि जये । (२०)
जि ज्रि अभिभवे । (२१)
जिवि दिवि धिवि हिवि प्रीणनार्थाः ।
जिषु मिषु विषु सेचने ।
जीव प्राणधारणे ।
जु वेगेन गतौ ।
जुगि युगि वगि वर्जने ।
ज्वर रोगे ।
ज्वल दीप्तौ ।
टल ट्रल वैकल्ये । वैक्लव्ये इति पाठान्तरम् ।
ढुन्ढ अन्वेषणे ।
णट नृतौ ।
णद अव्यक्ते शब्दे ।
णम प्रह्वत्वे शब्दे च ।
णल गन्धे । बन्धने इत्येके ।
णिच्च चुम्बने ।
णिदि कुत्सायाम् । (२२)
णिश समाधौ ।
तक हसने ।

(१२) हर्षक्षयो धातुत्रयः । (१३) विशब्दनं प्रतिज्ञानम् । ततोऽन्यस्मिन्नर्थे इत्येके । शब्दे इत्यन्ये पेठुः । (१४) परिकल्कनं दम्भः, शाठ्यञ्च ।
(१५) भावकरण मभिप्रायसूचनम् ।
(१६) भावकरण मभिप्रायाविष्कारः । हावकरण मिति वोपदेवः ।
(१७) सेचन मार्द्रीकरणम् । आर्द्रीषदर्थेऽभिव्याप्तौ च ।
(१८) मानसं हृदयोच्चारणम् । (१९) घातनं तैक्ष्ण्यम् ।
(२०) जय उत्कर्षप्राप्तिः । अकर्मकोऽयम् ।
(२१) अभिभवो न्यूनीकरणं न्यूनीभवनञ्च । आद्ये सकर्मकः, द्वितीयेऽकर्मकः । अध्ययनात् पराजयते, शत्रुं पराजयते । (२२) णोपदेशो वैचित्र्यार्थः । वा निंशनिच्चनिन्दा मिति विकल्प इति प्रदीपः ।

तक्कि क्लेच्छजीवने ।
तच्छ त्वचने । (२३)
तच्छू त्वच्छू तनूकरणे ।
तट उच्छाये ।
तप सन्तापे ।
तर्ज भर्त्सने ।
तर्द हिंसायाम् ।
त्सर छद्मगतौ ।
तिल गतौ । तिल्ल इत्येके ।
तुज हिंसायाम् ।
तुजि पालने वलने च ।
तुड तोड़ने । तूड इत्येके ।
तुप तुन्प त्रुप चुन्प हिंसार्थाः ।
तुफ तुन्फ त्रफ चुन्फ हिंसार्थाः ।
तुवि लुवि अर्दने ।
तुस रस क्वस च्वस शब्दे ।
तूल निष्कर्षे । (२४)
तूष तुष्टौ ।
तृच्छ तृच्छ णच्छ गतौ ।
तृ प्लवनतरणयोः ।
तेज पालने ।
त्यज हानौ ।
त्रदि चेष्टायाम् ।
त्वगि कम्पने ।
दघि पालनवर्जनयोः ।
दन्श दशने ।
दल विशरणे ।
दह भस्मीकरणे ।
दाण दाने ।
दाप लवने ।
दु द्रु गतौ ।
दृशिर् प्रेक्षणे ।
दृह दृहि बृहि बृद्धौ । दृहि शब्दे च । बृहिर् इत्येके ।
दैप शोधने ।
द्यै न्यक्करणे ।
द्रम हम्म मीम्स गतौ । मीम्स शब्दे च ।
द्रान्धि घ्रान्धि ध्वान्धि घोरवाग्निते च । चात् काङ्क्षायाम् ।
द्रै स्वप्ने ।
द्रु स्खगलानादरयोः ।
धवि रवि रिवि गत्यर्थाः ।
धूप सन्तापे ।
धृज धृजि ध्रज ध्रजि ध्वज ध्वजि गतौ ।
धेट पाने ।
धा शब्दाग्निसंयोगयोः ।
ध्यै चिन्तायाम् ।
ध्रन शब्दे । (२५)
ध्रु स्थैर्ये । अयं कुटादौ गत्यर्थोऽपि ।
ध्रै तृप्तौ ।
ध्वन स्वन शब्दे ।
ध्वृ वृच्छने । (२६)
(टु) नदि समृद्धौ ।
नील वर्णे । णील इति कातन्त्राः ।
पच्च परिग्रहे ।
पठ व्यक्तायां वाचि ।
पत्लृ गतौ ।
पथे गतौ ।
पर्प गतौ ।
पल गतौ ।
पर्व पुर्व मर्व पूरणे ।
पा पाने ।
पिट शब्दसंघातयोः ।
पिठ हिंसासंक्लेशनयोः ।
पिवि मिवि णिवि सेचने । सेवने इति तरङ्गिण्याम् ।
पिस्ट पेस्ट गतौ ।
पील प्रतिष्टम्भे । (२७)
पीव मीव तीव नीव स्थौल्ये ।
पुल महत्त्वे ।
पुष पुष्टौ ।
पूल सङ्घाते ।
पूष वृद्धौ ।
पृषु वृषु सेचनहिंसाक्लेशनेषु ।
पेलृ फेलृ भेलृ गतौ । षेलृ श्वलृ इत्येके ।
पै वै शोषणे ।
पैण् लैण् गतिप्रेरणश्लेषणेषु ।
पौट् बन्धे ।

(२३) त्वचनं संवरणं त्वचो ग्रहणञ्च । परिग्रह इत्येके ।
(२४) निष्कर्षः निष्कोषणम् । तच्चान्तर्गतस्य बहिर्निःसारणम् ।
(२५) उपदेशे नान्तोऽयम् । रसाभ्यामिति णत्वम् । नोपदेशफलन्तु यङ्लुकि दन्ध्रन्ति ।
(२६) वृच्छनं कौटिल्यम् । (२७) प्रतिष्टम्भो रोधः ।

प्रुषु प्लुषु स्निषु स्निषु दाहे।
फक्क नीचैर्गतौ। (२८)
फण गतौ निःस्नेहे च।
फल निष्पत्तौ।
(ञि) फला विशरणे।
फुल्ल विकसने।
बद स्थैर्य्ये।
बल प्राणने, धान्यावरोधने च।
बिट शब्दे।
बिट आक्रोशे।
बिदि अवयवे। भिदि इति पाठान्तरम्।
बुक्क भषणे। (२९)
बुध अवगमने।
भट भृतौ।
भर्व हिंसायाम्। भर्भ इत्येके।
भष भर्त्सने। (३०)
भूष अलङ्कारे।
भ्रम् चलने।
मघि मण्डने।
मडि भूषायाम्।
मथे विलोडने। (३१)
मन्थ विलोडने।
मर्ब मदनिवासयोः।
मव बन्धने।
मव्य बन्धने।
मश मिश शब्दे, रोषकृते च।
मह पूजायाम्।
मिह सेचने।
मील श्मील स्मील स्मील निमेषणे। (३२)
मुक्ष प्रमादे।
मुट मर्दने।
मुडि पुडि खण्डने।
मुण्ड मर्दने।
मुर्वी बन्धने।
मूर्च्छा मोहसमुच्छ्रययोः।
मूल प्रतिष्ठायाम्।
मूष स्तेये। मुष इत्येके।
मूष हिंसायाम्। जूष भूष इत्येके।
मृषु सेचनसहनयोः।
म्ना अभ्यासे।
म्रच्च संघाते। मृच्च इत्येके।
म्रेड् उन्मादे।
म्लेच्छ अव्यक्ते शब्दे।
म्लेट् उन्मादे।
यभ मैथुने। जभ च।
यम उपरमे।
यौट् सम्बन्धे।
रक्ष पालने।
रच्च रोषे। संघाते इत्येके।
रगे शङ्कायाम्।
रट रठ परिभाषणे।
रद विलेखने। (३३)
रप लप व्यक्तायां वाचि।
रफ रफि गतौ।
रह त्यागे।
रहि गतौ।
रुटि लुटि स्तेये।
रुठ परिभाषणे।
रुठि लुठि स्तेये गतौ च।
रुडि लुड़ि स्तेये इति कश्चित्।
रुह बीजजन्मनि, प्रादुर्भावे च।
रूष लूष भूषायाम्।
रै शब्दे।
रोड् लोड् उन्मादे।
रोड् अनादरे।
लगे सङ्गे।
लघि शोषणे गतौ च।
लक्ष लाक्षि लक्षणे।
लज लजि भर्त्सने।
लट बाल्ये।
लड विलासे।
लस श्लेषणक्रीड़नयोः।
लाज लाजि भर्त्सने च।
लुट विलोडने।
लुठि आलस्ये प्रतिघाते च।
लुड लुल विलोड़ने।
लुन्च अपनयने। लुन्चु इत्येके।
वच्च रोषे। संघाते इत्येके।
वज व्रज गतौ।
वट वेष्टने।

(२८) नीचैर्गति मन्दगमन मसद्व्यवहार च।
(२९) भषणं श्वरवः। (३०) भर्त्सन मिह श्व-रवः।
(३१) विलोड़नं प्रतिघातः।
(३२) निमेषणं सङ्कोचः पक्ष्मभि श्चक्षुरावरणम्। (३३) विलेखनं भेदः।

वट भट परिभाषणे (३४)
वटि विभाजने ।
वठ स्थौल्ये ।
वद व्यक्तायां वाचि ।
वन षण सम्भक्तौ ।
वनुच नोच्यते ।
वनु व्यापारहिंसयो रित्येके ।
(ट्) वम उद्गिरणे ।
वस निवासे ।
वाछि इच्छायाम् ।
विट शब्दे ।
विट्; आक्रोशे ।
शट रुजाविशरणगत्यवसादनेषु ।
शठ कैतवहिंसासंक्लेशनेषु ।
शदॄ गतिग्लानिशातनेषु ।
शल इल गतौ ।
शव गतौ । दन्त्योष्ठान्तः ।
शश प्लुतगतौ ।
शस्तु हिंसायाम् ।
शन्स्तु स्तुतौ । (३५)
शाखृ श्लाखृ व्याप्तौ ।
शिघि आघ्राणे ।
शिट षिट अनादरे ।
शील समाधौ ।
शुक गतौ ।
शुच शोके ।
शुच्य चुच्य अभिषवे (३६)
शुठ शुठि प्रतिघाते ।
शुठि शोषणे ।
शुडि खण्डनविमर्दनयोः ।
शुन्ध शुद्धौ ।
शुभ शुन्भ भाषणे । भासने चेत्येके । हिंसाया मित्यन्ये ।
शूल रुजायाम्, संघोषे च । संघाते चेत्येके ।
शूष प्रसवे । षूष इत्येके । स्तूष इति च ।
शै पाके ।
शोणृ वर्णगत्योः ।
शोटृ गर्वे ।
श्युतिर् क्षरणे । यकाररहितोऽप्ययम् । (३७)
श्रु अवणे, गतौ च ।
श्रोणृ संघाते । स्रोणृ च ।
श्वल श्वल्ल आशुगमने ।
(टु श्वि) श्वि गतिवृद्ध्योः ।
षगे षगे क्रगे क्लगे संवरणे ।
षञ्ज सङ्गे ।
षट अवयवे ।
षदॢ विशरणगत्यवसादनेषु ।
षप समवाये । (३८)
षम ष्टम अवैकल्ये ।
षल गतौ ।
षस्ज गतौ ।
षिधु गत्याम् ।
षिधू शास्त्रे माङ्गल्ये च । (३९)
षिभु षिन्भु हिंसायाम् ।
षु प्रसवैश्वर्ययोः । (४०)
षृभु षृन्भु हिंसायाम् ।
ष्टक प्रतिघाते ।
ष्टन वन शब्दे ।
ष्टै वेष्टने शोभायाञ्च ।
ष्ठा गतिनिवृत्तौ ।
ष्ठिव निरसने ।
ष्णै वेष्टने ।
(ञ्) ष्विदा अव्यक्ते शब्दे ।
ञिच्विडा ञिच्विदा इत्येके ।
सुभ सुन्भ भासने, हिंसायाञ्च । भाषणे इत्येके ।
सूर्च्छ आदरे । (४१)
सॄ गतौ ।
सॄप्लॄ गतौ ।
स्कन्दिर् गतिशोषणयोः ।
स्खल सञ्चलने ।
स्तै ष्टै शब्दसंघातयोः ।

(३४) वट वेष्टने भट भृता विति पठितयोः परिभाषणे मित्त्वार्थोऽनुवादः ।
(३५) अयं दुर्गता वपीति दुर्गः । नृशंसो घातुक इत्यमरः ।
(३६) अभिषवः अवयवानां शिथिलीकरणम्, सुरायाः सन्धानं वा, स्नानञ्च ।
(३७ दन्त्यादि रय मुपदेशे इष्यते इति प्रदीपः ।
(३८) समवायः सम्बन्धः, सम्यगवबोधो वा । (३९) शास्त्रं शासनम् ।
(४०) प्रसवोऽभ्यनुज्ञानम् ।
(४१) अनादरे इति क्वाचित्कोऽपपाठः । अवज्ञावहेल मस्सूर्च्छण मित्यमरः ।

स्थल स्थाने ।
स्नै ष्णै वेष्टने शोभायाञ्च ।
स्फुर्च्छा विस्तृतौ ।
(टुओ) स्फुर्जा वज्रनिर्घोषे ।
स्फुटिर् विशरणे । स्फुटि इत्यपि ।
स्मृ चिन्तायाम् ।
स्यमु शब्दे ।
स्रुमु गतौ ।
स्वृ शब्दोपतापयोः ।
हट दीप्तौ ।
हठ प्रसृतिशठत्वयोः । बलात्कारे चेत्येके ।
हय गतौ क्षमे भर्त्सिशब्दयो श्चेत्येके ।
हर्य गतिकान्त्योः ।
हल विलेखने ।
हसे हसने ।
हिट आक्रोशे ।
हुड् हुड् होड् गतौ ।
हुर्च्छा कौटिल्ये ।
हृ संवरणे ।
हेषु अलीके ।
हेट बाधे ।
हेठ विबाधायाम् ।
हेड वेष्टने ।
ह्रीक् लज्जायाम् ।
ह्रु कौटिल्ये ।
ह्वल ह्वल चलने ।

इति शव्विकरणा भूवादयः परस्मैपदिनः समाप्ताः ।

अथ भूवादय आत्मनेपदिनः ।

अकि लक्षणे ।
अधि मधि वधि गत्याक्षेपे । गत्यारम्भे चेत्येके । मधि कैतवे च ।
अट्ट अट्ट अतिक्रमहिंसयोः ।
अठि गतौ ।
अबि रबि लबि शब्दे ।
अभि शब्दे ।
अय चय तय णय पय मय वय गतौ ।
अर्हि गतौ ।
ईक्ष दर्शने ।
ईज गतिकुत्सनयोः ।
ईजि इत्येके ।
ईष गतिहिंसादर्शनेषु ।
ईह चेष्टायाम् ।
उङ कुङ खुङ गुङ घुङ डुङ शब्दे । भुङ बुङ इत्येके ।
उर्दृ माने क्रीड़ायाञ्च ।
ऊयी तन्तुसन्ताने ।
ऊह वितर्के ।
ऋज गतिस्थानार्जनोर्जनेषु ।

ऋजि भृजी भर्जने ।
एजृ भ्राजृ भ्रेजृ दीप्तौ । रेज् इत्येके । (१)
एठ हेठ विबाधायाम् । (२)
एध वृद्धौ ।
एषृ जेषृ णेषृ प्रेषृ गतौ ।
कक लौल्ये । (३)
ककि टिक टीक ढौक तिक तीक त्वकि त्वीक बकि मस्क वस्क ष्वक श्वकि गत्यर्थाः ।
कच बन्धने ।
कचि काचि दीप्तिबन्धनयोः ।
कठि मठि शोके । (४)
कडि मदे ।
कथि श्लाघायाम् ।
कत्थ श्लाघायाम् ।
कदि क्रदि क्लदि वैक्लव्ये, वैकल्ये इत्येके । कद क्रद क्लद इत्यन्ये ।
कपि चलने ।
कबृ वर्णे ।
कमु कान्तौ ।
कल शब्दसंख्यानयोः ।
कस्र अव्यक्ते शब्दे । (५)
कास्रृ दीप्तौ । दन्त्यान्तोऽपि कास्र शब्दकुत्सायाम् ।

(१) इह भ्राजृ इत्यस्य पाठो व्रस्चादिषत्वाभावार्थः । तत्र राजिसाहचर्य्यात् फणादेरेव ग्रहणम् । कौ ८७ । (२) विबाधा शाठ्यम् ।
(३) लौल्यं गर्व आपल्य च । (४) शोक इहाध्यानम् ।
(५) अव्यक्ते इति स्वामी । अव्यक्त स्फूर्णीभावः ।

कुक्क हक आदाने ।
कुडि दाहे ।
कुर्द खुर्द गुर्द गुद क्रीड़ायामेव । (६)
कूपृ सामर्थ्ये ।
केपृ गेपृ ग्लेपृ कम्पने, गतौ च ।
केह क्लेह खेह गेह ग्लेह पेह मेह म्लेह शेह षेह सेचने ।
क्रूयौ शब्दे, छन्दे च ।
क्रप क्रपायां गतौ ।
क्लिदि परिदेवने (७)
क्लीह अधार्ढ्ये ।
क्लेश अव्यक्तायां वाचि । बाधनेऽपि ।
क्वजि गतिदानयोः ।
क्ष्मूष सहने ।
क्षीह मदे ।
क्षुभ संचलने ।
क्ष्मायौ विधूनने ।
खडि खण्डे ।
गर्ह गल्ह कुत्सायाम् ।
गाङ गतौ ।
गाधृ प्रतिष्ठालिप्सयोर्ग्रन्थे च ।
गाह्ल विलोडने ।
गुप गोपने । (८)
गर्ह्ल गर्हणे ग्लहे च ।
गेषृ अन्विच्छायाम् । (९) ग्लेषृ इत्येके ।
गोष्ट लोष्ट संघाते ।
ग्रथि कौटिल्ये ।
ग्रसु ग्लसु अदने ।
ग्लेपृ दैन्ये ।
घट चेष्टायाम् ।
घट्ट चलने ।
घिणि घुणि घृणि ग्रहणे ।
घुट परिवर्त्तने ।
घुण घूर्ण भ्रमणे ।
घृषि कान्तिकरणे । घर्षि इत्येके ।
चक टक्की ।
चड़ि कोपे ।
चेष्ट चेष्टायाम् ।
च्युङ ज्युङ प्रुङ प्लुङ गतौ ।
जभी जृभि गात्रविनामे ।
जुल्ल युल्ल भासने ।
जेह्व वाह्व वेह्व प्रयत्ने । (१०) जेहति गत्यर्थोऽपि ।
ज्योङ नियमव्रतादेशोपनीतिषु ।
डीङ विहायसा गतौ ।
णस कौटिल्ये ।
णास रास शब्दे । रास इति दुर्गः ।
तडि ताडने ।
ताजृ सन्तानपालनयोः ।
तिज निशाने, क्षमायाञ्च ।
तिपृ तेपृ ष्टिपृ ष्टेपृ चरणार्थाः । तेपृ कम्पने च ।
तुडि तोड़ने । (११)
तुभ णभ हिंसायाम् । आद्योऽभावेऽपि ।
तेह देह देवने ।
त्रपूष लज्जायाम् ।
त्रैङ पालने ।
(ञि) त्वरा संभ्रमे (१२)
दक्ष वृद्धौ, शीघ्रार्थे च ।
दक्ष गतिहिंसनयोः (१३)
दद दाने ।
दध धारणे ।
दय दानगतिरक्षणहिंसादानेषु ।
दीक्ष मौण्ड्यज्योपनयननियमव्रतादेशेषु ।
देङ रक्षणे ।
द्यु दीप्तौ ।
द्राष्ट राष्ट लाष्ट सामर्थ्ये । घ्राष्ट इत्यपि केचित् ।
द्राङृ घ्राङृ विशरणे ।
द्राह्व निद्राक्षये । निक्षेप इत्येके ।
ध्रेक्क ध्रेक्क शब्दोत्साहयोः । (१४)

(६) क्रीड़ाया मेवेत्येवकारादन्यत्रार्थनिर्देशे नियमोऽनुमीयते इति प्रदीपः ।
(७) परिदेवन मिह शोकः । अयं सकर्मकः ।
(८) गुपे र्निन्दाया मित्यादौ गुपादिभ्यनुबन्धकरणसामर्थ्यात् सन्नन्तादात्मनेपदम् । (९) अन्विच्छा अन्वेषणम् । (१०) बाह्व केवलोष्ठ्यादिः । वैह्व दन्त्योष्ठ्यादिः । उभावप्योष्ठ्यादी इत्येके । दन्त्योष्ठ्यादी इत्यपरे ।
(११) तोड़नं दारणं हिंसन च्च । (१२) आकारोपादानं वैचित्र्यार्थ मिति प्रदीपः ।
(१३) अर्थविशेषे मित्त्वार्थोऽयं मनुवादः । (१४) उत्साहो वृद्धि रौद्धत्य च ।

धुच धिच्च मन्दीपनक्लेशनजीवनेषु ।
धृङ् अवध्वंसने ।
ध्वन्सु भन्सु स्रन्सु अवसंसने। ध्वन्सु गतौ च भ्रन्शु इत्यपि केचित् पेठुः ।
नाथृ नाधृ याच्ञोपतापैश्वर्य्याशीःषु ।
पचि व्यक्तीकरणे ।
पडि गतौ।
पण व्यवहारे स्तुतौ च । पन च । (१५)
पर्द कुत्सिते शब्दे । (१६)
पिडि सङ्घाते ।
पूङ् पवने ।
पूयी विशरणे दुर्गन्धे च ।
पेव्र मेव्र सेवने ।
पेषृ प्रयत्ने ।
(ओ) प्यायी स्थायी वृद्धौ
प्यैङ् वृद्धौ ।
प्रथ प्रख्याने ।
प्रस विस्तारे ।
प्लिह गतौ ।
बध बन्धने ।
बाध आप्लावे । (१७)
बाधृ लोडने ।
भडि परिहासे । (१८)
भदि कल्याणे सुखे च ।
भल भल्ल परिभाषणहिंसादानेषु ।
भाम क्रोधे ।
भाष व्यक्तायां वाचि ।
भास दीप्तौ ।
भिच्च भिक्षायां मलाभे लाभे च ।
भुडि भरणे ।
भ्यस भये ।
टुभ्राज टुभ्राश्र टुभ्रास्र दीप्तौ । द्वौ दन्त्यान्तावपि ।
मकि मण्डने ।
मच मचि कल्कने । (१९)
मचि धारणोच्छ्रायपूजनेषु ।
मदि स्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु ।
मल मल्ल धारणे ।
मान पूजायाम् ।
(ञि) मिदा स्नेहने ।
मुठि पालने ।
मुडि मार्जने ।
मुद हर्षे ।
मूङ् बन्धने ।
मेङ् प्रणिदाने । (२०)
मेषृ रेषृ लेषृ गतौ ।
म्रद मर्दने ।
यती प्रयत्ने ।
रघि लघि गतौ । लघि भोजननिवृत्तावपि ।
रभ राभस्ये ।
रभि शब्दे ।
रमु क्रीड़ायाम् ।
रय गतौ । लय इत्येके ।
रुङ् गतिरेषणयोः । (२१)
रुच दीप्तावभिप्रीतौ च ।
रुट लुट लुठ प्रतिघाते ।
रेक्ष शङ्कायाम् ।
रेभृ शब्दे ।
रेव्र प्लवगतौ । (२२)
रेषृ हेषृ क्ष्वेषृ अव्यक्ते शब्दे । रेषृ हकशब्दे । अपरौ अश्वशब्दे ।
(ङ्) लभष् प्राप्तौ ।
लोक दर्शने ।
लोचृ दर्शने ।
वकि कौटिल्ये ।
वटि एकचर्य्यायाम् (२३)
वठि एकचर्य्यायाम् ।
वडि विभाजने । मडि च ।
वदि अभिवादनस्तुत्योः ।
वर्च दीप्तौ ।
वर्ष स्नेहने । दन्त्योष्ठ्यादिः । पर्ष इत्येके । (२४)

(१५) स्तुता विलेव सम्बध्यते पृथङ्निर्देशात् ।
(१६) कुत्सितशब्दोऽपानशब्दः । (१७) आप्लावः स्नानम् ।
(१८) परिहासः सनिन्दोपालम्भनं परिभाषणम् ।
(१९) कल्कनं दम्भः शाठ्यञ्च । कथने इत्येके ।
(२०) प्रणिदानं विनिमयः प्रत्यर्पणञ्च । (२१) रेषणं हिंसा ।
(२२) प्लवगतिः प्लुतगतिः । (२३) एकचर्य्या असहायगमनम् ।
(२४) दन्त्योष्ठ्यादी । केचित्तु अनयो रोष्ठ्यादित्व माहुः ।

वर्ह वल्ह परिभाषण-हिंसाच्छादनेषु।
वल वल्ल संवरणे, सञ्चरणे च।
वलभ भोजने। दन्त्यौष्ठ्यादिः।
वहि मह्हि हृद्धौ।
विधृ वेधृ याचने।
वृक्ष वरणे।
वृतु वर्त्तने।
वृधु वृद्धौ।
(वृ) वेपृ कम्पने।
वेष्ट वेष्टने।
व्यध भयचलनयोः।
शकि शङ्कायाम्।
शच व्यक्तायां वाचि।
शडि रुजायाम्, संघाते च।
शल चलनसंवरणयोः।
शल्भ कत्थने।
(आङ) शसि इच्छायाम्
शाङ् श्लाघायाम्।
शिक्ष विद्योपादाने।
शीक्ष सेचने। दन्त्यादि रित्येके।
शीभृ कत्थने। चीभृ च।
शुभ दीप्तौ।
शृधु शब्दकुत्सायाम्।
श्वेङ गतौ।
श्रथि शैथिल्ये।
श्रन्थु स्रन्थु प्रमादे।
श्लाघृ कत्थने।
श्लोक संघाते। (२५)
श्वच श्वचि गतौ।
श्वित वर्णे।
श्विदि श्वैत्ये।
षच सेचने, सेवने च।
षस्ज गतौ।
षह मर्षणे।
षूद क्षरणे।
ष्टुच प्रसादे।
ष्टुभु स्तम्भे।
ष्विङ ईषद्धसने।
ष्वन्ज परिष्वङ्गे।
ष्वद ष्वर्द आस्वादने।
(ञि) ष्विदा स्नेहनमोचनयोः। स्नेहनमोहनयो रित्येके। ञिच्विदा इत्येके।
सेक्ल सेक्ल स्वकि अकि श्लकि गतौ।
स्कभि स्टभि प्रतिबन्धे। (२६)
स्कुदि आप्रवणे। (२७)
स्खद स्खदने। (२८)
स्खदि किञ्चिच्चलने।
स्खर्द्ध संघर्षे।
स्फट विकसने।
स्फुडि विकसने।
स्यन्दू स्रवणे।
स्रन्थु विस्रासे।
स्वाद आस्वादने।
हद पुरीषोत्सर्गे।
हिडि गत्यनादरयोः।
हुडि वरणे। (२९)
हुडि संघाते।
हेड् हेडृ अनादरे।
ह्लाद अव्यक्ते शब्दे।
ह्वेञ् गत्याम्।
ह्लादी सुखे च। चात् अव्यक्ते शब्दे।

अथ विकरणा भूवादय आत्मनेपदिनः समाप्ताः।

अथ भूवादय उभयपदिनः।

अन्चु गतौ याचने च। अञ्चु इत्येके। अचीत्यपरे। (१)
अस गतिदीप्त्यादानेषु। अयं षान्तोऽपि।
ऋष आदानसंवरणयोः।
क्लिदि परिदेवने।
खनु अवदारणे।
गुङ् संवरणे।
चते चदे याचने।
चष भक्षणे।

(२५) सङ्घातो ग्रन्थः। स चेह ग्रथ्यमानस्य व्यापारो ग्रन्थितुर्वा। आद्येऽकर्मकः। द्वितीये सकर्मकः।

(२६) केचिदस्य टकार औपदेशिक इत्याहुः। तन्मते, स्टभ्नते। टस्टम्भे।

(२७) आप्रवण मुत्प्लवन मुद्गरण च। (२८) खदनं विद्रावणम्।

(२९) वरणं स्वीकारः। हरण मित्येके।

(१) अन्चु गता वस्य पाठे कर्त्तृभिप्राये क्रियाफलेऽपि परस्मैपद मिति प्रदीपः। पूर्वपाठोऽस्य कर्त्तृभिप्राये क्रियाफलेऽपि परस्मैपदार्थः।

चायृ पूजानिशामनयोः ।
चीङ् आदानसंवरणयोः ।
क्षष हिंसायाम् ।
ऋष आदानसंवरणयोः ।
णिट् णेट् कुत्सासन्निकर्षयोः ।
णीञ् प्रापणे ।
त्विष दीप्तौ ।
दान् खण्डने आर्जवे च ।
दाप् दाने ।
धावु गतिशुद्धयोः ।
धूञ् कम्पने ।
धृञ् धारणे ।
(ङ्) पचष् पाके ।
प्रोथृ पर्य्याप्तौ ।
(ङ) बुन्दिर् निशामने ।
भज सेवायाम् ॥
भृञ् भरणे ।
भेषृ भये । गतावित्येके ।
भक्ष भूक्ष अदने । भूक्ष इत्येके । भृक्ष इत्यपरे । भक्ष इत्यपरे इति क्वचित् पाठः ।
भेषृ भ्लेषृ गतौ ।
माङ् माने ।
मिट् मेट् मेधाहिंसनयोः । धान्ता विमा विति स्वामी, धान्ता विति न्यासः ।
मृधु शृधु उन्दने ।
मेट् सङ्गमे च ।
यज देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु ।
(ट्) याचृ याच्ञायाम् ।
रन्ज रागे ।
राजृ दीप्तौ ।
रेटृ परिभाषणे ।
लष कान्तौ ।
(ङ्) वप बीजसन्ताने । (२) अयं छेदनेऽपि ।
वह प्रापणे ।
वुधिर् बोधने ।
व्रज वरणे ।
वेञ् तन्तुसन्ताने ।
वेणृ गतिज्ञानचिन्तानिशामनवादित्रग्रहणेषु । नान्तोऽप्ययम् (३)
व्यय गतौ ।
व्येञ् संवरणे ।
शप आक्रोशे । (४)
शान तेजने ।
श्रिञ् सेवायाम् ।
षच समवाये ।
सश बाधनस्पर्शनयोः । (५)
हिक्क अव्यक्ते शब्दे ।
हृञ् हरणे । (६)
ह्वेञ् स्पर्द्धायां शब्दे च ।
शब्विकरणा भूवादयः
उभयपदिनः समाप्ताः ।

अथादादयः परस्मैपदिनः ।
अद भक्षणे ।
अन प्राणने ।
अस भुवि ।
इक् स्मरणे ।
इण् गतौ ।
ऊर्णुञ् आच्छादने ।
कु शब्दे ।
(टु) क्षु शब्दे ।
क्षण तेजने ।
ख्या प्रकथने ।
चकास् दीप्तौ ।
जक्ष भक्षणहसनयोः ।
जागृ निद्राक्षये ।
ण्वु स्तुतौ ।
दरिद्रा दुर्गतौ ।
दाप् लवने ।
दिह उपचये । उभयपदी ।
दुह प्रपूरणे । उभयपदी
द्यु अभिगमने ।
द्रा कुत्सायां गतौ ।
द्विष अप्रीतौ । उभयपदी ।
पा रक्षणे ।
प्रा पूरणे ।
प्सा भक्षणे ।
ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि ।
भा दीप्तौ ।

(२) बीजसन्तानः क्षेत्रे बीजविकिरणम्, गर्भाधान च ।
(३) वादित्रस्य वाद्यभाण्डस्य वादनार्थं मादानं वादित्रग्रहणम् ।
(४) आक्रोशो विरुद्धानुध्यानम् । (५) स्पर्शनं ग्रथनम्, वो ।
(६) हरणं प्रापणम् । स्वीकारः स्तेयः नाशन च ।

मा माने ।
मृजू शुद्धौ ।
या प्रापणे । (१)
यु मिश्रणे, अमिश्रणे च ।
रा दाने ।
रु शब्दे ।
रुदिर् अश्रुविमोचने ।
ला आदाने । दाने इति चन्द्रः ।
लिह आस्वादने । उभयपदी ।
वच परिभाषणे ।
वश कान्तौ ।
वा गतिगन्धनयोः ।
विद ज्ञाने ।
वी गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु । ईचेत्येके । (२)
शासु अनुशिष्टौ ।
श्रा पाके ।
श्वस प्राणने ।
षस स्वप्ने । छान्दसौ ।
षु प्रसवैश्वर्ययोः । (३)
ष्टुञ स्तुतौ ।
ष्णा शौचे ।
ष्णु प्रस्रवणे ।
(ञि) स्वप शये ।
हन हिंसागत्योः ।
इति अदादयः परस्मैपदिनः ।
अथादादय आत्मनेपदिनः ।
आस उपवेशने ।
इङ अध्ययने । नित्यमधिपूर्वः ।
ईड स्तुतौ ।
ईर गतौ ।
ईश ऐश्वर्ये ।
कासि गतिशासनयोः (१)
चक्षिङ व्यक्तायां वाचि ।
अयं दर्शनेऽपि (२) ।
अय मनिदिदित्येके ।
तालव्यान्तोऽपि ।
णिजि शुद्धौ ।
षिसि बुज्बने ।
दीधीङ दीप्तिदेवनयोः ।
छान्दसः ।
पिजि वर्णे । वृजीत्येके (३)
पृची सम्पर्चने ।
वेवीङ वेतिना तुल्ये ।
(४) छान्दसः ।
वृजी वर्जने । वृजि इत्येके
वस आच्छादने ।
(आङः) शासु इच्छायाम् ।
शिजि अव्यक्ते शब्दे ।
शीङ स्वप्ने ।
षूङ प्राणिगर्भविमोचने ।
ह्नुङ अपनयने ।
इत्यदादय आत्मनेपदिनः ।
अथ जुहोत्यादयः ।
(हु दानादनयोः ।)
ऋहृ गतौ ।
(ङु) दाज दाने ।
(ङु) धाञ धारणपोषणयोः । णिजिर् शौचपोषणयोः । उभयपदी ।
पॄ पालनपूरणयोः । ऋस्वान्तोऽय मिति केचित् ।
(ञि) भी भये ।
(ङु) भृञ धारणपोषणयोः, दानेऽपीत्येके ।

(१) प्रापण मत्र गतिः । (२) प्रजनं गर्भग्रहणम् । असनम् क्षेपणम् ।
(३) प्रसवोऽप्यनुज्ञानम् । (१) अय मनिदिदित्येके । तालव्यान्तोऽप्यनिदित् ।
(२) इकारोऽनुदात्तो युजर्थः । इकार उच्चारणार्थ इति केचित् । छन्दसि नुड़ागमार्थ इत्येके । वेदेषु उच्चारणार्थ इत्यन्ये । अत्र बहव स्तु टतीयस्वरो भ्रमकारितः । किन्तु चतुर्थस्वरानुबन्धोऽयम् । निष्ठाया इन्निषेधार्थ इति दुर्गादासः । चक्षिङो ङित्करणेनानुदात्तेच्चनिमित्तस्यात्मनेपदस्यानित्यत्वम् । अतएव, तर्जयन्निव केतुभि रिति रघुः ४,२८ । स्कायन्निर्मोकसन्धीत्यादि, को ११२ ।
(३) सम्पर्चने इत्येके । उभयत्रेत्यन्ये । अव्यक्ते शब्दे इतीतरे ।
(४) वीधातुसमानार्थोऽयम् । गत्यादय श्च तदर्थाः ।

माङ् माने, शब्दे च।
विजिर् पृथग्भावे। उभयपदी।
विष्लृ व्याप्तौ। उभयपदी।
(ओ) हाक त्यागे।
(ओ) हाङ् गतौ।
डु दानादनयोः। आदाने चेत्येके। प्रीणनेऽपीति भाष्यम्। (१)
ह्री लज्जायाम्।
जुहोत्यादयः समाप्ताः।
अथ दिवादयः परस्मैपदिनः।
(दिवु क्रीड़ादौ।)
असु क्षेपणे।
इष गतौ।
उच समवाये।
ऋधु वृद्धौ।
कुथ पूतीभावे। (१)
कुप क्रोधे।
कुस संश्लेषणे। कुश इत्येके।
क्लश तनूकरणे।
क्लसु ह्वरणदीप्त्योः। (२)
क्रुध क्रोधे।
क्लमु ग्लानौ।
क्लिदू आर्द्रीभावे।
क्ष्मू सहने।
क्षिप प्रेरणे।
क्षुध बुभुक्षायाम्।
क्षुभ सञ्चलने।
(ञि) क्ष्विदा स्नेहनमोचनयोः।
गुध परिवेष्टने।
गुप व्याकुलत्वे।
गृधु अभिकाङ्क्षायाम्।
छो छेदने।
जसु मोक्षणे।
जॄष् भॄष् वयोहानौ॥
डिप क्षेपे।
णश अदर्शने।
णह बन्धने। उभयपदी
तसु काङ्क्षायाम्।
तसु उपक्षये। दसु च।
तिम ष्टिम ष्टीम आर्द्रीभावे।
तुभ णभ हिंसायाम्।
तुष प्रीतौ।
तृप प्रीणने। (३)
(ञि) तृष पिपासायाम्।
त्रसी उद्वेगे।
दमु उपशमे। (४)
दिवु क्रीड़ाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु।
दुष वैकृत्ये।
दृप हर्षमोहनयोः। (५)
दॄ विदारे।
दो अवखण्डने।
द्रुह जिघांसायाम्।
नृती गात्रविक्षेपे।
पुथ हिंसायाम्।
पुष पुष्टौ।
पुष्प विकसने।
प्लुष दाहे। (६)
प्लुस दाहे।
भृशु भ्रन्शु अधःपतने।
भ्रमु अनवस्थाने।
मदी हर्षे।
मसी परिणामे। परिमाणे इत्येके। समीत्येके।
(ञि) मिदा स्नेहने।
मुस खण्डने।
मुह वैचित्ये।
मृग अन्वेषणे।
मृष तितिक्षायाम्। उभयपदी।
यसु प्रयत्ने।
युषु रुषु लुषु विमोहने।
रध हिंसासंराद्धयोः। (७)
रन्ज रागे। उभयपदी।
राध साध संसिद्धौ।

(१) दान स्नेह प्रक्षेपः। स च वैधे आधारे हविषश्चेति स्वभावाल्लभ्यते।
(१) पूतीभावो दौर्गन्ध्यम्। (२) ह्वरणं कौटिल्यम्।
(३) प्रीणनं तृप्ति स्तर्पण च। (४) उपशम इति णिजन्तस्य रूपम्। तेन सकर्मकोऽयम्। न तु शमिवदकर्मकः। (५) मोहनं गर्वः।
(६) अयं पुषादिः। व्युषदाहे प्लुष चेति परत्र पाठः सिजर्थः। तद् स्वादिपाठेन गतार्थमिति सुवचम्। (७) संराद्धि निष्पत्तिः।

रुष रिष हिंसायाम् ।
लुट विलोड़ने ।
लुभ गार्द्धे । (८)
वसु स्तम्भे ।
विस प्रेरणे ।
वुस उत्सर्गे ।
हृश वरणे ।
व्यष दाहे । प्लुष च ।
व्युष विभागे । वुष च ।
व्यध ताड़ने ।
व्रीड चोदने लज्जायाञ्च ।
शक विभाषितो भर्षणे । (९)
शप आक्रोशे । उभयपदी ।
शुचिर् पूतीभावे । उभयपदी । (१०)
शुध शौचे ।
शुष शोषणे ।
शो तनूकरणे ।
श्रमु तपसि, खेदे च ।
श्लिष आलिङ्गने ।
षह षुह क्षमौ ।
षिधु संराद्धौ । (११)
षिवु तन्तुसन्ताने ।
षो अन्तकर्मणि ।
ष्ठिवु निरसने । केचिदिहिमं न पठन्ति ।
ष्णसु निरसने ।
ष्णिह प्रीतौ ।
ष्णुसु अदने । आदाने इत्येके । अदर्शने इत्यपरे ।
ष्णुह उद्गिरणे ।
ष्ण्विदा गात्रप्रक्षरणे (१२)
ष्वृष तुष्टौ ।
इति श्यन्विकरणा दिवादयः परस्मैपदिनः ।
अथ दिवादय आत्मनेपदिनः ।
अण प्राणने । दन्त्यान्तोऽय मित्येके ।
ईङ् गतौ ।
काशृ दीप्तौ ।
क्लिश उपतापे ।
खिद दैन्ये ।
गूरी धूरी हिंसागत्योः ।
घूरी जूरी हिंसावयोहान्योः ।
चूरी दाहे ।
जनी प्रादुर्भावे ।
डीङ विहायसा गतौ ।
तप ऐश्वर्य्ये वा । (१)
तूरी त्वरणहिंसयोः ।
दीङ क्षये ।
दीपी दीप्तौ ।
दूङ परितापे ।
धीङ आधारे ।
पद गतौ ।
पीङ पाने ।
पूरी आप्यायने ।
ब्रीङ प्रीतौ । अयं सकर्मकः ।
विद सत्तायाम् ।
बुध अवगमने ।
मन ज्ञाने ।
माङ माने ।
मीङ हिंसायाम् ।
युध सम्प्रहारे ।
रीङ श्रवणे ।
(अनोः) रुध कामे ।
लिश अल्पीभावे ।
लीङ श्लेषणे ।
वाशृ शब्दे ।
वृतु वरणे । वाद्वृतु वरणे इत्येके ।
व्रीङ वृणोत्यर्थे ।
शूरी हिंसास्तम्भनयोः ।
सूङ प्राणिप्रसवे ।
इति श्यन्विकरणा दिवादय आत्मनेपदिनः ।
अथ स्वादयः ।
(षुञ् अभिषवे ।)
अशू व्याप्तौ, सङ्घाते च ।
अय मात्मनेपदी ।
आप्लृ व्याप्तौ ।

(८) गार्द्ध माकाङ्क्षा । (९) विभाषित इत्युभयपदीत्यर्थः । शक्नोति शक्नुते हरिं द्रष्टुं भक्तः, कौ १३९ । (१०) पूतीभावः क्लेदः ।

(११) संराद्धि र्निष्पत्तिः । (१२) प्रक्षरणं धर्मच्युतिः । अयं जौदिति न्यासकारादयः । नेति हरदत्तादयः ।

(१) अयं धातु रैश्वर्य्ये वा तङ्श्यनौ लभते । अन्यथा तु श्यन्विकरण परस्मैपदीत्यर्थः ।

ऋधु वृद्धौ।
क्लञ हिंसायाम्।
क्षि हिंसायाम्।
चिञ चयने।
तिक तिग गतौ, आस्कन्दने च।
तृप प्रीणने।
दन्भु दम्भे।
(टु) दु उपतापे।
धुञ कम्पने। दीर्घान्तोऽप्ययम्।
(ञि) धृषा प्रागल्भ्ये।
पॄ प्रीतौ।
(ङु) मिञ प्रक्षेपणे।
ह्वञ वरणे।
शक्लृ शक्तौ।
शिञ निशाने।
शु श्रवणे। अयं भ्वादौ पठितः।
षघ हिंसायाम्।
षिञ बन्धने।
षुञ अभिषवे। (१)
ष्टिघ आस्कन्दने। अय मात्मनेपदी।
स्तृञ आच्छादने।
स्पृ प्रीतिपालनयोः। प्रीतिचलनयो रित्यन्ये। चलनं जीवन मिति स्वामी।
हि गतिवृद्धयोः।
इति श्रु विकरणाः स्वादयः।

अथ तुदादयः परस्मैपदिनः।
(तुद व्यथने।)
इल स्वप्नक्षेपणयोः।
इषु इच्छायाम्।
उक्षि सेचने।
उछी विवासे।
उज्झ उत्सर्गे।
उव्वज आर्जवे।
उभ उन्भ पूरणे।
ऋच स्तुतौ।
ऋछ गतीन्द्रियप्रलयमूर्त्तिभावेषु।
ऋफ ऋन्फ हिंसायाम्।
ऋषी गतौ।
कड़ मदे।
किल श्वैत्यक्रीड़नयोः।
कुच सङ्कोचने।
कुट कौटिल्ये।
कुड़ बाल्ये।
कुण शब्दोपकरणयोः।
कुर शब्दे।
कुड़ धनत्वे।
कृती छेदने।
कॄ विक्षेपे।
क्रुड भृड निमज्जने।
क्षि निवासगत्योः।
क्षिद परिघाते।
खुर विलेखने।
खुर छेदने।
गु पुरीषोत्सर्गे।
गुज शब्दे।
गुड रक्षायाम्।
गुफ गुम्फ ग्रन्थे।
गॄ निगरणे।
घुट प्रतिघाते।
घुण घूर्ण भ्रमणे।
घुर भीमार्थशब्दयोः।
चर्च जर्ज झर्झ परिभाषणभर्त्सनयोः।
चल विलसने।
चिल वसने।
चुट छुट छेदने।
चुड ब्रुड स्फुड संवरणे।
चृती हिंसाग्रन्थनयोः।
छुप स्पर्शे।
छुर छेदने।
जुट बन्धने।
जुड गतौ। जुन इत्येके।
जुड बन्धने।
डिप क्षेपे।
णिल गहने।
णुद प्रेरणे। (१)
णू स्तवने।
तिल स्नेहे।
तुट कलहकर्मणि।
तुड तोड़ने।
तुण कौटिल्ये।
तुप तुन्प तुफ तुन्फ हिंसायाम्।
तृप तृन्फ तृप्तौ। तृफ इत्येके।
तृह स्तृह तृन्ह हिंसार्थाः।

(१) अभिषवः स्नपनम् पीड़नं स्नानं सुरायाः सन्धान च। (१) यद्यपि णुद उभयपदी वक्ष्यते तथापि कर्त्तृगामिनि फलेऽपि परस्मैपदार्थ मिह पाठः।

त्रुट छेदने ।
त्वच संवरणे ।
थुड़ स्थुड़ संवरणे । खुड़ छुड़ इत्येके ।
दृप दृन्फ उत्क्लेशे ।
दृभी ग्रन्थे ।
दृण हिंसागतिकौटिल्येषु
धि धारणे ।
ध्रु विधूनने ।
ध्रु गतिस्थैर्ययोः । ध्रुव इति पाठान्तरम् ।
पि रि गतौ ।
पिश अवयवे ।
पुट संश्लेषणे ।
पुड़ उत्सर्गे ।
पुण कर्मणि शुभे ।
पुर अग्रगमने ।
पृड़ सृड़ सुखने ।
पृण प्रीणने । वृण च ।
प्रक्ष त्नीष्मायाम् ।
बिल भेदने ।
ब्रह्म उद्यमने ।
भुजो कौटिल्ये ।
भ्रुड संहतिसंहत्योः ।
(टु) मस्जो शुद्धौ ।
मिक्ष उत्क्लेशे ।
मिल श्लेषणे ।
मिष स्पर्द्धायाम् ।
मुट आच्छेपप्रमर्दनयोः ।
मुण प्रतिज्ञाने ।
मुर संवेष्टने ।
मृण हिंसायाम् ।
मृश आमर्शने । (२)
रिफ कत्थनयुद्धनिन्दा-हिंसादानेषु ।
रुजो भङ्गे ।
रुश रिश हिंसायाम् ।
लिख अक्षरविन्यासे ।
लिश गतौ ।
लुठ संश्लेषणे ।
लुभ विमोहने । (३)
विक्ष गतौ ।
विध विधाने ।
विल संवरणे । (४)
विश प्रवेशने ।
व्यच व्याजीकरणे ।
(ओ) व्रस्चू छेदने ।
शद्लृ शातने ।
शिल षिल उञ्छे ।
शुन गतौ ।
शुभ शुन्भ शोभार्थे ।
षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु ।
षुर ऐश्वर्य्यदीप्त्योः ।
षू प्रेरणे ।
सृज विसर्गे ।
स्पृश संस्पर्शने ।
स्फुट विकसने ।
स्फुर स्फुल सञ्चलने ।
स्फुर स्फुरणे । स्फर स्फल इत्येके ।
हिल भावकरणे ।

इति तुदादयः परस्मैपदिनः ।

अथ तुदादय आत्मनेपदिनः ।

कुङ कूङ शब्दे ।
गुरी उद्यमने ।
जुषी प्रीतिसेवनयोः ।
टुङ आदरे ।
धृङ अवस्थाने ।
पृङ व्यायामे ।
मृङ प्राणत्यागे ।
(ओ) लजो ओलस्जो क्रीड़ायाम् ।
(ओ) विजो भयचलनयोः । प्रायेणाय सुत्पूर्वः ।

इति तुदादय आत्मनेपदिनः ।

अथ तुदादय उभयपदिनः ।

क्षष विलेखने ।
क्षिप प्रेरणे ।
णुद प्रेरणे ।
तुद व्यथने ।
दिश अतिसर्जने ।
भ्रस्ज पाके ।
मिल सङ्गमे । (१)
मुच्लृ मोचणे ।

(२) आमर्शनं स्पर्शः ।
(३) विमोहन माकुलीकरणम् ।
(४) दन्त्योष्ठादिः पवर्गीयादि रित्यन्ये ।
(१) मिल संश्लेषण इति पठितस्य पुनः पाठः कर्त्रभिप्राये तदर्थः ।

लिप उपदेहे । (२)
लुप्ल छेदने ।
विद्ल लाभे ।
सिच क्षरणे ।
इति शविकरणा-
स्तुदादयः ।
अथ रुधादयः परस्मै-
पदिनः ।
(रुधिर् आवरणे ।)
अन्ज व्यक्तिमर्षणका-
न्तिगतिषु ।
(ञि) इन्धी दीप्तौ ।
आत्मनेपदी ।
उन्दी क्लेदने ।
क्तौ वेष्टने ।
खिद दैन्ये । आत्मने-
पदी ।
तन्चु सङ्कोचने ।
तृह हिंसि हिंसायाम् ।
पिष्ल सञ्चूर्णने ।
पृची सम्पर्के ।
भन्जो आमर्दने ।
भुज पालनाभ्यवहा-
रयोः ।
विद विचारणे । आत्म-
नेपदी ।
(ओ) विजी भयचल-
नयोः ।
व्रजी वर्जने ।
शिष्लृ विशेषणे ।
इति रुधादयः परस्मै-
पदिनः ।

अथ रुधादय उभय-
पदिनः ।
क्षुदिर् सम्पेषणे ।
छिदिर् द्वैधीकरणे ।
(उ) क्षुदिर् दीप्तिदेव-
नयोः ।
(उ) त्रुदिर् हिंसानाद-
रयोः ।
भिदिर् विदारणे ।
युजिर् योगे ।
रिचिर् विरेचने ।
रुधिर् आवरणे ।
विचिर् पृथग्भावे ।
इति रुधादयः ।
अथ तनादय उभय-
पदिनः ।
(तनु विस्तारे ।)
क्षण गतौ ।
(ङ) क्षञ क्षरणे ।
क्षण हिंसायाम् । क्षिण
च ।
घृण दीप्तौ ।
तनु विस्तारे ।
तृण अदने ।
मनु अवबोधने । आत्म-
नेपदी ।
वनु याचने । आत्मने-
पदी ।
षणु दाने ।
इति तनादयः ।
अथ क्रयादयः परस्मै-
पदिनः ।

(डु क्रीञ द्रव्यविनिमये ।)
अश भोजने ।
इष आभीक्ष्ण्ये । (१)
ऋ गतौ ।
कुन्थ संश्लेषणे । संक्लेशे
इत्येके । कुथेति दुर्गः ।
कुष निष्कर्षे ।
कॄ हिंसायाम् ।
कॄञ हिंसायाम् ।
(डु) क्रीञ द्रव्यविनिमये ।
क्रूञ शब्दे ।
क्लीशू विबाधने ।
क्षीष् हिंसायाम् । क्षिष्
इत्येके ।
क्षुभ सञ्चलने ।
खच भूतप्रादुर्भावे । खव
इत्येके । हेठ च । (२)
गुध रोषे ।
गॄ शब्दे ।
ग्रन्थ अन्थ सन्दर्भे ।
ग्रह उपादाने । उभय-
पदी ।
जॄ वयोहानौ । भॄ इत्येके ।
धृ इत्यन्ये ।
ज्ञा अवबोधने ।
ज्या वयोहानौ ।
तुभ णभ हिंसायाम् ।
दूञ हिंसायाम् ।
दॄ विदारणे ।
धूञ कम्पने ।
उभ्रस उञ्छे । उकार
इत् । उकारो धात्वव-

(२) उपदेहो वृद्धिः । (१) आभीक्ष्ण्यं पौनःपुन्यम् भृशार्थो वा ।
(२) भूतप्रादुर्भावोऽतिक्रान्तोत्पत्तिः ।

यव इत्येके।
नृ नये।
पुष पुष्टौ।
पूञ पवने।
पॄ पालनपूरणयोः।
प्रीञ तर्पणे कान्तौ च। (३)
प्लुष प्लुष स्नेहनसेवनपूरणेषु।
प्ली गतौ।
बन्ध बन्धने।
बॄञ वरणे।
बॄ वरणे। भरणे चेत्येके।
भॄ भर्त्सने। भरणेऽपि।
भ्री भये। भरणे इत्येके।
मथ विलोड़ने।
मीञ हिंसायाम्।
मुष स्तेये।
मृद क्षोदे। मृड च। अयं सुखेऽपि।
मॄ हिंसायाम्।
युञ बन्धने।
री गतिरेषणयोः। (४)
ली श्लेषणे।
लूञ छेदने।
विष विप्रयोगे।
व्रड सभक्तौ।
व्री वरणे।
व्लॄ वरणे।
शॄ हिंसायाम्। ग्रन्थविमोचनप्रतिहर्षयोः।
श्रीञ पाके।
षिञ बन्धने।
स्कूञ आप्लवने।
स्तॄञ् आच्छादने।

इति श्नाविकरणाः।

क्रादयः।

अथ चुरादयः परस्मैपदिनः।

(चुर स्तेये।)

अजि अहि जिवि तड नट नल दसि पुटि भृशि महि रवि रहि रुठ रुशि रुसि लधि लजि लडि शीक भासार्थाः। (१)
अट्ट षुट्ट अनादरे। अयं दोपधः।
अन्चु विशेषणे।
अम रोगे।
अर्क स्तवने। तपने इत्येके।
अर्च पूजायाम्।
अर्ज प्रतियत्ने। अय मर्थान्तरेऽपि।
अर्द हिंसायाम्। उभयपदी।
अर्ह पूजायाम्।
आपॢ लम्भने। उभयपदीत्येके।
इल प्रेरणे।
ईड स्तुतौ।
ईर क्षेपे।
उर्ज बलप्राणनयोः।
ओलडि उत्क्षेपणे। ओकार इदित्येके। उकारादि रय मित्यन्ये
कट वर्षे।
कठि शोके। उत्पूर्वोऽय मुत्कण्ठायाम्।
कड़ि खड़ खड़ि भेदने।
कण निमीलने।
कल विल क्षेपे।
कीट वर्णे।
कुट्ट छेदनभर्त्सनयोः। पूरणे इत्येके।
कुड़ि रक्षणे।
कुद्रि अनृतभाषणे।
कुप कुशि कुसि गुप घट घटि चीव गद तर्क तुजि त्रसि दशि धूप पट पिजि पिसि पुट पुथ मजि मिजि लधि लुजि लुट लोक लोच वर्ह वञ्च विक्ष हृतु हृष हृहि भासार्थाः।
कुवि आच्छादने। कुभि इत्येके।
'क्षप युतौ चित्रे कम्पने च'।
कृत संशब्दने।
(आङः) क्रन्द सातत्ये।
क्षजि क्षच्छ्रजीवने।

(३) कान्तिः कामना। (४) रेषणं हर्षशब्दः।

(१) भासार्था दीप्त्यर्थाः। भाषार्था इति पाठे भाषायां येऽर्थास्ते तेषां धातूनां ते भाषार्थाः। अनेकार्था इति केचित्।

चपि क्षान्त्याम्।
चल शौचकर्मणि।
खट्ट संवरणे।
खुड़ि खण्डने।
गज मार्ज शब्दार्थौ। मर्च च।
गर्ज गर्द शब्दे।
गर्ध अभिकाङ्क्षायाम्।
गर्ह विनिन्दने।
गुड़ प्रेरणे
गुड़ि वेष्टने। रचणे इत्येके। कुठि इत्यन्ये। चर्णीकरणेऽपि गुठि इत्यपरे।
गुर्द पूर्व निकेतने।
ग्रन्थ बन्धने। ग्रथ इत्येके
ग्रस ग्रहणे।
घट सङ्घाते। हन्त्यर्थ च।
घट्ट चलने।
घृषिर् विशब्दने।
घृ प्रस्रवणे। स्रावणे इत्येके।
चक्क चुक्क व्यथने। चिक्क इत्येके।
चट स्फुट भेदने।
चन अल्पोपहननयोरित्येके।
चपि गत्याम्।
चर संशये।
चर्च अध्ययने।
चल भृतौ।
चह परिकल्कने। चप इत्येके।
चिञ चयने।
चिति स्मृत्याम्।
चुट छेदने।
चुटि छेदने।
चुट्ट पुट्ट अल्पीभावे।
चुद सञ्चोदने
चुर स्तेये।
चुल समुच्छ्राये।
चूट छेदने।
चूण सङ्कोचने।
चूर्ण पेषणे।
चूर्ण वर्ण प्रेरणे। वर्ण वर्णने इत्येके।
चृप छृप टृप सन्दीपने।
चु सहने। हसने चेत्येके। चुस इत्येके।
छद अपवारणे। उभयपदी। छदि संवरणे।
छर्द वमने।
छृदी सन्दीपने।
जभि नाशने।
जल अपवारणे। लज इत्येके।
जसि रचणे। मोचणे इति केचित्।
जसु हिंसायाम्।
जसु ताड़ने।
जुड प्रेरणे।
जुष परितर्कणे। (२)
जॄ वयोहानौ। ज्रि च।
ज्ञप ज्ञाने ज्ञापने च। ज्ञप मिच्च।
ज्ञा नियोगे।
टकि बन्धने।
डिप क्षेपे।
तड आघाते।
तनु अल्पोपकरणयोः। उपसर्गाच्च दैर्घ्ये।
तप दाहे।
तल प्रतिष्ठायाम्।
तसि भूष अलङ्करणे।
तिज निशाने।
तिल स्नेहने।
तुजि पिजि सिंसाबलादाननिकेतनेषु। तुज पिजेति केचित्। लजि लुजि इत्येके।
तुल उन्माने।
तुवि लुवि अदर्शने। अर्दने इत्येके।
त्रप त्रपौ। सन्दीपने इत्येके।
त्रस धारणे। ग्रहणे इत्येके। वारणे इत्यन्ये।
दल विदारणे।
दिवु मर्दने।
दुल उत्क्षेपे।
दृभ सन्दर्भे।
दृभी भये।
धक्क नक्क नाशने।
धूज कम्पने।
धूस कान्तिकरणे। धूष इत्येके। धूश इत्यपरे।
धृष प्रसहने।
उध्रस उञ्छे। उकारो धात्ववयव इत्येके।

(२) परितर्कण मूहो हिंसा वा।

नेत्यन्ये ।
नट अवस्यन्दने । (३)
पच्च पचिश्चे ।
पचि विस्तारवचने ।
पड़ि पसि नाशने ।
पथि गतौ ।
पश बन्धने ।
पाल रक्षणे ।
पिक्क क्षुद्रे ।
पिडि संघाते ।
पिस गतौ ।
पीड अवगाहने ।
पुष धारणे ।
पुल महत्त्वे ।
पुस अभिवर्द्धने ।
पुस्त वुस्त आदरानादरयोः ।
पूज पूजायाम् ।
पूरी आप्यायने ।
पूल संघाते । पूर्ण इत्येके । पूण इत्यन्ये ।
पृजि क्षच्छ्रजीवने ।
पृथ प्रक्षेपे । पथ इत्येके ।
पॄ पूरणे ।
प्रथ प्रख्याने ।
प्रीञ तर्पणे ।
बध संयमने । बन्धेति चान्द्रः ।
बल प्राणने ।
बिल भेदने ।
बुक्क भाषणे ।
बुट हिंसायाम् ।
ब्रूस वर्ह हिंसायाम् ।
भक्ष अदने ।
भज विश्राणने ।
भडि कल्याणे ।
भुवोऽवकल्कने । अवकल्कनं मिश्रीकरणमित्येके । चिन्तन मित्यन्ये । क्षपेश्च ।
मडि भूषायाम् । हर्षे च ।
मान पूजायाम् ।
मार्ग अन्वेषणे ।
मिदि स्नेहने ।
मी गतौ ।
मुच प्रमोचने । मोदने च ।
मुट सच्चूर्णने ।
मुद संसर्गे ।
मुस्त संघाते ।
मूज रोहणे ।
मृजू शौचालङ्कारयोः ।
मृष तितिक्षायाम् । उभयपदी ।
मोक्ष असने । (४)
म्रक्ष म्लेच्छने ।
म्लेक्ष अव्यक्तायां वाचि ।
यत निकारोपस्कारयोः ।
यत्रि सङ्कोचे ।
यम च परिवेषणे । (५)
यु जुगुप्सायाम् ।
युज पृच संयमने ।
रक लग आस्वादने । रग इत्येके । रच च ।
रह त्यागे ।
रिच वियोजनसम्पर्चनयोः ।
रुज हिंसायाम् ।
रुष रोषे । रुट इत्येके ।
लड उपसेवायाम् ।
लक्ष दर्शनाङ्कनयोः ।
लस शिल्पयोगे ।
लौ द्रवीकरणे ।
लिगि चित्रीकरणे ।
लुट सच्चूर्णने ।
लुठ स्तेये । लुण्ठ इत्येके ।
लूष हिंसायाम् ।
वच परिभाषणे ।
वज मार्गणसंस्कारगत्योः ।
वटि विभाजने । वाड इत्येके ।
वद सन्देशवचने । उभयपदी । आत्मनेपदी इत्येके ।
वर्ष छेदनपूरणयोः ।
वल्क श्वल्क परिभाषणे ।
वस स्नेहच्छेदापहरणेषु ।
वा सुखाप्तिगतिसेवासु ।
वृजी वर्जने ।
वृञ आवरणे ।
श्वठ श्वठ असंस्कारगत्योः । श्वठि इत्येके ।
श्वद्द उपसर्गादाविष्कारे

(३) अवस्यन्दनं नाश्यम् ।
(४) असनं क्षेपणम् । (५) परिवेषण मिह वेष्टनम् ।

च । चाद् भाषणे ।
शिष असर्वोपयोगी ।
शीक सीक आमर्षणे । चीक च ।
शुठ आलस्ये ।
शुठि शोषणे ।
शुन्ध शौचकर्मणि ।
शुल्क अतिसर्जने ।
शुल्ब माने । शूर्प च ।
शृध् प्रहसने ।
शृण दाने । प्रायेणायं विपूर्वः ।
शृथ प्रयत्ने प्रस्थाने इत्येके ।
शृथ मोचणे । हिंसायामित्येके ।
श्रन्थ ग्रन्थसन्दर्भे ।
श्लिष श्लेषणे ।
षट्ट स्फिट्ट चुवि हिंसायाम् ।
(आङः) षद पद्यर्थे ।
षस्व सम्बन्धने । श्वस्व च । साम्ब इत्येके ।
षह मर्षणे ।
षान्त्व सामप्रयोगे ।
षूद क्षरणे ।
ष्टुप समुच्छ्राये ।
ष्णिह स्नेहने । स्निट इत्येके ।
ष्वद आस्वादने । आद इत्येके ।
सृ आस्तरणे ।
स्निट स्नेहगत्योः ।
स्फिट हत्याम् । बधे अनादरे चेत्येके ।
स्फुडि परिहासे स्फुटि इति पाठान्तरम् ।
स्मिट अनादरे ।
स्मिङ अनादरे ।
स्वर्त्त गत्याम् । स्वभ्र च ।
हिंसि हिंसायाम् ।
ह्लप व्यक्तायां वाचि । लाप इत्येके ।

इति चुरादयः परस्मैपदिनः ।

अथ चुरादय आत्मनेपदिनः ।

कुट्ट प्रभापने ।
कुत्स अवक्षेपणे ।
कुत्स कुत्सितशब्दने ।
कूट आप्रदाने । अवसादने इत्येके ।
कूण सङ्कोचे । कण च ।
गल स्रवणे ।
गूर उद्यमने ।
गृ विज्ञाने । ग इत्यन्ये ।
चित सञ्चेतने ।
डप डिप संघाते ।
तत्रि कुटुम्ब धारणे । चान्द्रा स्तु धातुद्वयमिति वदन्ति ।
तर्ज भर्त्सनतर्जने ।
तूण पूरणे ।
त्रुट छेदने । कुट इत्येके ।
दंशि दंशने ।
दसि दर्शनदंशनयोः ।
दस इत्येके ।
दिवु परिकूजने ।
निष्क परिमाणे ।
भल आभण्डने ।
'भृ प्राप्तौ' ।
भ्रूण आशाविशङ्कयोः ।
मद तृप्तियोगे ।
मन स्तम्भे ।
मत्रि गुप्तपरिभाषणे ।
यत्त पूजायाम् ।
यु जुगुप्सायाम् ।
लल ईप्सायाम् ।
वच्चु प्रलम्भने ।
वस्त गन्ध अर्दने ।
विद चेतनाख्याननिवासेषु ।
विष्क हिंसायाम् । हिष्क इत्येके ।
वृष शक्तिबन्धने । (१)
शठ श्लाघायाम् ।
शम लत्त आलोचने ।
स्पश ग्रहणसंश्लेषणयोः ।
स्यम वितर्के ।

इति चुरादय आत्मनेपदिनः ।

अथ अदन्ता खुरादयः ।
अङ्क पदे लक्षणे च । अङ्क च ।
अघ पाप करणे ।
अन्थ दृष्यु पघाते ।
अर्थ उपयाच्ञायाम् ।
अवधीर अवज्ञायाम् ।
अंश अंस विभाजने ।

(१) शक्तिबन्धनं प्रजननसामर्थ्यम् । शक्तिबन्धश्च ।

अंस समाघाते ।
आन्दोल लिन्दोल हिल्लोल दोलने ।
ऊण परिहाणे ।
कत्र ग्रैथिल्ये ।
कथ वाक्यप्रबन्धे । (१)
कल गतौ संख्याने च ।
कुण गुण ग्राम आमन्त्रणे । कुण गुण केतने च । कुण सङ्कोचनेऽपि ।
कुमार क्रीडायाम् । कुमाल इत्येके ।
कुह विस्मापने ।
कूट परितापे । परिदाहे इत्यन्ये । आमन्त्रणे च । परिहासे इति केचित् ।
कूण सङ्कोचे ।
केत आवणे निमन्त्रणे
क्षप प्रेरणे ।
क्षोट क्षेपे । खोट खोड इत्येके ।
खच बन्धने ।
खेट भक्षणे । खेट खोट इत्येके ।
गण संख्याने ।
गर्व माने ।
गवेष मार्गणे ।
गह गहने ।
गृह ग्रहणे ।
गोम उपलेपने ।
ग्राम आमन्त्रणे ।
चह परिकल्कने । (२)
चित्र चित्रीकरणे ।
छद अपवारणे ।
छिद्र कर्णभेदने । करण भेदने इत्यन्ये । कर्ण इति धात्वन्तर मित्यन्ये ।
छेद द्वैधीकरणे ।
तुत्थ आवरणे ।
दण्ड दण्डनिपातने ।
धेक दर्शने ।
ध्वन शब्दे ।
निवास आच्छादने ।
पट वट ग्रन्थे ।
पत गतौ वा । वा णिजन्तः । वा अदन्त इत्येके ।
पद गतौ ।
पर्ण हरितभावे ।
पल्यूल लवनपवनयोः । पल्युल वल्युल इत्येके ।
पष अनुपसर्गात् गताविति एव । पश इत्येके ।
पार तीर कर्मसमाप्तौ ।
पुट संसर्गे ।
प्रेङ्खोल चापले ।
भाज पृथक्कर्मणि ।
भाम क्रोधे ।
मह पूजायाम् ।
मिश्र सम्पर्के ।
मूत्र प्रस्रवणे ।
मृग अन्वेषणे ।
रच प्रतियत्ने ।
रस आस्वादने ।
रह त्यागे ।
रूक्ष पारुष्ये ।
रूप रूपक्रियायाम् । (३)
लज प्रकाशने । लजि इत्येके ।
लड लाड आक्षेपे ।
लाभ प्रेरणे ।
वट विभाजने । वटि इत्येके । (४)
वर ईप्सायाम् ।
वर्ण वर्णक्रियाविस्तारगुणवचनेषु ।
वल्क दर्शने ।
वष्क विष्क दर्शने ।
वस निवासे ।
वात सुखसेवनयोः । गतिसुखसेवनेष्वित्येके ।
वास उपसेवायाम् ।
विडम्ब विडम्बने ।
वीज व्यजने ।
वेल कालोपदेशे । काल इति पृथक् धातु रित्येके ।
व्यय वित्तसमुत्सर्गे । वित्त इति पृथक् धातु

(१) शाकटायन स्तु कथादीनां सर्वेषां एक माह । तन्मते कथापयति गणापयतीत्यादि । (२) परिकल्कनं दम्भः शाठ्यं च ।
(३) रूपस्य दर्शनं वा रूपक्रिया । (४) वटीत्यस्य अदन्ते पाठबला ददन्तत्वे इह इति रित्यन्ते । कटापयति । एवं लजीत्यत्रापि ।

रित्येके ।
व्रण गात्रविचूर्णने ।
शठ श्लठ सम्यगवभाषणे ।
शील उपधारणे । (५)
शूर वीरविक्रान्तौ ।
श्रथ श्लथ दौर्बल्ये ।
सङ्केत आमन्त्रणे ।
संग्राम युद्धे । श्रय मा-
त्मनेपदी ।
सत्र सन्तानक्रियायाम् ।
सभाज प्रीतिदर्शनयोः ।
प्रीतिसेवनयो रित्यन्ये ।
साम सान्त्वप्रयोगे ।
सार क्षप दौर्बल्ये ।
सुख दुःख तत्क्रिया-
याम् ।
सूच पैशुन्ये ।
सूत्र वेष्टने विमोचने
ग्रन्थे च ।
स्तन गदी देव शब्दे ।
स्तेन चौर्ये ।
स्तोम श्लाघायाम् ।
स्थूल परिह्वंहणे ।
स्पृह ईप्सायाम् ।
स्फुट विस्फुरणे ।
स्वर आक्षेपे ।
हिल्लोल दोलने ।
बहुलमेतन्निदर्शनम् । बा-
हुलकादन्येऽपि बोध्याः,
अन्ये तु दशगणीपाठो
बहुल मित्याहुः । तेना-
पठिता अपि सौत्रलौ-
किकवैदिका बोध्याः ।
अपरे तु नवगणीपाठो
बहुल मित्याहुः । तेना-
पठितेभ्योऽपि क्वचित्
स्वार्थे णिच् । रामो
राज्य मचीकर दित्या-
हुः ।
इत्यदन्तचुरादयः ।
समाप्तोऽयं पाणिनीयो
धातुपाठः ।

(५) उपधारण मभ्यासः ।

# अथ नामधातवः कण्ड्वादयः ।

—:०:—

अगद्यति । अगद नीरोगत्वे ।
अघायति । अघ ।
अध्वरीयति । अध्वर ।
अनुकूलयति । अनुकूल, कु ३, ३९ ।
अनुलोमयति । लोमान्यनुमार्ष्टि ।
अभिमनायते । अभिमनस् ।
अभिषेणयति । अभ्यषेणयत् । अभिषि-
षेणयिषति । सेनयाभिमुखं याति ।
अभ्रायते । अभ्रं करोति ।
अमृतायते । अमृत मिवाचरति ।
अम्बर्यति । अम्बर संभरणे ।
अरर्यति । अरर आराकर्मणि ।
अलीकायते । अलीक ।
अवर्यति । अवर ।
अश्वनायति । अश्वन ।
अश्वीतपिबतीयति ।
अश्वयते । अश्वतर माचष्टे ।
अश्वस्यति बड़वा । अश्व ।
असूयति । ०ते । असुञ उपतापे ।
आविलयति । आविल ।
इरज्यति । इरज् ईर्ष्यायाम् ।
इरस्यति । इरस् ईर्ष्यायाम् ।
इर्यति । ०ते । इरज ईर्ष्यायाम् ।
इषुध्यति । इषुध शरधारणे ।
उत्पुच्छयते । पुच्छ मुत्क्षिपति ।
उत्सुकायते । उत्सुक ।
उदन्यति । उदक मिच्छति ।
उन्मनायते । उन्मनस् ।
उपवीणयति । वीणया उपगायति ।
उषस्यति । उषस् प्रभातीभावे ।
उष्णायते । उष्ण मुदकमति ।
एलायति । एला विलासे ।
ओजायते । ओजस् ।
कण्डूयति । ०ते । कण्डूञ गात्रविघर्षणे ।
करुणायते । करुण ।
कलहायते । कलह ।
कष्टायते । कष्टाय क्रमते ।
किलकिलायति । किलकिलेति ।
कुषुभ्यति । कुषुभ क्षेपे ।
कृच्छ्रायते । कृच्छ्र ।
कृपणायते । कृपण ।
कृष्णायते । कृष्ण ।
केलायति । केला विलासे ।
क्षीरस्यति । क्षीर ।
खेलायति । खेला विलासे ।
गद्गद्यति । गद्गद वाक्स्खलने ।
गव्यति । गो ।
गोमयायते । गोमय ।
चपलायते । चपल ।
चरण्यति । चरण गतौ ।
चरितार्थयति । चरितार्थ ।
चित्रीयते हेममृगः । चित्रङ् आश्चर्ये ।
चिरयति । चिरम् ।
चिरायति । ०ते । चिर ।
चिह्नयति । चिह्न ।
छलयति । छल ।
तन्त्रस्यति । तन्त्रस् दुःखे ।
तपस्यति । तपः करोति ।

तरण्यति । तरण गतौ ।
तिमिरयति । तिमिर मतौ ।
तिरस्यति । तिरस् अन्तर्धौ ।
तुलयति । तुल ।
तृप्तायते । तृप्त ।
दवयति । दूर ।
दारुणायते । दारुण ।
दुःखायते । दुःखं वेदयते ।
दुःख्यति । दुःख तत्क्रियायाम् ।
दुर्मनायते । दुर्मनस् ।
दोलायते । दोल ।
द्रवस्यति । द्रवस् परितापपरिचरणयोः ।
द्रुमायते । द्रुम ।
धनायति । धन ।
धूमायते । धूम ।
नमस्यति । नमः करोति ।
निष्पत्रयति । निष्पत्र ।
नेदयति । अन्तिक ।
पटपटायति । ०ते ।
पण्डितायते । पण्डित ।
पतीयति । पति ।
पयस्यति । पयस् प्रसृतौ । आर्द्रीभावे ।
परिकर्मयति । परिकर्मन् ।
पल्लवयति । पल्लव ।
पिशुनयति । पिशुन ।
पुलकयति । पुलक ।
प्रतिकूलयति । प्रतिकूल ।
प्रतीपायते । प्रतीप ।
प्रमाणयति । प्रमाण ।
प्रायश्चित्तीयते । प्रायश्चित्त ।
फेनायति । ०ते । फेन मुद्गमति ।
भिक्षयति । भिक्ष भिक्षायाम् ।
भिषज्यति । भिषज् चिकित्सायाम् ।
भूमयति । भूमन् ।
भृशायते । अभृशो भृशो भवति ।
भ्रमायते । भ्रमत् ।
मगध्यति । मगध वेष्टने ।
मद्रायति । ०ते । मद्र ।
मन्तूयति । मन्तु अपराधे । रोषे च ।
मन्दायति । ०ते । मन्द ।
मन्त्रयते । मन्त्र ।
मलिनयति । मलिन ।
महीयते । महीङ् पूजायाम् ।
मित्रीयते । मित्र ।
मुखरयति । मुखर ।
मृग्यति मृग्यन्तः पदवीं मृगः ।
मेघायते । मेघ ।
मेधायते । मेधा आशुग्रहणे ।
योक्त्रयति । योक्त्र ।
रणकाम्यति । रण मिच्छति ।
रहायते । रहस् ।
राजायते । राजेवाचरति ।
रेखायते । रेखा श्लाघासादनयोः ।
रोमन्थायते । रोमन्थं वर्त्तयति ।
लघ्वयति । लघु ।
लवणयति । लवण ।
लवणस्यति । लवण ।
लाट्यति । लाट् जीवने ।
लिट्यति । लिट् अल्पकुत्सनयोः ।
लेखायति । लेख्यति । लेखा लेख विलासे स्खलने च ।
लेट्यति । लोट्यति । लेट लोट धौर्त्ये पूर्वभावे स्वप्ने च ।
लेलायति । लेला दीप्तौ ।
लोहितायति । ०ते । लोहित ।
वरिवस्यति । वरिवस् ।
वर्चायते । वर्चस् ।
वल्गूयति । वल्गु पूजामाधुर्य्ययोः ।
वाजयति । वाज ।
वाष्पायते । वाष्प मुद्गमति ।
विघ्नयति । विघ्न ।
वितूस्तयति । तूस्त । केशान् विजटी-

करोति, पा ३, १,२१ ।
विधुरयति । विधुर ।
विपाशयति । पाशं विमोचयति ।
विमलयति । विमल ।
वृषस्यति । वृष ।
वृषायते । वृष ।
वेलायति । वेला ।
वेहायते । वेहत् ।
वैरायते । वैरं करोति ।
व्रतयति पयः । तन्मात्रं भुङ्क्ते ।
शत्रूयति । शत्रु ।
शब्दायते । शब्दं करोति ।
शिथिलयति । शिथिलं करोति ।
शीघ्रायते । अशीघ्रः शीघ्रो भवति ।
शुचीयते । शुचिस् ।
श्यामायते । श्याम ।
श्रमणायते । श्रमण ।
श्लक्ष्णयति । श्लक्ष्ण ।
श्लथायते । श्लथ ।
श्वेतयति । श्वेत माचष्टे ।
सत्यापयति । सत्य ।
सपर्यति । सपर् पूजायाम् ।
सफलयति । सफल ।
समानयति । समान ।
समुद्रायते । समुद्र ।
सचीवरयते । चीवराण्यर्जयति ।
सम्बर्यति । सम्बर सम्भरणे ।
संभाण्डयते । भाण्डानि समाचिनोति ।
सम्भूयस्यति । संभूयस् प्रभूतभावे ।
संवर्मयति । वर्मणा संनह्यति ।
संवस्त्रयति । वस्त्रेण समाच्छादयति ।
सिंहायते । सिंह इवाचरति ।
सुखायते । सुख मनुभवति ।
सुख्यति । सुख तत्क्रियायाम् । सुख्येयुः प्रकृतयो नृपम् ।
सुमनायते । सुमनस् ।
सुस्थयति । सुस्थ ।
स्वजयति । स्वजिन् ।
हम्मायते । हम्म ।
हरितायति । ०ते । हरित ।
हृणीयते । हृणीङ् रोषणे लज्जायाञ्च ।

## सौत्रधातवः ।

ऋति जुगुप्साया मिति बहवः । क्रपायाञ्चेत्येके । ऋतीयते । ऋतीयाञ्चक्रे, पा ३, १, ९ । इयङ्भावे तु परस्मैपदम् । आनर्त्त । अर्त्तिष्यति । आर्त्तीत् ।
तु, अदा, प । गतिवृद्धिहिंसासु ।
जु, तु, दुण्ढ, भ्वादौ गताः ।
कर्क हासे । कर्कटः । कर्कशः ।
चकि भ्रान्तौ । चङ्कुरः ।
मर्क गत्याम् । मर्कटः ।
सिक सेचने । सिकता ।
मर्च ग्रहणे । मर्कः ।
कजि जन्मनि । कञ्जरः ।
पजि रोधे । पञ्जरः ।
मजि ध्वनौ । मञ्जरी । मञ्जुलः । मञ्जा ।
मट अवसादने । मटहः ।
वटि स्तेये । वण्टकः ।
कुठ छेदने । कुठारः । कुठेरः । कुटाकुः
उड् संहतौ । उड्पम् ।
वड़ आरोहणे । वड़भी । वड़िशः ।
कुत आस्तरणे । कुतप्रः ।
पुत्त गतौ । पुत्तिका ।
लत आघाते । लता ।
सात सुखे । सातयः, पा ३,१,१३८ ।
उद आघाते । ओदनः । उदकम् ।
चद संवरणे । चत्ता ।
सुदि द्युतौ । सुन्दरः ।
कप लौल्ये । कपोलः ।
चुप अवसादने । चुपः ।
रिफ क्षेपे कुत्सने च । रिफः । रेफः ।

रिभ रवे । विरिब्धः, पा ७,२,१८ ।
स्कन्भु स्कुन्भु स्तन्भु स्तुन्भु गताः ।
डिम हिंसायाम् । डिण्डिमः ।
धम ध्माने । धमनिः ।
पीय प्रीणने । पीयूषम् ।
उर गतौ । उरगः ।
तद्रि मोहावसादयोः । तन्द्रा । तन्द्रिः ।
उल दाहे । उलपः । उल्का ।
लुल विमर्दने । लुलापः ।
शल्ल गमने । शल्लकी ।
ऋश गतिस्तुत्योः । ऋश्यः ।
पश्य पम्पश्यते, पा ७,४,८६ ।
रश्य स्वने । रशना ।
नच्च द्युतौ । नच्चत्रम् ।
भिष रुग्जये । भिषक् । भेषजम् ।
युष भजने । योषित् । युषद् ।
लूष हिंसने । लूषणम् ।
सौत्रधातवः समाप्ताः ।

## वैदिकधातवः ।

दीधीङ दीप्तिदेवनयोः ।
वेवीङ वेतिना तुल्ये ।
षस स्वप्ने ।
वश कान्तौ । चकारीतश्च ।
इति अदादिः ।
घृ क्षरणदीप्त्योः ।
हृ प्रसह्यहरणे ।
ऋ सृ गतौ ।
भस भर्त्सनदीप्त्योः ।
कि ज्ञाने ।
तुर त्वरणे ।
धिष शब्दे ।
धन धान्ये ।
जन जनने ।
गा स्तुतौ ।
इति जुहोत्यादयः ।
पृ प्रीतौ ।
स्पृ प्रीतिपालनयोः । स्मृ इत्येके ।
अह व्याप्तौ ।
दघ घातने पालने च ।
चमु भक्षणे ।
रि क्षि चिरि जिरि दाश घृ हिंसायाम् ।
इति स्वादिः ।

---

# सूत्रानुसारि-धातुगणः ।

—००००—

द्युत ष्विता जिमिदा जिष्विदा जिक्ष्विदा रुच घुट रुट लुट लुठ शुभ क्षुभ णभ तुभ स्वन्सु ध्वन्सु भ्वन्सु भ्वन्शु स्वन्भु ( ह्वतु ह्वधु शृधु स्यन्दू क्लपू ) इति द्युतादि ह्वतादि च । द्युतादिभ्यो लुङि परस्मैपदं वा स्यात् । परस्मैपदेऽङ् च, पा १, ३, ९१ । ३, १, ५५ । ह्वतादीनान्तु स्वसनोः परस्मैपदं वा स्यात्, पा १, ३, ९२ । परस्मैपदे इट्प्रतिषेधश्च, पा ७, २, ५९ ।

घट व्यथ प्रथ प्रस स्वद स्वद त्वजि दक्ष क्लप कदि क्लदि क्लदि ( कद क्लद क्लद ) त्रिवरा इति घटादयः षितः । तत्फलं क्तत्सु अङ्, पा ३, ३, १०४ । ज्वर गड़ हेड वट भट णट ष्टक चक कखे रगे लगे झगे ह्लगे षगे ष्ठगे कगे अक अग कण रण चण श्रण अण अथ कथ क्लथ क्लथ चन वनु ज्वल ह्वल ह्लल स्मृ दृ नृ आ ज्ञा क्लप चल क्षद लड मदी ध्वन दल बल स्खल त्वपूष् चै स्वन इति घटादयो मितः । तत्फलन्तु णौ ह्रस्वत्वं चिण्मुलौ वैकल्पिकदीर्घत्व च, पा ६, ४, ९२ । जनी जृष् क्नसु रञ्जोऽमान्ता च ज्वल ह्वल ह्लल नमा मनुपसर्गाद्वा । ग्ला म्ला वनु वमाच्च । न क्म्यमिचमाम् । शमोऽदर्शने । यमोऽपरिवेषणे । खदि रवपरिभ्याञ्च । फण इति घटादिः । घटादीनां णिचि वृद्धि र्न स्यात्, पा ६, ४, ९२ ।

फण राजृ टुभ्राजृ टुभ्राशृ टुभ्राश्रृ स्यमु स्वन इति फणादिः । फणादीनां लिटि एत्वाभ्यासलोपौ वा स्याताम्, पा ६, ४, १२५ ।

ज्वल जल चल टल टूल स्थल हल णल पल बल पुल कुल शल हुल पत्लृ क्रथे पथे मथे टुवम श्वसु च्वर षह रसु षदॢ लृ शदॢ लृ क्रुश कुच बुध रुह कस इति ज्वलादिः । ज्वलादिभ्यो णः स्याद्वा, पा ३, १, १४० । यज टुवप वह वस वेञ व्येञ ह्वेञ वद टुओंखि इति यजादिः । यजादीनां किति सम्प्रसारणम्, पा ६, १, १५ ।

रुदिर् ज्विष्वप श्वस अन जक्ष इति रुदादिः । रुदादिभ्यः सार्वधातुके इट्, पा ७, २, ७६ ।

जक्ष जाग्र दरिद्रा चकास्र शासु दीधी इति जक्षादिः । तत्फल मभ्यस्तसंज्ञा । झस्य च अदादेशः, पा ७, १, ४ ।

पुष शुष तुष दुष श्लिष श्वक ष्विदा क्रुध क्षुध शुध षिधु ( रध णश लप ह्रप ह्रुह मुह ष्णुह ष्णिह इति रधादिः ) । एभ्य इट् वा स्यात्, पा ७, २, ४५ । ( शसु तसु दसु असु भ्वसु त्रसू क्लसु मदी इति शसादिः ) । एषां श्यनि दीर्घः, पा ७, ३, ७४ । ( असु यसु जसु तसु दसु पसु वसु व्युष व्युस ब्रुस ह्लुष विस क्लुस मुस मसी समी लुठ उच स्रुश भ्वन्श ह्रश क्लश त्रिलष ह्लष रुष रिष डिप

कुप गुप पुप रुप लुप लुभ स्तुभ णभ तुभ क्लिदू ञिमिदा ञिक्ष्विदा ऋधु गृधु इति पुषादिर्दिवाद्यन्तर्गणः । पुषादीनां लुङि अङ् स्यात्, पा ३, १, ५५ ।

षूङ दूङ दीङ डीङ धीङ मीङ रीङ लीङ व्रीङ इति दिवाद्यन्तर्गणः स्वादिः । तत्फलं निष्ठानत्वम्, पा ८, २, ४५ । की १३५ ।

कॄ गॄ टुङ धृङ प्रच्छ् इति किरादिस्तुदाद्यन्तर्गणः, की १५५ । एभ्यः सनि इट् स्यात्, पा ७, २, ७५ । कर्मकर्त्तरि न यक्चिणौ, की २७७ ।

कुट पुट कुच गुज गुड डिप छुर स्फुट मुट त्रुट तुट चुट छुट जुट लुट कड़ कुड़ कुड़ पुड घुट तुड थुड स्थुड खुड कुड स्फुर स्फुल ( फुल ) स्फुड चुड व्रुड क्रुड भृड ( भुड ) गुरी णूधूगु भ्रु भ्रुव कुङ कूङ इति कुटादिस्तुदाद्यन्तर्गणः । तत्फलम् ङ्णिति गुणाभावः, पा १, २, १ ।

मुच्लृ लुप्लृ विद्लृ लिप षिच छृतो खिद पिश इति मुचादिस्तुदाद्यन्तर्गणः । तत्फलं सार्वधातुके नुमागमः, पा ७, १, ५८ ।

पूञ लूञ स्तृञ कॄञ वृञ धूञ शॄ पॄ वॄ भॄ मॄ दॄ जॄ भॄ धॄ नॄ कॄ ऋ गॄ ज्या री ली ब्ली म्ली ( व्री भ्री च्वीष् ) इति पाति ल्वादि श्च । तत्फलन्तु सार्वधातुके ह्रस्वत्वम्, पा ७, ३, ८० । निष्ठानत्व श्च, पा ८, २, ४४ ।

कण रण भण श्रण लुप हेठ । ह्वायि वाणि लोटि लोपि । चाणि लोठि इति काण्ड्वादयः । एषां णौ चङ्युपधाया ह्रस्वो वा, की १८२ ।

ग्रस पुष दल पट पुट लुट तुजि मिजि पिजि लुजि मजि लघि त्रसि पिसि कुसि दशि कुशि घट घटि ह्वहि वर्ह वल्ह गुप धूप विछ चीव पुथ लोक लोचृ णद कुप तर्क ह्वतु ह्वधु रुठ लजि भ्रजि दशि भ्रंशि रुशि रुसि शोक नट पुटि जिवि रघि लघि अहि रहि महि लडि तड नल पूरी रुज ष्वद इत्यास्यदीयाः । एभ्यः सन्वत्कर्मभ्य एव णिच्, की १७८ ।

युज पृज अर्च षह ईर् ली ह्वजौ हृज जॄ ञि रिच शिष तप ह्लप छृदी चृप छृप हृप हृभौ हृभ श्रथ मौ ग्रन्थ सीक चीक अर्द हिंसि अर्ह अङः—षद शुन्ध छद जुष धूञ प्रीञ श्रन्थ ग्रन्थ आप्लृ तनु चण वद वच मान भू गर्ह मार्ग काठि सृजू सृष धृष इत्याधृषीयाः । एभ्यः णिच् वा स्यात्, की १७९ ।

चित दंशि दंसि दस डप डिप तत्रि कुटुम्ब मत्रि स्पश तर्ज भर्त्स वस्त गन्ध विष्क हिष्कि निष्क लल कण तूण भूण शठ यच्च स्यम गूर ग्रम लच्च कुत्स त्रुट कुट गल भल कूट कुट्ट वन्चु हृष मद दिवु गट विद मन यु कुस्म इत्याकुस्मीया आत्मनेपदिनः, की १७६ ।

पद गट्ह भृग कुह शूर वीर स्थूल अर्थ सत्र गर्व इत्यागर्वीयाः । आगर्वादात्मनेपदं णिज्विकल्प श्च, की १८४ ।

इति सूत्रानुसारि-धातुगणः ।

# সাঙ্কেতিক চিহ্ন।

( )... এই বন্ধনীর মধ্যে যে ধাতু থাকিবে, ধাতুপাঠে সেই ধাতুর নিকটেই অভীষ্ট ধাতু দেখিতে পাইবে। যথা প্রুঙ ( চ্যুঙ ) অর্থাৎ প্রুঙ ধাতু ধাতুপাঠে চ্যুঙ ধাতুর নিকটে দেখ।

॰ ... যেখানে পদের কোন অংশ উহ্য থাকে সেই স্থানে এইরূপ চিহ্ন আছে। যথা খ্যাস্যতি। ॰তে। এখানে 'খ্যাস্য' এই অংশ উহ্য। খ্যাস্যতি খ্যাস্যতে এইরূপ বুঝিতে হইবে।

— ... এই চিহ্নের পূর্ব্বে ধাতুর নিরনুবন্ধ অবস্থা লিখিত আছে।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ভ্বা | ... | ... | ভ্বাদিগণীয়। |
| অদা | ... | ... | অদাদিগণীয়। |
| হ্বা | ... | ... | হ্বাদিগণীয়। |
| দিব | ... | ... | দিবাদিগণীয়। |
| স্বা | ... | ... | স্বাদিগণীয়। |
| তুদ | ... | ... | তুদাদিগণীয়। |
| রুধ | ... | ... | রুধাদিগণীয়। |
| তন | ... | ... | তনাদিগণীয়। |
| ক্র্যা | ... | ... | ক্র্যাদিগণীয়। |
| চুর | ... | ... | চুরাদিগণীয়। |
| প | ... | ... | পরস্মৈপদী। |
| আ | ... | ... | আত্মনেপদী। |
| উ | ... | ... | উভয়পদী। |
| অনর্ঘ | ... | ... | অনর্ঘরাঘব। |
| উত্তর | ... | ... | উত্তরচরিত। |
| কবি | ... | ... | কবিরহস্য। |
| কু | ... | ... | কুমারসম্ভব। |
| কৌ | ... | ... | সিদ্ধান্তকৌমুদী। |
| গী | ... | ... | গীতা। |
| গীতগো | ... | ... | গীতগোবিন্দ। |
| নৈ | ... | ... | নৈষধকাব্য। |
| পা | ... | ... | পাণিনি। |
| প্রদীপ | ... | ... | ধাতুপ্রদীপ। |
| ভ | ... | .... | ভট্টিকাব্য। |
| ভা | ... | ... | ভারবিকাব্য। |
| ভারত | ... | ... | মহাভারত। |
| মনু | ... | ... | মনুসংহিতা। |
| মহা | ... | ... | মহানাটক। |
| মা | ... | ... | মাঘকাব্য। |
| র | ... | ... | রঘুবংশ। |
| রত্না | ... | ... | রত্নাবলী। |
| রামা | ... | ... | রামায়ণ। |
| বো | ... | ... | বোপদেব। |
| শকু | ... | ... | অভিজ্ঞানশকুন্তল। |
| হিতো | ... | ... | হিতোপদেশ। |